स्वर्गीय पुण्यश्लोका माता मूर्तिदेवी की पवित्र स्मृति में
स्व० साहू शान्तिप्रसाद जैन द्वारा संस्थापित
एवं
उनकी धर्मपत्नी स्वर्गीया श्रीमती रमा जैन द्वारा संपोषित

भारतीय ज्ञानपीठ मूर्तिदेवी जैन ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, कन्नड़, तमिल आदि प्राचीन भाषाओं में उपलब्ध आगमिक, दार्शनिक, पौराणिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक आदि विविध-विषयक जैन-साहित्य का अनुसन्धानपूर्ण सम्पादन तथा उसके मूल और यथासम्भव अनुवाद आदि के साथ प्रकाशन हो रहा है। जैन-भण्डारों की सूचियाँ, शिलालेख-संग्रह, कला एवं स्थापत्य, विशिष्ट विद्वानों के अध्ययन-ग्रन्थ और लोकहितकारी जैन साहित्य-ग्रन्थ भी इसी ग्रन्थमाला में प्रकाशित हो रहे हैं।



ग्रन्थमाला सम्पादक
सिद्धान्ताचार्य पं कैलाशचन्द्र शास्त्री
डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन



प्रकाशक
भारतीय ज्ञानपीठ
बी45-47, कनॉट प्लेस, नयी दिल्ली-110001

मुद्रक पूजा प्रेस, क्यू 52 नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

स्थापना : फाल्गुन कृष्ण 9, वीर नि० 2470, विक्रम सं० 2000, 18 फरवरी 1944

JNANPITH MURTIDEVI GRANTHAMALA : Apabh Grantha No. 18

MAHĀKAVI PUSPADANTA'S

MAHĀPURĀṆA

Vol. IV

(Saṁdhis 68 to 80)

RĀMĀYAṆA

and

The life of Tirthankara Munisuvrata and Nami

With

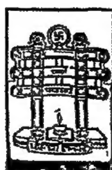
Introduction, Hindi Translation and Index of the verses etc.

Text Edited by

(Late) Dr. P. L. VAIDYA

Translated by

Dr. DEVENDRA KUMAR JAIN, M. A , Ph. D.
Professor, Department of Hindi, and Retired
Principal Govt. P G. College, M P. State
INDORE



BHARATIYA JNANPITH PUBLICATION

VIRA NIRVĀNA SAṀVAT 2509 . V. SAṀVAT 2040 : A. D. 1983
First Edition : Price 50/-

BHĀRATĪYA JÑĀNAPĪTHA

MŪRTIDEVĪ JAINA GRANTHAMĀLĀ

FOUNDED BY

LATE SAHU SHANTI PRASAD JAIN

IN MEMORY OF HIS LATE MOTHER SHRIMATI MURTIDEVI

AND

PROMOTED BY HIS BENEVOLENT WIFE

LATE SHRIMATI RAMA JAIN

IN THIS GRANTHAMALA CRITICALLY EDITED JAINA AGAMIC, PHILOSOPHICAL, PURANIC, LITERARY, HISTORICAL AND OTHER ORIGINAL TEXTS AVAILABLE IN PRAKRIT, SANSKRIT, APABHRMSHA, HINDI, KANNADA, TAMIL, ETC , ARE BEING PUBLISHED IN THEIR RESPECTIVE LANGUAGES WITH THEIR TRANSLATION IN MODERN LANGUAGES.

ALSO

BEING PUBLISHED ARE CATALOGUES OF JAINA BHANDARAS, INSCRIPTIONS, STUDIES ON ART AND ARCHITECTURE BY COMPETENT SCHOLARS

AND ALSO

POPULAR JAINA LITERATURE.



General Editors

Siddhantacharya Pt. Kailash Chandra Shastri

Dr. Jyoti Prasad Jain



Published by

Bharatiya Jnanpith

B/45-47, Connaught Place, New Delhi-110001

Printed at Pooja Press, Q 52, Shahdara, Delhi-32

Founded on Phalguna Krishna9, Vir Sam 2470, Vikrama Sam 2000, 18th Feb, 1944.

भारतीय ज्ञानपीठ · संस्थापना 1944



मूल प्रेरणा
दिवंगता श्रीमती मूर्तिदेवी जी
मातुश्री श्री साहू शान्तिप्रसाद जैन



अधिष्ठात्री
दिवंगता श्रीमती रमा जैन
धर्मपत्नी श्री साहू शान्तिप्रसाद जैन

समर्पण

उस तपस्विनी पूज्या
स्व० मां (रामप्यारी बाई) को
पुनीत स्मृति को

जिनकी ज़िन्दगी के आंगन मे
सुख-दुख की आंख-मिचौनी खेलते रहे,
जहां दुख ने सुख की आंख
कुछ ज्यादा ही मीची,
जिनका पल-क्षण जिजीविषा के
सघर्ष मे बीता, पर जो अपने
जीवन मूल्यो पर दृढ रही,
जिन्हे दिवगत हुए
(3 अप्रैल, रामनवमी 1970)
एक युग से भी अधिक हो गया।

—देवेन्द्र कुमार जैन

अनुवादकीय

महाकवि पुष्पदन्त के 'महापुराण' का यह चौथा खण्ड, वस्तुत मूल रचना के दूसरे खण्ड का एक अश है। सधि 68 से 80 तक 13 सधियो के इस भाग को स्वतन्त्र चौथे खण्ड के रूप मे प्रकाशित करने का कारण यह है, कि आम पाठको को पुष्पदन्त द्वारा विरचित 'रामायण काव्य' स्वतत्र रूप से उपलब्ध हो जाए। 68वी सधि मे बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रत नाथ का चरित्र है, क्योकि इन्ही के तीर्थकाल मे राम, लक्ष्मण और रावण जो क्रमश आठवें नारायण, वासुदेव और प्रतिवासुदेव हैं, उत्पन्न हुए।

ग्रथ का अगला खण्ड पाँचवाँ होगा, जिसमे 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ और नौवें नारायण वासुदेव और प्रतिवासुदेव (बलराम, कृष्ण और कस) का वर्णन है।

प्राचीन भारतीय साहित्य, विशेषत प्राकृत और अपभ्र श के क्षेत्र मे भारतीय ज्ञानपीठ उपलब्ध साहित्य को व्यवस्थित करने और अनुपलब्ध साहित्य को प्रकाश मे लाने की दिशा में जो काम कर रहा है वह सचमुच सराहनीय है। इस काम के लिए वह, तब तक सम्मान के साथ जाना और माना जाएगा जबतक यह देश है और उसमे प्राचीन भाषाओ की साहित्य कृतियो को जानने की उत्सुकता रखने वाले लोग रहेंगे। जो रहेंगे ही।

इस अवसर का उपयोग करते हुए, मैं ज्ञानपीठ के न्यासधारियो और खासकर उसके अध्यक्ष समाजरत्न साहू श्रेयास प्रसाद जी तथा प्रबधक न्यासी श्री अशोक जैन से यह अपील करना चाहूँगा (हालाकि मैंने उन्हें देखा नही है, और न उनकी रुचियो की मुझे जानकारी है) कि वे इसके लिए कुछ अधिक धन की व्यवस्था कर सकें तो अच्छा है। क्योकि, अभी अपभ्र श के महाकवि स्वयभू के 'रिट्ठणेमिचरिउ' का प्रकाशन नही हो सका है। मैं दो साल पहले उसके एक खण्ड (यादवकाण्ड) को सम्पादित करके दे चुका हूँ। परन्तु शायद प्रकाशन बजट की सीमाओ के कारण हर वर्ष उसका प्रकाशन रुक जाया करता है। 'रिट्ठणेमिचरिउ' 'पउमचरिउ' के बराबर महत्त्वपूर्ण, बल्कि कई बातो मे उससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। उसमे समग्र महाभारत की कथा है। 'पउमचरिउ' का मूल भाग 1960 के आस-पास सपादित होकर उपलब्ध था, जबकि 'रिट्ठणेमिचरिउ' अभी-अभी सपादन की प्रक्रिया में है। इसके दूसरे काण्ड भी सपादित होकर तैयार है, लेकिन जबतक पहला काण्ड नही छप जाता तबतक दूसरे काण्ड की 'प्रेस कापी' तैयार करने मे कोई औचित्य नहीं है। अलावा इसके कुन्दकुन्दाचार्य के, जो जैनों की आध्यात्मिक विचारधारा के पुन प्रवर्तक आचार्यो मे महत्त्वपूर्ण हैं, ग्रन्थो का वैज्ञानिक सपादित सस्करण एक श्रृखला मे उपलब्ध नही है। भाषिक दृष्टि से उसका अध्ययन, आज तक नही हुआ, व्युत्पत्ति मूलक शब्द कोश आदि बातें तो बहुत दूर की है। कुन्दकुन्दाचार्य की भाषा अकेली नहीं है, वह उस भाषा से जुड़ी है जिसमें भूतबलि पुष्पदन्त और धरसेनाचार्य ने षट्खडागम की रचना की है, अत उसकी भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन वस्तुत पूरे युग की भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन है। इसी प्रकार श्वेताम्बरों के आगमो की प्राकृत के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन के निष्कर्षो का प्रकाशन एक ऐतिहासिक आवश्यकता है। उसके बाद आती है शौरसेनी और महाराष्ट्री प्राकृतो की प्रवृत्तियो के वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता। इस देश में

सम्प्रदायो के मिलन और विश्व मानवतावाद की बातें बहुत होती हैं, परन्तु ऐसे महानुभाव कितने हैं जो इस दिशा मे गहरी रुचि रखते हैं ? जो हैं उनमे से अधिकाश के पास साधनो का अभाव है। अत उन साधन-सम्पन्न श्रीमानों, सस्थापको से मेरा अनुरोध है कि भाषा के खाते मे जो कुछ उनके पास है उसे यदि पूरी प्रामाणिक व्यवस्था के साथ वे उपलब्ध करा सकें, तो यह उनका अविस्मरणीय प्रदेय होगा। ऐसा किसी पर कोई दवाव नही है, सिर्फ अनुरोध ही कर सकता हूँ।

प्रस्तुत कृति के प्रकाशन के लिए मैं सदा की तरह ज्ञानपीठ के निदेशक भाई लक्ष्मी चन्द्र जी, ग्रन्थमाला सपादक श्रद्धेय प० कैलाशचन्द्र जी और डा० ज्योतिप्रसाद जी के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। ज्ञानपीठ के प्रकाशन अधिकारी डा० गुलाव चन्द्र जैन ने शीघ्र प्रकाशन के लिए जो अथक प्रयास किया है उसके लिए वे साधुवाद के सच्चे पात्र हैं।

देवेन्द्र कुमार जैन

15 अगस्त, 1983
114 उषा नगर,
इदौर, 425 109

INTRODUCTION

[A Part of Dr P. L. Vaidya's 'Critical Apparatus' in the Second Volume of Mahapurana Published in the Manikacandra Granthamala]

The 68th saṁdhi narrates the life of the twentieth Tīthankara Munisuvrata.

Samdhis 69 to 79, these eleven samdhis narrate the story of the eighth set Baladavas etc, and are popularly known as the Rāmāyana, Paumacariya, or Padmapurāna. The story of the Rāmāyana is so well-known that it need not be reproduced here fully, but there are some factors in the Jain version which have to be brought to the notice of the general reader. Rāma and Laksmana in their previous births were sons respectively of king Prajāpati and his minister, and were named Candracūla and Vijaya. In youth they were intimate friends and carried off Kuberadattā, the wife of a merchant named Śrīdatta. The king got a report about this affair, got angry with them, and ordered his minister to take them to the forest and kill them. The minister took them to the forest, but instead of killing them showed them to a Jain monk, Mahābala by name, who told the minister that these youths were destined to be Baladeva and Vāsudeva in their third birth They then became monks and practised penance. Candracūla once saw Suprabha Baladeva and Puruṣottoma Vāsudeva on their way, and formed a hankering that he should have a similar fortune in his next birth Both the young monks after death were born as gods named Manicūla and Suvarnacūla In their next birth they were born as sons to king Daśaratha by his queens Subalā and Kaikeyī, Suvarnacūla (Vijaya in his former birth) becoming Subalā's son named Rāma, and Manicūla (Candracūla in his former birth) becoming Kaikeyī's son named Laksmana.

According to the Jain version Sītā is the daughter of Rāvana, a Vidyādhara, and Mandodarī As it was predicted that Sītā would bring calamity on her father, she was put into a box and left buried in a field She was discovered by a farmer while ploughing his fields, was brought to king Janaka, who adopted her as his daughter He gave her in marriage to Rāma.

Once Nārada came to Rāvana and told him that Rāma married the beautiful Sītā who was really fit for him. This created a desire in the mind of Rāvaṇa to have Sītā Rāvaṇa then sent Candranakhā (better known as Sūrpanakhā) to Sītā to ascertain her mind, but she failed in her mission.

Rāvana thereupon went in his celestial car to the forest where Rāma and Sītā were then enjoying pleasures, asked Mārīca to assume the form of a golden deer and to tempt the mind of Sītā to have it. While Rāma was away in search of the golden deer, Rāvana carried off Sītā to Lankā.

Rāma made a careful search of Sītā but did not get any trace of hers. Daśaratha at this juncture dreamt a dream which indicated that Sītā was carried off by Rāvana. While Rāma was thinking how he should proceed to search Sītā, Sugrīva and Hanūmat came to Rāma to seek his aid for Sugrīva to get his place in the kingdom of his brother Vāli. In the course of their conversation Hanūmat promised to Rāma that he would obtain the news of Sītā. Hanūmat then went to Laṅkā. Assuming the form of a bee he entered the palace of Rāvana, searched and at last found Sītā in the garden being coaxed by Rāvana to yield to his desires Rāvana, however, did not succeed in his attempt to win her. She did not look at him Mandodarī came there and recognised Sītā to be her daughter and comforted her. After her departure Hanūmat saw Sītā, convinced her that he was the messenger of Rāma, and conveyed to her his message Hanūmat then returned to Rāma and told him that he saw Sītā in the garden of Rāvana. Before Rāma undertook marching against Rāvana he sent Hanūmat as a messenger to ascertain if Rāvana would return Sītā peacefully, but Rāvana insulted Hanūmat

In the meanwhile Laksmana fought with Vāli, killed him, and gave his kingdom to Sugrīva Rāma and Laksmana practised fasts to acquire the magic lores which would enable them to fight successfully with Rāvana Vibhīsana, his brother, did not like Rāvana's behaviour, left him, and came over Rāma. Then there was a fight between Rāma and Rāvana in which Laksmana killed Rāvana After his death Rāma placed Vibhīsana on the throne of Lankā Laksmana thereafter became the Ardhacakravartin After enjoying the kingdom he died. Rāma, grieved over his brother's death, renounced the world, became a monk, and attained emancipation.

In Saṁdhi 80, for the life of Nami and details of Jayasena, the tenth Cakravartin, see Tables in the last Volume.

आलोचनात्मक मूल्यांकन

हिन्दी साहित्य के प्रथम प्रामाणिक इतिहासकार आचार्य रामचन्द्र शुक्ल प्राकृत की अन्तिम अपभ्रंश अवस्था से हिन्दी साहित्य का प्रारम्भ मानते हुए, उक्त अपभ्रंश को प्राकृताभास हिन्दी कहने के पक्ष मे थे। उनके अनुसार, तान्त्रिको और योगमार्गी बौद्धो द्वारा रचित पदो (दोहो) में यही भाषा प्रयुक्त है। इसके अलावा, इस अपभ्रंश और 'पुरानी हिन्दी' का प्रचार शुद्ध साहित्य या काव्य-रचनाओ मे भी 1050 से 1375 तक (भोज से लेकर हम्मीरदेव तक) पाया जाता है। इस प्रकार सवा तीन सौ वर्ष के इस काल के प्रथम डेढ सौ वर्ष के भीतर लिखित रचनाओ की स्पष्ट प्रवृत्ति का निश्चय करना कठिन है। अतः यह अनिर्दिष्ट लोकप्रवृत्ति का काल है। उसके बाद मुसलमानो के आक्रमण शुरू होने पर उनकी प्रतिक्रिया से हिन्दी साहित्य मे एक प्रवृत्ति उभरती है, जो काफी बँधी हुई है। रीति शृंगार आदि के अलावा यह प्रवृत्ति चारण या राजाश्रित कवियो द्वारा निबद्ध अपने आश्रयदाता राजाओ के पराक्रमपूर्ण चरितो या गाथाओ मे लक्षित होती है। यह प्रबन्ध-काव्य परम्परा ही रासो-काव्य या वीर-गाथा काव्य कहलाई। कुल मिलाकर 'आदिकाल' के दो भेद हैं--1 अनिर्दिष्ट काल 2 वीर-गाथा या रासो काल। भाषा के बारे मे शुक्ल जी का कहना है कि इन काव्यो की भाषा परम्परागत है, उस समय की बोलचाल की भाषा नही है। उसमे प्राकृत की रूढियाँ हैं। वह तत्कालीन बोलचाल की भाषा से लगभग दो सौ वर्ष पुरानी भाषा है।

आदिकाल के अन्तर्गत शुक्ल जी, अपभ्रंश (देवसेन, पुष्पदन्त, सिद्धो की रचनाओ, हेमचन्द्र द्वारा उद्धृत दोहों की भाषा) और देशी भाषा (रासो काव्यो की भाषा) का उल्लेख करते हैं। आचार्य शुक्ल ने अपने उक्त विचार 1929 में उस समय व्यक्त किये थे जब अपभ्रंश साहित्य प्रकाश मे नही आया था। परन्तु 1960 तक अपभ्रंश के स्वयम्भू और पुष्पदन्त जैसे शीर्ष कवियो की रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी थी। फिर भी डॉ० हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उनका विचार इसलिए नही किया क्योकि यह साहित्य हिन्दी प्रदेश में लिखा गया साहित्य नही है। बडे विस्तार से उन्होंने इस बात का विचार किया है कि ऐसा क्यो हुआ। उनका कहना है कि गाहडवार राजाओ ने (वैदिक धर्म मानने के कारण) देश्यभाण के कवियों को आश्रय नही दिया, दूसरे, इस प्रदेश मे वर्जनशील ब्राह्मण समाज का प्रभाव था। हो सकता है उनका कहना सही हो, परन्तु उससे उपलब्ध साहित्य के अध्ययन न करने का औचित्य सिद्ध नही होता। क्योकि भाषा मानसून की तरह, ऊपर ही ऊपर उडकर नही निकल जाती, किनारो को छूने के लिए उसे मध्य मे से गुजराना होता है। मध्यदेश उसमे अछूता नहीं रह सकता, वह अछूता रहा भी नही। सूर, तुलसी, कबीर, जायसी की रचनाएं इसका सबूत हैं। आखिर ब्रज और अवधी एकदम पैदा नही हो गई। यदि डॉ० द्विवेदी अध्ययन करते तो कम से कम उन्हें इस निष्कर्ष पर नही पहुँचना पडता कि हिन्दी साहित्य का आदिकाल विरोधो और स्वतो वदतो व्याघातो का काल है। या उन्हे यह नही लिखना पडता कि 'इस युग मे एक ओर श्रीहर्ष जैसे बडे-बडे कवि हुए, जिनकी रचनाएँ अलंकृत काव्य-परम्परा की सीमा पर पहुँच गई थी। दूसरी ओर, अपभ्रंश मे ऐसे कवि हुए जो अत्यन्त सरल और संक्षिप्त शब्दो मे अपने मनोभावो को प्रकट करते थे। यह बात 'नैषधकाव्य' के श्लोको और 'सिद्ध-हेम-व्याकरण' मे आये दोहो की तुलना से स्पष्ट हो जाएगी।'

मेरे विचार मे, इसमे अन्तर्विरोध की कोई बात नही। श्रीहर्ष की भाषा की तुलना पुष्पदन्त की अपभ्र श से करने पर यह स्वत. स्पष्ट हो जाएगा।

पुष्पदन्त के दो नमूने उद्धृत हैं—

"धीरं भविहिय सामय
सोहं हयसर सामय
दूसिय सेत्तिय सामय
विद्धिसियं हिंसामय"

एक सरल नमूना—

"पर उवयारि स जीवउ वेंतह
दीण्णुद्धरणु विहूसणं संतह।
पविमल कित्ति भमिय महीमंडलि
हरिगुण कहा हुई आहंडलि।"

(महापुराण 85/17)

इसमें विरोध कहाँ है? विरोध तुलनीयो के गलत चयन मे है।

आलोच्ययुग मे दूसरा विरोधाभास यह है कि एक ओर उसमे दिग्गज आचार्य हुए तो दूसरी ओर निरक्षर सन्त जिनके द्वारा ज्ञान प्रचार के बीज बोए गए। परन्तु ऐसा किस युग मे नही हुआ? क्या आज ऐसा नही है? वास्तव मे यह बीज बोने का नही, फसल काटने का काल है। बुद्ध और महावीर ने लोकभाषाओ मे उपदेश देकर ऊँचा तत्त्वज्ञान आम जनता को सुलभ कराने की जो परम्परा डाली थी, या बीज बोये थे वे इस युग मे अंकुरित पल्लवित होकर झाड़ बन चुके थे। और फिर आत्मज्ञान के लिए साक्षर या पढा लिखा होना इस देश मे कतई जरूरी नही रहा। पढे-लिखे भी मूर्ख हो सकते हैं और निरक्षर भी आत्मज्ञानी।

यह कितनी अजीब बात है कि आचार्य द्विवेदी इस युग को अन्धकार का युग मानें और लिखें, 'अन्धकार के इस युग को प्रकाशित करने वाली जो भी चिनगारी मिल जाए; उसे जलाए रखना चाहिए क्योकि वह एक बहुत बडे आलोक की सभावना लेकर आई होती है। उसमे युग के संपूर्ण मनुष्य को उद्भासित करने की क्षमता होती है।' चिनगारी से द्विवेदी जी का अभिप्राय मध्यदेश मे लिखी गई छोटी-मोटी रचना से है: 'हमे घर की चिनगारी चाहिए, पड़ोस की धधकती आग से कोई मतलब नही।' आखिर क्यो? क्या घर की चिनगारी ही पूर्ण मनुष्य को प्रकाशित कर सकती है, पडोस की आग नही? वास्तव मे डॉ० द्विवेदी चाहते थे कि हिन्दी वाले अपभ्र श और अवहट्ठ या देश्य मिश्रित अपभ्र श के साहित्य का गहन अध्ययन करें परन्तु प्रश्न था कि हिंन्दी अनुवाद के बिना वह करे कौन? भारतीय ज्ञानपीठ ने सचमुच इस दिशा मे बहुत बडा ऐतिहासिक कार्य किया है।

पुष्पदन्त की रामकथा

आदिपुराण (महापुराण 1-37 सन्धियाँ) की रचना के बाद कवि पुष्पदन्त का मन कई कारणो से सृजन से उचट जाता है। मत्री भरत यदि हाथ जोडकर उनके सामने बैठकर धरना नही देते तो शायद ही कवि महापुराण का शेष भाग लिखता। भरत अपने अनुरोध से कवि को मना लेते हैं और पुष्पदन्त बीस

तीर्थंकरो (अजितनाथ से लेकर मुनिसुव्रत तक) का वर्णन करने के बाद रामकाव्य की रचना करते हैं। रामायण के सृजन क्षणों मे पुष्पदन्त का मन आशा और उत्साह से फिर भर उठता है, क्योंकि इसमे बलदेव (राम) और वासुदेव (लक्ष्मण) के गुणो का कीर्तन है। कवि अपनी बुद्धि के विस्तार के अनुसार उनका वर्णन करता है। यद्यपि वह कलिकाल की दुरवस्था से खिन्न है, दुर्जनों के स्वभाव का वह भुक्तभोगी है, फिर भी, भरत के अनुरोध पर सृजन के अपने सकल्प को पूरा करने के लिए वह तैयार है।

कवि एक बार फिर अपनी लाचारी की याद दिलाता हुआ कहता है प्राचीन कवियो की पक्ति मे होना तो बहुत दूर की बात, मेरे पास कोई सामग्री नही है। अपभ्र श मे रामायण के कर्ता कवि स्वयंभू महान् हैं, जो हजारो लोगो से सम्मानित हैं। दूसरे कवि है चतुर्मुख जिन्होने रामायण की रचना की है, जिनके चार मुख हैं मेरा तो एक ही मुख है और वह भी खडित, वह भी दुष्टता से भरा हुआ :

'महु एक्कु तं पि मुहुं खंडियउं
विहिणा पेसुण्णउं मंडियउं।'

हो सकता है मेरा कहा विद्वानों की सभा को अच्छा न लगे। फिर भी मैं उससे अपने ढीठपने की क्षमा मागते हुए, काव्य रचना प्रारम्भ करता हूँ। मेरा विश्वास है कि रामकथा के कुछ प्रसंग विचक्षणों को आकर्षित किए बिना नही रह सकते। ये हैं—राम का यश, लक्ष्मण का पुरुषार्थ और सीता का सतीत्व।'

कवि कहता है कि जिस तरह जलबिंदु कमलपत्र पर मोती की शोभा को धारण करता है, उसी तरह उत्तम आश्रय पाकर काव्य शोभा पाता है—

'जलबिंदु व पोमपत्ति थियउं
मुत्ताहलवण्णु समुव्वहइ
आसंयगुणेण कव्वु वि सहइ।' 69/2

जिन घटनासूत्रो की बुनावट मे कवि राम के यश, लक्ष्मण के पुरुषार्थ और सीता के सतीत्व के रगो को उभारता है, वे हैं सीता का अपहरण, हनुमान् का गुणविस्तार, कपटी सुग्रीव का मरण, तारापति (सुग्रीव) का उद्धार, लवण समुद्र का सतरण और निशाचर कुल का नाश। कवि सीता के अपहरण को केन्द्र मे रख-कर ही उक्त सूत्रो को बुनता है। पुष्पदन्त के रामायण-सृजन का दूसरा महत्त्वपूर्ण बिन्दु है—भरत का भक्ति-भाव और नाना रसभावो से युक्त राम-रावण युद्ध।

69वीं सधि

दूसरी जैन रामायणो की तरह, पुष्पदन्त भी अपनी रामायण राजा श्रेणिक और गणधर गौतम के सवाद से प्रारम्भ करते हैं, यद्यपि, उनकी रामकथा गुणभद्राचार्य की परपरा पर आधारित है, जो विमल-सूरि के 'पउमचरिय' की रामकथा से भिन्न है। इससे स्पष्ट है कि समान स्रोत होने पर भी रामकथा के कवि विभिन्न घटनाओ प्रभावो को ग्रहण करते रहे है, या उनकी नई व्याख्या करते रहे हैं। उनका सबध श्रेणिक-गौतम सवाद से जोडना एक पौराणिक रूढि मात्र है।

गुणभद्राचार्य की रामकथा में राम का सीता से विवाह जनक के पशुयज्ञ से जुड़ा हुआ है। सगर का आख्यान भी यज्ञसंस्कृति से जुड़ा हुआ है, जो उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है। काव्य के रगमच पर जो पात्र आते हैं या जो घटनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं, वे जैन दार्शनिक विश्वास के अनुसार पूर्वजन्म के नेपथ्य से

शुरू होती हैं। अपने तीसरे जन्म मे राम और लक्ष्मण, विजय और चन्द्रचूल के रूप मे मित्र थे। रत्नपुर के राजा प्रजापति का बेटा चन्द्रचूल था। मंत्री के पुत्र का नाम विजय था। भर-जवानी मे उन्होंने युवा सेठ श्रीदत्त की पत्नी कुबेरदत्ता का अपहरण कर लिया। प्रजा के विरोध करने पर राजा ने दोनो को जंगल मे लेजाकर वध का आदेश दिया। मंत्रियो और पौरजनों के कहने पर मारने के बजाय, उन्हे गहन जंगल में ले जाया गया। वहाँ मंत्री ने जैन महामुनि महाबल से दोनो कुमारों का भविष्य पूछा। मुनि ने कहा—दोनो बालक तीसरे भव मे बलराम और नारायण होंगे। तब उन दोनो ने जैनदीक्षा ग्रहण कर ली। एक बार तप करते हुए उन्होंने मधुसूदन और पुरुषोत्तम का वैभव देखकर निदान किया कि जैन तप का यदि कोई प्रभाव हो, तो मुझे भी अगले जन्म मे यह सब वैभव प्राप्त हो। विजय मरकर सनत्कुमार देव हुआ, उसका नाम स्वर्णचूल था। इधर चन्द्रचूल मणिचूल नाम का देवता हुआ। स्वर्ग से च्युत होकर उनमे से मणिचूल काशी के राजा दशरथ की सुबला रानी का पुत्र राम हुआ। और, स्वर्णचूल दूसरी रानी कैकेयी से लक्ष्मण नाम का पुत्र हुआ। बडे होने पर उनकी धाक दूर-दूर फैल चुकी थी। गोरे और काले रंगवाले वे दोनो कुमार ऐसे लगते थे मानो राजा दशरथ रूपी गरुड के श्वेत और काले दो पंख हो। संख्यातीत काल बीतने पर दशरथ को काशी से अयोध्या आना पडा था। इसी बीच दशरथ के पुत्र भरत और शत्रुघ्न भी उत्पन्न हुए।

राजा जनक ने यज्ञ की रक्षा और सीता के स्वयंवर का जो निमंत्रण भेजा उसमे राम भी आमंत्रित थे। दशरथ के पास भी लिखित पत्र आया। उसमे लिखा था कि जो इस परम कृत्य वाले यज्ञ की रक्षा करेगा, उसे मैं अपनी सुकन्या सीता दूँगा। मंत्री बुद्धिविशारद ने पत्र का समर्थन करते हुए यज्ञ की रक्षा को परम कर्तव्य बताया। दूसरे मंत्री अतिशयमति ने इसका विरोध करते हुए राजा सगर का उदाहरण दिया। उसने कहा कि चारण नगर के राजा सुयोधन की रानी अतिथि की सुंदर कन्या सुलसा के स्वयंवर मे अयोध्या का राजा सगर पहुँचा। कन्या की माँ अतिथि उसे अपने भाई के पुत्र मधुपिंगल को देना चाहती थी। तब सगर के पुरोहित मंत्री ने झूठा सामुद्रिक शासन बनाकर उसे धरती मे गडवा दिया। एक किसान को वह मिला। द्विजवर के रूप मे मंत्री वहाँ पहुँचा और उसने अलग अर्थ किया कि जो मधुपिंगल को विवाह मंडप में प्रवेश देगा उसकी कन्या विधवा हो जाएगी। मधुपिंगल लज्जा के कारण वहाँ से भाग गया। बूढे सगर ने कन्या से विवाह कर लिया। मधुपिंगल ने जैनदीक्षा ले ली। एक दिन नगर मे भिक्षा के लिए जब मधुपिंगल घूम रहा था वहाँ उसे सगर के कपटजाल का पता चला। उसने आक्रोश मे आकर यह निदान बाँधा कि सगर मेरे हाथ से मरे यदि जैन तप का कोई प्रभाव हो। वह मरकर असुरेंद्र का वाहन यानी भैंसा हुआ, साठ हज़ार भैंसाओ का अधिपति। जिनवर के धर्म को स्वीकार करते हुए भी वह क्षमाभाव के बिना दुर्गति मे गया। उसे ज्ञात हो गया कि किस प्रकार वह सगर के द्वारा ठगा गया। उसने मन-ही-मन कहा कि देखें अयोध्या का राजा यह अब कैसे बचता है। वह सालकायण नाम का वेदमंत्रो का उच्चारण करनेवाला ब्राह्मण बन गया, श्रेष्ठ मुनियो को दूषित करनेवाला और हिंसक।

इसी बीच, पर्वतक की कथा शुरू होती है। विप्रवर क्षीरकदंब के तीन शिष्य थे, एक उसका बेटा पर्वतक जो पढने मे कमजोर था, दूसरा राजा वसु और तीसरा नारद। एक दिन वे वन मे गये। क्षीरकदंब ने वहाँ एक जैनमुनि से उनका भविष्य पूछा। उन्होंने कहा कि नारद सर्वार्थसिद्धि जाएगा, और बाकी दो नरक, यज्ञ के फल के कारण। क्षीरकदंब की पत्नी राजा वसु को पीटने से बचाती है। वह उसे वर देता है। आचार्याणी उसे भविष्य के लिए सुरक्षित रखती है। वह पति से झगड़ा करती है कि वह नारद को विशेष पढाते है, अपने लडके को नही। क्षीरकदंब विविध प्रयोगो द्वारा पत्नी को बताता है कि नारद जन्म से प्रतिभाशाली है, जबकि पर्वतक मंदबुद्धि है। अन्त मे क्षीरकदंब नारद को परिवार सौंपकर जैन हो गया। वह मर कर स्वर्ग गया। बहुत दिनों बाद नारद और पर्वतक मे 'अज' शब्द के अर्थ को लेकर विवाद हो गया। नारद

के अनुसार अज का अर्थ तीन साल का पुराना जौ था, जबकि पर्वतक के अनुसार बकरा। लोगो ने पर्वतक को नगर से निकाल दिया। पर्वतक सालकायण का शिष्य हो गया। वे दोनो अयोध्या नगरी पहुँचे। पशुयज्ञ का प्रचार करते हुए तथा यज्ञ मे होमे गए पशुओ को साक्षात् देव बताते हुए, राजा सगर को उन दोनो ने धोखा दिया। उनके बहकावे में आकर राजा ने अपनी पत्नी सुलसा भी यज्ञ मे होम दी। पत्नी के वियोग से दुखी होकर सगर ने एक दिन जैन मुनि से पूछा, 'क्या पशुओ का वध धर्म है ?' उन्होंने कहा कि निश्चय ही अहिंसा से धर्म होता है और हिंसा से अधर्म। सगर के पूछने पर मुनि ने बताया कि सातवें दिन उसके ऊपर बिजली गिरेगी। सगर ने आकर पर्वतक से कहा। उसने जैनमुनि की निंदा की। असुरेन्द्र ने राजा को नभ में मुनि सुलसा देवी के दर्शन करा दिए। सगर दुगुने उत्साह से यज्ञ मे लग गया। अन्त मे राजा सगर पर गाज गिरती है और वह मारा जाता है। असुरेन्द्र ने एक बार फिर कपट भाव किया और राजा वसु को स्वर्ग के विमान मे स्थित बताया।

सगर का मन्त्री आनंदित हुआ। उसने कहा कि मूर्खो ने यज्ञ की निंदा की। उसने भी राजसूय यज्ञ किया, विद्याधर दिनकर ने उसे आड़े हाथों लिया और राजा के एक मास के होम को नष्ट कर दिया। महाकाल के विस्तार को भी नष्ट कर दिया। नारद का मन आनंदित हुआ। असुरेन्द्र ने घोषणा की कि पर्वतक तुम नाश को प्राप्त मत होओ। तुम चारो तरफ जिनप्रतिमाएँ स्थापित कर दो जिससे विद्याधर विद्याएँ प्रवेश न कर पाएँ। वे दोनो नरक गये। असुरेन्द्र ने लोगो से कहा कि उसने अपना बदला ले लिया।

70 वीं संधि

अतिशयमति मंत्री के हित वचन सुनकर राजा दशरथ का मिथ्या दर्शन नष्ट हो गया। उसने जैन धर्म ग्रहण कर लिया। राजा के मंत्री महाबल ने पुत्रो का प्रताप देखने के लिए, उन्हे यज्ञ मे भेजने का प्रस्ताव रखा। राजा दशरथ ज्योतिषी से राम लक्ष्मण के भविष्य के बारे मे पूछता है। वह बताता है कि वे दुनिया को सतानेवाले रावण को मारकर विजयी होगे। दशरथ भुवनविख्यात रावण के बारे मे पूछता है। पुरोहित कहता है कि नागपुर मे राजा नरदेव था। उसने दीक्षा ले ली। आकाश मे जाते हुए चपलवेग और विचित्र-केतु विद्याधरो को देखकर उसने निदान बाँधा कि तप के प्रभाव से मेरा इन विद्याधरो जैसा ऐश्वर्य हो। विजयार्ध पर्वत की दक्षिण श्रेणी मे मेघ शिखर मे सहस्रग्रीव नाम का राजा था। वह झगडा करके वहाँ से त्रिकूट नगर मे आ गया। उसने लंका का निर्माण कराया। बीस हजार वर्ष उसने उस नगरी का पालन किया।' शतग्रीव ने पच्चीस हजार वर्ष। पंचदशग्रीव बीस हजार वर्ष जीकर मर गया। पुलस्त्य पन्द्रह हजार वर्ष। उसकी पत्नी मेघलक्ष्मी की कोख से राजा नरदेव रावण के रूप में उत्पन्न हुआ। उसका कोई प्रतिमहल नहीं था। राजा मय ने अपनी कन्या मन्दोदरी से उसका विवाह कर दिया। एक दिन आकाशमार्ग से जाते हुए उसने ध्यान मे लीन मणिवती को देखा। रावण की मति चंचल हो गई। उसने कन्या को ध्यान से विच-लित करना चाहा। क्रुद्ध हो मणिवती ने यह निदान बाँधा कि अगले जन्म मे वह उसकी कन्या होकर उसकी ही मौत का कारण बने। अगले जन्म मे वह मदोदरी की कन्या हुई। ज्योतिषियों की भविष्यवाणी सुनकर रावण ने उसे मारना चाहा। परन्तु मारीच ने मदोदरी को समझाकर उसे मजूषा मे रखवाकर मिथिलानगर के उद्यान मे गडवा दिया। एक किसान को वह मजूषा मिली जिसे उसने वनपाल को देदी। उससे वह राजा जनक को दी गई। जनक ने उसे अपनी पत्नी को दे दिया। सीता जब बडी हो गई तो उसके स्वयवर के सिलसिले मे राजा दशरथ ने राम लक्ष्मण को वहाँ भेजा। राम ने उससे विवाह कर लिया। वे उसे विनीतपुरी (अयोध्या) ले आए। वसत के आने पर अयोध्या मे वसंत क्रीड़ा की धूम मच गयी। राम ने पिता से अनुमति लेकर परपरागत वाराणसी पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार राम, लक्ष्मण और सीता काशी मे रहने लगे।

71 वीं संधि

कलहप्रिय नारद ने जाकर रावण से कहा, 'सीता जैसी अनिन्द्य सुन्दरी तुम्हारे योग्य है।' रावण सीता को समझाने के लिए पहले अपनी बहन चन्द्रनखा को भेजता है। लेकिन वह असफल लौटती है और उल्टे रावण को ही समझाती है। रावण उसे मना कर, पुष्पक विमान मे जा बैठता है।

72 वी संधि

रावण मारीच को लेकर वाराणसी गया। उस समय राम और सीता वसंतक्रीड़ा के अनंतर वृक्ष के नीचे विश्राम कर रहे थे। रावण वहाँ पहुँचा। उसने कपटपूर्वक उसके अपहरण का निश्चय किया। मारीच सोने का मृग बनकर दौड़ता है, राम पीछे-पीछे दौड़ते हैं। बहुत दूर ले जाकर मारीच संकेत करता है और इधर रावण सीता का अपहरण कर लेता है। वह उसे ले जाकर नंदन वन मे रखता है और विद्याधरियो से उसको समझाने के लिए कहता है। सीता विलाप करती है। वह रावण के प्रस्ताव को ठुकराती है।

73 वीं संधि

सीता के अपहरण से दुखी राम मूर्छित हो जाते हैं। दशरथ स्वप्न मे सीता के अपहरण की बात जानकर इसकी सूचना राम को देते है। विद्याधर सुग्रीव और हनुमान् राम से भेंट करते हैं। सुग्रीव अपना परिचय देते हुए, अपनी समस्या उनके सामने रखता है कि उसके भाई वालि ने उसे निकाल कर उसकी पत्नी ले ली है। हनुमान् सीता का पता लगाने का आश्वासन देते हैं। सम्मेदशिखर पर जाकर वे सिद्धकूट जिनालय की वंदना करते हैं। हनुमान् लंका के लिए कूच करते हैं। वह भ्रमर का रूप धारण कर लका नगरी मे प्रवेश करते है। वहाँ वह रावण को सिंहासन पर स्थित देखते हैं।

इधर अनुचरो को सीता के शरीर का वस्त्र मिलता है। वहाँ सीता मे आसक्त रावण का किसी भी काम मे मन नही लगता। वह सीता को समझाता है। सीता उसे मुंहतोड़ उत्तर देती है। मंदोदरी रावण को समझाती है। मंदोदरी सीता को उसके पैरो के कुछेक विशेष चिह्नो से पहचान लेती है।

हनुमान् सीता से भेंट करते हैं और प्रत्यभिज्ञान के साथ राम का संदेश देते हैं। वह राम के वियोग की भी स्थिति के बारे मे बताते हैं। हनुमान् सीता को आश्वासन देते हैं। राम का वृतान्त मिलने पर सीता मंदोदरी के अनुरोध पर भोजन करती है। हनुमान् राम के पास सीता का संदेश लेकर पहुँचते हैं।

74 वीं संधि

हनुमान् विस्तार से सीता के वियोग का वर्णन करते हैं। राम की पंचांगमंत्रणा। राम एक बार फ़िर रावण के पास दूत भेजते है। हनुमान् दुबारा दूत बनकर जाते हैं। राम विस्तार से दूत को समझाते हैं। हनुमान् लका मे प्रवेश करते हैं। उनके सौंदर्य को देखकर लका की विद्याधरियों का मन विचलित हो उठता है। हनुमान् रावण को समझाते हैं। रावण इसे रंडा कहानी कहकर दूत की बात टाल देता है। रावण के विभिन्न सामंत भी अपनी-अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

75 वीं संधि

हनुमान् लौटकर आते हैं। इधर लक्ष्मण वालि से युद्ध करते है। हनुमान् अपने दौत्य का प्रतिवेदन प्रस्तुत करता है। राम से मिलने के लिए वालि का दूत आता है। वह कहता है कि यदि राम सुग्रीव को निकाल बाहर करें, तो वालि उनकी अधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार है। वह सीता को

वापस ला सकता है। राम ने कहा यदि वह अपना हाथी देता है तो वही इस मित्रता का कारण हो सकता है। राम ने दूत के साथ अपना आदमी भेजा। वालि के राजमंत्री ने उससे कहा—राजा वालि हाथी नहीं, असि-प्रहार देगा। दूत ने वापस आकर, कानों को कटु लगनेवाले वे शब्द राम से कहे। राम स्वय को कठिन स्थिति मे पाते हैं, इधर कुआ उधर खाई। लक्ष्मण और हनुमान् उस पर चढाई करते हैं। वालि-वध।

76 वीं सधि

राम लका पर चढाई के लिए प्रस्थान करते हैं। विभीषण रावण को समझाता है। सेना और युद्ध का वर्णन।

77-78 वीं सधि

हनुमान् के न लौटने पर राम की चिन्ता। विभीषण उन्हे समझाता है। युद्ध का वर्णन। रावण विभीषण को बुरा-भला कहता है। युद्ध का वर्णन। लक्ष्मण के द्वारा रावण का वध। मदोदरी का विलाप। विभीषण भी पश्चात्ताप करता है। उसके अनुसार रावण का एक ही दोष है कि उसने जैनधर्म का आदेश न मानते हुए परस्त्री का अपहरण किया। राम रावण का दाह सस्कार करते हैं। पुष्पदन्त का कथन है कि दूसरे की स्त्री से राग होने पर सभी हलके समझे जाते है। विभीषण को राजपट्ट बाँधा जाता है।

79 वीं सधि

उसके बाद राम पृथ्वी का परिभ्रमण करते हुए, कोटिशिला पहुँचते हैं। लक्ष्मण कोटिशिला उठाते हैं। दोनो भाई गगा के किनारे-किनारे चलते हैं और उसके उद्गम स्थान पर पहुँचते हैं। वहाँ उन्होने पटमडप ताने। लक्ष्मण ने समुद्रपर्यन्त अपना रथ हाँका। वे मगध देश आए। वहाँ उनका अभिषेक किया गया। और भी कई कीमती वस्तुएँ उपहार स्वरूप प्राप्त हुईं। समुद्र के किनारे-किनारे जाकर वरतनु को, फिर सिंधु को जीतकर प्रभास तीर्थ को जीता। फिर म्लेच्छ दिशा के समस्त शत्रुओ को जीता। विजयार्ध की दोनो श्रेणियों को जीत कर, हतमातग विद्याधर की कन्याएँ ग्रहण की। देव दिशा के म्लेच्छ खड को जीतकर, भूमिमडल पर अपना राजदड घुमाकर वे अयोध्या लौट आए। वहाँ राजा राम लक्ष्मण का अभिषेक हुआ। वे दोनों इन्द्र की लीला करते हुए रहने लगे। उन्हीं दिनो शिवगुप्त मुनि का नदनवन मे आगमन होता है। वे जैनधर्म का उपदेश देते हैं। जैन दृष्टिकोण से वे संसारचक्र का विचार करते है, दूसरे दार्शनिक के मतो का खडन भी। उपदेश सुन-कर राम श्रावक व्रत धारण कर लेते है। लक्ष्मण ने एक भी व्रत ग्रहण नही किया। दशरथ के मरने पर भरत और शत्रुघ्न साकेत मे अधिष्ठित हुए। राम और लक्ष्मण वाराणसी गए। राम का पुत्र विजयराम हुआ, उनके सात पुत्र और हुए। लक्ष्मण का पुत्र पृथ्वीचन्द्र था। उसके और भी पुत्र हुए। बहुत समय बीतने पर पृथ्वी पर अनिष्ट लक्षण प्रकट हुए। राम ने दान दिया और जिन पूजा की। लक्ष्मण की मृत्यु। राम और सीता का शोक। राम ने चार घातिया कर्मों का नाश किया, देवताओ ने पुष्पो की वृष्टि की। राम को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। परमार्थवादी लोग यही कहते हैं कि धन किसी के साथ नही जाता। धरनी रूपी राक्षसी ने किस-किस को नही खाया !

रामकथा की पृष्ठभूमि

पुष्पदन्त की रामकथा मे कथा कम, काव्य-तत्त्व अधिक है। कवि मनुष्य की भौतिक इच्छाओं की निस्सारता, तप-त्याग और नैतिक मूल्यों का चित्रण तत्कालीन सामन्तवादी पृष्ठभूमि मे करता है। जीव का अपना कर्म ही उसके सुख-दुख, बन्धन और मोक्ष के लिए उत्तरदायी है। चूंकि कर्म का कर्ता और

भोक्ता वह खुद है इसलिए वर्तमान मे वह जो है उसके लिए वह खुद जिम्मेदार है। जैन दर्शन का यह सिद्धान्त कवि के सृजन का आधारभूत सिद्धान्त है जो उसके चरित्र-चित्रण और घटनाओ के वर्णन मे प्रतिबिम्बित है'। यह होते हुए भी उनकी कविता के कुछ भौतिक मूल्य भी हैं जिन्हे रामकथा के पात्र जीते हैं और जिन के प्रति कवि का सवेदनशील लगाव है। कवि के रामकाव्य के आध्यात्मिक मूल्य परम्परा से प्राप्त हैं, पहले से निर्धारित हैं और जिनके अनुसार पात्र अपना जीवन जीने के लिए बाध्य हैं। जो घटित हो चुका है उसे कलात्मक अभिव्यक्ति देना ही कवि का उद्देश्य है।

पुष्पदन्त ने जिस परम्परागत रामकथा को चुना है और उसे जिस रूप में काव्य के सांचे मे ढाला है, उसमे सामन्तवाद के आदर्शों की स्पष्ट छाप है। उदाहरण के लिए, राम और लक्ष्मण ने पूर्वकालीन तीसरे भव मे, जब वे राजपुत्र और मन्त्री-पुत्र थे, युवा सेठ की पत्नी कुबेरदत्ता का अपहरण किया था। प्रजा के विरोध करने पर दोनो को फांसी होती, परन्तु वृद्धजनो के बीच-बचाव के कारण वे बच गए, और जैन तप करके वे बलभद्र और वासुदेव हुए। उन्हे फांसी पर नही लटकाए जाने का दूसरा कारण महाबल मुनि का यह भविष्य-कथन रहा है कि दोनो तीसरे जन्म मे महापुरुष होने वाले हैं। प्रश्न है कि यदि भविष्य कथन मे यह बात निकलती कि वे दोनो महान् की जगह सामान्य पुरुष या आम आदमी होने वाले हैं तो क्या राज्य मृत्युदण्ड माफ कर देता? दूसरा निष्कर्ष यह है कि लोग सत्ता का दुरुपयोग करने के लिए ही सत्ता मे जाते है। सत्ता का सुख ठोस, जबर्दस्त और सम्मोहक है। चाहे वह सामतवाद हो या प्रजातन्त्र, राज-पुरुष और उनके निकट के लोग सुरा-सुन्दरी मे लिप्त रहते रहे हैं। लिप्त तो दूसरे भी हैं। मर्यादित लिप्त होना बहुत बुरा भी नही है। परन्तु जिसके हाथ मे सत्ता होती है (चाहे धन की हो या राज्य की) उन्हें मनो-रंजन के क्षेत्र और साधन अधिक सहजता से सुलभ होते हैं। हो सकता है राम-लक्ष्मण ने अपने तीसरे भव मे वह सब न किया हो जो कर्म फल विश्वासी जैन कवियो ने उनके साथ जोड दिया है, सत्-असत् कर्म का फल बताने के लिए। लेकिन जब हम राम के वर्तमान जीवन मे उतार-चढाव देखते है तो सोचते हैं कि उसका कोई न कोई कारण जरूर रहा होगा। ससार मे अचानक कुछ भी घटित नही होता, कारण कार्य बनता है और कार्य कारण। कारण-कार्य की इस शृंखला का नाम ही ससार है। प्रत्येक दर्शन इस शृखला की व्याख्या अपने ढग से करता है। जैन-दर्शन ने भी इसकी व्याख्या कर्म-सिद्धान्त के आधार पर की है। इसका उद्देश्य यह बताना है कि व्यक्ति जो कुछ करता है उसका फल उसे ही भोगना पडता है। उसमे किसी की भागीदारी नही हो सकती। राम की तरह रावण का वर्तमान जीवन भी उसके पूर्व कर्मों का फल है। रागद्वेष की क्रिया-प्रतिक्रियाएँ जन्म-जन्मान्तरो तक चलती है।

पुष्पदन्त की रामकथा मे कैकेयी के वरदान, राम का बनवास, सीता की अग्नि परीक्षा, राम द्वारा सीता का निर्वासन, राम लवणाकुश, जटायु, बनयात्रा आदि प्रसग नही हैं। एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु यह है कि राजा दशरथ को स्वप्न मे रावण द्वारा सीता के अपहरण का आभास मिल जाता है जिसकी सूचना वे राम को भेज देते हैं। विभीषण को लका का राजा बनाकर राम लक्ष्मण और सीता के साथ दिग्विजय पर निक-लते है, जो लक्ष्मण के अर्धचक्रवर्ती बनने के लिए जरूरी है। उसकी यह दिग्विजय, भरत चक्रवर्ती की दिग्वि-जय से मिलती-जुलती है।

चरित्र-चित्रण

दशरथ—पुष्पदन्त के अनुसार, दशरथ जन्मत जैन नही थे। प्रारम्भ मे वे हिंसक यज्ञो मे विश्वास रखते थे। अपने मन्त्री अतिशयमति के, जो जैन था, समझाने पर उन्होंने जैन धर्म स्वीकार किया।

उनका महत्त्व यही है कि वे राम-लक्ष्मण के पिता हैं। लक्ष्मण कैकेयी से उत्पन्न है, इसलिए भरत को राजपाट दिलाने के लिए वर मांगने और उससे सम्बन्धित घटनाएँ पुष्पदन्त की रामायण मे नही हैं। मन्त्री के उपदेश से यद्यपि दशरथ का मिथ्यादर्शन दूर हो जाता है फिर भी मन्त्री महाबल के अनुरोध पर वे राम-लक्ष्मण को मिथिला भेज देते हैं। परम्परा से प्राप्त काशी के छिन जाने पर दशरथ के मन मे कोई प्रतिक्रिया नही होती। राम के अनुरोध करने पर वे सीता सहित राम-लक्ष्मण को वाराणसी भेज देते हैं। स्वप्न मे सीता के अपहरण का आभास पाकर, वे इसकी सूचना राम को भेजकर अपने कर्तव्य की इतिश्री समझ लेते हैं।

जनक—जनक का चरित्र भी स्पष्ट रूप से उभरकर नही आता। सीता उनकी पालित कन्या है। वह मिथिला नगरी के राजा हैं, जो यह सोचते हैं कि यज्ञ मे पशु वध से स्वर्ग मिलता है। यज्ञ की रक्षा करना उनके लिए सम्भव नही है। इसलिए उन्होंने दूसरे राजाओ सहित दशरथ के पास यह पत्र भेजा कि जो विद्याधरो से यज्ञ की रक्षा करेगा उसे वे पृथ्वीपुत्री सीता देंगे। बहुत से उपहारो और लेख के साथ दूत दशरथ के पास आया। राम के शत्रुओ का विनाश करने पर जनक सीता का विवाह राम से कर देते हैं।

राम—जैन पुराणो के अनुसार, राम आठवें बलभद्र हैं। वे कौशल्या के नही, सुबला के पुत्र हैं। सुन्दर शरीर होने से उन्हे राम कहा गया। जिस समय राम का सुबला से जन्म हुआ तभी कैकेयी से लक्ष्मण का। कवि ने दोनो के शौर्य और सौन्दर्य का वर्णन एक साथ किया है। एक हिमगिरि के शिखर के समान है तो दूसरा अजन गिरि के शिखर की तरह। दोनों गगा और यमुना के प्रवाहो की तरह हैं। राम के तीरो के प्रसार को देखकर दुश्मन काप जाते हैं। शस्त्र और शास्त्र दोनो मे उनका समान अभ्यास है। मन्त्री महाबल और चतुरग सेना के साथ राम जनकपुरी जाते है, विद्याधरो से यज्ञ की रक्षा करने के साथ वे हिंसक यज्ञ की निन्दा करते हैं। जनक राम को सीता अर्पित कर देते है। राम के साथ सीता ऐसी प्रतीत होती है जैसे धवल मेघ के साथ बिजली। कुछ दिन राम और लक्ष्मण मिथिला मे रुकते है। इस बीच पिता दशरथ के दूत भेजने पर राम, वधू के साथ अयोध्या आते हैं। सबसे पहले वे जिन-प्रतिमा की पूजा करते हैं। प्रसन्न होकर दशरथ सात दूसरी कन्याओ का राम के साथ विवाह कर देते हैं। इसी प्रकार सोलह कन्याओ से लक्ष्मण का विवाह किया गया। वसन्त क्रीड़ा के बाद राम, दशरथ से कहते हैं कि परम्परा से प्राप्त वाराणसी नगरी अपने अधिकार मे कर लेना उचित है। पिता के सामने वे राजनीति शास्त्र का लम्बा-चौडा बखान करते हैं। अन्त मे पिता की अनुमति पाकर राम लक्ष्मण एव सीता को साथ ले वाराणसी पहुँचते है। नगर की वनिताओ पर उनके कामतुल्य सौन्दर्य की तीव्रतर प्रतिक्रिया होती है। धीरोदात्त कुलीन सामन्त राजाओ की तरह लक्ष्मण के साथ राम का नगर मे प्रवेश होता है। दही, अक्षत और सरसो स्वीकार करते हुए दोनो भाई राज्यालय मे प्रविष्ट होते हैं। किसी को प्रिय वचन से, किसी को उपहार से, किसी को रण के उद्भट शब्द से, किसी को उपकार से, किसी को नौकरी देकर सभी को सतुष्ट करते हैं। इस प्रकार दोनो भाई किसी को प्रेम से, और किसी को बाहुबल से अपने अधीन करते हैं। कितने ही वनपालो और माण्डलीक राजाओ को जीत लेते हैं।

नारद के उकसाने पर रावण मारीच की सहायता से सीता के अपहरण की योजना के साथ वाराणसी के उद्यान मे पहुँचता है, जहाँ राम वसन्त-क्रीड़ा के अनन्तर वृक्ष की छाया मे सीता के साथ विश्राम कर रहे थे। उन्हे देखकर रावण को लगता "विश्व मे एक मात्र राम कृतार्थ हैं कि जिनके पास सीता जैसी सुन्दर स्त्री है।" राम मायावी स्वर्ण मृग को पकडने के लिए दौडते है और इधर रावण सीता को उड़ा ले जाता है। लम्बा रास्ता चलने से थके हुए राम जब लौटते हैं, तो शाम को ढलता हुआ सूरज उन्हें परदार (रावण) की तरह दिखाई देता है। लक्ष्मण के यह कहने पर कि जब आप मृग के पीछे गए थे और मैं सरोवर मे था, तभी

से सीता वन में नही है। यदि वह जीवित है (हिंसक पशु यदि उन्हे नही खा गया हो) तो यह आपका प्रबल पुण्य माना जाएगा। राम मूर्छित होकर धरती पर गिर पडते है। उपचार के बाद होश मे आने पर सीता के बिना उन्हे कुछ भी अच्छा नही लगता। वह वन्य प्राणियो और पेड-पौधो से सीता के बारे मे पूछते है। खोज करने वाले अनुचरो को बास पर टँगा सीता का उत्तरीय मिलता है, जिसे लाकर वे राम को देते है। राम उसे छाती से लगाते है और अपनी आँखें पोछते है। दशरथ के स्वप्नदर्शन से यह मालूम होने पर कि सीता का अपहरण रावण ने किया है, भरत और शत्रुघ्न भी उनकी सहायता के लिए वहाँ पहुँचते है।

राम का दूत बनकर गए हुए हनुमान् सीता से राम के बारे मे कहते हैं वह तुम्हारे वियोग मे दुबले हो गए हैं। वे प्रतिदिन आपकी याद करते हैं। वह न तो बोलते हैं और न किसी चीज मे उनका मन रमता है। वह किसी स्त्री को देखने तक नही। तुम्हारा ध्यान वह उसी तरह करते है जैसे योगीश्वर शाश्वत सिद्धि का। हनुमान् राम और सीता के मिलन की अतरग पहचान बताते है। उससे स्पष्ट है कि दोनो मे एक दूसरे के प्रति प्रगाढ प्रेम था। हनुमान् जब सीता की कुशलवार्ता लेकर आते है तो देखते हैं कि दुर्ग के भीतर राम 'हा सीते, हा सीते' चिल्ला रहे है और अपनी छाती पीट रहे है—

"हा सीय सीय सकलुणु कणतु
णिय करयलेण ऊरु सिरु हणतु"

हनुमान् को देखकर वह पूछते हैं—"क्या मेरे बिना, मूर्छित होकर त्यक्त प्राण वह गिरी पडी है या मृत्यु को प्राप्त हो गई है ? वह कुशलवार्ता लाने वाले हनुमान् का प्रगाढ आलिंगन करते हैं। पचाग-मत्रणा के बाद, राम एक बार फिर हनुमान् को दूत बनाकर भेजते है। रावण की चुनौती स्वीकार कर राम लका पर चढाई के लिए प्रस्थान करते हैं। विभीषण के मिलने पर राम कहते है कि यदि चित्त से चित्त मिल जाय तो पराया भी भाई के समान हितकारी है। इसके विपरीत भाई यदि नित्य बैर बढाता है तो वह दुश्मन है। युद्ध मे रावण माया के बल से सीता के सिर को काटकर राम के सामने डालता है। राम सीता को मरा हुआ जानकर मूर्छित हो जाते हैं। कठिनाई से होश मे आते है। लक्ष्मण के द्वारा रावण के मारे जाने पर, आनन्द से उद्वेलित राम रोमाचित हो उठते है। वे लोगो की मनोकामनाओ को पूरा करते है। कवि कहता है कि राम के समान कोई नही है जिन्होंने रावण की मृत्यु होने पर विभीषण को राज्य दिया और सुधियों तथा सुभटो का प्रतिपालन किया।

पुष्पदन्त की रामायण मे सीता के अपहरण या रावण के नन्दनवन मे रहने के कारण लोक मे कोई सुरसुरी नही उत्पन्न होती। और, न स्वय राम के मन मे इस बात को लेकर उथल-पुथल है कि रावण ने सीता का अपहरण किया। बल्कि राम के आदेश से अगद हनुमान् आदि अशोक वन मे जाकर सीतादेवी की प्रशसा कर केशव की विजय की सूचना देते है और उन्हे ले आते है। सीता राम से मिलती है। कवि उपमाएं है—

"आणिय मिलिय देवि बलहद्दहउ, अमरतरगिणि णाइ समुद्दहु।
हेमसिद्धि णावइ रससिद्धउ, केवलणाणरिद्धि ण बुद्धहु।
दिव्ववाणि जाणिय परमत्थहु, वर-कइमइ ण पड़ियसत्थहु।
चित्तसुद्धि णं चारुमुणिदहु, ण सपुण्णकंति छणयदहु।
णं वर मोक्खलच्छि अरहंतहु, बहुगुणसंपय ण गुणवंतहु। 78/27

—मानो गगा समुद्र से जा मिली हो, स्वर्णसिद्धि रससिद्धि से मिल गई हो, मानो केवलज्ञान की ऋद्धि बुद्ध से, दिव्यवाणी परमार्थ से जा मिली हो, मानो पडित समूह से श्रेष्ठ कविबुद्धि मिल गई हो, भव्य मुनियो को चित्तशुद्धि मिल गई हो, या फिर पूर्णचन्द्र को सम्पूर्ण कान्ति। मानो अरहन्त से श्रेष्ठ मुक्ति लक्ष्मी जा मिली हो, या गुणवान् को मानो बहुगुण सपत्ति मिल गई हो।

राम रोती हुई मदोदरी को समझाते हैं, शोक विह्वल इन्द्रजीत को धीरज बँधाते है, रावण के समस्त भाइयो को बुलाकर, नागरिको की शका दूर कर, महामन्त्रियों से विचार-विमर्श कर, विघ्नकारी तत्त्वो का उन्मूलन कर, जिनेन्द्र का अभिषेक कर, यज्ञ और विविध दान कर, शत्रु और मित्र के प्रति मध्यस्थ भाव धारण कर, सामन्तो को अपने पक्ष मे यथायोग्य निमन्त्रित कर, गुहो और ब्राह्मणो आदि की पूजा कर, धर्म का पालन कर और अधर्म से डरकर, राम विभीषण को लका के राज्य पर आसीन कर देते है, उन्हे राजपट्ट बाँध देते हैं। राम के विजयाराम तथा सात और पुत्र होते है। पश्चात् राम दुस्वप्न देखते है। वे शान्ति विधान करते हैं। लक्ष्मण की मृत्यु से राम शोक मग्न हो उठते हैं और अत मे शिवगुप्त मुनि से श्रावक व्रत और फिर दीक्षा ग्रहण कर मोक्ष प्राप्त करते है।

राम का अन्तर्द्वन्द्व—हनुमान् और सुग्रीव को शरण देने के कारण, जब वालि युद्ध की चुनौती देता है तो राम की स्थिति 'इस ओर कुआ और उस ओर खाई' वाली हो जाती है। इधर वालि उधर रावण। एक तो सूर्य और फिर ग्रीष्म काल ! एक तो तम और दूसरे मेघजाल ! एक तो अश्व और फिर कवच से युक्त ! एक तो यम और फिर पूर्णकाल ! एक तो साँप और दूसरे विषैली दृष्टि ! एक तो शनि और दूसरे वृष्टि ! एक तो दुर्धर दशमुख विरुद्ध है, और दूसरे वालि क्रुद्ध है !···मित्र क्षीण हैं और शत्रु बलवान है !' (75/4)

हनुमान् सीता की कुशलवार्ता के प्रसग मे राम से कहते हैं—

"णववणकंतहु , जेंव वसतहु।
सुअरइ कोइल, धीरसें हल।
जिणगुण जाणइ, तिह तुह जाणइ।
तुह सा राणी, खति समाणी।
भव्वह रुच्चइ, खणु वि ण मुच्चइ।
कुल हर जुत्ति व, धम्मपवित्ति व ॥" (74/1)

—जिस तरह नववन से सुन्दर वसत को कोयल याद करती है, उसी तरह वह तुम्हे याद करती है। जिस तरह जानकी धीरता से धरती और जिनगुण को जानती है वैसे ही तुम्हे जानती है। तुम्हारी वह रानी शाति के समान भव्यो को अच्छी लगती है। वह कुलधर की एक क्षण को भी नही छोडी जाती युक्ति और धर्म की पवित्रता की तरह है।

सीता—पुष्पदन्त के अनुसार सीता रावण की पुत्री है, पूर्वभव की, विद्यासाधना मे रत मणिवती नाम की। पूर्वभव मे काम पीडित रावण ने उसका ध्यान विचलित करना चाहा था, तब तपस्विनी कन्या ने यह निदान बाँधा था कि वह अगले जन्म मे इस कामान्ध की बेटी के रूप मे जन्म ले और इसकी मौत का कारण बने। अनिष्ट की आशका से रावण शैशव अवस्था मे उसे मजूषा मे रखवाकर मारीच के जरिए जनकपुरी के उद्यान मे गडवा देता है। वनपाल लाकर उसे राजा जनक को देता है। जनक उसे बेटी की तरह पालते हैं। सीता अनिन्द्य सुन्दरी है। उसकी सुन्दरता पर कवि सारे सौन्दर्य-उपमान निछावर कर देता है। धनुष की प्रत्यचा चढा देने पर, राम से उसका विवाह होता है।

सीता का वास्तविक चरित्र तब शुरू होता है जब नारद मुनि के उकसाने पर रावण सीता के अपहरण की योजना बनाता है। सबसे पहले चन्द्रनखा दूती बनकर सीता के पास आती है। उसे देखकर वह विद्याधरी कहती है कि रूप मे सीता के सामने उर्वशी और रभा भी कुछ नही हैं। चन्द्रनखा राम को पुण्यवान मानती है। पूछने पर वह स्वय को वनपाल की माँ बताती है। वह जानना चाहती है कि उन्होने पूर्व जन्म मे कौन-सा व्रत किया जिससे इतनी सुन्दर हुई, वह भी उस स्वाधीन यौवन को साधेगी। सीता उससे कहती है—तुम नारीत्व क्यो चाहती हो ? रजस्वला होने पर वह चडाल के समान है। वह अपने कुटुम्ब का स्वामित्व प्राप्त नही कर सकती। किसी कुल मे पैदा होती है और बडी होने पर किसी दूसरे कुल मे ले जाई जाती है। स्वजनो के वियोग पर रोती है, आँसू बहाती है। मत्रणा के समय किसी को अच्छी नही लगती। जब तक जीती है पराधीन जीती है। दुर्भग, दुष्ट, दुर्गंध, दुराशय, अधा, बहरा, रोगी, गूंगा, क्रोधी, निर्धन, कुटिल जैसा भी पति मिलता है नारी को उसी को मानना होता है। दूसरे का पति कितना ही बडा हो, वह पिता के समान है। विधवा होने पर मूड मुडा कर तप करना पडता है। बचपन मे पिता रक्षा करता है, जवानी मे पति रक्षा करता है, बुढापे मे बेटा रक्षा करता है, ताकि वह कोई खोटा काम न कर बैठे। भोजन और सोने मे उसे दूसरे के अधीन रहना पडता है। इसलिए तुम महिलापन को क्यो मागती हो ? यह सुनकर चन्द्रनखा अपना-सा मुँह लेकर रावण के पास जाकर कहती है—सीता अपने व्रत से नही टल सकती। भले ही धरती अपने स्थान से डिग जाए। रावण के अपहरण करने पर सीता मूर्छित हो जाती है, स्वर्णपुत्तलिका की तरह वह धरती पर पडी है। सुखीजनो की याद से उसकी वेदना दुगुनी बढ जाती है। सीता यद्यपि निश्चेतन हो जाती है फिर भी उसका वस्त्र नही ढलता। जार की चचल दृष्टि आखिर कहा ठहरेगी ? कवि कहता है कि सती और सुभट के मजबूती से बँधे हुए वस्त्र (परिकर) हाथ से नही छूटते। मौत का अवसर आ जाने पर भी दोनो का परिकर बन्ध नही छूटता—

"दढ णिवसणु सइहि सुहडहु करासि ण वियट्टइ।
मरणि समावडिइ परियरिविहि विहि वि ण फिट्टइ॥" 72/7

रावण उसको इसलिए नही छूता क्योकि उसे अपनी विद्या के चले जाने का डर है।

दूतियो द्वारा रावण की प्रशसा किये जाने पर, सीता उन्हे मूर्ख समझकर चुप रहती है। रावण को चक्ररत्न की प्राप्ति होने पर भी सीता डरती नही। राम की खबर मिलने तक वह भोजन छोड देती है। हनुमान् जब उनसे राम का सन्देश कहते हैं तो वह समझती है कि उसे भोजन कराने के लिए शत्रु का यह कूट-कपटजाल है। लेकिन हनुमान् के गूढ अभिज्ञान वचन सुनकर वह विश्वास कर लेती है कि यह रामदूत है, और भोजन कर लेती है। वह मदोदरी से कहती है कि उसके जीते-जी उसे राम के पास भेज दिया जाए। अत मे तपश्चरण कर वह सोलहवें स्वर्ग जाती है।

भरत और लक्ष्मण—यद्यपि पुष्पदन्त ने प्रस्तावना मे कहा है, कि इसमे (उनकी रामकथा मे) राम का यश और लक्ष्मण का पौरुष है। परन्तु लक्ष्मण के चरित्र का पूर्ण विकास नही हो सका है। इसी प्रकार कवि राम और रावण के युद्ध को अनेक रसभाव का उत्पादक और भक्ति से भरे भरत के चरित्र का कारण मानता है, परन्तु उसमे भरत का चरित्र कही नही दिखाई देता। फिर पुष्पदन्त द्वारा रामकथा मे राम का वनवास है ही नही। राम लक्ष्मण के साथ अपने पूर्वजो को पुन अपने आधिपत्य मे लेने के लिए जाते है, जहा नारद के कहने पर रावण सीता का अपहरण करता है। इसकी सूचना दशरथ राम को भेज देते हैं। परपरागत रामकथा के जिन प्रसगो को पुष्पदन्त ने विस्तार दिया है, वे है—सीता अपहरण, हनुमान् के गुणो का विस्तार, कपटी सुग्रीवराज का मरण, तारा का उद्धार, लवण-समुद्र का सतरण और राक्षस वश का विनाश।

शृंगार, ऋतु और प्रकृति वर्णन

शत्रुओं के दमन और यज्ञ की निवृत्ति के फलस्वरूप राजा जनक, सीता को राम के लिए दे देते हैं। हलधर सीता को ऐसे ग्रहण करते है, मानो जलधर ने बिजली को पकड़ लिया हो। मानो परमात्मा ने त्रिभुवन लक्ष्मी को ग्रहण किया हो, मानो चन्द्रमा से कुसुममाला विकसित हुई हो। दशरथ दूत भेजकर राम को अयोध्या बुलवाते हैं। राम सीता के साथ अयोध्या आकर घी, दूध और धाराजलो से जिनेश्वर प्रतिमा का अभिषेक करते हैं। राजा दशरथ सतुष्ट होकर सात दूसरी कन्याओं से राम का विवाह कर देते हैं तथा लक्ष्मण का सोलह दूसरी कन्याओ से। इसी पृष्ठ भूमि मे वसत ऋतु का आगमन होता है। कवि कहता है मानो वसन्त राम-लक्ष्मण का विवाह देखने आया हो।

वसन्त का यह रूप देखिए—'अभिनव सहकार वृक्षो से महकता हुआ, कलाली की तरह मधु धाराओ से बहता हुआ, हेमत की प्रभुता को समाप्त करता हुआ, दसो दिशाओ में अपने चिह्नो को प्रेषित करता हुआ, नवाकुरो से चमकता हुआ, पल्लवो से हिलता हुआ, सुन्दर वावडियो के जलरूपी चीर को हटाता हुआ, नीले शैवाल चीर, सूर्य के तीक्ष्ण प्रताप और दिनो की लम्बाई को दिखाता हुआ, अशोक वृक्षो की पत्र-ऋद्धि, मोक्ष (अर्जुन) वृक्षो की दुष्ट फागुन के द्वारा मोक्षसिद्धि (पत्र क्षरण) प्रकट करता हुआ, बाउल पक्षियो के शरीरो को छाया करता हुआ, वनलक्ष्मी के ओस रूपी आंसुओ को पोछता हुआ, तिलक वृक्षो के पत्रो मे तिलक विलास करता हुआ, लतारूपी कामनियों मे रस उत्पन्न करता हुआ, प्रियो के अभिलाषा कवच को चीरता हुआ, कनेर पुष्पो के पराग से धूसरित करता हुआ, मानिनियों के मानगिरि को चूर करता हुआ, मँडराती हुई भ्रमरमाला से गुनगुनाता हुआ, उत्तुग वृक्षों पर दिनो को गँवाता हुआ, मन्दार कुसुमो के पराग से महकता हुआ, रमण की अभिलाषा के विलास से घूमता हुआ।'

कवि कहता है कि जो अभी तक वन मे चुपचाप विचरण कर रहा था वह सुन्दर कोकिल अब मधु का सेवन कर रहा है और बार-बार आलाप कर रहा है। मतवाला कौन प्रलाप नही करता ?

(70/4)

वसत की उन्मादकता मे राम का अपनी प्रेयसियों के साथ क्रीड़ा करने का दृश्य अनोखा ही है—

"वीणा बज रही है, आपानक पिया जा रहा है। प्रियजनों के चित्त साधे जा रहे हैं। सप्त स्वरो मे मधुर गाया जा रहा है। निरन्तर गहरा प्रेम बढ रहा है। पराग से प्रचुर मल्लिका पुष्पो की माला बाँधी जा रही है। सुगधित द्रव्यो का छिड़काव किया गया है। नूपुरो की झकार की तरह मयूर नाच रहे हैं। जहाँ भ्रमर भ्रमण कर रहे हैं ऐसे दमनक पुष्पों के घर में फूलो की सेज पर सोया जा रहा है। कामदेव अपने पुष्प तीरो को साध रहा है और तपस्वियों के बड़प्पन को नष्ट कर रहा है। रूठी हुई प्यारी को मनाया जा रहा है, उसे काम की सुखद पीड़ा दी जा रही है। सरोवर की जलक्रीडा से शरीरो को सिंचित किया जा रहा है, यन्त्रों से केशर मिश्रित जल छोडा जा है। दिखाई पडने वाले अंगो से रस बढ रहा है। प्रणयिनियो के सूक्ष्म कटिवस्त्र गीले हो रहे हैं। नील कमलो की मालाओ के ताडन से, सुन्दर खिले हुए पलाश वृक्षों से प्रज्वलित तथा जिसमे प्रिय-प्रियतमाएँ अपनी इच्छानुसार एक-दूसरे को मना रहे हैं ऐसा वसन्त तेजी से बढ रहा है।" (70/15)

रावण की दूती जब वाराणसी पहुँचती है, तो उसके निकट स्थित नदन वन इस प्रकार दिखाई देता है—

"जिसमें धरती वृक्षों की जडो से अवरुद्ध है, आकाश पुष्प-पराग से धूसरित है। जहाँ वृक्ष-शाखाओ पर वन्दर क्रीडा कर रहे हैं, ताड और तमाल के वृक्ष आसमान को छू रहे हैं। जहाँ विल्व चिंचा और पुष्प

वृक्षों के दल हैं, जिसमें हिरनों ने दाँतों से अकुरों को कुतर डाला है, जहाँ स्वच्छ और प्रकंपित जलकण उछल रहे है, जो अगुरु और देवदार वृक्षो से सघन है, जिसमे वृक्षों की रगड से आग निकल रही है, दिशाओ के मुख सुरभित धुएँ की गन्ध से सुवासित है, अशोक वृक्षो के पत्ते हिल-डुल रहे हैं, हवा से प्रेरित माधवी-लता के पत्र धरती पर उड रहे है, जहाँ कीर, कुरर, कारण्ड बाल-लताओ के घरो मे कलरव कर रहे हैं, अलको की तरह जहाँ भ्रमर समूह उड रहा है, जो विविध केलिगृहो से विराट् है, जहाँ मनुष्य केतकी के पराग से सुवासित हो उठे हैं, जिसमे विद्याधर, यक्षेन्द्र और दानवेन्द्र की समातर क्रीडा हो रही है।" (71/12)

कवि रावण की दूती के माध्यम से लक्ष्मण की प्रेम-क्रीडा का शब्दचित्र इस रूप मे खीचता है—

"कोई एक मयूर के साथ हास्य-पूर्वक नृत्य करती हुई लोगों के नयनों को भाती है, मृणाल के अत मे स्थित भ्रमरो की पूँछ से अलकृत तथा दोनो पार्श्व भागो पर रखा हुआ कमल ऐसी शोभा देता है जैसे कामदेव का बाण हो, जिसे वह देवो और मनुष्य के हृदय को विदारण करने के लिए दिखा रही है। हंस के साथ जाती हुई कोई अपनी गति का लीला-विलास भी भूल जाती है। भौंरा किसी के करतल पर आकर क्या बैठ जाता है वह मूर्ख अपने को शतदल पर बैठा हुआ मान रहा है। किसी के निकट आ लगा हुआ हरिन उससे दीर्घ कटाक्ष की माँग करता है। किसी ने कमल को अपने कान पर धारण कर लिया है पर नेत्रो से विजित होने के कारण बेचारा मुरझा गया है। किसी ने नील कमलो की किंकिणियो से युक्त लता का कटिसूत्र बाँध रखा है। किसी एक ने जाकर जबर्दस्ती राम को पकड़ लिया और उन्हें पराग पिंजरित (पीला) कर दिया मानो सध्या राग ने चाद को पीला कर दिया हो। या फिर शारदीय मेघ शोभित हो उठा हो। किसी ने जुही का फूल उपहास मे दिया। किसी ने अपना सरस मुख दिखाया। जाति कुसुम को जातिबाला क्यो कहा जाता है जबकि उसका आनन्द सैंकडो भ्रमर उठाते हैं फिर भी आदरणीया वह उसे अपने सिर पर बाँधती है! अपना मतलब सधने पर सभी लोग मोह मे पड जाते है। कोई धूर्त भ्रमरी मोगरे के पुष्प को छोडकर अपनी देह हिलाकर गुनगुनाकर सर्वांग सुरभित प्रिय मरूबक पर जा बैठती है।" (71/13)

"कोई दर्पण मे चमकते हुए अपने दाँतो के साथ कुंद पुष्पो को देखती है। अपनी देहगंध से मौलश्री पुष्प की ओर अधरो के सबध से बिम्बाफल की परीक्षा करती है। कोई फूले हुए सहकार वृक्ष को देखती है, कोई बाला वासुदेव के साथ बाहुयुद्ध चाहती है। नवकलियो से मतवाला और बोलता हुआ निष्कपट शुक वियोग दु ख को कुछ भी नही मानता। मन को कुपित करनेवाले उसे उसने कसकर पकड लिया, इसी से वह (शुक) मुख मे (चोंच में) लाल रग का हो गया। कोई शुभ करनेवाली, हाथ मे इक्षुदड लिये हुए ऐसी प्रतीत होती है, मानो विषम धनुष को धारण किये हुए हो। कोई पुष्पमाला का इस प्रकार सचार करती है, मानो कामदेव तीरो की पक्तियाँ दिखा रहा हो। कोई पलाश पुष्पो को इकट्ठा करती है, और लक्ष्मण के लिए उपहार मे देती है। स्निग्ध लाल कुटिल और तीखे वे ऐसे मालूम होते है, मानो वसत रूपी सिंह के नख हो। कोई काली कोयल को देखती है और पूछती है। दूसरी हँसकर उत्तर देती है कि लोगो के विरहानल के धुए से काली यह इस समय भी बोल रही है। इसका मधुर मधु मे रत विष दोनो ही प्रवासियो के मानस को आहत करता है। यदि आज मुझ से लक्ष्मण रमण करता है तो कोयल का यह प्रलाप मुझे सुख देता है।"

"सीता की अंजुलियों के पानी से सींचा गया नील कमल पुष्प से पवित्र राम के उर पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो दर्पणतल मे मृग से लाछित पूर्ण चन्द्र शोभित हो। श्याम नारायण (लक्ष्मण) ने किसी महासती को इस प्रकार सीच दिया, मानो मेघ ने वनस्पती को सीच दिया हो, मानो वह (नाभि का) रोमावली रूपी अकुर को छोड रहा हो, मानो वह मुखकमल से खिल गई हो। कोई सघन स्तन रूपी फल-सपदा को दिखाती है। जैसे कामदेव की सुन्दर लता हो। बार-बार सींचे जाने पर वह, जिसमे कपूर के कण

उछल रहे हैं, ऐसे लीलापूर्वक हंसती है। प्रिय के हाथों से नहलाई गयी किसी की चोली का सूत्रजाल टूट जाता है, शिथिल गीला वस्त्र गिर जाता है, वह लजा जाती है, और पानी मे अपना अग छिपाती है। कोई लक्ष्मण के मुख की कांति से श्याम रक्त कमल को काला देखती है, सखियो को दिखाकर अपना विचार वताती है। कोई कानों से लग-कर कहती है, हे ललित ! इसे सीचो यह पद्मावती है। जिससे यह आदरणीय विरहिणी जीवित रह सके इसे केशर का लेप दो। हे देव, इसे वक्षस्थल से पीड़ित करो।

यह सुनकर मानश्रेष्ठ कुमार ने एक को वस्त्र के अचल से पकड लिया तथा एक और दूसरी के स्तनो पर थोडा-थोडा मुसकाते हुए उसने जलयन्त्र से जल छोडा दिया।" (71/15-16)

स्त्रियों के प्रकार

सुन्दर वर या वधू पाने की चाह मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति है, जो मानव-मात्र मे पाई जाती है। भारत की पितृप्रधान सयुक्त परिवार प्रथा मे (राजपरिवारो को छोडकर) वर-वधू के चयन का अधिकार परिवार के प्रमुख को था। परिवार के स्तर और वर-वधू के भावी सुखी जीवन की दृष्टि से सम्बन्ध तय करते समय जिन बातो पर विचार किया जाता रहा है उनमे एक बात यह भी थी कि सामुद्रिक शास्त्र के लक्षणो के अनुसार वर और कन्या उपयुक्त है या नही। कभी-कभी इसका दुरुपयोग भी होता था। दुरुपयोग करनेवाले हर युग मे रहे हैं। राजा सगर की घटना इस बात का बड़ा दिलचस्प उदाहरण है कि किस प्रकार चाटुकार मन्त्रियो द्वारा सत्ता-प्रमुख उल्लू बनाए जाते रहे है। राजा सगर चारणयुगल नगर के राजा सुयोधन की कन्या सुलसा के स्वयवर मे जाता है। कन्या की माँ अतिथि अपने भाई के पुत्र मधुपिंगल से उसका विवाह करना चाहती है। इधर, सगर की दासी मदोदरी कन्या को बरगला लेती है। जब यह पता चलता है कि कन्या मधुपिंगल को ही दी जाएगी, तो सगर का मन्त्री एक चाल चलता है। वह एक कपट-वाक्य ताड़पत्र पर लिखकर चुपचाप मजूषा में बन्दकर खेत मे गडवा देता है। दूसरे दिन हल चलाते समय किसान को वह मंजूषा मिलती है। वह राजा सुयोधन को दिखाई जाती है। उसे भली-भांति पढा जाता है। इतने मे मन्त्री ब्राह्मण के छद्म वेश मे आकर अत्यन्त मीठे राग मे राजा को समझाता है कि जो वर काना, बौना, पीला, अन्धा, गूंगा, लगड़ा, निर्धन, दुर्बल, बुद्धिहीन, विह्वल, मान और लज्जा से रहित, रोग से पराजित, कोढ के कारण नष्ट शरीर, कटे हाथ-पैर वाला, निम्न काम करनेवाला, स्त्रियो और बच्चो की हत्या करनेवाला, कठोर, निर्दय, साधुकर्म की निन्दा करने वाला, जिसका अपयश बढ रहा हो, खोटे कुल वाला, आलसी, वृद्ध और कुत्सित देह वाला तथा दैन्य को प्राप्त हो ऐसे लोगो को तो कुल और धन से हीन कन्या भी नही दी जानी चाहिए। जो राजा पिंगल को विवाह के मडप मे जाने की अनुमति देता है वह अपनी कन्या के लिए वैधव्य और दुख ही लायेगा।" (69/20-21)

ऊपर खोटे वर के जो लक्षण गिनाये गये है, उन्हें देखकर सामान्य आदमी भी अपनी कन्या ऐसे वर को नही देगा। लेकिन यह कहना कि पिंगल को कन्या देना उसके वैधव्य को बुलाना है, मन्त्री का कपट कथन है।

सुनकर मधु पिंगल चुपचाप चल देता है और राजा सगर सुलसा से विवाह कर लेता है। जब रावण सीता पर अनुरक्त होता है तो मय उससे कहता है कि किसी स्त्री को अपने अधिकार मे करने के पहले यह देख लेना जरूरी है कि वह भी अनुरक्त है या नही, और यह भी कि कामशास्त्र के अनुसार वह उपयुक्त है या नही। कामशास्त्र मे स्त्रियो की चार जातियाँ बताई गई हैं भद्रा, मदा, लता और हंसा। इनमे भद्रा सर्वांग सुन्दर होती है, जबकि मदा मोटी, भारी और बडे स्तनोवाली। लता लम्बी, छरहरी, पत्ते की तरह दुबली होती है, जबकि हंसा ठिगनी और मासल।

इसिदिट्ठु सुपमत्थु जइ वेउ परमत्थु।
तइ खग्गु कि णेय, जज्जाहि कुविवेय।" (69/32)

वेद मूलत ज्ञान को कहते हैं, वह जिस ग्रंथ मे हो वह भी वेद कहा जाता है। नारद का कहना है कि 'वेद' हिंसामूलक नही हो सकता। उनका दूसरा तर्क यह है कि यदि 'वेद' पुरुषकृत नही है, तो प्रश्न उठता है कि वर्ण (क ख ग घ ङ आदि) आकाश मे उत्पन्न होते हैं या मनुष्य के मुख मे ? यदि आकाश मे स्फुरित होते हैं तो अक्षर कहाँ ? बिन्दु कहाँ ? अर्थ कहाँ और छन्द कहाँ ? जिसमे मन ने प्रयत्न किया है, ऐसे मनुष्य के मुख के बिना उक्त चीजें (अक्षर, बिन्दु आदि) पैदा नही हो सकते। कहाँ कार्य और कहाँ कारण ? कहाँ ज्ञान और कहाँ ज्ञेय ? कही आकाश मे कमल हो सकता है ? कही निरूप में शब्द हो सकता है ? अरे दूसरो का मांस निगलनेवाले द्विज (सभी नही) वेद मे हिंसा कैसे ?

"जई पोरिसेओ वि, णउ होइ भणु तो वि।
वण्णज्झुणि गयणि कि फुरइ णरवयणि।
अक्खरइ कहिं बिंदु कहिं अत्थु कहिं छंदु।
कय मणपयत्तेण, विणु पुरिसवत्तेण।
कहिं हेउ कहिं वेउ, कहि णाणु कहिं णेउ।
कहिं गयणि अरविंदु णीरूवि कहिं सद्दु ॥" (69 32)

नारद का उक्त तर्क वस्तुत पुष्पदन्त का तर्क है जो एक भाषा वैज्ञानिक तर्क है। 'वेद' उच्चरित या लिखित ज्ञान का नाम है जो वर्णों (स्वरों और व्यजनो) वाला है, वर्ण (ध्वनि) आकाश मे नही, मनुष्य के मुँह मे ही स्फुटित होते है। वे अपने आप नही होते, स्थान और प्रयत्न के योग से ध्वनि की उत्पत्ति मानवमुख मे होती है। (पुरुपवत्रेण)। मनुष्यमुख से ध्वनि के उच्चारण के पूर्व मन प्रयत्न करता है। भाषा का आधार ध्वनि है। ध्वनि के उत्पन्न होने की उक्त व्याख्या ध्वनि-उत्पत्ति की पुष्पदन्त की भाषा व्याख्या से पूरी मेल खाती है—

"आत्मा बुद्ध्या समेत्यर्थान्, मनो युङ्क्ते विवक्षया।
मन कायाग्निमाहन्ति स प्रेरयति मारुतम् ॥"

अर्थात् आत्मा बुद्धि से अर्थों को इकट्ठा करती है और बोलने की इच्छा से मन को प्रेरित करती है। मन कायाग्नि को उद्बुद्ध करता है, वह हवा (प्राणवायु) को प्रेरित करता है। उसमे स्वर पैदा होता है। इससे स्पष्ट है कि भाषा अभिव्यक्ति की मानसिक प्रक्रिया है। पुष्पदन्त का तर्क है कि वेद चाहे लिखित हो या उच्चरित, अक्षरात्मक होने से वह पौरुषेय है। कहने का अभिप्राय यह कि धर्म का निर्णायक तत्त्व मनुष्य का विवेक है। धर्म का काम धारण करना है। जो चेतना का सहार करनेवाला हो, वह धर्म नही हो सकता।

"होई अहिंसइ धम्मु
हिंसइ पाउ णिरुत्तउ"
(महापुराण 69/30)

मनुष्य की पवित्रता की कसौटी

मनुष्य की पवित्रता उसके आचरण की पवित्रता है। "यदि गंगा का जल पवित्र है तो वह मल-मूत्र क्यो बनता है ? गंगा का स्नान यदि पापो का हरण करनेवाला है तो फिर मछलियो को मोक्ष क्यो नही होता ? यदि मिट्टी देह मे लगाने से अंधकार दूर होता है तो सुअर को स्वर्ग विमान मे होना चाहिए ? यदि मृगचर्म धर्म से उज्जवल है तो मृग समूह को दुनिया मे श्रेष्ठ होना चाहिए ? इसलिए जो द्विज मांस खाता है, वह श्रेष्ठ नही हो सकता। यदि दूब (दर्भ) से धर्म होता है तो मृगकुल धरती मे क्यो भटकता फिरता है ? वह रात दिन घास चरता है, फिर इन्द्र के विमान मे क्यो नही प्रवेश करता ? गाय या काकपक्ष के स्पर्श से अथवा सोकर उठने पर घी देखने से यदि पाप नष्ट होते है और लोग प्रवर (देव/बड़े) बनते है तो बैलो और कौओ को स्वर्ग मे देव होना चाहिए ? निष्कर्ष यह कि मनुष्य की पवित्रता की कसौटी हिंसक कर्मकाण्ड नही बल्कि दूसरे को अपने समान समझना है—

'जो परु अप्पाणउ समु गणइ'

दूती प्रसंग और नारी मूल्य

मारीच के परामर्श पर, रावण अपनी बहन चन्द्रनखा को सीता के पास दूती बनाकर भेजता है। वाराणसी के निकट चित्रकूट वन मे सीता को देखकर पहले तो विद्याधारी चन्द्रनखा सोचती है कि सीता मान को चूर-चूर करने वाली उर्वशी, गौरी, तिलोत्तमा और रंभा से भी अधिक रूपवती है, वह काम की मल्लिका है। यह विचारती हुई वह शीघ्र बुढिया बन जाती है और युवतियो का मनोरंजन करने लग जाती है। एक रानी पूछती है—"तुम कौन हो ! किस लिए यहाँ आई ? क्या देख रही हो ? चित्रलिखित की तरह क्यों रह गई हो।" उत्तर मे दूती कहती है—"मैं यहाँ के वनपाल की माँ हूँ। यह बताओ कि पूर्वभव मे तुमने क्या व्रत किया था जिससे तुम्हें यह रूपराशि मिली ? मैं उस व्रत को करना चाहती हूँ।" यह सुनकर सीता ने उसे डाँटा, "तुम स्त्रीत्व क्यो चाहती हो ? यह तो सबसे खराब है। रजस्वलाकाल मे वह चंडाल की तरह है। उसे कभी अपने वंश का स्वामित्व नही मिलता। किसी एक कुल मे उत्पन्न होती है और बड़ी होने पर किसी दूसरे के द्वारा ले जाई जाती है। स्वजन के निधन पर आठ-आठ आँसू बहाती है। जब घर मे कोई मंत्रणा की जाती है तो कोई उससे नही पूछता। जब तक वह जीती है वह परवश जीती है। फिर उसे जैसा भी पति (अभागा, दुष्ट, दुर्गन्धयुक्त, दुराशयी, अंधा, बहरा, पागल, गूंगा, असहिष्णु, निर्धन और कुटिल) मिले उसी को स्वीकारना पड़ता है। उधर चाहे चक्रवर्ती हो या इन्द्र, कुलगुणधारी स्त्री होकर उसे पिता-तुल्य मानना चाहिए। अपनी कुल मर्यादा का उल्लंघन करना ठीक नही। इस नारी जीवन से क्या ? विधवापन मे सिर घुटाओ और तपश्चरण से स्वयं को दण्डित करो। मूक बचपन मे पिता रक्षा करता है, जवानी मे पति रक्षा करता है, उसी प्रकार बुढापे मे बेटा रक्षा करता है जिससे वह कुल मे कलंक न लगाए। उसका घूमना-फिरना दूसरो के अधीन है। घर यानी सोने और खाने के जेलखाने से महिला की मुक्ति नही। बुढापे के समय बुड्ढी होने पर जो महिलापन अत्यन्त अभागा होता है, उसमे आग लगे, वह तुमने क्यो माँगा ?" सीता की यह प्रतिक्रिया सुनकर दूती का मुख स्याह हो जाता है। वह समझ जाती है कि सीता के चरित्र का खंडन संभव नही। इसके दृढ संकल्प के सामने मेरी धूर्तता नही चल सकती। वह नौ दो ग्यारह हो जाती है। यह तो हुआ एक पक्ष। उक्त कथन का दूसरा पक्ष यह है कि इसमे मध्ययुगीन भारतीय नारी (कुलीन) की स्थिति और पीडा की यथार्थ अभिव्यक्ति तो है परन्तु उसका समाधान आध्यात्मिक है। (महापुराण 72/22)

रावण का सामंतवादी दृष्टिकोण

प्रेम प्रसंग मे बहन से बढकर विश्वसनीय दूती दूसरी नही हो सकती, हालाँकि सभी बहनें दूती नही होती। रावण चन्द्रनखा की बात भी नही मानता यद्यपि वह कहती है कि चाहे रागद्वेष जिनेन्द्र को नष्ट कर दे परन्तु तुम सीता जैसी सती का उपभोग नही कर सकोगे।" रावण का उत्तर है, "जो अच्छा लगे उसे अवश्य वश मे करना चाहिए। क्या साप के भय से नागमणि को छोड दिया जाए? वह सीता के सतीत्व मे विश्वास नहीं करता। उसका तर्क है कि सज्जन की सज्जनता, पुरिष की प्रभुता, पहाड़ की हरियाली और सती का सतीत्व, दूर तक रहते हुए ही सुनने मे अच्छे लगते हैं। पास आने पर वे तार-तार खण्डित दिखाई देते है—

"अवसु वि वसि किज्जइ ज रुच्चइ,
किं विसभइयइ फणिमणि मुच्चइ
अलसहु सिरिदूरेण पवच्चइ।
सुहिसयणत्तणु पुरिसपहुत्तणु,
गिरिसमसिणत्तणु सइहि सइत्तणु।
दूरयरत्थु सुणंतह चंगउ,
पासि असेसु वि दरिसियभंगउ।"

(महापुराण 71/21)

सीता को देखकर रावण की प्रतिक्रिया है कि जो ऐसे स्त्रीरत्न का भोग नही करता उसे घरबार छोडकर मुनि होकर वन मे चले जाना चाहिए।

रावण जब सीता से कहता है "राम-लक्ष्मण की बात छोडो, दशरथ भी मेरा दास था। जब सिर का चूडामणि उपलब्ध हो, तो पैरो के आभूषण का क्या करना? नौकर की स्त्री की देह का क्या गौरव? खडाऊँ को मणिमण्डन से क्या? मेरी दासी होते हुए भी तू महादेवी हो सकती है। आती हुई लक्ष्मी को हाथ मत दे।" तो इसमे नारी के प्रति उसके सामंतवादी दृष्टिकोण की स्पष्ट झलक मिलती है।

कवि और प्रकृति का आक्रोश

स्वर्णमृग दिखाकर रावण जब सीता का अपहरण करता है तो पुष्पदत का कविहृदय सीता के चरित्र की दृढता की तुलना उस सुभट से करता है जो अतिम क्षण तक अपने परिकर को नही छोडता (72/7)। पति के वियोग से अस्तव्यस्त सीता विधिवश, रावण के हाथ से छूटकर पहाडी प्रदेश मे स्खलित हो जाती है, उस समय वह ऐसी प्रतीत होती है, जैसे स्वर्णनिर्मित पुतली हो—

"णं वाउंल्लिय कामघडिय।" (72/7)

फिर बेहोश होने पर भी उसका हाथ परिधान से नही हटता। जार (रावण) की चचल दृष्टि उस पर कैसे घूम सकती है?

"परिहाणु ण तो वि ताहि ढलइ,
चल जार दिट्ठि कहिं परिखलइ।"

फिर भी परस्त्री का लोभी वह दुष्ट वहाँ आ धमकता है। गाँव का कुत्ता कभी लज्जित होता है ?

अब प्रकृति की प्रतिक्रिया देखिए .

"गिरते हुए, अपने लाल कोपलों से वृक्ष रो रहा है कि हे रावण, तू दूसरे की स्त्री क्यों लाया ? वन अपनी शाखाएं उठाकर कह रहा है कि हाय नारीरत्न का मरण आ पहुँचा ! भ्रमर कान के पास गुन-गुना कर कहता है, हे स्वामी, यह अनुचित है। रावण परस्त्री के सुख की इच्छा करता है यह देखकर शुक टेढी नजर करके चला जाता है। जैसे वह भी रावण से उद्विग्न हो। कोयल भी विलाप करती हुई कहती है—आदरणीय रावण, तुम सीता से तभी रमण करो यदि तुम अपना अपयश मुझ जैसा काला चाहते हो। लोक-प्रिय हंसावलि कहती है—तुम्हारी कीर्ति मेरे समान सफेद है। इस स्त्री का उपभोग कर तुम उसे मैला मत करो और लकापुरी के ऐश्वर्य को नष्ट मत करो। लाल-लाल कोपलों वाला आम्रवृक्ष ऐसा मालूम हो रहा है, मानो राजा के अन्याय की ज्वाला से आरक्त हो उठा हो—

"रावण, किं आणिय परजुवइ
तरु चुयकिसलयसुएहि रुयइ।
वणु णाइं करइ साहुद्धरणु
हा पत्तउ णारिरयणमरणु।
अलि कण्णासण्णउ रुणुरुणइ
पहु एउ अजुत्तु णाहं भणइ।
इच्छइ दससिरु पररमणि सुहं
कणइल्लउ वंकि वि जाइ मुहं।
णं सो वि णिवहु उव्वेइयउ।
कोइलु विलवतु व आइयउ।
दुज्जसु महु महणिहु महहि जइ
वइदेहिं भडारा रमहि तइ।
हंसावलि लवइ व लोयपिय
मइं जेही तेरी कित्ति सिय।
मा मइलहि माणिवि एह तिय
मा णासहि लंका उरिहि सिय।
अंबउ लोहियपल्लवललिउ
णं णिव अण्णायसिहि जलिउ। (72/8)

सत्तापुरुष द्वारा नैतिक मूल्यों की खुली अवमानना पर कवि केवल आक्रोश व्यक्त कर सकता है, या कभी-कभी उसकी छाया प्रकृति में देखता है, जैसा कि हिन्दी की नई कविता में हो रहा है।

सूक्तियां, लोकोक्तियाँ

ग्यारह सन्धियों का काव्य होते हुए भी पुष्पदन्त का यह रामायण काव्य (पोम चरित) भाषा और शैली की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध है। उसमें सूक्तियों और लोकोक्तियों की भरमार है। उदाहरण के लिए कुछेक सूक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

प्रजापति राजा कहता है—जो व्यक्ति अज्ञानी और न्याय का विध्वंश करनेवाला है, वह अपने को राज्यधर क्यों कहता है ?

× × ×

अपनी प्रशंसा करना गुण का दूषण है। मिथ्यादर्शन तप का दूषण है। नीरस प्रदर्शन नट का दूषण है। व्याकरण रहित काव्य कवि का दूषण है। गुण्डों और दुष्टों को पालना धन का दूषण है। द्विविधा-मरण व्रत का दूषण है। जोर से बोलना युवती का दूषण है। चुगली और विच्छिन्न बुद्धि पंडित का दूषण है। राजा का मूर्ख और आलसी होना लक्ष्मी का दूषण है। पाप करना और खोटे मार्ग में चलना जनता का दूषण है। अकारण हँसना गुरु का दूषण है। बेटे का दुर्व्यसनी होना कुल का दूषण है। (69/7)

× × ×

"अइरहसें किज्जंई कज्जेंरइं
जा सा णिद्दहइ ण कासु मइ।" (69/9)

—जो कार्य की गति अति शीघ्र की जानेवाली है, वह किसे दाह उत्पन्न नहीं करती ?

× × ×

"गुरु चवइ एउ किर कित्तडउ
महु तिहुयण सरिसव जेत्तडउ।" (69/19)

—मन्त्री कहता है—यह तो कितना है, मेरे लिए तो यह त्रिभुवन सरसों के बराबर है।

× × ×

"जहिं ककु रायहंसु व गणिउ
एरंडु कप्प रुक्खु व भणिउ।
जहिं गुणवंतु वि दोसिहल्ल समु
तहिं जे विरयंति वयणविरमु।" (72/11)

—जहाँ बगुले को राजहंस समझा जाता हो और एरंड को कल्पवृक्ष कहा जाता हो, जहाँ गुणी को दोषवाला कहा जाता हो वहाँ जो चुप रहते हैं, वे विद्वान हैं।

× × ×

"वारिज्जइ ढुक्की केण णियइ।" (73/19)

—आई हुई नियति को कौन टाल सकता है ?

× × ×

"हा कट्ठु-कट्ठु कणए जडिउ
माणिक्कु अमेज्झमज्झि पडिउ।" (74/11)

—खेद है कि काठ को सोने से जड़ दिया गया। माणिक्य गन्दी जगह गिर गया।

× × ×

"को मग्गइ रयंधओ एलियाण दुग्गं।" (74/12)

—कौन पापान्ध (आत्मरक्षा के लिए) गाडरों का दुर्ग चाहेगा ?

× × ×

"को रंडकहाणियाउ सुणइ" (74/12)

—कौन रांडों की कहानियाँ सुनता है ?

"धुत्तहिं किज्जइ कालउ पंडरु।" (69/33)

—धूर्तों द्वारा काला पीला किया जाता है।

करुणांत काव्य

रामायण का अन्त करुण और शोकपूर्ण है। रावण के निधन पर, रनिवास इन शब्दो मे आर्तनाद कर उठता है—

"हा भत्तार हार मणरंजण,
हा भालयल-तिलय णयणंजन।
हा करफंसजणियरोमंचुय,
आलिंगणकीलाभूसियभुय।
पइं विणु जगि वसासु जं जिज्जइ,
तं परदुक्खसमूहु सहिज्जइ।
हा पियथम भणतु सोयायरु,
कदइ णिरवसेसु अंतेउरु।" (78/22)

विभीषण का शोक भला किसके हृदय को द्रवीभूत नही कर देगा! वह अपनी छाती पीट-पीटकर रोता है—

"हाय मैंने यह क्या भयकर काम किया! अब सरस्वती शास्त्र की रचना नही कर सकती, अब कीर्ति दसो दिशाओ मे नही घूमेगी। विजयलक्ष्मी आज विधवापन को प्राप्त हो गई। शक्ति का प्रवर्तन आज समाप्त हो गया। अब इन्द्र डरकर नही चलेगा। अब चन्द्र अपनी कांति के साथ होगा। अब सूरज आकाश मे खूब चमकेगा। आज कपीन्द्र आराम से सोएगा।" (78/23)

रामायण . कवि का प्रतिनिधि काव्य

जैसाकि कहा जा चुका है 'महापुराण' कई चरित-काव्यो का सकलन ग्रन्थ है। 'नाभेय चरिउ' पुष्पदत का वृहद् चरित-काव्य है, उसमे उनकी प्रतिभा पूर्ण निखार पर है। परन्तु दूसरे चरित-काव्यो मे भी उनकी सृजनात्मकता और उसके तत्त्वो का समावेश है।

जब पुष्पदन्त कहते है कि 'रामायण या पोमचरित (पद्मचरित) को कहते हुए मैं अपनी बुद्धि के विस्तार मे कमी नही करूँगा और मत्री भरत के अभ्यर्थित वचन का निर्वाह करूँगा', तो इसका अर्थ है कि रामायण के वर्णन मे वह अपनी प्रतिभा का सर्वोत्तम प्रयोग करेंगे। एक बार फिर, कवि रामकथा के पूर्व कवियों का स्मरण करता है और आत्म-विनय एव दुर्जननिन्दा के साथ विद्वत्-सभा से क्षमायाचना पूर्वक 'रामकथा' प्रारम्भ करता है। वह यह भी कहता है कि जब सुकवि (कपि और कवि) द्वारा प्रकाशित मार्ग पर चलते हुए रावण भी चौंक जाता है, तो राम के धम्मगुण (धर्म और धनुष के गुण) के शब्द को सुनकर, अमुख दुर्जन कहाँ पहुँच सकता है? भगिमा से कवि बता रहा है कि वह पूर्व कवियो द्वारा प्रकाशित काव्य-मार्ग पर चलकर ही रामायण की रचना कर रहा है। वह यह भी कहता है कि "मैं तो जिनवर के चरण-कमलो का भ्रमर हूँ। मेरे द्वारा गुनगुनाया यह यद्यपि निरर्थक है, फिर भी यह सुनने मे कोमल, कानो को सुख देनेवाला और मानिनी स्त्रियो और शिशुओं के मुखों को विकसित करनेवाला है।"

रामायण की काव्य-शैली अलकृत शैली है। प्रारम्भ मे ही रत्नपुर के राजा प्रजापति का वर्णन है—

"जें दडें जित्तउ जमकरणु
जें सत्थें जित्त सरासइ वि
जें बुद्धिइ जित्तउ भेसइ वि।" (69/4)

ध्यान दें कि 'जिउ की जगह 'जित्त' भूत कृदन्त (जित के 'त' को अनावश्यक द्वित्व) का प्रयोग सर्वत्र है। 'येन' का 'जें' और 'बुद्धया' का 'बुद्धिइ'। अपभ्रंश मे ऐसा कठोर नियम नही है कि मध्यम व्यजन का लोप हो ही। हिन्दी 'जीता' का 'जित्तउ' से सीधा सम्बन्ध है। दोनो मे सामान्यभूत मे कृदन्त क्रिया का ही प्रयोग है वह भी कर्म वाच्य मे। करण कारक की 'ने' सस्कृत विभक्ति इन/एन का विकास है। जे/जेन/येन से 'जिसने' के विकास की कथा यह है कि आगे चलकर सस्कृत के यस्य/तस्य/अस्य के बचे हुए रूप (जिस/उस/इस) मूल सर्वनाम की तरह प्रयुक्त होने लगे और उनमे विभक्ति या परसर्ग का प्रयोग जरूरी हो गया।

इस प्रकार अलकृत शैली मे होते हुए भी पुष्पदन्त की भाषा सरल है, छोटे-छोटे वाक्यो मे धारा-वाहिकता है। कवि की निरलकृत सरल शैली का एक दूसरा नमूना देखिए—

"अत्थ तु णिवारइ को मिहिरु
को रक्खइ आवतउ मरणु।
जगि कासु ण ढुक्कइ जमकरणु
कु वि अग्गइ कु वि पच्छइ मरइ
वइवस-वतत्तरि पइसरइ॥" (69/8)

और अब यमक और श्लेष वाली शैली देखिए—

"जहिं सालि रमण कीला हरइं,
जह सालि वण्ण छेत्ततरइ।
जहि सालि कमल छण्णइ सरइ,
जहिं सालिहियाइं अक्खरइं।" (69/11)

तिडन्त क्रिया मे भी 'त' सुरक्षित है—

"ते सत्थु सुणति गुणति घणु,
मउचेय मुयति ण वइरि सरु।" (69/13)

इसी प्रकार कृदत क्रिया मे भी "त" सुरक्षित है—

"सोहइ वसतु जगि पइसरतु
अहिणव साहारहिं महमहंतु।" (70/14)

और यह लयात्मक शैली का उदाहरण भी देखिए—

"वज्जइ वीणा पिज्जइ पाण,
पियमाणुस चित्त साहीण।

गिज्जइ महुर सत्त सराल,
दढ पेम्म पसरइ असराल।" (70/15)

संस्कृत के 'अजस्रतर' से विकसित 'असराल' की तुलना कबीर के प्रयोग 'न सोइए असराल' से कीजिए, और देखिए—

"अणुणिज्जइ रूसति पियल्ली,
दाविज्जइ कदप्पसुहेल्ली।" (70/15)

पुष्पक विमान के वर्णन की शैली निराली है—

"तारयाऊरियायाससकास वद्धुज्जलुल्लोवय
हेमघडाविसट्ट तडकारसतासियासागय।" (72/1)

और, पुष्पदन्त की यह शैली जो उन्हे स्वय अत्यन्त प्रिय रही है—

"वणु दीसइ णिम्मलभरिय सरु,
सोयहिं जोव्वणु निरु महुरसरु।
वणु दीसइ सचरंत कमलु,
सोयहिं जोव्वणु वरमुहकमलु।" (72/2)

राम वन मे सीता के विषय मे पूछ रहे हैं—

"सइ काणणि रहुवई हिंडमाणु,
पुच्छइ वणि मिगइ अयाणमाणु।
रे हंस-हंस सा हंसगमण
पइ दिट्ठी कत्थइ विउलरमण।" (73/4)

जिनभक्ति की सरल शैली, जिसमे क्रिया का प्रयोग नही है—

"ण भोएसु कखा, ण णिद्दा ण भुक्खा।
ण तण्हा ण सोओ, ण राओ ण रोओ।..." (73/9)

जब कभी भारतीय आर्यभाषा के विकास के सन्दर्भ मे यह तर्क दिया जाता है कि प्राकृत की तुलना में संस्कृत कृत्रिम भाषा थी। इसी प्रकार अपभ्रंश काव्य की भाषा थी, बोलचाल की नही। कोई भाषा न तो कृत्रिम होती है और केवल काव्य की भाषा होती है। संस्कृत की तुलना मे प्राकृत कितनी ही सहज व्यापार वाली भाषाएँ हों, उस वचन-व्यापारो की भी अपनी भाषागत व्यवस्था होती है। इसी प्रकार संस्कृत कृत्रिम भाषा नही हैं, परन्तु जो भाषा बोलचाल मे थी (वह कौन थी इसका विवेचन विद्वान् अपने-अपने कोण से करते हैं) उसे संस्कारित किया गया, यानी समय-प्रवाह और प्रयोग के कारण आनेवाली विभिन्नताओ मे उसे स्थिरता प्रदान की गई।

—o—

विषय-सूची

बहत्तरवीं संधि 84-95

पुष्प विमान का वर्णन। चित्रकूट और सीता के यौवन का तुलनात्मक वर्णन। राम की प्रशसा। स्वर्णमृग की चेष्टाएँ। राम का उसका पीछा करना। रावण का राम के रूप मे छल से सीता का अपहरण। लका के लिए प्रस्थान। सीतादेवी की प्रतिक्रिया। वन्य-प्राणियो और प्रकृति की प्रतिक्रिया। विद्याधरियो का सीतादेवी को फुसलाना। सीता का कडा उत्तर। सीता की प्रतिज्ञा कि लेखपत्र से प्रिय की खबर मिलने पर ही वह भोजन ग्रहण करेगी। लक्ष्मण को चक्र की प्राप्ति।

तिहत्तरवीं संधि 96-125

स्वर्णमृग की खोज से राम की वापसी और सन्ध्या का आगमन। सन्ध्या का वर्णन। सीता की खोज। वन-जन्तुओ और पौधों से सीता के बारे मे पूछना। राम को सीता का उत्तरीय मिलना। दशरथ द्वारा राम को सीतापहरण की सूचना। दो विद्याधरो का आकर बालि का वृतान्त कहना। सिद्धकूट जिनालय मे जिनेन्द्रदेव की वन्दना। नारद का भविष्य-कथन। राम द्वारा सुग्रीव को सहायता का वचन देना। हनुमान् का दौत्य वर्णन। समुद्र का वर्णन। त्रिकूट पर्वत का वर्णन। लका का वर्णन। सिंहासन पर आरूढ रावण का वर्णन। हनुमान् का भ्रमर बनकर रावण को समझाना। विद्याधरियो और वन की शोभा का वर्णन। वनश्री और सीता की कान्तिविहीन श्री की तुलना। हनुमान् का आक्रोश और प्रतिक्रिया। रावण की काम-अवस्थाओं का चित्रण। रावण का सीता के सामने डीगे मारना। रावण को मदोदरी द्वारा समझाना। मदोदरी को वास्तविकता का पता चलना। सीता की प्रतिक्रिया। हनुमान् की सीता से भेंट। अगूठी और लेख का समर्पण। हनुमान् द्वारा अपना परिचय। अभिज्ञान के प्रमाण देना।

चहुत्तरवीं संधि 126-141

लका से हनुमान् की वापसी और राम से निवेदन। राम द्वारा हनुमान् की प्रशसा। आक्रमण की तैयारी। पचाग मन्त्र का विचार। फिर से दूत भेजे जाने का निश्चय। पुन हनुमान् को दूत बनाकर भेजा जाना। हनुमान् को राम द्वारा समझाना कि विभीषण से किस प्रकार मिलना है। हनुमान् का लका मे प्रवेश। लका की वनिताओ पर उसके रूप की प्रतिक्रिया। विभीषण से भेंट। विभीषण द्वारा रावण से हनुमान् की भेंट कराना। रावण का हनुमान् के साथ अभद्र व्यवहार। हनुमान् द्वारा सीता की वापसी पर जोर देना। रावण के गर्वोक्ति पूर्ण वचन। आवेगपूर्ण उत्तर-प्रत्युत्तर। हनुमान् की चुनौती।

पचहत्तरवीं संधि 142-153

हनुमान् की वापसी और दौत्य कार्य की रपट राम के सामने प्रस्तुत करना। बालि के दूत का आगमन। राम की दुविधा। राम का बालि के पास दूत भेजना। बालि का सधि करने से इकार कर देना। बालि का हनुमान् को फटकारना। घमासान लड़ाई। राम की जीत। किष्किधा नगरी मे प्रवेश। किष्किधा नगरी का वर्णन। शरद् ऋतु का आगमन। राम द्वारा विद्याओ की सिद्धि।

महाकइ-पुप्फयंत-विरइयउ महापुराणु

अठ्ठसट्ठिमो संधि

जो तित्थकरु वीसमउ वीसु विसयविसवेयणिवारणि ॥
जोईसरु जोईहिं णमिउ[1] जो बोहित्थु भवण्णवतारणि ॥ ध्रुवक ॥

1

जो दिव्ववाणिगगापवाहु जो रोस हुयासणवारिवाहु ।
जो मोहमहाघणगधवाहु जो मोक्खणयरवहसत्थवाहु[2] ।
तणुगधे जो सनु चदणासु पउणइ जो तेए चदणासु ।
जो पणमिउ[3] रामे लक्खणेण धम्मेण अहिसालक्खणेण ।
जणु जेण णिहिउ सग्गापवग्गि जो सरिसचित्तु रिउबधु वग्गि ।
जे[4] मिच्छतुच्छधीरगरत्त दप्पिट्ठ दुट्ठ तिट्ठागरत्त ।
जे घुम्मिरक्छ[5] पीयासवेण जे वद्धा गुरुकम्मासवेण ।
जे कयलालस मासासणेण जे विरहिय परहियसासणेण[6] ।
जे णारिहि वस[7] आया रएण ते मुक्क जासु आयारएण[8] ।
सुद्धोयणि सुरगुरु कविल भीम वयणेण विणिज्जिय जेण भीम ।

अडसठवी सधि

जो वीसवे तीर्थंकर है, जो विषयरूपी विष के वेग को दूर करने के लिए गरुड है ,जो योगीश्वर योगियो के द्वारा प्रणम्य है और जो ससार रूपी समुद्र के सतरण के लिए जहाज है ।

(1)

जो दिव्यवाणी रूपी गगा के प्रवाह है, जो क्रोध रूपी अग्नि के लिए मेघ है, जो मोह रूपी महामेघ के लिए पवन है, जो मोक्ष रूपी नगर-पथ के लिए सार्थवाह है, जो शरीर की गन्ध से चन्दन के समान है, जो अपने तेज से चन्द्रमा का तिरस्कार करने वाले है, जो राम और लक्ष्मण के द्वारा प्रणम्य है, जिसने अहिंसा लक्षणवाले धर्म के द्वारा लोगो को स्वर्ग और मोक्ष मे स्थापित किया है, जो शत्रुवर्ग और मित्रवर्ग मे समान चित्त हैं, (ऐसे भी लोग हैं) जो मिथ्यात्व और ओछी (सासारिक) बुद्धि के राग मे अनुरक्त है, गर्वीले, दुष्ट और तृष्णा रूपी विष से युक्त हैं, मद्य पीने के कारण जिनकी आँखे घूम रही है, जो भारी कर्मो के आस्रव से बँधे हुए है, जो लालसा करने वाले हैं, जिसमे एक माह मे आहार ग्रहण किया जाता है, ऐसे तथा दूसरो का कल्याण करने वाले जिन शासन से, जो रहित है, जो राग से नारियो के वचनो के अधीन है, वे भी उन मुनिसुव्रत तीर्थंकर के आचार के अनुष्ठान से मुक्त हुए हैं। जिन्होने अपने भयकर शब्दो से गौतम कपिल और भीम को जीत लिया है। ऐसे मुनिसुव्रत के समान दूसरा कोई नही है।

---

(1) 1 AP णविउ । 2. A °वहे सत्थ° । 3 AP पणविउ । 4. AP जो । 5 AP घुम्मिरच्छि । 6 AP add after this जे विरहिय (P रहिय) सया वि आयारएण । 7. A वसु जाया । 8. A जे मुक्क । 9. AP add after this° तेलोइयसुद्धायारएण ।

तिहुयणि ण कोइ दीसइ समाणु सण्णाणु जासु आयासमाणु।
णिच्चल परिपालिय सुव्वयासु पणवेप्पिणु तहु[10] मुणिसुव्वयासु।

घत्ता—तहु जि कहतरु वज्जरमि जेण विमुच्चमि दुग्गइदुक्खहु ॥
अट्ठ वि कम्मइं णिट्ठविवि देहु मुएप्पिणु गच्छमि मोक्खहु ॥1॥

2

एत्थेव य कयकूरारिकंप भरहंगदेसि पुरि अत्थि चंप।
तहिं असिजलधारइ हरियछाउ जगु जेण कियउ[1] हरिवम्मराउ[2]।
सो एक्कहिं दिणि उज्जाणु पत्तु दिट्ठउ अणतवीरिउ विरत्तु।
अणगारु णाणि परमत्थसवणु वंदेप्पिणु णिसुणिवि धम्मसवणु।
सत्तंगसंगु सुइ णिहिउ रज्जु अप्पणु पुणु कियउं परलोयकज्जु।
तत्तउं तउ सहु बहुपत्थिवेहिं णिग्गंथमग्गपत्थियसिवेहिं।
होइवि एयारहअंगधारि अरहंतपुण्णपब्भारकारि।
तणुचाए[3] मुउ हुउ प्राणइंदु[4] हरिवम्मु सकंतिइ जित्तचंदु।
तहु आउ वीससायरइं तेत्थु तणु भणु विहत्थि पुणु तिउणु हत्थु।
सियलेसु चित्तपडिचारवंतु अवहीइ णियइ पंचमधरंतु।
णीससइ देउ दहमासएहिं पुणु वीसहिं वरिससहसगएहिं[5]।

जिनका सम्यग्दर्शन आकाश के समान अनंत है, जिन्होने निश्चित रूप से सुव्रतो का परिपालन किया है, ऐसे उन मुनिसुव्रत को प्रणाम कर—

घत्ता—उन्ही के कथातर को कहता हूँ, जिससे मैं दुर्गति के दु.ख से विमुक्त हो सकूँ, आठो कर्मों का नाश कर और शरीर का त्याग कर मोक्ष पा सकूँ ॥1॥

(2)

इसी भरत क्षेत्र के अंग देश में चंपा नाम की नगरी है। उसमे क्रूर शत्रुओं को कंपन उत्पन्न करने वाला हरिवर्मा नाम का राजा था। जिसने असिरूपी जलधारा से विश्व को कान्तिहीन बना दिया था ऐसा वह एक दिन उद्यान में पहुँचा, वहाँ उसने अनंतवीर्य नामक विरक्त मुनि को देखा, जो परिग्रह से रहित, ज्ञानी तथा वास्तविक श्रमण थे। उनकी वन्दना कर और 'धर्म' का श्रवण कर पुत्र को सप्तांग राज्य देकर उसने स्वयं अपना परलोक का काम साधा दिगम्बर मार्ग से जिन्होने कल्याण की प्रार्थना की है ऐसे बहुत-से राजाओं के साथ उसने तप किया। ग्यारह अंगों को धारण करते हुए, अरहंत के पुण्य का उत्कर्ष करते हुए शरीर छोडकर, कान्ति में चन्द्रमा को जीतनेवाला वह हरिवर्मा प्राणत इन्द्र हुआ। वहाँ उसकी आयु बीस सागर थी। उसका शरीर तीन हाथ का था। श्वेत लेश्या से युक्त वह मन प्रवीचार वाला था। अवधिज्ञान से वह पाँचवें नरक की भूमि तक देख सकता था। दस माह में वह श्वास लेता था तथा बीस हजार वर्ष बीतने पर—

---

10. P तुहु।

(2) 1. AP कयउ। 2 P हरिवम्मु। 3. A तणु चइवि मुउ। 4. AP पाणइंदु। 5. A वाससहाएहिं; P वाससहसगएहिं।

घत्ता—देउ मणेण जि आहरइ सुहमइं पोग्गलाइ रसरिद्धइं ॥
अयणमेत्तु जीविउ थियउ पयडइं जायइं कालहु चिंधइं ॥2॥

3

ता तहु चरित्तु णिच्चप्फलेण   धणयहु भासिउ आहंडलेण ।
इह भरहि मगहरायगिहि[2] दित्तु   पुरि वसइ राउ णामें सुमित्तु ।
जिणपायपोमजुयरेणुलित्तु   हरिवंसकेउ कासवसुगोत्तु ।
अप्पडिमसत्ति णं सिद्धमंतु   किं वण्णमि सोमाएविकंतु ।
एयहु णदणु जिणु सोक्खहेउ   होही प्राणयचुउ[3] देवदेउ ।
भो धणय धणय कल्लाणमित्त   एयहं दोह मि करि पुरि विचित्त ।
ता रइय णयरि दविणाहिवेण   दिप्पंतें तवणिज्जें[4] णवेण ।
पासायपतिरहचच्चरेहिं   गयणयललग्गवरगोउरेहिं[5] ।
सरिसरणदणवणजिणघरेहिं   रक्खिज्जंती णियकिंकरेहिं ।

घत्ता—तहिं सँउहहु सत्तमि तलि थणथणमंडलहारविलविणि ॥
सुहु सोवंती सयणयलि पेच्छइ सिविणय रायणियविणि ॥3॥

4

मत्तसिंधुरं   सियधुरधुरं ।
हरिणरायय   [1]लच्छिकाययं ।

घत्ता—वह देव, मन से रस से समृद्ध सूक्ष्म पुद्‌गलो का आहार करता । जब उसका छह माह जीवन शेष रह गया, तो उसके अंत समय के चिह्न प्रकट होने लगे । ॥2॥

(3)

तब उसके चरित का कथन निश्चपल इन्द्र ने कुबेर से किया—"इस भारत के मगध देश की राजगृह नगरी मे सुमित्र नाम का राजा निवास करता है, जिनवर के चरण कमलो की धूल का प्रेमी, हरिवंश का ध्वज और कश्यप गोत्रीय। अप्रतिम शक्ति जो मानो सिद्धमंत्र हो। सोमदेवी के उस स्वामी का मैं क्या वर्णन करूं। प्राणत स्वर्ग से च्युत होकर वह देवदेव, इन दोनों का सुख का कारण जिनपुत्र होगा। हे कल्याणमित्र, धनद-धनद इन दोनो के लिए तुम पवित्र नगरी की रचना करो।" तब कुबेर ने चमकते हुए नए स्वर्ण से नगरी की रचना की। प्रासाद पंक्तियो, रथ-चौरस्तो, आकाशतल को छूने वाले श्रेष्ठ गोपुरो, नदियो, सरोवरों, नन्दनवनों और जिन मंदिरो से अपने अनुचरों से वह नगरी रक्षित थी।

घत्ता—उस नगर मे प्रासाद के सातवें भाग पर, जिसके सघन स्तन मंडल पर हार झूल रहा ऐसी उस रानी ने शयनतल पर सुख से सोते हुए स्वप्नमाला देखी ॥3॥

(4)

मतवाला गज, श्वेत बैल, सिंह, लक्ष्मीमूर्ति, दृष्टि के लिए सुखद पुष्पमाला, चन्द्रबिम्ब,

(3) 1. AP णिच्चफलेण । 2. A °रायगिहु । 3. AP पाणयचुउ । 4. P तवणिज्ज तवेण । 5. P °यले लग्ग° । 6. P णियकिंकरेहिं । 7. AP सउहहिं ।

(4) 1. A लच्छिकामय ।

फुल्लदामयं दिट्ठिकामयं ।
चंदविंवयं उययतवयं ।
चंडकिरणयं मीणमिहुणयं ।
कुंभजुयलयं दलियकमलयं[2] ।
कमलवासयं सुरहिवासयं ।
अमयमाणिहिं अमरवारिहिं ।
सीहभूसणं[3] दिव्वमासणं ।
सिहरसुंदरं इंदमंदिरं ।
धुयधयालयं विसहरालयं ।
णिहियतिमिरयं[4] रयणणियरयं ।
कविलचलसिहं जलियहुयवहं ।

घत्ता—इय जोइवि सिविणय सइइ सुत्तविबुद्धइ भासिउ दइयहु ॥
तेण वि तं तहि[5] अक्खियउ जं फलु होसइ पुव्वविरइयहु ॥4॥

5

तुह कुच्छिहि इच्छियगुणमहंति होसइ सुउ[1] तिहुवणणाहु कंति ।
सुरधणधारंचिइ रायगेहि अच्छरहिं पसाहिइ देविदेहि ।
सावणतमबीयहि सवणरिक्खि पंडुरु करि आयउ अंतरिक्खि ।
देविइ दिट्ठउ समुहारविंदि पइसंतु संतु रयणिहि अणिंदि ।
हरिवम्मु राउ जो पाणइंदु[2] सइगब्भवासि थिउ[3] सो जिणिंदु ।
आयउ वंदइ सयमेव इंदु किर कवणु गहणु तहि सूरचंदु ।

उदयकाल मे आरक्त सूर्य, मीनयुगल, घटयुगल, जिसमे कमल विकसित हैं और जो सुरभि से वासित है ऐसा सरोवर, अमरो के द्वारा मान्य क्षीर समुद्र, सिंहो से भूषित दिव्य आसन, शिखरो से सुन्दर इन्द्रभवन, जिसमे ध्वज प्रकम्पित हैं ऐसा नागघर, अंधकार को नष्ट करने वाला रत्नों का समूह, कपिल (भूरे या बदामी) रंग की चंचल ज्वालाओ वाली प्रज्वलित आग ।

घत्ता—इन स्वप्नो को देखकर, सोते से जागकर सती ने अपने पति से कहा । उसने भी, पूर्वोपार्जित पुण्य का जो फल होगा, वह उसे बताया ॥4॥

(5)

"इच्छित गुणो से महान् हे कान्ते, तुम्हारी कोख से त्रिभुवनस्वामी पुत्र होगा । राजगृह नगर के देवधन से अर्चित, तथा अप्सराओ के द्वारा देवी की देह शुद्ध होने पर श्रावण कृष्णा द्वितीया के दिन श्रावण नक्षत्र मे अंतरिक्ष से सफेद गज आया, देवी ने उसे अपने अनिंद्य मुख-कमल मे रात मे प्रवेश करते हुए देखा । हरिवर्मा राजा जो प्राणत स्वर्ग का इन्द्र था, वह जिनेन्द्र के रूप मे सती के गर्भवास मे आकर स्थित हो गया । आया हुआ इन्द्र स्वय वन्दना करता है, फिर वहाँ सूर्यचन्द्र के बारे मे क्या कहना ? नष्ट कर दिया है मोहजाल जिसने ऐसे मल्लिनाथ तीर्थंकर

---

2. A घरिकमलयं । 3 A सीहभूसियं । 4 A विहियं; P विहयं । 5 A तहु ।
(5) 1 A जिणु । 2. AP पाणइंदु । 3 P सो थिउ ।

गइ मल्लिदेवि हयमोहजालि चउपण्णलक्खवरिसंतरालि[4]।
उप्पण्णउ णिउ सक्केण तेत्थु तं मेरुमहागिरिसिहरु जेत्थु।
अहिसिंचिउ पडुसिलायलग्गि घरु[5] आणिउ णिहिउ समाउअग्गि।
आणंदे णच्चिउ कुलिसपाणि तहु वयणविणिग्गय दिव्ववाणि।
सुव्वउ मुणिसुव्वउ भणिवि णाहु गउ णिययणिवासहु तियसणाहु।
घत्ता— वड्ढइ देउ लहतु पय लक्खणवतु जणतु सुहं जणि।।
सालंकारु कतिइ सहिउ कव्वविवेउ णाइ वरकइयणि।।5।।

6

पहु वीससरासणमियसरीरु पियवयणभासि गंभीरु धीरु।
परिणयमऊरवरकंठवण्णु दहदहदहसहससमाउ वण्णु।
सत्तद्धवरिससहसाइ[1] जाम थिउ किं पि वालकीलाइ ताम।
दहपंचसहासइहं धरित्ति भुंजिवि जोइवि करिवरहु वित्ति।
आहारु ण गेण्हइ णेय चारु पइ णरविंदहु वज्जरइ चारु।
करि पुव्वतालपुरि आसि राउ कुच्छियमइ जणियकुपत्तभाउ।
वभणह दिंतु मणिकणयदाणु मुउ काणणि हुउ गउ गलियदाणु।
सुयरइ सल्लइपल्लवदलाइं संयरइ सीयलसरिसरजलाइं।

के वाद, चौवन लाख वर्ष हो जाने पर उनका जन्म हुआ। इन्द्र उन्हे वहाँ ले गया कि जहाँ सुमेरु-पर्वत का शिखर था। पांडुशिला के अग्रभाग पर उनका अभिषेक किया गया। उन्हे घर लाया गया, और अपनी माता के सामने रख दिया गया। इन्द्र आनन्द से खूब नाचा, उसके मुख से दिव्य-वाणी निकली, नाथ को सुव्रत मुनिसुव्रत कहकर देवेन्द्र अपने निवास स्थान के लिए चला गया।

घत्ता—लक्षणयुक्त पद (चरण) लेते हुए, जनो में सुख उत्पन्न करते हुए, अलकारों से युक्त तथा कान्ति से सहित देव उसी प्रकार वढने लगते हैं जैसे श्रेष्ठ कविजन मे काव्यविवेक वढने लगता है।।5।।

(6)

स्वामी का शरीर बीस धनुष प्रमाण सीमित था। वह प्रिय वचन वोलने वाले गंभीर-धीर थे। उनकी कान्ति तरुण मयूर के कण्ठ के रंग की थी। उनकी आयु तीस हजार वर्ष की थी। जव साढे तीन हजार वर्ष हुए, तव तक वह वाल क्रीडा में स्थित रहे। इस प्रकार पन्द्रह हजार वर्षों तक धरती का भोगकर, तथा गजवर की वृत्ति देखकर कि वह आहार नही करता है न तृणकमल लेता है, राजाओं के स्वामी वह यह सुन्दर वात कहते हैं कि पहिले यह हाथी तालपुर मे अत्यत खोटी वुद्धि वाला और अत्यत कुपात्रभाव वाला राजा था। यह व्राह्मणो के लिए मणि और सोने का दान देता था। मरकर वन मे यह, जिसका मदजल गल रहा है, ऐसा हाथी हुआ।

---

4. AP• add after this वइसाहमासि पहु कसणपक्खि, दहमइ दिणि ससि थिइ सवणरिक्खि।
5. P घरि। 6 A कतिसहिउ।
(6) 1. AP सत्तद्धसहसवरिसाइ।

सुयरइ करिणीकरलालियाइं , गिरिगेरुयरयउद्धूलियाइं ।
सुयरइ सिसुमयगलकीलियाइं करतालवट्टहिंदोलियाइं ।
घत्ता—एव कहेप्पिणु मुक्कु गउ गउ सो विझहु कहिं मि सइच्छइ ॥
अग्गइ सयणह परियणह णरणाहेण पबोल्लिउ पच्छइ ॥6॥

7

जहिं णरणाह वि होंति गय कालेण हय ।
तहि किं किज्जइ सिरिधरणु जिणतवचरणु ।
किज्जइ[1] काणणि[2] पइसरिवि थिरु[3] मणु धरिवि ।
सुररिसिहिं वि सो तहिं सथविउ सक्के ण्हविउ ।
विजयहु रज्जु समप्पियउ तिणु कंपियउ[4] ।
गउ सिवियइ अवराइयइ सुविराइयइ[5] ।
ओइण्णउ[6] जिणु णीलवणि तरुवेल्लिघणि ।
वइसाहइंदसमीदियहि णिच्चंदवहि[7] ।
सवणि[8] सहासें सहु णिवहं जगबंधवहं ।
छट्ठुववासे तवु गहिउं अमरहिं महिउ ।
भिक्खहि मुणि गउ रायगिहु विच्छिण्णछिहु[9] ।
वसहसेणरायस्स धरि थिउ पुण्णभरि ।
ज पासुययरु लद्धु जिह त भोज्जु तिह ।

यह, सल्लकी लता के पल्लवदल की याद कर रहा है, वहाँ के शीतल नदी-सरोवर के जलो की याद कर रहा है, वह याद कर रहा है पर्वत की गेरुरज से व्याप्त हथिनी के सूडो का लाड़; वह याद कर रहा है शिशुगजो की क्रीडाए एवं सूंड और तालवृक्ष के आदोलन ।

घत्ता—इस प्रकार कहकर, उन्होने गज को मुक्त कर दिया। वह अपनी इच्छा से विंध्याचल मे कही भी चला गया। वाद मे राजा ने स्वजनो और परिजनो के सामने कहा ॥6॥

(7)

जहाँ राजा भी समय के चक्र मे पडकर हाथी होते है वहाँ श्री को धारण करने से क्या ? जिनवर का तपश्चरण करना चाहिए, वन मे प्रवेश कर और अपने मन को स्थिर कर। तब वहाँ लौकान्तिक देवो ने भी उनकी संस्तुति की। इन्द्र ने अभिषेक किया। राज्य को तिनका समझा, और विजय के लिए, सौप दिया, अत्यत शोभित अपराजित शिविका मे बैठकर, वह गए। जिन, वृक्षो और लताओ से सघन नीलवन मे उतरे, और वैशाख कृष्णा दसवी के दिन (जव कि चन्द्रमा पथ से जा चुका था) श्रावण नक्षत्र मे एक हजार जगबधु राजाओ के साथ, छठा उपवास करके उन्होने तप ग्रहण कर लिया। देवो ने उनकी पूजा की। स्पृहा से रहित वह भिक्षा के लिए राजगृह गए। वृपभराजा के पुण्य से परिपूर्ण घर मे जाकर स्थित हो गए। जैसा प्राशुकतर भोजन

(7) AP करीइ। 2. A काणणु। 3. AP मणु थिरु। 4 AP कप्पियउ। 5. A रुइराइयइ, K omits सुविराइयइ। 6. AP उवइण्णउ। 7 A णिच्चदयहि। 8 Aसवणसहासें। 9. A विच्छिण्णछुहु।

भुंजिवि पुणु तेत्थाउ गउ कयसुहिविजउ[10]।
खरतवतावे तत्ताहो[11] सुविरत्ताहो।
णव झीणइ णिम्मच्छरइ सवच्छरइ।
आयउ पुणु तं तरुगहणु वम्महमहणु।
दिक्खारिक्खि पक्खि कहिए मासे सहिए।
णवमीदिणि चपयहु तलि थिउ धरणियलि।
पोसहजुयले गलियमलु हूयउ सयलु।
केवलविमलु अणतयरु सुरखोहयरु।

घत्ता—कोमलकरयलघत्तियहि[13] कुसुमहिं चित्तलंतु गयणगणु ॥
ण चित्तवड्डु[14] पसारियउ जलि थलि महियलि माइ ण सुरयणु ॥7॥

8

सहसक्खे विरइउ समवसरणु उवविट्ठु भडारउ तिजगसरणु।
चरु अचरु असेसु वि जणहु कहइ तहिंपसु वि चारु चारित्तु वहइ।
जाया देवहु रिसिवित्तिअरुह अट्ठारह गणहर मल्लिपमुह।
दहदोअ गइं रिसि जे धरति पंचसयइं ताह वि वज्जरति।
सिक्खुयह सहासइ एक्कवीस तेत्तिय केवलि ओहीविहीस[1]।
वडकिरियह दुसहस दोसयाइ भुवणतपसिद्धिहि सगयाइ।

उन्हें मिला, उसे उन्होंने उसी प्रकार ग्रहण कर लिया। जिन्होंने सुधियों की विजय की है, ऐसे वह, वहाँ से भोजन करके चले गए। अत्यन्त प्रखर तप से सतप्त, और अत्यन्त विरक्त उनके ईर्ष्या से रहित नौ साल व्यतीत हो गए। फिर कामदेव का मथन करने वाले वह वृक्षों से गहन उसी वन मे आए। वैशाख कृष्णा नौवीं के दिन श्रवण नक्षत्र में चपक वृक्ष के नीचे धरणी-तल पर बैठ गए। दो प्रोषधोपवासों से नष्टमल वह सम्पूर्ण अनन्तानन्त देवों को क्षोभ करनेवाले केवलज्ञान से पवित्र हो गए।

घत्ता—कोमल हाथों से फेंके गए पुष्पों के द्वारा आकाश के प्रागण को चित्रित करता हुआ देव समूह धरती, जल और थल में नहीं समा सका, मानो चित्रपट फैला दिया गया हो। ॥7॥

(8)

देवेन्द्र ने समवसरण की रचना की। त्रिजग की शरण आदरणीय उसमे बैठे। वह चर-अचर अशेष जन से कहते है, वहाँ पशु भी सुन्दर चरित्र का आचरण करता है। देव के मुनि वृत्ति वाले योग्य मल्लि प्रमुख अठारह गणधर थे। जो बारह अ गो को धारण करते है वे पाँच सौ कहे जाते हैं। शिक्षक इक्कीस हजार थे, और इतने ही केवलज्ञानी थे। अवधिज्ञान के ईश और विक्रिया-ऋद्धि को धारण करनेवाले दो हजार दो सौ थे। भुवनान्तर में प्रसिद्धि को प्राप्त, तथा अपने नय से परमतों का विध्वंस करनेवाले, वादी मुनि बारह सौ थे। सूक्ष्म सांपराय का नाश

10. A सुहविजयो। 11 तत्तयहो। 12 A सुविरत्त यहो। 13. AP °घल्लियहिं। 14. AP चित्तवट्टु।
15. AP णहयलि।
(8) 1 ..

णियणयविद्धंसियपरमयाहं वाइहिं बारहसय सजयाहं।
पणदहसय पुणु मणपज्जयाहं णासियसुप्पयरिउसंपयाहं।
पण्णाससहासइ संजईहिं सावयहं लक्खु हयदुम्मईहिं।
मंदिरवयणारिहि तिण्णि लक्ख सुर तिरिय असंख णिरुद्धसख।
हिंडेप्पिणु[2] एव महीयलंति मासाउसेसि थिइ जीवियंति।
फग्गुणतमदसमिहि सवणजोइ णिसि पच्छिमसज्झहि मुक्ककाइ।
रिसिसहसे सहु संमेयकुहरि सिद्धउ थिउ जाइवि तिजगसिहरि[3]।
घत्ता—अरसु अगंधु अवण्णमउ फाससद्दवज्जिउ गयरूवउ ॥
मुणिसुव्वउ महुं दय करउ सुद्धु सिद्धु हुउ णाणसहावउ ॥ 8 ॥

9

णिव्वुइ सुव्वइ जो णिज्जियारि इह जायउ महिवइ चक्कधारि।
हरिसेणु णाम तहु तणउ चरिउ णिसुणहु पवित्तु परिहरिवि दुरिउ।
वरभारहवरिसि अणततित्थि गथियकुगथवधणबहित्थि[1]।
णरपुरवरि णाहु णराहिरामु तउ करिवि हरिवि कलि कोहु कामु।
सुविसालविमाणि[2] विमाणसारि संभूयउ अमरु सणक्कुमारि।
इह खेत्ति भोयपुरि दीहबाहु इक्खाउवंसि णिउ पउमणाहु।
तहु देवि किसोयरि सुद्धसील अइरा एरावयगमणलील।

करने वाले मन पर्ययज्ञानी पन्द्रह सौ थे। आर्यिकाएँ पचास हजार थी। श्रावक एक लाख थे। अपनी दुर्मति का नाश करनेवाली तथा मन्दिर का व्रत ग्रहण करनेवाली श्राविकाएँ तीन लाख थी। देव असख्यात और तिर्यंच संख्यात। इस प्रकार धरतीतल पर विहार कर, जब उनके जीवन की आयु एक माह बाकी रह गई, तो फागुन कृष्णा दसवी के दिन श्रवण योग मे रात्रि की पश्चिम संध्या में सम्मेद शिखर पर, मुक्तकाय वह एक हजार मुनियो के साथ, सिद्ध हो गए और त्रिजग के शिखर पर स्थित हो गए।

घत्ता—अरस, अगध, अवर्ण, स्पर्श और शब्द से रहित और रूपरहित, मुनिसुव्रत तीर्थंकर, मुझ पर दया करे कि जो शुद्ध सिद्धि और ज्ञानस्वभाव हो गए है। ॥8॥

(9)

मुनिसुव्रत भगवान् के निर्वाण प्राप्त कर लेने पर, शत्रुओ को जीतनेवाला जो चक्रवर्ती राजा हुआ था उसका नाम हरिषेण था। अपने दुरित का नाश करने के लिए, तुम उसका पवित्र चरित्र सुनो। अनन्तनाथ के तीर्थंकाल मे उत्तम भारतवर्ष मे, जो कुत्सित ग्रन्थो की रचना से मुक्त है, ऐसे नरपुरवर मे मनुष्यों के लिए सुन्दर राजा तप कर तथा पाप, क्रोध और काम को दूर कर, विमानो मे श्रेष्ठ विशाल नामक विमान में सनत्कुमार देव उत्पन्न हुआ। यहाँ भरतक्षेत्र मे भोगपुर मे दीर्घबाहु, इक्ष्वाकुवशीय राजा पद्मनाभ था। उसकी, शुद्धचरित्र ऐरावत के समान

---

2. A महि डिंडेप्पिणु इम महियलति। 3. A सिद्धसिहरि।

(9) 1. A °कुगथिबघण°। 2. AP °विवाणि विवाण°।

एयहु सो सुरु अगरुहु जाउ हेमाहु समाजुयपरिमियाउ।
हलक्खणु वीसधणुप्पमाणु कतीइ चदु तेएण भाणु।
गउ तेण समउं पिउ पुहइवीरु[3] मणहरवणि णविवि अणतवीरु।
रिसि हूयउ[4] पहु पकरुहणाहु पुत्तें आयण्णिवि धम्म[5] साहु।

घत्ता—लइयइ पचाणुव्वयइ पच[6] वि इदियाइ णियमंते॥
आवेप्पिणु पुरु[7] रज्जि थिउ पुण्णपहावें कालें[8] जते॥ 9॥

10

उप्पण्णउ पहरणु घरि रहगु पविदडु चडु रिउदिण्णभंगु।
णिग्तिसु तहिं जि धवलायवत्तु सिरिहरि कागणि मणि चम्मजुत्तु।
जणणहु केवलसिरि देहु[1] पत्त एक्कहिं खणि तणए णिसुय वत्त।
जाइवि जिणु वदिवि रसियवज्ज घरु आविवि विरइय चक्कपुज्ज।
मदिरवइ थवइ पुरोहु अवरु सेणावइ णिज्जियवीरसमरु[2]।
करितुरयणारिरयणाइं जाइ विज्जाहरेहिं दिण्णाइ ताइं।
उल्लघियाइ सायरजलाइ ससाहियाइ धरणीयलाइ।
काराविय किंणरखयरसेव वसिकय अणेय गणवद्धदेव।

गमनलीला वाली अइर नाम की देवी थी। वह देव इन दोनो का पुत्र उत्पन्न हुआ। हेमाभ दस हजार वर्ष की आयु वाला। शुभ लक्षण उसका शरीर वीस धनुषप्रमाण था। वह कान्ति मे चन्द्रमा और तेज मे सूर्य था। पृथ्वीवीर पिता उसके साथ मनहर उद्यान में गया और अनन्तवीर को प्रणाम कर पद्मनाभ मुनि हो गया। पुत्र ने भी साधु धर्म सुनकर,

घत्ता—पाँच अणुव्रत ग्रहण कर लिये। तथा पाँचो इन्द्रियो का नियमन करते हुए, नगर मे आकर राज्य मे स्थित हो गया। पुण्य के प्रभाव से समय वीतने पर॥9॥

(10)

उसे घर मे प्रहरण चक्र उत्पन्न हुआ। शत्रुओ को घात देने वाला प्रचण्ड वज्रदण्ड, तलवार, वही पर धवल आतपत्र, भण्डार घर मे कागणि चर्म युक्त मणि, पिता के शरीर को केवलश्री प्राप्त हुई। एक ही क्षण में पुत्र ने यह बात सुनी। जाकर जिन की वन्दना कर, तथा घर आकर जिसमे वाद्य वज रहे हैं, इस प्रकार चक्र की पूजा की। गृहपति, स्थपति, पुरोहित और जिसने वीर युद्ध जीता है ऐसा सेनापति, तथा जितने गज, तुरग और नारीरत्न हो गए जो विद्याधरो ने दिये। उसने सागर जलो को पार किया और धरणीतलो को साध लिया। किन्नरो और विद्याधरो से

---

3 AP पुहइधीरु। 4. AP जायउ। 5 A धम्मलाहु। 6. P पर्चेदियाइं। 7. P omits पुरु। 8. A जतें कालें।

(10) 1. A देहि। 2 A °धीरसमरु।

महि हिंडिवि खंडिवि वइरिमाणु आवेप्पिणु त पुणु णिययठाणु।
कत्तिइ णंदीसरि सरकयंतु अहिसिंचिवि अंचिवि अरुहु संतु।
उववासिउ छणवासरि पसण्णु जावच्छइ णिसि णरवइ णिसण्णु।
घत्ता—इंदणीलणीलगएण चंदबिंबु ता गिलिउ विडप्पें॥
णहभायणयलि सणिहिउ धोट्टिउ दुद्धु व कसणें सप्पें॥ 10॥

11

णं ढंकिउ अलिजूहेण कमलु ण पावें सुक्किउ छइउ विमलु।
सणिहिय विहाएण व विवित्ति मयणाहि धोयकलहोयवत्ति[1]।
चिंतइ पहु[2] विहु गहगत्थु जेम कालें कउलेवउ हउ मि तेम।
लइ जामि हणमि दुक्कम्मजोणि [3]महसेणहु ढोइवि सयलखोणि।
गउ पुहइणाहु वेरग्गभूरि सिरिमंतसेलि सिरिणायसूरि।
पणवेप्पिणु लइयउ तवोविहाणु तसथावरजीवहं अभयदाणु।
ते दिण्णउं जीवदयालुएण गिरिसिहरि सुइरु लंबियभुएण।

सेवा कराई; अनेक गणबद्ध देवों को वश में किया। धरती पर परिभ्रमण कर बैरियों के मान का खंडन कर, कार्तिक मास को (अष्टाह्निका में) नंदीश्वर पर्व मे कामदेव के शत्रु सन्त अर्हत् का अभिषेक और पूजा कर पूर्णिमा के दिन उपवास कर, राजा जब रात्रि मे बैठा हुआ था—

घत्ता—इन्द्रनील के समान नीले शरीर वाले राहु ने चन्द्र बिम्ब को ऐसे निगल लिया, जैसे आकाश रूपी पात्र के तल में रखे हुए दूध को काले साँप ने पी लिया हो ॥10॥

(11)

मानो भ्रमर समूह ने कमल को ढक लिया हो, मानो पाप ने विमल पुण्य को आच्छादित कर लिया हो, मानो विधाता ने गोल-गोल धुले हुए चाँदी के पात्र में कस्तूरी को रख लिया हो। राजा सोचता है—जिस प्रकार चन्द्रमा राहु से ग्रस्त है, उसी प्रकार मैं भी काल से कवलित होऊँगा। लो मैं जाता हूँ और दुष्कर्मों की परपरा का अन्त करता हूँ। महिसेन को समस्त भूमि देकर, वैराग्य से प्रचुर राजा चला गया। उसने सीमंत पर्वत पर श्रीनाग मुनि को प्रणाम कर तप-विधान अंगीकार कर लिया। उसने त्रसस्थावर जीवो को अभयदान दिया। जीवों के प्रति दयालु वह गिरि के शिखर पर बहुत समय तक, हाथ लम्बे कर सूर्य किरणो का भयकर ताप सह-

---

(11) 1. A कलहोयपत्ति। 2. A इहु। 3. AP महिसेणहु।

विसहेवि[4] भीमु रविकिरणताउ विद्ध सिवि मिच्छामोहभाउ।
तवदंसणणाणचरित्तरिद्धि आराहिवि गउ सव्वत्थसिद्धि।

घत्ता—हरिसेणहु भरहाहिवहु अहमिंदत्तणु तं तहु सिद्धउं॥
दिव्वसोक्खसदोहयरु जं ण पुप्फदंतेहिं वि लद्धउं॥11॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे मुणिसुव्वयणिव्वाण[5] हरिसेण-कहंतर णाम अट्ठसट्ठिमो परिच्छेओ समत्तो[6] ॥68॥

कर मिथ्या मोहभाव का नाश कर, तप-दर्शन-ज्ञान और चरित्र ऋद्धि की आराधना कर सर्वार्थ-सिद्धि को पा गया।

घत्ता—हरिषेण और उस भरत राजा को वह अहमेन्द्रत्व सिद्ध हुआ, दिव्य सुख समूह को करने वाला जो सुख नक्षत्रो को भी प्राप्त नही हो सका ॥11॥

त्रेसठ महापुरुषो के गुणालकारो से युक्त महापुराण मे महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का मुनिसुव्रत-निर्वाण हरिषेणकथातर नाम का अडसठवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥68॥

---

4. P विसहेवि मुणिवरु रवि°। 5 A °णिव्वाणगमणं। 6 P adds another पुष्पिका मुणिसुव्वय-जिणदसमचक्कवट्टि हरिसेण एतच्चरिय सम्मत्त, K gives it in the margin in second hand.

एक्कूणहत्तरिमो संधि

मुणिसुव्वयजिणतित्थि तोसियसुररामायणु ।।
हरिहलहरगुणथोत्तु ज जायउं रामायणु ।।छ।।

(1)

णियबुद्धिपवित्थरु[1] णउ रहमि लइ तं पि किं पि एवहिं कहमि ।
णिव्वाहमि भरहब्भत्थियउं[2] परिपालमि पडिवण्णउ थियउं ।
कलिकाले सुट्ठु गलत्थियउ जणु दुज्जणु अण्णु वि दुत्थियउ ।
सामग्गि ण एक्क वि अत्थि महु किर कवण[3] लीह चिरकइहिं[4] सहुं ।
कइराउ सयंभु महायरिउ सो स[5]यणसहासहिं परियरिउ ।
चउमुहहु चयारि मुहाइ जहिं सुकइत्तणु सीसउ[6] काइं तहिं ।
महु एक्कु तं पि मुहु खंडियउ विहिणा पेसुण्णउ मंडियउ ।
मइ छंदु ण लक्खणु भावियउं अप्पउ जणि हासउ पावियउ ।

उनहत्तरवो संधि

मुनिसुव्रत जिन तीर्थंकर के काल मे देवागनाओं को सतोष देनेवाला तथा नारायण और बलभद्र के गुणो के स्तोत्र से युक्त जो रामायण हुआ ।

(1)

अपनी बुद्धि के विस्तार से नही चूकते हुए, मैं उसे कुछ इस समय कहता हूँ । मैं भरत के द्वारा अभ्यर्थित का निर्वाह करता हूँ, और जो मैंने स्वीकार किया है उसका मैं पालन करता हूँ। मैं कलिकाल से अत्यन्त पीडित हूँ । लोग दुर्जन है, और मैं हीन स्थिति मे हूँ । मेरे पास एक भी सामग्री नही है । मैं प्राचीन कवियो को पक्ति मे कैसे आ सकता हूँ ? एक महा आदरणीय कविराज स्वयभू थे जो हजारों स्वजनों से घिरे हुए थे । एक चतुर्मुख थे, जिनके चार मुख थे। ऐसी स्थिति मे मैं अपना सुकवित्व किस प्रकार कहूँ ? मेरा एक ही मुख है। वह भी खडित। विधाता ने मेरे साथ दुष्टता की । न तो मैंने छदशास्त्र का और न लक्षणशास्त्र का विचार किया है । मैंने लोगो मे उपहास पाया है । यद्यपि पण्डितो के हृदय मे मैं प्रवेश नही कर पाऊँगा फिर भी

---

1 1. P °बुद्धिइ वित्थरु । 2. P भरहअब्भत्थियउ । 3 P कमण । 4. AP चिरु कइहिं । 5. A सुयणसहासें, P सुयणसहासेंहिं । 6. P सीसइ ।

वुहहियवइ जइ वि ण पइसरमि धिट्ठत्ते तइ वि कव्वु करमि ।
महु खमउ भडारी विउससह आयण्णहु रहुवइरायकह ।

घत्ता—सुकइपयासियमग्गि मणि दहमुहु वि चमक्कइ[7] ॥
रामधम्मगुणसद्दि असुहु[8] पिसुणु कहिं ढुक्कइ ॥1॥

2

जिणचरणकमलभसलें[1] झुणिउं मइं एउ[2] णिरत्थु वि रुणुरुणिउं ।
सुइपेसलु कण्णविइण्णसुहु वियसावियमाणिणिडिंभमुहु ।
सइं[3] लग्गइ चित्ति वियक्खणहु जसु रामहु पोरिसु लक्खणहु ।
वइदेहिसइत्तणु भूसियउ जलविंदु व पोमपत्ति[4] थियउ ।
मुत्ताहलवण्णु समुव्वहइ आसयगुणेण कव्वु वि सहइ ।
जं विरइउ मदमदमईहिं अम्हारिसेहिं जगि जडकईहिं ।
ज जगि पसिद्धु सीयाहरणु ज अजणेयगुणवित्थरणु ।
ज विडसुग्गीवरायमरणु जं तारावइअब्भुद्धरणु ।
ज लवणसमुद्दसमुत्तरणु[5] ज णिसियरवसहु खयकरणु ।

धृष्टता से काव्य की रचना करता हूँ। आदरणीय विद्वत्-सभा मुझे क्षमा करे। अब रघुपतिराज की कथा सुनिए।

घत्ता—सुकवियों के द्वारा प्रकाशित (सुकइ-सुकपि, सुकवि) मार्ग में रावण भी मन में डरता है, तथा राम के धनुष की डोर के शब्द वाले उस मार्ग मे, खरदूषण आदि दुष्ट कैसे आ सकते है ? (कवि का अभिप्राय यह है कि रामायण काव्य लेखन का मार्ग बड़े-बड़े कवियो द्वारा प्रकाशित है। उसमे राम के धर्म और धनुष का वर्णन है, अत: उसमे दुष्टों की पहुँच का प्रश्न नही उठता)।

(2)

जिन भगवान् के चरणकमलो के भ्रमर द्वारा कहा गया यह (काव्य) मैंने व्यर्थ गुनगुनाया। राम का यश और लक्ष्मण का पौरुष सुनने मे मधुर कानो को सुख देने वाला तथा मानिनी स्त्रियो के शिशु मुख को विकसित करने वाला स्वय विद्वानो के चित्त को खीच लेता है। इसमे सीता देवी का भूषित सतीत्व है। जिस प्रकार कमल (पद्मपत्र) पर स्थित पानी की बूंद-मोती के सौदर्य को धारण करती है, उसी प्रकार, पद्म पत्र (राम रूपी पात्र) पर अवलवित मेरा काव्य, अक्षय गुण से शोभित होता है, हम जैसे अत्यन्त मन्द बुद्धिवाले जड़ कवियो ने जो राम काव्य की रचना की है, जग मे जो सीता का हरण प्रसिद्ध है, जो हनुमान के गुणों का विस्तार है, जो कपटी सुग्रीव का मरण है, और जो सुग्रीव (तारापति) का उद्धार है, जो लवण-समुद्र का सतरण है, और जो निशाचर वश का क्षय करने वाला है—

---

7. P चक्कवइ। 8. A समुहु।

(2) 1. AP °भमरें। 2. AP एत्थु। 3. A लइ। 4 P पोमवत्ति। 5 A °समुद्दह उत्तरणु।

घत्ता—भरहहु भत्तिभरासु[6] बहुरसभावजणेरउ ॥
त आहासमि जुज्झु रावणरामहु[7] केरउ ॥2॥

3

जिणचरणजुयलसणिहियमइ आउच्छइ पहु मगहाहिवइ ।
णिरु ससयसल्लिउ मज्झु मणु गोत्तमगणहर मुणिणाह भणु ।
किं दहमुहु सहु दहमुहहिं हुउ किर[1] जम्मे गरुयउ तासु सुउ ।
जो[2] सुम्मइ भीसणु अतुलबलु किं रक्खसु किं सो मणुय[3] खलु ।
किं अचिउ तेण सिरेण हरु किं वीसणयणु किं वीसकरु ।
किं तहु मरणावह रामसर किं दीहर थिर सिरिरमणकर ।
सुग्गीवपमुह णिसियासिधर किं वाणर किं ते णरपवर ।
कि अज्जु वि देव विहीसणहु जीविउ ण जाइ जमसासणहु ।
छम्मासइ णिद्द[4] णेय मुयइ किं कुभयण्णु घोरइ सुयइ ।
कि महिससहासहिं धउ लहइ लइ लोउ असच्चु सव्वु कहइ ।
वम्मीयवासवयणिहिं णडिउ अण्णाणु कुमग्गकूवि पडिउ ।

घत्ता—गोत्तम पोमचरित्तु[5] भुवणि पवित्तु पयासहि ॥
जिह सिद्धत्थसुएण दिट्ठउं तिह महु भासहि ॥3॥

घत्ता—और जो भक्ति से भरे भरत के लिए अनेक रसों और भावों को उत्पन्न करने वाला है, ऐसे उस रावण-राम के युद्ध का मैं कथन करता हूँ।

(3)

जिन भगवान् के चरणकमलो में अपनी बुद्धि को स्थिर करता हुआ मगधराज श्रेणिक पूछता है, "मेरा मन सशय से अत्यन्त पीडित है। इसलिए हे मुनियो के स्वामी गौतम गणधर, मुझे बताइये कि क्या रावण दस मुखों के साथ उत्पन्न हुआ था ? क्या जन्म से ही उसका पुत्र इन्द्रजीत उससे बडा था ? जो भीषण अतुल बल वाला सुना जाता है,क्या वह राक्षस था या दुष्ट मनुष्य ? क्या उसने अपने सिरो से शिव की पूजा की थी ? क्या उसके बीस नेत्र व बीस हाथ थे ? क्या राम के तीर उसके मरण के कारण थे या लक्ष्मी का रमण करनेवाले लक्ष्मण के लम्बे स्थिर हाथ उसका वध करने वाले थे तथा पैनी तलवार धारण करनेवाले सुग्रीव आदिजन क्या बदर थे या कि नरश्रेष्ठ ? हे देव, आज भी विभीषण का जीव यम शासन मे नही जाता। क्या कुम्भकर्ण इतनी घोर नीद में सोता है कि छह महीने तक नीद नही छोडता ? क्या वह हजारो भैसो से भी तृप्ति को प्राप्त नही होता? लो सब लोग असत्य कहते है। वाल्मीकि और व्यास जैसे कवियो से प्रवंचित होकर अज्ञानी लोग कुमार्ग के कुएँ मे पडते है।

घत्ता—हे गौतम, इस संसार में आप पवित्र पद्मचरित्र को प्रकाशित कीजिए। सिद्धार्थ सुत (महावीर) ने जिस प्रकार से देखा है, वैसा मुझे बताइए।

---

6. P भत्तियरासु। 7 AP रामण°।

(3) 1. P किं जम्मे। 2 AP सो सुम्मइ। 3. A मणुवकुलु। 4 AP णेय णिद्द। 5. APT पउम°।

4

ता इदभूइ गंभीरझुणि सेणियरायहु कह[1] कहइ मुणि।
इह भरहि भवावहारिणिलइ[2] फुल्लियकणयारबउलतिलइ[3]।
मायदगोंदगोंदलियसुइ[4] महमहियकलमकेयारजुइ[5]।
णिप्पीलिउच्छरससलिलवहि[6] सतुट्ठपुट्ठपंथियणिवहि।
मलरहिय मलयदेसंतरइ रयणउरि भवणरुइहयसरइ।
तहि वसइ पयावइ पयधरणु जे दडे जित्तउ जमकरणु।
जे सत्थें जित्त सरासइ वि जे वुँद्धिइ[7] जित्तउ भेसइ वि।
जे रिद्धिइ जित्तउ सुरवइ वि जे भोए[8] जित्तउ रइवइ वि।
तहु रायहु णयणसुहावणिय ण बाणावलि मयणहु तणिय।
रूवेण सरिच्छी उव्वसिहि गुणवत कत कति व ससिहि।
सुउ चदचूलु चदु व उइउ सिसुमति मित्तु तेण वि लइउ।

घत्ता—सो विजयकु पसिद्धु[9] ण ससिरवि गयणगणि ॥
बेण्णि वि सह खेलति बद्धणेह घरपगणि ॥4॥

---

(4)

तब गभीर स्वर वाले गौतम गणधर मुनि राजा श्रेणिक से कथा कहते हैं—भव का नाश करने वालो (सर्वज्ञो) के स्थानभूत इस भरतक्षेत्र मे, जिसमें कनेर, वकुल और तिलक के वृक्ष खिले हुए हैं, जहां आम्र वृक्ष समूह पर तोते बोल रहे है, जो महकते हुए धान के खेतो से युक्त है। जहां पेरे जाते हुए गन्नो के रसो के सलिलपथ (प्याउ) है, जहाँ पथिकजन सतुष्ट और पुष्ट है, ऐसे मलरहित मलय देश के, अपने भवनो की कान्ति से शरद की शोभा का अपहरण करने वाला रत्नपुर नगर है। उसमे प्रजापति राज ानिवास करता है, जिसने दण्ड के वल पर यमकरण को जीत लिया था, जिसने शास्त्र से सरस्वती को भी जीत लिया, जिसने बुद्धि से बृहस्पति को भी जीत लिया, जिसने ऋद्धि से इन्द्र को भी जीत लिया, जिसने भोग में कामदेव को भी जीत लिया, ऐसे उस राजा की नेत्रो को सुहावनी लगने वाली रानी थी, जो मानो कामदेव की वाण-वलि थी। रूप मे वह उर्वशी के (समान) थी। वह गुणवती कान्ता, चन्द्रमा की कान्ति के समान थी। उसका चन्द्र के समान चन्द्रचूल पुत्र उत्पन्न हुआ। उसे भी शिशु मन्त्री पुत्र मित्र के रूप मे मिला।

घत्ता—आकाश मे चन्द्रमा के समान वह विजय नाम से प्रसिद्ध था। परस्पर वद्धस्नेह वे दोनो घर के आँगन मे खेलते थे।

---

(4) 1 AP सइ। 2. A भयावहारि। 3. A °कणियार°। 4. A मायदगोच्छ°, P मायदगोदि°। 5. A केयारहुए। 6 A °उच्छु° । 7 A वुद्धें। 8. P रूए। 9 Pomts पसिद्धु।

5

तरुणीकडक्खोहविक्खेवमूढाइ[1] जोव्वणसिरीए सरीराहिरूढाइ।
णिण्णट्ठदप्पिट्ठणिक्किट्ठतुट्ठीइ[2] घोराण जाराण चोराण गोट्ठीइ।
ण तावसा के वि अरहंतदिक्खाइ ते बे वि ण चरंति रायस्स सिक्खाइ।
अण्णम्मि तव्वासरे[3] तम्मि णयरम्मि णिद्धणजणे दिण्णबहुदविणणियरम्मि।
गोत्तमवणिंदेण वइसवणघरिणीइ जायस्य कलहस्स ण चारुकरिणीइ।
विण्णाणवंतस्स ससारसारस्स सिरिदत्तणामस्स वणिवरकुमारस्स।
करधरियभिंगारचुयवारिधारेण णियधीय रमणीय दिण्णा कुबेरेण।
बालेण बालालय झ त्ति गंतूण णमिऊण[4] जय देव देव त्ति वोत्तूण।
केणावि पावेण रइरहसजुत्तीइ रूव वर वण्णिय वणियउत्तीइ।
रेहतराईवदलदीहणेत्ताइ ती[5] सणिहा का कुबेराइदत्ताइ।
त सुणिवि सिरु धुणिवि विद्धत्थधम्मेण[6] सचरिवि वियड तुर कूरकम्मेण।
वणिभवणि पइसरिवि बहुसहसहाएण[7] हित्ता कुमारी धरणाहजाएण।
रोवंति वेवंति वरइत्तहत्थाउ णट्ठाउ[8] णारीउ विलुलंतवत्थाउ।

घत्ता—णिव परिताहि भणंत[9] पुरि अण्णाउ कुमारहु॥
गय तरुसाहाहत्थ वणिवर रायदुवारहु॥5॥

(5)

युवतियो के कटाक्षो-समूह के विक्षेप से मूढ यौवनश्री के शरीर पर अभिरूढ होने पर (युवक होने पर) तरुणियो के कटाक्षो के विक्षेप से विवेकशून्य, शरीर को आक्रान्त करने वाली यौवन रूपी लक्ष्मी, नष्ट दर्प से भरी निकृष्ट तुष्टि तथा भयकर विटो और चारो ओर की गोष्ठी (सगति) के कारण वे दोनो, राजा की शिक्षाओ का आचरण नही करते थे। उसी प्रकार, जिस प्रकार कोई तपस्वी अरहत की शिक्षा का आचरण नही करते। एक दूसरे दिन उसी नगर मे, जिसमे निर्धन लोगो को प्रचुर धन समूह दिया गया है, गौतम सेठ की वैश्रवणा गृहिणी से पुत्र उत्पन्न हुआ मानो सुन्दर हथिनी से बच्चा उत्पन्न हुआ हो। विज्ञान से युक्त ससार मे श्रेष्ठ श्रीदत्त नाम के उस वणिक कुमार को कुबेर नाम के सेठ ने हाथ मे धारण किये गए भिगार के गिरते हुए पानी की धारा के साथ अपनी सुन्दर कन्या दी। किसी मूर्ख ने शीघ्र बालक चन्द्रचूल के घर जाकर जयदेव-जयदेव कहकर नमस्कार किया। तब रति के वेग से युक्त उस वणिक्पुत्री के श्रेष्ठ रूप का वर्णन किया। शोभित कमलदल के समान दीर्घ नेत्रों वाली कुबेर दत्ता के समान कोई भी स्त्री नही है। यह सुनकर धर्म को ध्वस्त करनेवाले उस क्रूरकर्मा चन्द्रचूल ने अपना सिर पीटा और शीघ्र ताबड़-तोड जाकर सेठ के घर मे प्रवेश कर अनेक समर्थ सहायो के साथ उस राजा के

(5) 1. A कडक्खेवविक्खोह°, P °कडक्खोहविक्खेय° 2. A वुड्ढीइ। 3. AP ता वासरे। 4. A णविऊण। 5. A थी सणिहा। 6 A विद्धत्थकामेण। 7 A °सहावेण। 8. P तट्ठाउ। 9 AP भणता।

6

आउच्छिउ राए पउरयणु विण्णवइ णवतु तसंततणु[1]।
तुह तणुरुहु परदविणइ हरइ परिणियउ कलत्तु ण उव्वरइ।
पइसरउ[2] भडारा वियणु वणु अण्णेत्तहि जीवउ जाउ जणु।
ता राएं पुरवरतलवरहु आएसु दिण्णु असिवरकरहु।
सिरकमलु विलुचवि णिट्ठुरहु पेसहि तणुरुहु वइवसपुरहु।
अण्णाणु णायविद्धंसयरु खलु सो[3] किं वुच्चइ रज्जधरु।
जो दुट्ठु कट्ठु णिद्धम्मयरु सो खडमि हउं अप्पणउ करु।
हियउल्लउ दुक्खें सल्लियउ ता पउरें मतिहिं[4] वोल्लियउ।

घत्ता—णदणु हणहु ण जुत्तउ जइ सो मणहु ण रुच्चइ॥
गिरिदुग्गमि कतारि तो[5] दूरतरि मुच्चइ॥6॥

7

पहु भणइ जाउ किं तेण महु हउं णदमि चिरु धम्मेण सहु।
गुणदूसणु अप्पपससणउ तवदूसणु मिच्छादसणउ।

पुत्र ने वर के हाथ से रोती और काँपती हुई उस त्रस्त कुमारी का हरण कर लिया।

घत्ता—तब अपने हाथ मे वृक्ष की डाले लेकर वणिक्वर राजद्वार पर पहुँचे यह कहते हुए कि कुमार के अन्याय से नगरी की रक्षा कीजिए।

(6)

पौरजन से राजा ने पूछा। काँपते हुए शरीर से नमस्कार करते हुए एक पौरजन बोला : "तुम्हारे पुत्र दूसरो के धन का अपहरण करते है, यहाँ तक कि विवाहित स्त्रियाँ भी उन से नही बचती है। हे आदरणीय जन (लोग), या तो विजन वन मे प्रवेश करे या अन्यत्र जाकर जीवित रहे।" तब राजा ने हाथ मे तलवार धारण करने वाले नगर कोतवाल को आदेश दिया कि उस निष्ठुर का सिरकमल काटकर पुत्र को यम नगर भेज दो। जो अज्ञानी न्याय का नाश करने वाला है, वह दुष्ट है, उसे राज्यधर क्यो कहा जाता है ? जो दुष्ट निंदनीय और अधर्म करने वाला है उसे मैं हाथ से नष्ट करूँगा। उसका हृदय दु ख से पीडित हो उठा। इस बीच नगरप्रमुख और मन्त्रियो ने कहा—

घत्ता—बेटे को मारना अच्छा नही। भले ही वह मन को अच्छा नही लगे। पहाडो से दुर्गम दूर जगल मे उसे छोड दिया जाए।

(7)

राजा कहता है वह मेरा पुत्र है, इससे मुझे क्या ? मै चिरकाल तक धर्म से आनन्दित रहूँगा। अपनी प्रशंसा करना गुण के लिए दूषण है। मिथ्यादर्शन तप का दूषण है। नीरस प्रदर्शन करना

---

(6) 1 AP तसतमणु। 2. A परसरणु, P पइसरह। 3 P किं सो। 4. A मइिवइ। 5. A ता।

णडदूसणु णीरसपेक्खणउ[1] कइदूसणु कव्वु अलक्खणउं।
धणदूसणु सढखलयणभरणु[2] वयदूसणु असमंजसमरणु[3]।
रइदूसणु खरभासिणि जुवइ सुहिदूसणु पिसुणु विभिण्णमइ।
सिरिदूसणु जडु सालसु णिवइ जणदूसणु पाउ पत्तकुगइ।
गुरुदूसणु णिक्कारणहसणु[4] मुणिदूसणु कुसुइससमब्भसणु।
ससिदूसणु मिगमलु मसिकसणु कुलदूसणु णंदणु दुव्वसणु।

घत्ता—लइ जं तुम्हहं इट्ठु मइ वि[5] तं जि पडिवण्णउ॥
जाइवि कुलवुड्ढेहिं बालहं उत्तरु दिण्णउ॥7॥

8

किं परकलत्तु उद्दालियउ उज्जलु अप्पाणउं मइलियउं।
किं वप्प सुदप्प कुसंगु किउ[1] परयारचोरकीलाइ थिउ।
कुद्धउ पिउ एवहिं को धरइ तुम्हारउ जीविउ अवहरइ।
तं णिसुणिवि सिसु चवति गहिरु अत्थंतु[2] णिवारइ को मिहिरु।
को रक्खइ आवंतउ मरणु जगि कासु ण ढुक्कइ जमकरणु।
कु वि अग्गइ कु वि पच्छइ मरइ वइवसदंततरि पइसरइ।
मंतीसें [3]करपल्लवधरिया सुय बेण्णि वि किंकरपरियरिया।
तरुवरविलग्गचलदवदहणि पइसारिय बेण्णि वि गिरिगहणि।

नट का दूषण है। व्याकरण से शून्य काव्य कवि का दूषण है। कुटिल और दुष्ट लोगो का पालन करना धन का दूषण है। सदेह (शल्य) के साथ मरना व्रत का दूषण है। दुष्ट बोलना नव-युवती की रति (प्रेम) का दूषण है। कुगति को प्राप्त करने वाला पाप लोगो का दूषण है। अकारण हँसना गुरु का दूषण है। खोटे शास्त्रो का अभ्यास करना मुनि का दूषण है। और काला मृग-चिह्न चन्द्रमा का दूषण है, और दुर्व्यसनी पुत्र कुल का दूषण है।

घत्ता—तो जो तुम लोगों को अच्छा लगे वही मैंने स्वीकार किया। तब कुलवृद्धो ने जाकर बालको को उत्तर दिया।

(8)

तुमने दूसरे की स्त्री का अपहरण क्यो किया? तुमने उज्ज्वल अपने को कलंकित किया है। घमडी, तुमने खोटी संगति क्यो की? दूसरो की स्त्रियों के दिलो को चुराने की क्रीडा मे तुम क्यो लगे? तुम्हारे पिता इस समय क्रुद्ध है, उन्हें कौन रोक सकता है, वह तुम्हारे जीवन का अपहरण करेंगे? यह सुनकर कुमार गभीर स्वर में कहता है कि डूबते हुए सूर्य को कौन बचा सकता है? आती हुई मौत से कौन बच सकता है? ससार मे रोग किसके पास नही पहुँचता? कोई आगे और कोई पीछे मरता है। इस प्रकार यम की डाढ के नीचे प्रवेश करता है। मत्री अनुचरो से घिरे हुए दोनो पुत्रो का हाथ पकडकर उन्हे बडे-बडे वृक्षो में लगी हुई चचल दावाग्नि से जलते हुए गहन वन मे ले गया। गणनाथ के मुखिया कामदेव का बल नष्ट करने वाले गणनाथ-

(7) 1. AP णीरसु। 2. A सढ़ खलयर°। 3. AP असमंजसु। 4. A °भसणु। 5. A जि।
(8) 1. A सदप्पु। 2. A उदयतु। 3. AP °पल्लवि धरिया।

गणणाहहु हयवम्महवलहु दक्खविय णवंत[4] महावलहु ।
रायागमणायवियाणएण कुच्छियमइ घाडिय राणएण ।
परमेसर ए णर भव्व जइ वर एवहिं तुहु उद्धरहि तइ ।
घत्ता—दुम्मइमलमइलेहि कुअरिहिं[5] कहिं जाएवउ ॥
भणि भवियव्वु [6]भयवत एहिं काइं पावेवउ ॥8॥

9

मुणि भणइ एत्थु दिहि[1] करिवि तवे होहिंति सीरि हरि तइयभवे ।
णामेण रामलक्खण विजई तं णिसुणिवि जाया तरुण जई ।
गउ मति णिहेलणु[2] पय णवइ णरणाहहु वइयरु विण्णवइ ।
वसुहाहिव तणुरुह गिरिविवरि आरण्णि णिहिय वणवासिघरि ।
कासु वि सकम्मउग्गुग्गमहो[3] तणुदुक्खलक्खविहिसंगमहो[4] ।
विसहावियदडण[5] मुडणइं[6] पचिदियदप्पविहडणइं[7] ।
णिवणयणइं मुक्कंसुयजलइं ओसासित्ताइ व सयदलइं ।
हा हा मइं रूसिवि किं कियउ किं वालजुयलु दुक्खे हयउ ।
अइरहसें किज्जइ कज्जरइ जा सा णिद्दहइ[8] ण कासु मइ ।
मणु मतें परियाणिवि पइहि अक्खिउ जिह पासि णिहिय जइहि ।

मुनिनाथ महावल को नमस्कार करते हुए उसने उन्हे दिखाया और कहा कि हे परमेश्वर, राजनीति-शास्त्र के न्याय को जानने वाले राजा ने दुष्ट बुद्धि वाले इन दोनो कुमारो को निकाल दिया है। यदि ये दोनो भव्य जीव हो तो इस समय आप इनका उद्धार करें।

घत्ता—दुर्मति के मल से मैले ये कुमार कहाँ जायेंगे ? हे भगवन्, आप बताइये कि ये किस भव्यता को प्राप्त होंगे (इनका भविष्य क्या होगा) ?

(9)

मुनि कहते है कि ये यहाँ दीर्घ तप करके तीसरे भव मे वलभद्र और नारायण होगे। राम और लक्ष्मण के नाम से विजेता। यह सुनकर, वे दोनों युवा मुनि हो गए, मत्री घर गया। वह राजा के चरणो मे प्रणाम कर वृत्तान्त वताता है कि हे राजन्, दोनो कुमारों को पहाड के विवर मे एक जगल में वनवासी के घर छोड़ दिया गया है। शरीर के लाखो दु खो और भाग्य के सगम से अपने कर्मो के उग्र उदय के कारण कोई भी व्यक्ति जिसमे दंड और मुड्न सहा गया है, ऐसे पाँचो इन्द्रियों के दर्प के विखंडनो को भोगता है। राजा की आँखे अश्रु धारा छोड़ती हुई ओस से भीगे हुए कमल दल के समान मालूम होती थी (वह विलाप करने लगा) कि मैंने क्रुद्ध होकर यह क्या किया! क्यो मैंने अपने दोनों वच्चो को दु ख से मार डाला ! जो कार्य मे अत्यत जल्दवाजी करती है, ऐसी वह वुद्धि किसे नही जलाती ! राजा के मन को जानकर

4. AP णमत । 5. AP कुमरहिं । 6. P भयवतहिं ।

(9) 1. P विहि । 2 A णिहेलणि पइ । 3. A °उग्गमगमहो । 4. A °दिहि° । 5. AP डडण° । 6 P मुडणहो । 8. AP णिड्डुहइ ।

जिह दोहिं मि लइयउं तवचरणु ता जायउ तायहु सिसुकरुणु।
कोमलतणु णीसारिवि घरहु णदण पट्ठविवि[9] वणंतरहु।
घत्ता—डहु बुहणिंदिरु रज्जु रज्जु जि पाउ णिरुत्तउं॥
रज्जमएण पमत्तउ[10] ण सुणइ[11] जुत्ताजुत्तउ॥9॥

10

णियगोत्तिउ[1] णियकुलि सणिहिउ वणु जाइवि राए तवु गहिउ।
भरहेण व अहिवदिवि रिसहु पणवेवि महावलु मुणिवसहु।
गउ मोक्खहु अक्खयसोक्खमइ थिउ णाणदेहु णिव्वाणपइ।
खग्गउरहु बहि कयधम्मकिसि आयावणजोए वालरिसि।
थिय जइयहुं तइयहु महि जिणिवि महसूयणु समरगणि हणिवि।
सुप्पहु पुरिसोत्तम दिट्ठ[3] पहि ससिचूले चिंतिउ हियरहि।
दीसइ णरणाहहु जेरिसउ महु होउ पहुत्तणु तेरिसउ।
मुउ[2] सणकुमारु[4] हुउ रिसि विजउ सुरु णामु सुवण्णचूलु सदउ।
कमलप्पहि विमलविमाणवरि णिवतणउ मणिप्पहि अमरघरि।
मणिचूलु देउ जायउ पवरि कलहसु व विलसइ कमलसरि।

मंत्री ने उसे यह बताया कि किस प्रकार उसने मुनि के पास बालको को रख दिया है और किस प्रकार दोनो ने तप आचरण स्वीकार कर लिया है। यह सुनकर पिता को बालको के प्रतिकरुणा उत्पन्न हो गई। वह कहता है कि कोमल शरीर वाले पुत्रों को घर से निकालकर वन के भीतर मैंने भेजा दिया।

घत्ता—पडितो की निन्दा करनेवाले राज्य का नाश हो। निश्चय ही राज्य एक पाप है। राजमद मे पागल होकर व्यक्ति अच्छे-बुरे का विचार नही करता।

(10)

अपने गोत्र के व्यक्ति को कुल परम्परा मे स्थापित कर राजा ने वन मे जाकर तप ग्रहण कर लिया और जिस प्रकार भरत ने ऋषभ तीर्थंकर की अभिवंदना कर दीक्षा ग्रहण की थी उसी प्रकार मुनिश्रेष्ठ महावल को प्रणाम कर उसने भी दीक्षा ग्रहण की। अक्षय सुमति वाला वह मोक्ष चला गया तथा ज्ञानशरीर वह निर्वाण पद पर स्थित हो गया। खड्गपुर के बाहर धर्म की खेती करनेवाले बाल-ऋषि आतापन योग से जब स्थित थे तब उन्होने धरती जीतकर तथा युद्ध के प्रागण मे मधुसूदन को मारकर जानेवाले सुप्रभ और पुरुषोत्तम को रास्ते मे देखा तो चन्द्रचूल अपने मन में सोचने लगा, जिस प्रकार को प्रभुता इस नरनाथ को दिखाई देती है मेरी भी वैसी प्रभुता हो। विजय मुनि मरकर सनत् कुमार स्वर्ग मे स्वर्णचूल नाम का दयालु देव हुआ। कमलप्रभ नाम के विमल श्रेष्ठ विमान मे तथा राजपुत्र (चन्द्रचूल) मणिप्रभ देव विमान मे मणिचूल नाम का देव हुआ। वह ऐसे मालूम होता था जैसे कमल सरोवर मे कलहस शोभित हो रहा हो।

---

9 A पट्ठविय। 10. AP पमत्तु। 11. AP मुणइ।
(10) 1. AP णियणत्तिउ। 2. A दिट्ठि। 3. A मुए। 5. AP सणकुमारे।

घत्ता—जं अणिमाइगुणेहिं बहुविहवेण[5] णिउत्तउं ॥
तं दिवि दीहरु कालु विहिं मि दिव्वु सुहुं भुत्तउ ॥10॥

11

सरवरमरालचक्खियभिसइ[1] इह भरहवरिसि कासीविसइ ।
जहिं सालिरमणकीलाहरइं जहिं सालिधण्णछेत्त तरइ ।
जहिं सालिकमलछण्णइं सरइ जहिं सालिहियाइ व अक्खरइं ।
सिसुहंसपयइ मयरदरइ गोहणइ चरतइं पइ जि पइ ।
रोमंथतइ[2] सतुट्ठाइ दीसंति हरियतणपुट्ठाइ ।
उच्छुरसु जतणालील्हसिउ दक्खारसु पिज्जइ मुहरसिउ ।
ओयणु सीयलु दहिओल्लियउ फणिवेल्लिपत्तपत्तलि थियउ ।
जहिं जिम्मइ पहियणहिं पवहि देसियढक्करिजंपणरवहिं ।
ओहामिय अलयाउरिसिरिहि जणभरियहि वाणारसिपुरिहिं[3] ।
तहिं दसरहु दसदिसिणिहियजसु णिवसइ णिउ जियरिउ थिरु सवसु ।

घत्ता—कुवलयबधु वि णाहु णउ दोसायरु जायउ ॥
जो इक्खाउहि वसि णरवइरूढिइ[4] आयउ ॥ 11 ॥

घत्ता—जो अणिमा गुणो के द्वारा अनेक प्रकार के वैभव से युक्त है, स्वर्ग मे ऐसे लम्बे समय तक उन दोनो ने दिव्य सुख का भोग किया ।

(11)

इस भारतवर्ष मे काशी नाम का देश है, जो सरोवर के हसो के द्वारा आस्वादित कमलनियो से युक्त है । जहाँ स्त्रियो और पुरुषो के रमण करने के लिए क्रीडा-घर हैं । जहाँ शालि धान्य के तरह-तरह के खेत हैं । जहाँ भ्रमरों से युक्त कमलो से सरोवर आच्छादित है । जो लिखे हुए अक्षरो के समान है । हँसो के छोटे-छोटे बच्चो के पैर जहाँ पराग मे सने हुए हैं । जहाँ पग-पग पर गोधन चर रहे है । और जो संतुष्ट होकर जुगाली करते हुए हरे घास से पुष्ट शरीर वाले दिखाई देते है । जहाँ यत्रनलियो से गिरा हुआ गन्ने का रस तथा मुँह को मीठा लगने वाला द्राक्षारस पिया जाता है । दही से मिला हुआ ठडा भात नागवेली के पत्तो की पत्तल पर रखा हुआ है । जो देशी ढक्का और जपाण वाद्यो के शब्दो के साथ प्याऊ पर पथिकजनो के द्वारा खाया जाता है । जिसने अलका नगरी की शोभा को पराजित कर दिया है । जो जनो से व्याकुल है । ऐसी वाराणसी नगरी मे दशो दिशाओ मे अपने यश का विस्तार करने वाला शत्रुओ का विजेता स्वाधीन, स्थिर राजा दशरथ निवास करता है ।

घत्ता—वह राजा कुवलय बन्धु यानी चन्द्रमा था । और (दूसरे पक्ष मे) धरती मडल का स्वामी अर्थात् चन्द्रमा पर वह दोषाकार नही था और जो नरवरो से प्रसिद्ध इक्ष्वाकुकुल में उत्पन्न हुआ था ।

---

5. A बहुविहतवेण ।

(11) 1 A °चालियभिसए । 2. P रोमथतइ पसुसतुट्ठाइं । 3. AP वाराणसिं । 4 A °रूढि आयउ ।

12

करगेज्झु मज्झु उत्तुंगथणि तहु सुवल[1] णाम वल्लह घरिणि[2]।
सिविणतरि पेच्छइ उग्गमिउ रवि सहसकिरणु णहयलि भमिउ।
ससि कुमुयकोसवित्थारयरु गज्जतु जलहि जुज्झियमयरु।
सुविहाणइ कंतहु भासियउ तेण वि तहु गुज्झु पयासियउं।
तुह होसइ तणुरुहु सीरहरु हलि चरमदेहु ण तित्थयरु।
अण्णहिं दिणि सग्गहु अवयरिउ सुरु[3] कणयचूलु उयरइ[4] धरिउ।
मघरिक्खयंदि[5] णीरयदिसिहि फग्गुणि तमकालिहि तेरसिहि।
देविइ णवमासहिं सुउ जणिउ तणुरामु रामु राए भणिउ।
करिवरलोहियपव्वालियउ[6] सिविणंतरि[7] सीहु णिहालियउ।
माहहु मासहु सियपढमदिणि सविसाहिं[8] जसाहिउ पहु भुवणि[9]।
मणिचूलु देउ दसरहरयइ सुउ अवरु[10] वि जायउ केक्कयइ।
जोइउ लक्खणलक्खकियउ सो ताए लक्खणु कोक्कियउ।

घत्ता—वेण्णि वि ते गुणवंत भुयवलतासियदिग्गय॥
णाइ सियासियपक्ख पत्थिवगरुडहु णिग्गय॥12॥

---

(12)

उसकी सुवला नाम की प्रिय गृहिणी थी। ऊँचे पयोधरों वाली जिसका मध्य भाग मुट्ठी से पकड़ा जा सकता है। एक रात वह स्वप्न मे देखती है कि उगा हुआ हजारो किरणोवाला सूर्य आकाश तल में घूम रहा है। उसने देखा कुमुदो के कोषो का विस्तार करने वाला चन्द्रमा, गरजते हुए समुद्र में लड़ता हुआ मीन युगल। दूसरे दिन सुन्दर प्रभात में उसने पति से यह बात कही। उसने भी उसका रहस्य उसे बताया कि तुम्हारा बलभद्र हलधर चरम शरीरी पुत्र होगा। वैसे ही जैसे तीर्थंकर। दूसरे दिन स्वर्ग से अवतरित हुए स्वर्णचूल देव को उस रानी ने अपने पेट मे धारण किया। जब चन्द्रमा मघा नक्षत्र में स्थित था, दिशा निर्मल थी, ऐसी फागुन वदी तेरस को नौ माह पूरे होने पर देवी ने पुत्र को जन्म दिया। शरीर से सुन्दर होने के कारण राजा ने उसका नाम राम रखा। फिर कैकयी ने गजवर के रक्त से लिप्त सिंह को स्वप्न मे देखा। माघ मास में विशाखा नक्षत्र से युक्त शुक्ल पक्ष के प्रथम दिन राजप्रासाद मे दशरथ में अनुरक्त कैकयी से मणिचूल नाम का देव दूसरे पुत्र के रूप मे हुआ। पिता ने उसे लाखो लक्षणो से युक्त देखकर उसका नाम लक्ष्मण रख दिया।

घत्ता—गुणवान अपने बाहुबल से दिग्गजो को सताने वाले वे दोनो ऐसे मालूम होते थे मानो दशरथ राजा रूपी गरुड़ के काले और सफेद दो पख निकल आये हो।

---

(12) 1. A सुकल। 2. AP रमणि। 3 AP सुउ। 4 A उयरे, P उवरें। 5. A °रिक्खे चदे, P °रिक्खि इदे। 6. P °पच्चालियउ। 7. P सुविणतरि। 8. AP सविसाहु। 9 AP भवणि। 10. P जायउ अवरु वि.।

13

रेहंति बे वि वलएव हरि ण तुहिणगिरिंदजणिसिहरि[1]।
ण गगाजउणाजलपवह[2] णं लच्छिहि कीलारमणवह[3]।
णं पुण्ण मणोरह सज्जणहं ण वम्मवियारण दुज्जणहं।
अवरोप्परु णिरु णिम्मच्छराह तेरहवारहसवच्छराहं।
सहसाइ विहि मि णिद्देसियइ[4] परमाउसु जइवरभासियइं[5]।
पण्णारहचावइ तुगतणु ते सत्थु सुणति गुणंति धणु।
पुरबाहिरि उववणसठियहु विद्धंतहु जयउक्कठियहु।
अवलोइवि रामहु सरपसरु मउ चेय मुयति ण वइरि सरु।
करि आउहु ज लक्खणु धरइ तहु परपहरणु जि ण संचरइ।

घत्ता—कपइ महि-सचारे ससरसरासणहत्थह॥
सकइ जमु[6] जमदूउ को णउ तसइ समत्थह॥13॥

14

रिसहाहिवसताणाइयह सिरिभरहसयररायाइयहं।
सखापरिवज्जिय पुरिस गय अहमिंद वि जहिं कालेण मय।
तहिं अण्णहु[1] कहिं जीवियकहइ लइ अत्थमियइ[2] पत्थिवसहइ।

(13)

वे दोनो बलभद्र और नारायण इस प्रकार शोभित होते थे मानो हिमगिरि और नीलगिरि पर्वत हो, मानो गगा और जमुना के जल प्रवाह हो, मानो लक्ष्मी की क्रीड़ा करने के पथ हो, मानो सज्जनो के पुण्य मनोरथ हो, मानो दुर्जनो के मर्म का भेदन करने वाले हो। एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या भाव से रहित जब तेरह वर्ष बीत गये तो सहसा उन्हे परम आयु वाले मुनिवरो के द्वारा कहे गये उपदेश दिये गये। पन्द्रह धनुप प्रमाण ऊँचे शरीर वाले वे दोनो शास्त्र सुनते हैं। और धनुष पर डोरी चढाते है। नगर के बाहर उपवन में स्थित, विध्वंस करते हुए जय के लिए उत्साहित राम के तीरो के प्रसार को देखकर शत्रु अपनी मद चेतना छोड़ देता है, वह तीर नही छोडता। जब लक्ष्मण अपने हाथ मे हथियार लेता है तो दुश्मन का हथियार काम नही करता।

घत्ता—तीर-धनुष हाथ मे लेकर जब वे चलते है तो धरती काँप जाती है। यम शंका करने लगता है। और यमदूत भी। समर्थ लोगो से कौन त्रस्त नही होता!

(14)

विश्वनाथ की कुल परम्परावाले श्री भरत और सगर के गोत्र वाले राजाओ में से जहाँ असख्य लोग चले गये, (औरो की तो क्या) अहेमेन्द्र जहाँ काल के द्वारा मारा जाता है वहाँ दूसरो के जीवन कथा से क्या? राज्यसभा के अस्त होने पर हरिषेण के स्वर्ग जाने पर हजारों

(13) 1 AP तुहिणगिरिंद णीलसिहरि। 2. A °जलपवाह, P °जलणिवहु। 3. A °रमणगह, P °रवणवहु। 4. A णिद्देसियउ। 5 A भासियउ। 6 A जम।

(14) 1. A अण्ण वि कहि, P अण्णहि किं। 2 A अइ अत्यमिए, P लइ अत्यमिए।

सव्वत्थसिद्धि हरिसेण गइ दिणमाणे[3] वरिसह सहसहइ[4] ।
[5]सुयसुहदिणाउ जायविजइ पुण्णइ पचुत्तरवरिससइ ।
असुरिंदे विद्धंसियसयरि दहरहु[6] पइट्ठु[7] उज्झाणयरि ।
परियाणिवि तणयहु तणउ बलु हुउ महियलि सयलु वि खलु विबलु ।
सहु पुत्तहिं जायधरारइहिं सुपरिट्ठिउ पहु णियसतइहि ।
तहिं सुहुं णिवसतहु णरवइहि - उप्पण्णउ सतोसु व जइहि ।
अण्णेक्कहि भरहु पसण्णमणु अण्णेक्कहि घरिणिहि सत्तुहणु ।
महिवइ सपुण्णमणोरहहिं चउहि वि जणेहिं परबलमहहिं ।
सोहइ पुत्तहि सकयायरहिं ण भूमिभाउ चउसायरहिं ।

घत्ता—मिहिलाणयरिहि[8] ताम णामे जणउ णरेसरु ॥
पसुवहकम्मे सग्गु चिंतइ जण्णहु अवसरु ॥14॥

15

महु मेरउ रक्खइ को वि जइ वसुहासुय दिज्जइ तासु तइ ।
त णिसुणिवि मते जपियउ जसु णामे तिहुयणु कपियउ ।
सो जासु ण जाउहाणु[1] गहणु जसु लहुवभाइ भडु महमहणु ।
सो रक्खइ[2] धुवु काकुत्थु तिह खेयरहिं ण हम्मइ होमु जिह ।

वर्षो का समय बीत गया। उनके पुत्रजन्म के दिन से लेकर विजय से युक्त एक सौ पाँच वर्ष पूरे होने पर, असुरेन्द्र द्वारा राजा सगर के ध्वस्त होने पर, राजा दशरथ ने अयोध्या नगरी मे प्रवेश किया। पुत्रो के बल को जानकर धरतीतल के सारे दुष्ट बलहीन हो उठे, जिनकी धरती मे अनुरक्ति है ऐसे अपने पुत्रो और संतानो के साथ राजा दशरथ वहाँ अच्छी तरह रहने लगे। वहाँ सुख-पूर्वक निवास करते हुए राजा के एक और पत्नी से प्रसन्न मन भरत उसी प्रकार उत्पन्न हुआ जिस प्रकार मुनि को सतोष उत्पन्न होता है। एक और पत्नी से शत्रुघ्न पैदा हुआ। पूर्ण मनोरथ वाले, परमशत्रुसेना का नाश करने वाले, स्वजनो का आदर करनेवाले उन चारो पुत्रो से राजा दशरथ इस प्रकार शोभित होता है, जिस प्रकार भूमिभाग चार समुद्रो से शोभित होता है।

घत्ता—इसी समय मिथिला नगरी मे जनक नाम का राजा था। उसने सोचा पशु यज्ञ से स्वर्ग मिलता है। यज्ञ का अवसर है।

(15)

जो कोई मेरे यज्ञ की रक्षा करेगा मैं उसे सीता दूँगा। यह सुनकर जनक के मत्री ने कहा 'सुनो, जिसके नाम से त्रिभुवन काँपता है, और जिसका रावण के द्वारा ग्रहण सभव नही है, योद्धा लक्ष्मण जिसका छोटा भाई है, ऐसे राम निश्चय से यज्ञ की इस प्रकार रक्षा करेंगे, जिससे विद्याधरों के द्वारा होम का नाश नही किया जा सकता। यह सुनकर राजा ने श्रेष्ठ दूत भेजा,

3 P दिणमाणह। 4 A सहासरुए, P °सहसि हुए। 5 AP °दिणाउ जाएवि लए। 6 AP दसरहु। 7 A सुपइट्ठउ। 8 A महिला°।
(15) 1 A णाउहाणु। 2. A रक्खइ बधुसमेउ।

ता राए पेसिय दूयवर 'गय ते बहुपाहुडलेहकर[3]।
उज्झहि दसरहहु णिवेइयउ[4] आलिहियउ पण्णउ वाइयउ।
जो रक्खइ अद्धर परमकय[5] तहु दिज्जइ ण पच्चक्ख सुय[6]।
णामेण सीय वेल्लहलभुय किर कहु उवमिज्जइ जणयसुय।
त बुद्धिविसारएण भणिउ इहरत्ति परत्ति चारु झुणिउ।
कउकरणु[7] णिहालणु रक्खणु वि लइ रक्खउ राहउ लक्खणु वि।

घत्ता—कारावय होआयार[8] हुणिय पसु वि देवत्तणु॥
जेण लहंति णरिंद त करि जण्णपवत्तणु॥15॥

16

ज जुजिवि[1] सग्गहु सयरु गउ सहु सयणहिं तणयहिं मुक्करउ।
त नृव[2] रक्खिज्जइ किज्जइ[3] वि भावे वित्थारहु णिज्जइ[4] वि।
जगि धम्ममूलु वेउ जि कहिउ सो जेहिं महापुरिसहि गहिउ[5]।
ते हुंति देव दिव्वगधर लहु पेसहि कुलसरहसवर।
रक्खेवि जण्णु सा घणथणिया सिसु परिणउ[6] सुय जणयहु तणिया।
ता अइसयमइणा ईरियउ पइ वप्प असच्चु वियारियउ।

जो अनेक उपहार और लेख हाथ मे लेकर गये। अयोध्या मे उन्होने दशरथ से निवेदन किया और लिखे हुए पत्र को पढा· "जो महान् क्रिया वाले यज्ञ की रक्षा करता है, उसे मैं प्रत्यक्ष लक्ष्मी के समान कोमल भुजा वाली सीता नाम की कन्या दूंगा।" जनक की कन्या की उपमा किससे दी जा सकती है! तब राजा से बुद्धिविशारद ने कहा—"यज्ञ करना, उसकी देखभाल करना या रक्षा करना इस लोक और परलोक मे सुन्दर कहा गया है। तो लक्ष्मण और राम यज्ञ की रक्षा करे।"

घत्ता—यज्ञ कराने वाले होता जन और उसमे होमे गए पशु, जिससे देवत्व पाते है, हे राजन्, उस यज्ञ का प्रवर्तन कीजिए।

(16)

जिस प्रकार राजा सगर यज्ञ करके स्वजनो और पुत्रो के साथ पाप से रहित होकर स्वर्ग गया, उसी प्रकार, हे राजन्, यज्ञ की रक्षा की जानी चाहिए। उसका विस्तार करना चाहिए। विश्व मे धर्म का मूल वेद को माना गया है, और उसे जिन महापुरुषों ने स्वीकार किया है, वे दिव्य शरीर धारण करने वाले देवता होते हैं, इसलिए शीघ्र ही अपने कुल रूपी सरोवर के श्रेष्ठ हसों (राम, लक्ष्मण) को शीघ्र भेज दीजिए। यज्ञ की रक्षा करके सघन स्तनो वाली जनक की उस कन्या से बालक राम विवाह करे। तब अतिशयबुद्धि मत्री ने कहा—"भोले-भाले तुमने यह

3 A पाहुड लेवि कर। 4. P णिवेवियउं। 5 A अद्धुर परमरुअ, P अद्धर परमकिय। 6 AP सिय। 7 P करणु। 8 A कारावय होयारहुणिय, P कारावयहोआयारि।

(16) 1 A जुजवि, P हुजेवि। 2. AP णिव। 3 A कज्जइ व। 4. A णिज्जइ व। 5 A महिउ 6 P परणउ।

सुणि भारहि चारणजुयलि पुरि   जिणधम्मपहाउज्झियविहुरि।
तहिं अत्थि सुजोहणु दिण्णदिहि   महएवि तासु णामे अतिहि।
सुय सुलस सुलक्खण जहि जि जहि   दीसइ[7] भल्लारी तहि जि तहि।
तहि णिरुवमु रूउ गुणग्घविउ   णिउणे विहिणा कहि णिम्मविउ।

घत्ता—णडवेयालियछत्तबदिणघोसाऊरिउ॥
ताहि सयवरु जाउ सयरु[8] राउ हक्कारिउ॥16॥

17

सो कोसल मेल्लिवि णीसरिउ   पहपरहरि[1] मज्जणि सचरिउ।
दप्पणि अवलोइउ सिरपलिउ[2]   णवचपयतेल्ले विच्छुलिउ।
राएण वुत्तु किं परिणयणु   एवहिं किं छिप्पइ तरुणियणु।
थेरत्तणि परिहउ पेम्मविहि[3]   विसहिज्जइ वर तवतावसिहि।
ता तहु धाईइ किसोयरिइ   पडिवयणु दिण्णु मदोयरिइ।
सियकेसे चगउ दीसिहइ   तुह[4] सिरिहरि संपय पइसिहइ।
ते वयणे महिवइ पुणु चलिउ   गरुडद्धउ णहयलि परिघुलिउ।
दियहेहिं पराइउ त णयरु   ससुरग्गइ सथुउ णिवसयरु[5]।
जाइवि धाइइ मदोयरिइ   सइ दिण्ण कण्ण तुच्छोयरिइ।

असत्य विचार किया है। आप सुनिए कि भारतवर्ष के जिन धर्म के प्रभाव से दुखो से रहित चारणयुगल नगर है, उसमे सुयोधन नाम का भाग्यशाली राजा था। उसकी अतिथि नाम की महादेवी थी। उसकी लक्षणवती सुलसा नाम की लडकी इतनी सुन्दर थी कि उसे जहाँ देखो वही भली दिखती थी। गुणो से युक्त उसके अनुपम रूप को चतुर विधाता ने बडी कठिनाई से बनाया होगा।

घत्ता—उसका वहाँ नटो-वैतालिकों, छत्रों-बदीजनो के घोषो से आपूरित स्वयवर रचा गया और उसमे राजा सगर को बुलाया गया।

(17)

वह (सगर) कौशल देश को छोडकर चला। उसने स्नान करते समय उत्कृष्ट प्रभा को धारण करने वाले दर्पण के प्रतिविम्ब मे अपने सिर के सफेद बाल को देखा, जो चपे के नये तेल से चमक रहा था। राजा ने कहा कि विवाह से क्या? इस अवस्था मे तरुणी जन को क्या छुआ जाए! बुढापे मे प्रेम प्रक्रिया पराभव का कारण है, अब श्रेष्ठ तप की तपस्या को सहन करना चाहिए। तब उसकी कृशोदरी धाय मदोदरी ने प्रत्युत्तर मे कहा कि सफेद बाल से तुम अच्छे दिखोगे और तुम्हारे श्रीगृह मे सपत्ति प्रवेश करेगी। उसके वचन सुनकर राजा फिर चल पड़ा, उसका गरुड़-ध्वज आकाश तल मे फहराने लगा। कुछ दिनो मे राजा सगर उस नगर मे पहुँचा और अपने ससुर के सामने बैठ गया। क्षीण कटिवाली धाय मदोदरी ने जाकर स्वय कान दिए (वात सुनायी)।

---

7 AP अवलोइय मारइ तहिं जि तहिं। 8. AP सयर राउ।

(17) 1. A पहु पुरिवहिं। 2 AP सिरि पलिउ। 3 A पेम्मणिहि। 4. AP तहु। 5 A णिउ। सयरु, P णिउ सगरु।

घत्ता—कण्णइ गुणसंदोहे हियवउं सयरि णिहित्तउ[6] ॥
मायइ विहसिवि ताम अवरु पडुत्तरु वुत्तउं ॥17॥

18

सुणि देसि सुरम्मइ सहलवणि　　पोयणपुरि घणपरिपुण्णजणि ।
बाहुवलिणराहिववंसतइहि　　जायउ महु बंधु कुलुण्णइहि ।
तिणपिंगु तासु पिय सुजसमइ　　वीणारव ण मणसियहु रइ ।
तहि तणउ तणउ ण कुसुमसरु　　तरुणीयणलाइयविरहजरु ।
महुपिंगु णामु[1] तुह मेहुणउ　　नुइ अच्छइ आयउ पाहुणउ ।
अण्णेतहिं[2] म करहि रमणमइ[3]　　तुह जोग्गु जुवाणउ सो ज्जि लइ ।
णियभाइणेज्जु वरु इच्छियउ　　अण्णेक्कु असेसु दुगुंछियउ ।
सामुयइ पइत्तु समारियउं[4]　　पडिवक्खागमणु णिवारियउं ।
अण्णेक्कें सयरहु साहियउ　　जं आहरणेहि पसाहियउ ।
जं कण्णारयणु समहिलसिउ　　तं दुल्लहु वट्टइ विहिवसिउ ।

घत्ता—अतिहीदेविहि बंधु जो तिणपिंगलु राणउ ॥
महुपिंगलु तहु पुत्तु आयउ मयणसमाणउ ॥18॥

घत्ता—कन्या ने गुणों के समूह राजा सगर में अपना हृदय स्थापित कर दिया। परन्तु उसकी माता ने हँसते हुए उसे (कन्या को) दूसरा ही उत्तर दिया।

(18)

सुफल वन वाले सुरम्य देश में धन से परिपूर्ण लोगों वाला पोदनपुर नगर है, उसमें बाहुबलि राजा की वंश परम्परा में कुल की उन्नति करने वाला मेरा भाई तृणपिंग है। उसकी यशोधरी नाम की पत्नी है। वीणा के समान शब्द वाली जो मानो कामदेव की रति है, युवतीजनों को विरहज्वर उत्पन्न करने वाला मधुपिंगल नाम का उसका कामदेव के समान पुत्र है। वह तुम्हारे मामा का बेटा पाहुना बनकर आया है, और यहाँ अच्छी तरह है। इसलिए तुम किसी दूसरे में रमण की बुद्धि न करो। वह तुम्हारे योग्य युवक है, उसी को तुम ग्रहण करो। अपने भाई के पुत्र को वर के रूप में पसन्द करो और बाकी सबकी उपेक्षा कर दो। इस प्रकार सास ने अपना प्रयत्न शुरू कर दिया और प्रतिपक्ष (सगर) का वहाँ आना मना कर दिया। किसी दूसरे ने जाकर राजा सगर से कहा—जो तुमने अलंकारों से प्रसाधन किया है, और जो कन्या की इच्छा की है, वह भाग्य के वश से असंभव दिखाई देती है।

घत्ता—अतिथि देवी का भाई जो तृणपिंगल नाम का राजा है, उसका कामदेव के समान मधुपिंगल नाम का पुत्र आया हुआ है।

---

6 AP णिहित्तउ ।

(18) 1 A णाउ तणु मेहुणउ । 2. A अण्णहिं तहिं । 3. A रमणरइ । 4 A समारियउ, P समारिउं ।

19

देहिति तासु सुय जाहि तुहुं ता पहुणा जोइउ मतिमुहु।
गुरु चवइ एउ किर कित्तडउ[1] महु तिहुयण[2] सरिसव जेत्तडउ।
जइ णउ परिणावमि कण्ण पइं तो मतित्तणु किउ काइ मइ।
इय भणिवि कव्वु कइणा विहिउ वरलक्खणु दलसचइ लिहिउ।
त कासु वि कहिं मि ण दावियउ मंजूसहि तेण छुहावियउ।
वहुवण्णविचित्तचीरपिहिउ[3] णिवउववणमहियलि सणिहिउ।
हलियहिं हलि हत्थु जेत्थु णिहिउ जहिं छुडु भूभाउ समुल्लियउ[4]।
कउ[5] वड्ढियतणकट्ठयरहिउ जहिं पग्गहि धवलु परिग्गहिउ[6]।
वावारिय कम्मु करंति जहिं णगरि[7] मजूस विलग्ग तहिं।
आयड्ढिवि णीय णिहेलणहु दक्खालिय पहुहि सुजोहणहु।
उग्घाडिय पोत्थउ जोइयउ अण्णेक्के भल्लउं वाइयउं।

घत्ता—दियवरवेसे ढुक्कु कइ[8] पच्छण्णु सरायइ॥
वरइत्तहु सामुद्दु भासइ कोमलवायइ॥19॥

20

काणकुटपिंगलाह अधमूयपंगुलाह।
णिद्धणाह णिब्बलाहं [1]बुद्धिहीणवेभलाह।

(19)

तुम जाओ। कन्या उसे (मधुपिंगल को) दी जाएगी। तब राजा ने मन्त्री का मुख देखा। तब गुरु ने कहा—यह मेरे लिए कितनी-सी बात है, मेरे लिए त्रिभुवन सरसों के समान है। यदि मैं तुम्हारा कन्या से विवाह न कराऊँ तो मैंने मंत्रीपन क्या किया? ऐसा कहकर कवि मन्त्री ने एक उत्तम लक्षणो का काव्य बनाया और उसे पत्रसपुट पर लिखा। उसे उसने कही भी किसी को नही दिखाया और मजूषा मे रख दिया। नाना रग के विचित्र वस्त्र से ढकी हुई मजूषा को राजा के उद्यान की धरती मे गाड़ दिया। किसान द्वारा हल पर हाथ रखते ही जहाँ शीघ्र भू-भाग जुत जाता है, जहाँ धरती गड़े हुए तिनको और कठोरता से रहित है, जहाँ बैल लगामो से ग्रहीत हैं, वहाँ किसान खेती का काम करते है और उनके हल में मजूषा आ लगती है। वे उसे उठाकर अपने घर ले आये और उन्होने अपने अच्छे योद्धा राजा को उसे दिखाया। खोलकर पोथी देखी गई और कई लोगो के द्वारा वह अच्छी तरह बाँची गई।

घत्ता—द्विजवर (ब्राह्मण) के वेश मे कवि रूपी मन्त्री प्रच्छन्न रूप मे वहाँ पहुँचा और राग पूर्वक कोमल वाणी मे वर को सामुद्रिक-शास्त्र बताने लगा।

(20)

काले, पीले, अन्धे, गूँगे, निर्धन, निर्बल, बुद्धिहीन, पागल, मान और लज्जा से रहित और

(19) 1. A कित्तलउ, P केत्तडउ। 2. A तिहुवणु सरिसउ। 3 A चीरु पिहिउ। 4 AP समुल्लिहिउ। 5A omits this foot. 6 P adds after this: वसालग्गा रइ णिरु गहिउ। 7. A लग्गलि, P लगलि। 8 A कइकयपच्छण्णु।

(20) 1. A °विब्भलाह; P °विभलाह।

माणलज्जवज्जियाहं रोयभावणिज्जियाहं ।
कुट्ठणट्ठकाययाहं छिण्णपाणिपाययाहं ।
णीयकम्मकारयाहं इत्थिडिंभमारयाहं ॥
णिग्घिणाहं णिद्दयाहं साहुकम्मणिंदयाहं ।
वड्ढमाणदुज्जसाहं[2] दुक्कुलाहं सालसाहं[3] ।
वुड्ढकुच्छियगयाहं[4] दीणभावण गयाहं ।
गोत्तवित्तचत्त जा वि दिज्जए ण कण्ण सा वि ।
घत्ता—मंडवमज्झि विवाहि पिंगलु जो पइसारइ[5] ॥
सो[6] विहवत्तणु दुक्खु णियधीयहि वित्थारइ ॥20॥

21

ता सो महुपिंगलु लज्जियउ गउ चामरछत्तविवज्जियउ ।
एक्किल्लउ[1] ल्हिक्किवि बंधवह लग्गउ दहदुविहह जिणतवह ।
सेवइ हरिसेणगुरुहि पयइं णिक्खवइ अणंतइं दुक्कियइं ।
एत्तहि सो सयरु वि बालियइ वरु लइउ सयंवरमालियइ ।
अणुहुंजिवि[2] तहिं णववहुसुरउ पुणु आमेल्लेप्पिणु सासुरउं ।
उज्झाउरि जाइवि पाणपिउ सिरि सुलसइ सहुं भुंजंतु थिउ ।
महुपिंगु भडारउ कहिं मि पुरि पइसइ[3] भिक्खहि चउवण्णघरि ।
जा[4] तावेक्कें विप्पें कहिउ सामुद्दु असेसु सच्चरहिउ ।

रोगो से पराजित, कोढ़ी, क्षीण शरीर, कटे हाथ-पैर वाले नीच कर्म करने वाले, स्त्रियो और बच्चो की हत्या करने वाले, निर्दय, घिनौने, अच्छे कामो की निन्दा करने वाले, बढते हुए अपयश वाले, खोटे कुल वाले, आलसियो, बढती हुई खुजली से युक्त शरीर वाले, दीन भाव को प्राप्त, उनको तथा ऐसे लोगो को तो कुल और धन से रहित कन्या भी नही दी जाती।

घत्ता—जो व्यक्ति मडप के भीतर विवाह मे पिंगल का प्रवेश कराएगा वह अपनी कन्या के लिए, दु ख और वैधव्य लाएगा।

(21)

इससे बेचारा मधुपिंगल लज्जित हुआ और चामरों और छत्रो से रहित होकर चला गया। वह अकेला अपने बंधु और बाधवो से छिपकर जिनेन्द्र भगवान् द्वारा कहे गए बारह प्रकार के तप में लग गया। वह हरिषेण के चरणो की सेवा करने लगा। और इस प्रकार अनन्त दु:खो का क्षय करने लगा। यहाँ भी उस बाला ने स्वयंवरमाला के द्वारा सगर को वर रूप मे ग्रहण कर लिया। वह भी वहा नववधू के साथ सुरति का भोग कर फिर ससुराल छोड़कर अयोध्या नगरी में जाकर प्राणप्रिय श्री सुलसा के साथ आनन्द करता हुआ रहने लगा। जिसमे चारो प्रकार के वर्णों के घर हैं ऐसी उस नगरी मे आदरणीय मुनि मधुपिंग ने भिक्षा के लिए जैसे ही प्रवेश

2. A दुज्जणाहं। 3. A दुम्मुहाहं। 4 A कुच्छियारयाहं। 5. A वइसारइ। 6, P omits सो।
(21) 1 AP एक्कल्लउ। 2. A अणुहुंजहिं, P अणुभुंजहिं। 3 AP पइसरइ। 4 A जा ता विप्पें एक्कें।

रिसिसीलु एण अवलंबियउं लच्छीमुहु काइं ण चुंबियउ।
अवरेक्कें ता तहिं भासियउ पइ लक्खणु किं किर णिरसियउ।

घत्ता—सुणि[5] पोयणपुरि राउ होंतउ एहु महीसरु॥
गउ सुलसावरयालि चारणजुयलउ पुरवरु॥21॥

22

पिउससुय परिणइ जाम किर ता सयरमंतिकयकवडगिर।
पोत्थइ वित्थारिवि दक्खविय[1] विवरिवि बहुसद्दसमग्घविय।
सासुयससुरह मणु हारियउ इहु पिंगदिट्ठि णीसारियउ।
अप्पुणु पुणु खलु वरइत्तु थिउ तेणेयहु [2]दुक्खणिहाणु किउ।
त णिसुणिवि हियवइ कुद्धु जइ जिणदेसिउ तवहलु अत्थि जइ।
पाविट्ठु दुट्ठु खलु खुद्दमइ मइ पुरउ हणेव्वउ सयरु तइ।
रिसि रोसु भरतु भरतु मुउ असुरिंदहु वाहणु देउ हुउ।
सो सट्ठिसहसमहिसाहिवइ किं वण्णमि महिसाणीयवइ।

घत्ता—जिणवरधम्मु लहेवि खमभावें परिचत्तउ॥
खणि सम्मत्तु हणेवि सुरदुग्गइ सपत्तउ॥22॥

किया, वैसे ही एक ब्राह्मण ने कहा—"सारा ज्योतिष-शास्त्र झूठा है। इसने (मधुपिंग) मुनि का आचरण स्वीकार किया है। इसने लक्ष्मी का मुख क्यो नही चूमा?" तब एक और ब्राह्मण ने कहा, "तुमने लक्षण-शास्त्र की निन्दा क्यो की?"

घत्ता—सुनो, यह पोदनपुर का राजा होता हुआ सुलसा के स्वयवर समय में चारणयुगल नामक महानगर गया हुआ था।

(22)

पिता की बहन की बेटी का जब वह विवाह करने लगा तो सगर के मंत्री के द्वारा विरचित कपट वाणी से युक्त पोथी खोलकर और दिखाकर अनेक शब्दो से युक्त उसकी व्याख्या कर सास-ससुर का मन ठग लिया गया और पिंग दृष्टि वाले इसे निकाल दिया गया। दुष्ट राजा सगर खुद वर बन बैठा और इस प्रकार उसने इसे दु खो का पात्र बनाया। यह सुनकर मुनि हृदय मे क्षुब्ध हो उठा और बोला कि यदि जिनेन्द्र भगवान् के द्वारा कहे गए तप का कोई फल होता हो तो यह दुष्ट पापी, खोटी बुद्धि वाला सगर मेरे सामने मारा जाए। मुनि इस प्रकार क्रोध धारण कर और याद करते हुए मर गया और असुरेन्द्र का वाहन देवता हुआ। साठ हजार महिषो का अधिपति और महिषो का सेनापति उनका क्या वर्णन करू!

घत्ता—जिनवर का धर्म धारण कर, किन्तु क्षमाभाव से रहित वह व्यक्ति एक क्षण मे सम्यक् दर्शन का हनन कर देव दुर्गति को प्राप्त हुआ। इसलिए क्रोध नही करना चाहिए।

---

5 A मुणि।
(22) 1. A दिक्खविय। 2 A °णिहाउ।

23

पुणु तक्खणि असुरे जाणियउं जिह कव्वु करेप्पिणु आणियउ ।
जिह मामिहि मामहु हित्त मइ जिह पिंगें पडिवण्णी विरइ ।
जिह गहिय तणूयरि मदगइ तिह एवहिं ध्रुउ पावमि कुगइ ।
सहुं मंतिहिं साकेयाहिवइ कहिं एवहि वच्चइ[1] लद्धु लइ ।
इय[2] चिंतिवि तंबिरलोयणु जायउ सो सालकायणउ ।
मुहकुहरविणिग्गयवेयझुणि हिंसालउ दूसियपरममुणि ।
सुलसावइजीवियसिरिहरहु तहिं तासु महाकालासुरहु ।
जायउ सहाउ जो दुम्मयहु आयण्णहु तहु कह[3] पव्वयहु ।
[4]उत्तुंगसत्तधरणियलघरि एत्थेव खेत्ति सावत्थिपुरि[5] ।
विस्सावसु राणउ विमलजसु तहु सिरिमइदेविहि पुत्तु वसु ।

घत्ता—णामे खीरकलवु दियवरु सत्थवियारउ ॥
तासु चट्टु वसु जाउ पव्वउ अवरु वि णारउ ॥23॥

24

सहु सीसहिं सो परमायरिउ एक्कहिं दिणि काणणि अवयरिउ ।
अब्भावयासणिट्ठवियणिसि उवविट्ठउ दिट्ठउ तेत्थु[1] रिसि ।

(23)

तब उसी समय उस असुर ने जान लिया कि किस प्रकार काव्य रचकर लाया गया था, किस प्रकार मामा[1] और मामी की बुद्धि को ठगा गया, और किस प्रकार मधुपिंगल ने वैराग्य धारण किया, किस प्रकार मद गति कन्या ग्रहण की गई, और किस प्रकार मैं कुगति को प्राप्त हुआ। साकेत नगर का राजा सगर इस समय मन्त्रियों के साथ बचकर कहाँ जाएगा। मैं उसे अभी लेता हूँ। फिर विचार कर वह लाल आँखों वाला सालंकायण नाम का ब्राह्मण हो गया। जिसके मुख विवर से वेद-वाणी निकल रही है, जो हिंसक परम मुनि को दूषित करने वाला है, सुलसा के पति (सगर) के जीवन रूपी लक्ष्मी का हरण करने वाले उस महाकाल सुर का जो सहायक बन गया ऐसे खोटे मद वाले प्रवर्तक ब्राह्मण की कथा सुनो! इसी भरतक्षेत्र मे ऊँचे सात धरणीतल वाले घरो से युक्त श्रावस्ती नगरी मे विमल यश वाला विश्वावसु नाम का राजा था। उसकी श्रीमती नाम की पत्नी से वसु नाम का पुत्र था।

घत्ता—उस नगर में क्षीरकदम्ब नाम का शास्त्रो का विचार करने वाला श्रेष्ठ ब्राह्मण था, राजा वसु, पर्वतक और एक और नारद उसके चेले बन गए।

(24)

अपने शिष्यो के साथ वह महान् आचार्य क्षीरकदम्ब एक दिन जगल मे गए। बादलो से रहित आकाश के अतराल मे जिन्होंने रात्रि व्यतीत की है, ऐसे एक मुनि को उन्होने बैठे हुए देखा।

(23) 1 A अच्छइ लद्धु जइ। 2. P त चिंतिवि। 3. A कयकव्वयहु। 4 AP उत्तुंग°। 5. सावत्थपुरि, P सावित्थिपुरि।

(24) 1 A तेण।

1. ससुर और सास।

उज्झाए पणविवि पुच्छियउ भवियव्वमग्गु[2] सुणियच्छियउ ।
तीहिं वि दियवरछत्तहं तणउ आहासइ मुणि पणट्ठपणउ ।
वसु पव्वय णारयधरणियलि पडिहिंति दो वि कयजण्णफलि ।
जिणणाणसुणिच्छउ[3] मणि वहइ णारउ सव्वत्थसिद्धि लहइ ।
त णिसुणिवि गुरु उव्विग्गमणु[4] आयउ पुरु थिउ भूसिवि भवणु ।
खेल्लतु दिएसें [5]धाडियउ अण्णहिं दिणि लट्ठिइ[6] ताडियउ ।
कपतदेहु सुहृदाइणिहि वसु विसइ सरणु उज्झाइणिहि ।

घत्ता—पत्थिवि रक्खिउ ताए कत म तासहि बालउ ॥
पत्थिवपुत्तु सुसीलु कमलगब्भसोमालउ ॥24॥

25

घरणिहि वयणे वरु ओसरिउ सिसु चवइ माइ पइ गुरु धरिउ ।
महु उप्परि एतउ कुद्धमणु भणि[1] एव्वहिं[2] दिज्जउ वरु कवणु ।
त णिसुणिवि इज्जइ भासियउ महु पुत्त चित्तु सतोसियउ ।
जइयहु मग्गहि तइयहु जि वरु तुहु देज्जसु धवलबलूढभरु ।
व्रउ[3] लेंते सते पीणभुउ विस्सावसुणा कमि णिहिउ सुउ ।

उपाध्याय ने प्रणाम करके उनसे अच्छी तरह से निरीक्षित अपना भावी मार्ग पूछा । अपनी प्रतिज्ञा को भग करते हुए मुनि उन द्विजवरो और क्षत्रियों का भविष्य बताने लगे—राजा वसु और पर्वतक नरक की धरती मे पडेगे क्योकि दोनो ने अपने यज्ञ का फल कमा लिया है। नारद जिन ज्ञान के निश्चय को अपने मन मे धारण करता है, इसलिए सर्वार्थसिद्धि प्राप्त करेगा । यह सुनकर अत्यन्त उद्विग्न मन से राजा घर आया और भवन की शोभा बढाकर रहने लगा । एक दिन खेलते हुए उसे (वसु को) ब्राह्मण ने निकाल दिया । क्षीरकदम्ब ने एक और दिन उसे लाठी से पीटा । थर-थर कापता हुआ राजा वसु शुभ करने वाली गुरु पत्नी की शरण में चला गया ।

घत्ता—उसने राजा की रक्षा की और कहा कि हे स्वामी, इस बालक को ताडित मत करो। राजा का यह लडका सुशील है, और कमल के मध्य भाग की तरह कोमल है ।

(25)

अपनी पत्नी के शब्दो से पति हट गया । बालक कहता है कि हे माँ, तुमने गुरु को रोक लिया । क्रुद्ध मन मेरे ऊपर आते हुए । कहो इस समय मैं कौन-सा वर दूँ ? यह सुनकर आदरणीया माँ ने कहा—पुत्र, मेरा चित्त सतुष्ट हो गया । जिस समय मैं वर मागूँ तव उस समय मुझे देना । इस प्रकार अत्यन्त महान् और बलिष्ठ बाहु वाला राजा वसु यह व्रत लेने पर अपने पिता विश्वावसु के द्वारा कुल परम्परा मे स्थापित कर लिया गया। वह अपने सहचरो और

---

2. A भवियप्पु मग्गु । 3 A °णाणि विणिच्छउ, P °णाणु विणिच्छउ । 4 A उव्विण्णमणु ।
5 AP पीडियउ । 6. A लट्टे ताडियउ ।
(25) 1. AP भणु । 2. A एम्वहिं । 3. AP वउ ।

सहु सहयरकिंकरहि रमइ अवरहिं दियहुल्लइ वणि भमइ।
पक्खिउलु णहगणि पक्खलइ पहु पेक्खइ त तहि पडिलवइ[4]।
णीरूवु ण णहयलु परु धरइ पक्खलणहु कारणु सभरइ।
इय चिंतिवि तेण विमुक्कु सरु धणुगुणु[5] आयड्ढिवि पिंछधरु।
आयासफलिहमउ खभु[6] हउ उच्छलिवि बाणु धरणियलि गउ।
परिमट्ठउ हत्थे जाणियउ उच्चाइवि भवणहु आणियउ।
तहु खभहु उप्परि हरिगीढि[7] सइ चडियउ कचणमयइ पीढि[8]।

घत्ता—आसणु चलइ ण किं पि जणु जणु जणवइ पयडइ॥
धम्मे णियसच्चेण वसु गयणाउ ण णिवडइ॥25॥

26

अण्णेक्कहिं[1] वासरि विविहहलु णारय पव्वय गुरुगिरिगुहिलु[2]।
चदकउ कलाउ ण जलि करइ पच्छाउहपायहिं[3] ओसरइ।
पत्तइ तित्ताइ[4] मयूरियह सरिवारिपवाहाऊरियह।
इय तेण कज्जु परिहच्छियउ पुणु मित्तहु वयणु णियच्छियउ।
कइ णीलकठ सुविचित्तियउ भणु पव्वय मोरिउ केत्तियउ।
सो ण मुणइ ण भणइ पहि चरइ विहसेप्पिणु णारउ वज्जरइ।
सिहिणीउ सत्त इह एक्कु सिहि ओसरिउ[5] सरहु जो पिंछणिहि।

किकरो के साथ क्रीडा करता है और दूसरे के साथ दिन मे घूमता है। आकाश के आगन मे पक्षिकुल स्खलित होता है। राजा उसे देखता है। वह वही कहता है कि आकाश अरूप है, वह दूसरो को धारण नही कर सकता। वह उसके स्थिर होने का कारण सोचता है। यह विचार कर धनुष की डोरी खीचकर अपना पुख वाला तीर छोडा। उससे आकाश मे स्थित स्फटिक वाला खभा आहत हो गया, और बाण भी उछलकर धरती पर गिर पडा। हाथ से छूकर उसने जाना और उठाकर अपने घर ले आया। सिहो के द्वारा धारण किये गये उस खंभे पर, उसकी स्वर्णमय पीठ पर वह चढ़ गया।

घत्ता—जनपद मे लोगो को यह बात विदित हो गई कि आसन अणु मात्र भी नही हिलता। धर्म से और अपने सत्य से राजा वसु आकाश से भी नही गिर सकता।

(26)

एक दूसरे दिन नाना फल वाले विशाल पहाड़ की गुफा में नारद पर्वतक गये। वसु ने कहा कि मयूर जल मे अपने पख नही करता। वह अपने पिछले पैरों से हट जाता है। तालाव के पानी के प्रभाव से प्रवाहित मयूरो के पंख गीले है। इस प्रकार उसने असली बात छिपा ली। और फिर मित्र का मुख देखा, हे पर्वतक, बताओ कि विचित्र पखो वाले मयूर कितने है और मयूरियाँ कितनी है। वह कुछ नही सोचता न कहता और रास्ते पर चलता है। नारद हँसते हुए कहता है कि यहाँ एक मयूर और सात उसके मोर है जो पखो के समूह वाला तालाब से हट गया है। प्रखर

4. P पडिवलइ। 5 AP धणुगुणि। 6 AP थभु। 7 A हरिवीढि, P हरिहि गीढि। 8 वीढि।
(26) 1 A ता एक्कहि। 2 AP गय गिरिगुहिलु। 3 P पच्छामुह°। 4. A सिताइ (तिताइ ?)
5. AP ओसरइ।

वहुबुद्धिगहीरें पीलुरय पयलतपेम्मजलसित्तरय।
पयमग्गे जाणिय हत्थिणिय अवर वि आरूढणियविणिय ।
पुच्छिवि पव्वउ पुरि पइसरिवि गउ तक्खणि मच्छरु[6] मणि धरिवि ।।

घत्ता—अक्खइ मायहि गेहि णिरु ताए सताविउ ।।
हउ ण पढाविउ कि पि णारउ चारु पढाविउ ।।26।।

27

सो जाणइ अम्मि [1]असिट्ठाइ वणि मोरिंगियइ अदिट्ठाइ।
करिकरिणिहिं पयबिंबइ कहइ ता बंभणि रोसु चित्ति वहइ ।
सहु कते पयडियगरहणउ विरइउ कोणीहलकलहणउ[2]।
पइ काइ वि पुत्तु ण सिक्खविउ परडिंभु जि सत्थमग्गि थविउ ।
त णिसुणिवि भट्टे घोसियउ अलिककह केणुववेसियउ ।
मयरदगधमीणाहरणु हसह वि खीरजलपिहुकरणु ।
सुउ तेरउ सुदरि मदु जडु णारउ पुणु ससहावेण पडु ।
इय पभणिवि पिट्ठें मेस कय सुय भासिय जणणे णवियपय ।
ए वच्छ लएप्पिणु तरुगहणि पइसरिवि दूरु पविमुक्कजणि[3]।
जहि को वि ण पेक्खइ धुवु मुणिवि तहि आवहु विहि वि कण्णु[3] लुणिवि ।

बुद्धि से गभीर उसने (वसु ने) पग-चिह्नों के मार्ग से जान लिया कि हाथी मे रत तथा झरते हुए प्रेम-जल से धूल पोछती हुई एक हथिनी है और उसके ऊपर एक स्त्री बैठी हुई है। तव पर्वतक उससे पूछकर नगरी मे प्रवेश कर अपने मन में ईर्ष्या धारण कर चला गया।

घत्ता—वह अपनी मा से कहता है कि घर मे मुझे पिता ने अधिक सताया है। मुझे कुछ भी नही पढाया, नारद को खूब पढ़ाया।

(27)

हे माँ, वह (नारद) विना कहे, विना देखे वन में मयूर के चिह्नो को पहचान लेता है। हाथी और हथिनियो के चिह्नो को कहता है। यह सुनकर ब्राह्मणी मन मे क्रुद्ध हो गई। जिसमे निंदा प्रकट है, ऐसा छोटा-मोटा झगडा उसने पति के साथ किया कि तुमने मेरे बच्चो को क्यों नही सिखाया। दूसरे के बच्चो को तुमने शास्त्र मार्ग मे स्थापित कर लिया। यह सुनकर बेचारे ब्राह्मण ने कहा : वताओ भौरो और बगुलो को पराग-गंध और मीनो का अपहरण करना किसने सिखाया ? हसों को दूध से पानी अलग करना किसने सिखाया ? हे सुन्दरी, तेरा पुत्र मूर्ख और जड है। जबकि नारद स्वभाव से पंडित है। ऐसा कहकर उसने आटे के दो मेढे (ढेर) वनाए और पैरों मे प्रणाम करने वाले अपने पुत्र से कहा हे बेटे, इसे ले जाकर घने जगल मे प्रवेश कर खूब दूर जहाँ एक भी आदमी न हो, जहाँ कोई भी न देख सके, इस प्रकार अपने मन मे

---

6. AP मणि मच्छरु।

(27) 1. AP अदिट्ठाइ। 2. AP कोलाहल°। 2 AP परिमुक्कजणि। 3. AP कण्ण।

त विसुणिवि[4] जाइवि विविणपहिं[5] पच्छण्णे थाइवि[6] रुक्खरहि ।
कर मउलिवि जोइणि का वि थुय पव्वइण उरब्भहु कण्ण लुय ।

घत्ता—इयरें पइसवि दुग्गे चिंतिउ चददिवायर ॥
इह णियंति पसु पक्खि किंणर जक्ख णिसायर[7] ॥27॥

28

जहिं गच्छमि तहिं तहिं अत्थि परु जइ णरु णउ तो पेक्खइ अमरु ।
किह कण्ण[1] उरब्भहु कत्तरमि घरु गपिणु तायहु वज्जरमि ।
गय बेण्णि वि पेसणु अप्पियउ णारयकिउ चारु वियप्पियउ ।
विप्पेण वुत्तु हलि हंसगइ अवलोयहि तुहु णदणहु मइ ।
जहिं गम्मइ तहिं असुण्णु णिलउ पसुसवणहं किह विरइउ विलउ ।
सुरगुरु वि समाणु ण णारयहु लइ एहु वि जोग्गउ गुरुवयहु[2] ।
सुय[3] घरिणि वि तासु समप्पियइ वसुराए सहु जंपिवि पियइं ।
तवचरणु जिणागमि सचरिवि दिउ मुउ थिउ दिव्वबोदि धरिवि ।
बहुकाले[4] विहिं वि हेउभरिउ पारद्धु विवाउ पवित्थरउ[5] ।
णारउ अय[6] जव तिवरिस चवइ त पव्वउ वयणु अइक्कमइ ।

निश्चित कर वहाँ इसके दोनो कान काट कर ले आओ। यह सुनकर एकान्त पथ में जाकर पेड़ों मे छिपकर हाथ जोडकर उसमे किसी योगिनी की सुधि की और मेढे के कान काट लिये।

घत्ता—दूसरे ने दुर्गम स्थान मे प्रवेश कर मन मे विचार किया कि यहाँ भी सूर्य और चन्द्रमा देखते है, और पशु, पक्षी, किन्नर, यक्ष, निशाचर भी।

(28)

मैं जहाँ जाता हूँ वहाँ-वहाँ दूसरा आदमी है। यदि आदमी नहीं देखता है तो देवता देखता है, मैं मेढे के कान कहाँ काटूँ ? मैं घर जाकर आचार्य से कहूँगा। वे दोनो गये और अपनी-अपनी सेवा का निवेदन किया। नारद का कहा हुआ सुन्दर माना गया। ब्राह्मण ने ब्राह्मणी से कहा : हे हंस की चाल वाली, अपने बेटे की अक्ल देखो किसी भी स्थान को जाया जाए, वह सूना नही है, फिर इसने मेढ़े के कान को किस प्रकार काटा। नारद के समान बृहस्पति भी नही है, अत. यही गुरुपद के योग्य है। उन्होने अपना पुत्र और गृहिणी भी नारद के लिए सौप दी और- राजा वसु के साथ प्रिय बातचीत कर जैन-शास्त्रो के अनुसार तप का आचरण कर वह ब्राह्मण देव शरीर धारण कर (स्वर्ग मे) स्थित हो गया। बहुत समय के बाद उन दोनों ने युक्तिपूर्वक विवाद किया जो बहुत बढ गया। नारद कहता है कि तीन साल के जौ को अज कहते है, लेकिन पर्वतक इस

4. AP जाय विणिसुणिवि। 5 AP वियणवहि। 6 AP आइवि। 7 A किवायर।
(28) 1. AP कण्णु। 2. A गुरुयरहु। 3 AP सुउ। 4. AP बहुकालहिं। 5 AP पवित्थरिउ। 6. A अइजव।

अय पसु भणंतु सो वारियउ अवरेंहिं बुहेहिं णीसारियउ ।
गउ मच्छरेण थरहरियतणु सपत्तउ णीलतमालवणु ।
घत्ता—तहिं दियवरवेसेण पव्वएण सो दिट्ठउ ॥
असुरसुईउ पढंतु तरुतलि सिलहि णिविट्ठउ ॥28॥

29

मणपणयपसगुप्पायणउ[1] ते[2] तासु कयउ अहिवायणउ[3] ।
वुड्ढेण वि पडिअहिवाउ[4] किउ पुणु वुत्तु होउ[5] तुज्झु जि विणउ ।
सुय जायउ जाणिउ किं ण पइ चिरु खीरकलबे[6] अवरु मइ ।
दोहि मि सुभउमु गुरु सेवियउ सत्थत्थु असेसु वि भावियउ ।
आयउ किर जोइहु तासु मुहु ता पवसिउ सो सुउ दिट्ठु तुहु ।
लइ जण्णमहाविहिकारियहं सहसाइ सट्ठि पसुवहरियहं ।
सयराइराय अब्भुद्धरहि मह[7] महियलि कारावहि करहि ।
हउ कंचुइ[8] अज्जु परइ मरमि णियविज्जइ पइ जि अलंकरमि ।
दियतरुणिं ता तहु इच्छियउं तं विज्जादाणु[9] पडिच्छियउ ।
पुरदेसहं घल्लिउ मारि जरु पहु को वि गवेसइ सतियरु ।
गय बेण्णि वि तं कोसलणयरु दोहिं वि सबोहिउ णिवु[10] सयरु ।

वचन का प्रतिरोध करता है। अज को पशु कहते हुए वह मना किया गया। दूसरे पडितो ने उसे निकाल बाहर किया। ईर्ष्या के वश वह चला गया और जिसमे हरा घास कपित है, ऐसे नील तमाल वन मे पहुँचा।

घत्ता—वहाँ श्रेष्ठ ब्राह्मण के वेश में पर्वतक ने उसे देखा जो पेड के नीचे चट्टान पर ·टा हुआ असुरो के शास्त्र को पढ रहा था।

(29)

उसने उसके मन मे प्रेम प्रसंग को उत्पन्न करने वाला अभिवादन किया। उस वृद्ध ने भी प्रत्यभिवादन किया और कहा कि तुम्हे भी विनय प्राप्त हो। हे पुत्र, क्या तुम यज्ञ को नही जानते ? वहुत पहिले मैं और क्षीरकदब दोनो ने सुभौम गुरु की सेवा की थी। समस्त शास्त्रार्थ का विचार किया था। मैं उनका मुख देखने के लिए आया था। लेकिन वह प्रवसित हो चुके है। हे पुत्र, तुम्हे मैंने देखा है, यज्ञ की महाविधि कराने वाली पशुवध से सबधित साठ हजार ऋचाएं लो और सगर आदि राजाओ का उद्धार करो, धरती पर यज्ञ करो और कराओ। मैं तो बूढा आदमी हूँ, कल या परसो मर जाऊँगा। अपनी विद्या से तुम्ही को अलकृत करूँगा। ब्राह्मण युवक ने उसे चाहा और उसका विद्यादान स्वीकार कर लिया। नगर और देश मे महामारी का ज्वर फैल गया। राजा किसी शाति करने वाले की खोज में रहता है। वे दोनो उस अयोध्या नगर जाते है। दोनो ने राजा सगर को संबोधित किया।

---

(29) 1 A मणे। 2 A त तासु। 3 P अभिवायणउ। 4 A पडिपणिवाउ। 5 AP होइ। 6 A °कयबें। 7 A महु। 8 A कचु अज्जु। 9. P तें विज्जा°। 10 AP णिउ सगरु।

घत्ता—हुणिवि[11] तुरंग मयंग दणुएं दाविय मायइ ॥
कुंडलमउडफुरंत[12] दिट्ठ देव णहभायइ ॥29॥

30

अप्पाणउं तहिं जि[1] हुणावियउ देवत्तु णहंगणि दावियउं ।
सत्तच्चिणिहित्तइं[2] चउपयहं णिट्ठियइं सट्ठिसहसइं मयहं ।
मायारएण जणु मोहियउ संतीइ सुहेण पयासियउं ।
हारावलिरुइरंजियथणिय सुलसा वि तेण हुयवहि हुणिय ।
गोसवि णियजणणि वि अहिलसिय सउयामणिमहि[3] मइर वि रसिय ।
विप्पहं बभणिवरगु विहिउ महुणा लित्तउ जीहइ लिहिउ ।
वहु वंचिय धुत्तें णेव जड अवलोयवि होमिज्जंत[4] भड ।
घरु जाइवि तणु घल्लिवि सयणि पहु सोयइ हा हा मिगणयणि ।
हा सुलसि काइं मइ तुज्झु किउ किह जीवियव्वु[5] णिड्डहिवि णिउ ।
ता[6] तहिं जि पराइउ पवरजइ पुच्छइ पणामु विरइवि णिवइ ।
किं धम्मु भडारा पसुवहणु किं सव्वजीवदयसंगहणु ।

घत्ता—राक्षस ने (महाकाल ने) यज्ञ मे हाथी-घोड़ो को होमकर उन्हे मायाबल से आकाश में दिखा दिया। आकाश मे कुंडलो और मुकुटो से स्फुरित होते हुए देव दिखाई दिये।

(30)

उसने अपने को भी यज्ञ मे होम कर दिया और आकाश के प्रागण मे देवत्व के रूप मे प्रदर्शन किया। आग मे डाले गये साठ हजार पशु नष्ट हो गये। उस मायावी के द्वारा लोग ठगे गये। उसने शाति और शुभ के लिए उन्हे प्रकाशित किया। हारावलि की काति से जिसके स्तन शोभित है, ऐसी सुलसा को भी उसने आग मे होम दिया। गो यज्ञ मे उसने अपनी माता की भी इच्छा की और सौत्रामिणी यज्ञ मे मदिरा का पान भी किया। ब्राह्मणो के लिए ब्राह्मणियो के उत्तमांग की रचना की गई मधु से लिप्त जो जीभ के द्वारा चाटी गई। इस प्रकार उस धूर्त के द्वारा वहुत-से लोग ठगे गये। होमे जाते हुए योद्धाओ को देखकर घर जाकर अपने शरीर को बिस्तर पर डालकर राजा सगर शोक करने लगा—हे मृगनयनी, हे सुरसे, मैंने तुम्हारे लिए यह क्या किया ! मैंने तुम्हारे जीवन को क्यो जला डाला ! इसी बीच एक महामुनि वहाँ पहुँचे। राजा उन्हे प्रणाम कर पूछता है हे आदरणीय, पशुओ का वध करना धर्म है ? या सब जीवो के प्रति दया करना धर्म है ?

---

11 A हुणवि। 12 A °मउल°।
(30) 1 P तहिं तो। 2 P णिहित्तहं। 3 P सोयामणि°। 4 A होमिज्जति। 5 A जीवियत्थु। 6 P तो।

घत्ता—त णिसुणिवि करुणेण तेण मुणिंदे वुत्तउ ॥
होइ अहिंसइ धम्मु हिंसइ पाउ णिरुत्तउ ॥30॥

31

पहु[1] जंपइ पच्चउ दक्खवहि अप्पाणउ किं मुहिइ खवहि ।
रिसि भासइ णहयलरगणडि तुह सत्तमि दिणि णिवडिहइ तडि ।
णिवडेसहि णरइ म[2] भति करि किं सग्गु[3] जति पसु[4] खत हरि ।
त राए रइयणरावयहु आवेप्पिणु अक्खिउ पावयहु[5] ।
तेण वि बोल्लिउ मलपोट्टलउ किं जाणइ सवणउ विट्टलउ ।
असुरिंदे दरिसिय देवि णहि विउणारउ लग्गउ पुणु वि महि[6] ।
सो असणिणिहाए[7] घाइयउ वालुयपहमहि सपाइयउ[8] ।
भणु पावे को व ण मारियउ रिउणा जाइवि[9] पच्चारियउ ।
जं पिंगलु हुउं पइं दूसियउ ज णियकरु कण्णइ भूसियउ ।
ज वरलक्खणु महु कयउ छलु भुजहि एवहिं तहु तणउ फलु ।

घत्ता—पुणु असुरे णहमग्गि मायारूवे हरिसियइ ॥
सा सुलस वि सो सयरु बिण्णि वि मतिहिं दरिसियइं ॥31॥

घत्ता—यह सुनकर उस महामुनि ने करुणापूर्वक कहा कि अहिंसा से धर्म होता है। हिंसा से निश्चय ही पाप होता है।

(31)

तब राजा कहता है कि आप इस बात को प्रदर्शित करके बताइये। आप अपने को व्यर्थ ही क्यों खपाते है। मुनि कहते है कि आकाश के रंगमच पर नृत्य करनेवाली बिजली सातवे दिन तुम्हारे ऊपर गिरेगी। तुम नरक मे जाओगे इसमें भ्राति मत करो। क्या पशुओ को खाने वाला शेर स्वर्ग में जाता है ? तब राजा ने जिसने पशुओं के लिए आपत्तियो की रचना की है ऐसे प्रवर्तक से कहा। उसने कहा कि मल की पोटली वह नीच जैन मुनि क्या जानता है ? असुरेन्द्र ने आकाश मे देवी सुलसा को दिखाया। तब राजा दुगुने चाव से फिर यज्ञ मे लग गया। वह राजा बिजली के गिरने से मारा गया। और बालुकाप्रभ नरक मे पहुचा। बताओ पाप के द्वारा कौन नही मारा जाता ? तब शत्रु ने जाकर उससे कहा कि जिस मुझ मधुपिंगल को दूषण लगाया था कि यह पीला है। और जो कन्या के द्वारा अपना हाथ भूषित किया था और जो तुमने मेरे साथ वर के लक्षणों वाला छल किया। इस समय तुम उसका फल भोगो।

घत्ता—फिर उस असुर ने आकाश मार्ग मे माया रूप से हँसते हुए उस सुलसा को, उस सगर के दोनो मन्त्रियो के साथ दिखाया।

---

(31) 1 A पइ जपइ सच्चउ। 2 A ण। 3 AP सग्गि। 4 A पसु खति। 5. AP पच्चयहु, but T पावयहु। 6, A महि, P महो। 7. P °णिवाए। 8 AP सपाइयउ। 9. P जीयवि।

32

ता खद्धकंदेण सह तवसिविंदेण[1]।
गउ णारओ सेउ तं णयरु साकेउ।
तेणुत्तु दियसीह पव्वय दुरासीह।
वणयरइं मारतु अद्वियइ चूरतु।
चम्माइ छिंदतु वम्माइ भिंदतु।
इसिदिट्ठु सुपसत्थु जइ वेउ परमत्थु।
तइ खग्गु किं णेय जज्जाहि कुविवेय।
जइ पोरिसेओ वि णउ होइ भणु तो वि।
वण्णज्झुणी गयणि किं फुरइ णरवयणि।
अक्खरइं कहिं विंदु कहिं अत्थु कहिं छंदु।
कयमणपयत्तेण विणु पुरिसवत्तेण।
कहिं हेउ[2] कहिं वेउ कहिं णाणु कहिं णेउ।
कहिं गयणि अरविंदु णीरूवि कहिं सद्दु।
वेयम्मि कहिं हिंस दिय गिलियपरमस।
हिंसाइ कहिं धम्मु जड मुयहि तुहु छम्मु।
कत्तार दायार जण्णस्स णेयार।
जहिं होंति होयार[3] सुरणारिभत्तार।
तो सूणगारा वि मीणावहारा वि।
पसुखद्धवद्धा[4] वि।

(32)

तब जिन्होंने कद का भोजन किया है, ऐसे तपस्वी समूह के साथ नारद उस श्वेत साकेत नगर के लिए गया। उसने खोटी चेष्टा वाले उस द्विजश्रेष्ठ पर्वतक से कहा कि वन पशुओ को मारनेवाला दरिद्रो को चूरनेवाला चर्मो को छेदते हुए वक्षस्थलो को चीरते हुए ऋषि के द्वारा देखा गया यदि सुप्रशस्त और परमार्थ है, तो हे कुविवेकी, तुम खड्ग की पूजा क्यों नही करते ? यदि वेद पौरुषेय (पुरुष रचित) नही है तो बताओ वर्णो की ध्वनि आकाश और मनुष्य के मुख मे क्यो स्फुरित होती है ? अक्षर कहाँ, बिन्दु कहाँ, अर्थ कहा, छद कहाँ? किया गया है मन का प्रयत्न जिसमे ऐसे मनुष्य के मुख बिना उत्पत्ति (कारण) कहाँ, और वेद कहाँ ? कहाँ ज्ञान ? और कहाँ ज्ञेय ? कहाँ आकाश मे कमल होता है ? अरूप मे शब्द कैसे हो सकता है ? दूसरो का मास खाने वाले हे द्विज, वेद मे हिंसा कहाँ ? हिंसा से धर्म कहाँ ? मूर्ख, छल छोड। (पशुओ को)काटने वाले, देने वाले और हवन करने वाले यदि मनुष्यो के नेता और देवागनाओ के स्वामी होते है, तो

(32) 1. A तवसविंदेण। 2. AP देउ। 3. A अविचार, PT अवियार। 4. AP omit this foot.

अमरा ण किं होंति[5] जइ जण्णि णिवडंति[6]।
पसु सग्गु गच्छंति[7]।
दीसंति सकयत्थ तो अप्पय तत्थ।
होमेवि[8] मतेहिं सहुं पुत्तकंतेहिं।
गम्मिज्जए सग्गु भुंजिज्जए भोग्गु।

घत्ता—जलमट्टियचम्मेण दब्भे सुद्धि कहेप्पिणु॥
भट्टें खद्धउ मासु खगमिगकुलइं वहेप्पिणु॥32॥

33

जइ सच्चउ विप्प पवित्तु जलु • तो किं त जायउ मुत्तु[1] मलु।
जइ गंगाण्हाणु जि[2] दुरियहरु तो इस वि लहंति वि मोक्खु[3] परु।
जइ मट्टियमंडणि तमु गलइ तो कोलु विमाणें संचरइ।
जइ हरिणाइणु धम्मुज्जलउ तो हरिणउलु जि जगि अग्गलउ।
किं बंभणु उत्तमु तुहु कहहि तं मारिवि[4] मासगासु महहि।
जइ दब्भे पुण्णु पवित्थरइ तो किं मयउलु भवि संसरइ।
त रत्तिदियहु दब्भ[5] जि चरइ किह[6] इंदविमाणु ण पइसरइ।
गोफंसणपिप्पलफंसणइं सुत्तुट्ठियाहं घयदंसणइं।
जइ पाउ हणंति हुंत पउर तो वसहकायराया वि सुर।

वध करने वाले और मीनो का अपहरण करने वाले, पशुओ को खाने और बाँधने वाले भी देव क्यो नही होते ? यदि यज्ञ मे पडने से पशु स्वर्ग जाते है और कृतार्थ दिखाई देते है, तो पुत्र और स्त्री के साथ मन्त्रो सहित अपने को उसमें होम कर स्वर्ग जाया जाए और भोग भोगा जाए ?

घत्ता—जल, माटी और चर्म तथा दूब से शुद्धि बताकर तथा पक्षी एव मृगकुल की हत्या कर ब्राह्मण ने मास खाया।

(33)

हे ब्राह्मण, यदि सचमुच गगा का जल पवित्र है, तो वह जल मल-मूत्र क्यो बन जाता है ? यदि गगा का स्नान पापों का हरण करने वाला है तो मछलियो को भी परम मोक्ष की प्राप्ति होनी चाहिए। यदि मिट्टी शरीर पर लगाने से मोक्ष होता है तो सुअर को देव विमान मे चलना था। यदि मृग के चर्म से धर्म उज्ज्वल होता है, तो मृगो का समूह श्रेष्ठ होना था। तुम ब्राह्मण उस को पवित्र कहते हो, और यज्ञ में मारकर उसके मांस का कौर बनाते हो। यदि दूब से पुण्य का विस्तार होता है तो मृगो का झुड आकाश मे क्यो नही फिरता ? वह दिन-रात चारा चरता रहता है। इन्द्र के विमान मे वह प्रवेश क्यो नही करता ? गाय को और पीपल को छूना और सोकर उठने पर गाय को छूना, पीपल को स्पर्श करना और घी को देखना आदि यदि पाप का नाश करते

---

5. AP add after this किं दुग्गई जंति। 6 A णिवडत। 7. A गच्छत। 8 A होमेंहिं।
(33) 1 AP मुत्तमलु। 2 A वि। 3. A सोक्खु। 4 P मरिवि। 5. AP दब्भु। 6 A किं।

किं वहुवें पुणु वि मंति भणइ जो परु अप्पाणउ[7] समु गणइ ।
णिग्गंथु णियत्थु वि परिभमउ छुडु मोहु[8] लोहु मच्छरु समउ ।
सो पावइ तं सिद्धत्तु[9] किह रसविद्धु धाउ हेमत्तु जिह ।

घत्ता—हिंसारंभु वि धम्मु वयणु असच्चु वि सुंदरु ॥
जणु[10] धुत्तहिं दढमूढु किज्जइ कालउ पंडुरु ॥33॥

34

जं वहोमें संतियम्मु कहिउ जं तं पइ छेलएहिं गहिउ[1] ।
अय जव जि पयरिय हुंति णउ पइ लंघिउ तायहु वयणु कउ ।
गिरि घोसइ गुरुणा पिसुणियउ तं तइयहु[2] वसुणा णिसुणियउं ।
ता णारउ पव्वउ रुद्दधय[3] तावस सावित्थिहिं झ त्ति गय ।
पव्वयजणणिइ अब्भत्थियउ वरकालु एहु पहु पत्थियउ ।
जइ सुअरहि भासिउ[4] अप्पणउ तो थवहि वयणु भाइहि तणउ ।
तं अम्महि भासिउ परिगणिउ अय जव ण होंति तेण वि भणिउ ।
जं चविउ असच्चु सुदुच्चरिउ तं सधरु धरायलु थरहरिउ ।

है तो वृषभ और नागराज भी बड़े-बड़े देवता होते। बहुत कहने से क्या, मंत्री कहता है कि जो दूसरे को अपने समान समझता है, जो परिग्रह से रहित है, निर्वस्त्र है, विहार करता रहता है, और जो मोह, लोभ, ईर्ष्या को शान्त करता है, वह उसी प्रकार सिद्धि को प्राप्त होता है, जिस प्रकार रस से सिद्ध धातु स्वर्णत्व को प्राप्त करती है।

घत्ता—हिंसा का प्रारम्भ करना धर्म है, और असत्यवचन भी सुन्दर है, इस प्रकार धूर्त लोगों के द्वारा मूर्ख और भी मूर्ख बनाया जाता है, तथा काले का पीला किया जाता है।

(34)

और जो तुमने यज्ञ मे होम करने से शांति कर्म कहा और जो तुमने अज शब्द को बकरों के रूप मे ग्रहण किया। बोये जाने पर जो जौ उत्पन्न नही होते वे अज कहलाये जाते है। इस प्रकार तुमने अपने पिता के वचनों का उल्लंघन किया है। गुरु के द्वारा कहे गये वचन की पहाड़ भी घोषणा करता है उसे उसी प्रकार राजा वसु ने भी सुन लिया। तब अपने हाथ मे रुद्राक्ष माला लिये हुए नारद और पर्वतक शीघ्र ही श्रावस्ती गये। पर्वतक की माँ ने यह प्रार्थना की कि यह वर माँगने का समय है, और राजा से प्रार्थना की कि यदि आप अपने कहे हुए की याद करते है तो आप अपने भाई के (पर्वतक के) वचन को स्थापित करो। माँ के द्वारा कहा गया उसने मान लिया। अज जौ नही होते ऐसा उसने भी कह दिया। उसने जो असत्य और दुष्ट का कथन किया,

---

7 AP अप्पाणें। 8. AP लोहु मोहु। 9. A सिद्धतु। 10 AP जगु।
(34) 1 P कहिउ। 2. A तं। 3 A रुद्दवय। 4. A भासिउप्पणउ।

महिकपें[5] ठाणहु विहडियउ[6] आयासहु आसणु णिवडियउ ।
णहफलिहखंभचुउ[7] चूरियउ वसु चुण्णु चुण्णु मुसुमूरियउ ।
घत्ता—णियमित्तहो मरणेण पव्वउ थिउ विच्छायउ ॥
पडियउ णरयणिवासि वसु असच्चु सजायउ ॥34॥

35

पुणु दणुए मायाभाउ किउ वसु दाविउ सग्गविमाणि[1] थिउ ।
ता सयरमति आणदियउ मूढेंहिं जण्णु किं णिंदियउ ।
पुणु तेण वि[2] रायसूउ रइउ दिणयरदेवे खयरे लइउ[3] ।
णिवमासहोमु विद्ध सियउ महकालवियभिउ णासियउ ।
णारयहियउल्लउ तोसियउ अमरारें पुणरवि घोसियउ ।
मा णासहि पव्वय कहिं मि तुहु मंतीसर माणहि अमरसुहु ।
जिणबिबइं चउदिसु थवहि तिह खेयरविज्जाउ ण एंति जिह ।
ता ते सिट्ठउ तेहउ करिवि गय णरयविवरि[4] बिण्णि वि मरिवि ।
महिसिंदें लोयहु भासियउ अप्पाणउ वइरु मइ साहियउ ।
देहिहि दुक्खावहु धम्मु कहिं पलु खज्जइ पिज्जइ मज्जु जहिं ।

उससे प्रवर धरती काँप गई । भूकम्प आ गया । अपने स्थान से विघटित होकर आकाश से (राजा वसु का) आसन गिर गया । स्फटिक मणि के खम्भे चूर-चूर हो गये । राजा वसु चकनाचूर हो गया ।

घत्ता—अपने मित्र की मृत्यु से पर्वतक एकदम उदासीन हो गया । राजा वसु नरक निवास में जा पडा और वह असत्य प्रमाणित हुआ ।

35

उस दनुज ने फिर मायावी आचरण किया । जब उसने राजा को स्वर्ग विमान में स्थित दिखाया, तो सगरमत्री आनदित हो उठा (और बोला) कि मूर्खो ने यज्ञ की निंदा क्यों की ? फिर उसने भी राजसूय यज्ञ किया जैसा कि दिनकर देव विद्याधर ने स्वीकार कर लिया था । नृप मास का होम ध्वस्त हो गया और महिषासुर का विस्तार नष्ट हो गया । नारद का हृदय सतुष्ट हो गया । दैत्य ने पुन घोषित किया—हे पर्वतक, तुम कही मत जाओ । हे मत्रीश्वर, तुम भी स्वर्ग-सुख मानो । तुम चारों ओर जिन प्रतिमाओं को इस प्रकार स्थापित करो कि जिससे विद्याधरो की विद्याएँ यहाँ न आएँ । तब उसने जैसा कहा था वैसा किया । वे दोनो मरकर नरक गये । महिषेंद्र ने लोगो से कहा कि मैंने अपने वैर का बदला ले लिया है । जहाँ शरीरधारियो को सताया जाता है, माँस खाया जाता है, मद्य पिया जाता है, वहाँ धर्म कहाँ ? लेकिन तप के द्वारा

---

5 A महिकपइ । 6. A वियडियउ । 7. A फलिहमउ खंभु धुउ चूरियउ ।
(35) 1 P °विवाणि । 2. AP जि । 3. A लविउ । 4. A णरयघोरि ।

तवचरणे[5] जालिवि मयणपुरि णारउ अहमिंद विमाणवरि[6] ।
अज्ज वि अच्छइ जिणगुण महइ अइसयमइ[7] दसरहासु कहइ ।

घत्ता—भरहकुमारजणेर हो हो जण्णु किं[8] किज्जइ ।।
जगमहंतु अरहतु पुप्फदंतु पणविज्जइ ।।35।।

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे रामलक्खणभरहसत्तुहणुप्पत्ती[9]
णाम जागणिवारण[10] णाम एक्कूणहत्तरिमो[11]
परिच्छेओ समत्तो ।।69।।

कामदेव को जलाकर नारद अहमेन्द्र विमान में देव हुआ आज भी वहाँ जिन देवो का आदर करता है । इस प्रकार अतिशय मतिवाले वह मुनि राजा दशरथ से कहते हैं ।

घत्ता—हे भरत कुमार को जन्म देने वाले दशरथ, यज्ञ मत करो । विश्व मे महान् अरहन्त को नमस्कार किया जाये ।

त्रेसठ महापुरुषो के गुणालकारो से युक्त महापुराण मे महाकवि पुष्पदत द्वारा विरचित
एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न
की उत्पत्ति नाम यज्ञनिवारण नाम उनहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ।

---

5 AP तवजलणें । 6 A विमाणु धरि, P विवाणुवरि । 7. AP इय सयमइ । 8 AP ण । 9. A राम-भरहलक्खण° । 10. A जण्णणिवारण । 11. A एकसत्तिमो, P णवसट्ठिमो ।

सत्तरिमो संधि

आयण्णिवि मतिसुहासियइ[1] मिच्छादंसणु णिट्ठिउ[2]॥
दसरहहियउल्लउ मेरुथिरु जिणवरधम्मि परिट्ठिउ[3]॥ध्रुवक॥

1

अवरेहिं मि अरुहि णिहित्तु चित्तु संथुउ समति कल्लाणमित्तु।
चमुवइणा मारियपरबलेण एत्थतरि उत्तु महाबलेण।
तवारवारु सो जण्णु जाउ णिव जोयहि णियणदणपयाउ[4]।
झसमुसलगयासणिधणुहरेहिं जिप्पति ण जिप्पति व परेहिं।
विण्णाणणाणणयविहयमोहु[5] ता राए आउच्छिउ पुरोहु।
भणु भणु तणयह महिरयणरिद्धि त गमणे होइ ण होइ सिद्धि।
ता वुत्तु णिमित्तवियक्खणेण जहिं जाइ रामु सहु लक्खणेण।
तहिं तहिं गोमिणि समुहिय थाइ दामोयरु मुइवि ण पउ वि जाइ।

सत्तरवी संधि

मत्री के सुभाषित (अच्छे वचनो) को सुनकर राजा का मिथ्या दर्शन नष्ट हो गया तथा मेरु के समान स्थिर राजा दशरथ का हृदय जिन धर्म मे लग गया।

(1)

दूसरे लोगो ने भी अरहन्त भगवान् मे अपना चित्त लगाया और उन्होने अपने मत्री कल्याणमित्र की सस्तुति की। इसी बीच शत्रु सेना का नाश करने वाले महाबल नाम के सेनापति ने कहा—राजन्, नरक का द्वार जो यज्ञ सपन्न हुआ है, उसमे अपने पुत्र के प्रताप को देखिये। झस, मुसल, गदा, अशनि और धनुष को धारण करने वाले शत्रुओ के द्वारा के जीते जाते है या नही। विज्ञान-ज्ञान तथा नय से जिसने मोह को नष्ट कर दिया है, ऐसे पुरोहित से राजा ने पूछा कि बच्चो के वहाँ जाने से धरती रूपी रत्न की सिद्धि होगी कि नही। बताइये-बताइये। तब नीमित्तशास्त्र मे प्रख्यात मत्रो ने कहा—राम लक्ष्मण के साथ जहाँ-जहाँ जाते है, वहाँ-वहाँ लक्ष्मी

---

(1) 1 A °सुहासियउ। 2 AP णिट्ठियउ। 3. AP परिट्ठियउ। 4. P णिवणदण° 5 A °णयविहि-.मोहु, P °णयणिहियमोहु।

ए अट्ठम मइ[6] णिसुणिउ पुराणि सठिय सलायपुरिसाहिठाणि ।
जगतावणु रावणु रणि हणेवि महि भुजिहिति[7] खग्गे जिणेवि ।
वलएव जणद्दण सुय ण भति दससदणु पुच्छइ विहियसति ।

घत्ता—महु कहहि पुरोह लद्धविजउ[8] भुवणत्तयविक्खायउ ॥
दहगीउ[9] दसासापत्तजसु केण सुपुण्णे[10] जायउ ॥1॥

2

जसु आसकइ जमु वरुणु पवणु तहु एयहु भणु सियचिंधु कवणु ।
ता कहइ विप्पु महुरइ गिराइ सुणि धादइसडहु पुव्विल्लभाइ ।
आरामगामसदोहसोहि खरदडसडमडियसरोहि ।
रभतगोउलावासरम्मि जवणालसालिजवछेत्तसोम्मि ।
गोवालवालकीलाणिवासि[2] तहि सारसमुच्चइ णाम देसि ।
णायउरि अत्थि णरदेउ राउ वदिवि अणत गुरु वीयराउ ।
सतइहि थवेप्पिणु भोयदेउ जइ जायउ मेल्लिवि वधहेउ ।
विज्जाहरु पेच्छिवि चवलवेउ णहयलि आवतु विचित्तकेउ ।

स्वय सामने आकर खड़ी होती है, वह राम को छोडकर एक पग भी इधर-उधर नही जायेगी। यह मैंने आठवें पुराण मे सुना है कि राम शलाकापुरुषो की परम्परा मे स्थित है। वह ससार को सताने वाले रावण को युद्ध मे मारकर तथा धरती को तलवार से जीतकर उसका भोग करेंगे। ये पुत्र साक्षात् वलदेव और जनार्दन है। इसमे भ्राति मत कीजिये। तव मन मे शाति धारण करते हुए दशरथ ने पूछा—

घत्ता—हे पुरोहित, मुझे यह वताइये कि दसो दिशाओ मे यश प्राप्त करने वाला रावण किस पुण्य से विजयो को प्राप्त करता हुआ तीनो लोको मे विख्यात हुआ है।

(2)

यम, वरुण और पवन जिससे डरते है उसका ऐसा अपना कौन-सा चिह्न है? यह सुनकर ब्राह्मण मधुर वाणी मे कहता है—सुनिये मैं वताता हूँ। धातकीखड के पूर्व भाग मे सारसमुच्चय नाम का देश है, जो उद्यानो और ग्रामो के समूह से शोभित है। जो कमल समूह से मडित सरोवरो से युक्त है। जो रँभाते हुए गोकुल के समूह से सुन्दर है, और जो जवनाल (?) धान तथा जौ के क्षेत्रो से सुन्दर है, जिसमे ग्वालो के वालको की क्रीडा हो रही है, उस देश की नागपुर नगरी मे नरदेव नाम का राजा है। वह परमवीतराग, अनन्तमुनि की वन्दना कर तथा कुल परम्परा मे अपने पुत्र भोजदेव को स्थापित कर, पाप के वध के सव कारणो का परित्याग कर मुनि हो गया। इतने मे उसने आकाश मे आते हुए विचित्र पताका वाले चपलवेग नाम के विद्याधर को देखा। उसने अपने मन मे यह निदान (इच्छा) वाँधा कि मुझे अगले जन्म मे इस विद्याधर का सुन्दर भोग

---

6 AP णिसुणिउ मइ। 7 P भुजिहति। 8. A omits लद्धविजउ। 9. A दहगीव, P दसगीउ। 10, P सपुण्णें।

(2) 1 P कमणु। 2 AP °कीलणणिवासि।

बद्धउ णियाणु महु जम्मि होउ एहउ मणहरु खेयरविहोउ[3]।
सुररमणीरमणविलाससमग्गि मुउ उप्पण्णउ सोहम्मसग्गि।
इह भरहवरिसि[4] वेयड्ढसेलि गयणग्गलग्गमणिमोहमेलि[5]।
दाहिणसेढिहि हयवइरिजीउ पुरि मेहसिहरि पहु सहसगीउ।

घत्ता—उव्वेयउ केण वि कारणिण अंतरगि णिरु[6] जायउ॥
कलहणउ करिवि सहुं बंधवहिं सो तिकूडगिरि आयउ॥2॥

3

लग्गइ अकडि दुव्वयणकंडु मउलाविज्जइ सुहि तेण तुंडु।
किं किज्जइ पिसुणणिवासि वासु तहि गम्मइ जहि कंदरणिवासु।
तहि गम्मइ जहि तरुवरहलाइं[1] तहिं गम्मइ जहि णिज्झरजलाइं।
तहि गम्मइ जहिं गुणणिरसियाइं सुव्वंति[2] ण खलयणभासियाइं।
इय चिंतिवि घत्तिवि[3] दुट्ठसंक काराविय राएं णयरि लंक।
उप्परिथियगिरिहत्थिहिं[4] विहाइ चल्लियधयहत्थहि णडइ णाइ।
णं सण्णइ एहि जि पुणु वि एम किं सग्गे मई जोयंतु[5] देव।
सिहरें[6] ण भिंदिवि विउलमेह[7] ससि पावइ किं घरतेयरेह।

मिले। वह मरकर देवरमणियों से जिसकी विलास सामग्री भरी हुई है ऐसे सौधर्म स्वर्ग मे उत्पन्न हुआ। इस भारतवर्ष मे किरणसमूह से आकाश को छूने वाला विजयार्ध पर्वत है। उसकी दक्षिण श्रेणी मे मेघ शिखर नाम की नगरी में, शत्रु के जीव का हनन करने वाला सहस्रग्रीव नाम का राजा है।

घत्ता—किसी कारण से उसके मन मे अत्यन्त उद्वेग हो गया, और वह अपने भाइयों से झगडा करके त्रिकूट गिरि में आ गया है।

(3)

चूँकि दुर्वचन रूपी तीर कुअवसर मे (असमय) जा लगता है और इसलिए मित्र का मुख उससे कुम्हला गया। दुष्टों के घर मे क्यो निवास किया जाए? वहाँ जाया जाए जहाँ गुफा में निवास हो, वहाँ जाया जाए जहाँ तरुवरो के फल हों, वहाँ जाया जाए जहाँ निर्झरों के जल हों, वहाँ जाय जाए जहाँ गुणो से रहित तथा गुणो का नाश करने वाले दुष्ट जनों के द्वारा कहे गये वचन सुनने को न मिले। यह विचारकर खोटी शंका को मन से निकालकर राजा ने लका नगरी का निर्माण करवाया। ऊपर स्थित पहाड रूपी हाथी के समान चंचल ध्वज रूपी हाथो से वह ऐसी मालूम होती थी, जैसे नृत्य कर रही हो। अपनी चेतना के द्वारा (वह सोचती है) कि क्या मैं यहाँ फिर भी ऐसी ही हूँ। स्वर्ग मे देवता लोग मुझे क्यो देखते है? शिखर के द्वारा बड़े-बड़े मेघों का भेदन करके सोचती है कि चन्द्रमा उसके घर की शोभा को क्या पा सकता है? अपनी पुतलियो

3. A खेयरहु होउ। 4. A °वरिस°। 5 A °मऊह°। 6 AP णिउ।
(3) 1. AP °वरफलाइ। 2 AP सुम्मंति। 3 A पावियदुट्ठसंक। 4. A °हत्थिय विहाइ। 5 A जोयति। 6 AP सिहरेंहि वि। 7. AP णीलमेह।

जोयइ पुत्तलियाणयणएहिं ण हसइ फुरंतहिं रयणएहिं ।
परिवित्थारिवि कित्तीमुहाइ दावइ पारावयरवसुहाइ[8] ।

घत्ता—जहिं चदसाल चदसुहय चदकतिजलु मेल्लइ ॥
कामिणिपयपहउ[9] असोयतरु उववणि वियसइ फुल्लइ ॥3॥

4

सा पुरि परिपालिय तेण ताव गय वरिसह वीससहास[1] जाव ।
सयगीउ खगाहिउ पचवीस थिउ विद्दवतु णाणामहीस ।
णिद्दलिवि वइरि भूभगभीस पण्णासगीउ मुउ जिइवि वीस ।
दसपचसहासइ वच्छराह सठिउ पुलत्थि राइयधराह ।
सुदरि तहु पणइणि मेहलच्छि सा[2] पेच्छइ घरि पइसति लच्छि ।
अकग्गि चडिउ चडसुमालि सिविणतरति परिगलियकालि[3] ।
आहासिउ दइयहु फलपयासि णरदेव[4] देव थिउ गब्भवासि ।
सभूयउ सयणहु सुहु जणतु ण बहुरूविणिवसियरणमतु ।
णिवरूवे आणदु व पयाह आवासु व णहयरसपयाह ।

के नेत्रो से जैसे देखती है और मानो चमकते हुए रत्नो के द्वारा हँसती है, अपने कीर्ति रूपी मुखो का विकास कर जो समुद्र और धरती को दिखाती है।

घत्ता—जहाँ पर चन्द्रशाला (छत) चन्द्रकिरणो से आहत होकर चन्द्रकान्त मणियो का जल छोड़ती है, तथा कामिनी के चरणो से आहत अशोक वृक्ष उपवन मे विकसित होकर फूल उठता है।

(4)

उस नगरी का पालन करते हुए उसे जब बीस हजार पच्चीस वर्ष बीत गये तब शतग्रीव विद्याधर अनेक राजाओ का दलन करता हुआ स्थित हुआ। उसके बाद भ्रू भग से भयकर शत्रु का नाश कर पचाशत ग्रीव पन्द्रह हजार वर्ष जीवित रहकर मृत्यु को प्राप्त हुआ। तब धरती को अलकृत करने वाले इतने वर्षो मे फिर पुलस्त्य गद्दी पर बैठा। उसकी प्रियतमा मेघलक्ष्मी थी। वह घर मे हँसती हुई लक्ष्मी के समान दिखाई देती थी। उसकी गोद के अग्रभाग मे स्वप्न मे सूर्य चढ गया। समय बीतने पर उसने पति से पूछा। इस बीच फल को प्रकाशित करने वाले गर्भ मे देव राजा के रूप में स्थित हो गया जो स्वजनो को सुख देता हुआ उत्पन्न हुआ। मानो अनेक सुन्दरियो के लिए वशीकरण मत्र ही उत्पन्न हुआ हो। अपने रूप से प्रजा के लिए आनन्द के समान तथा विद्याधरो की सपदा के निवास के समान वह था।

---

8 A °रइसुहाइ. P °रयसुहाइ। 9. A °पयहयउ।

(4) 1. AP तीससहास। 2. AP ओहामियरूवें जाइ लच्छि (A जायलच्छि)। 3. P पडिगलिय°। 4. AP णरदेउ देउ।

घत्ता—कुलधवलु धुरधरु दहवयणु जायउ मायहि जइयहु ॥
मदरगिरिदुग्गु पुरदरिण महु भावइ[5] किउ तइयहु ॥4॥

5

णवतरणि व सुरकुमुयायराह[1] पडिमल्लु व गज्जियसायराह।
कढिणकुसु ण दिग्गयवराह [2]मणमत्थइ सूलु व अरिवराह।
ण मत्तभमरु णदणवणाह णं कामवासु[3] तरुणीयणाह।
पवहतमहासरिजलगलत्थु महिमहिहरसचालणसमत्थु।
वण्णेण गरलभसलउलकालु आयवणयणु पडिवक्खकालु।
जायउ जुवाणु जमजोहजूरु दुद्दसणु ण मज्झण्णसूरु।
ण [4]विसमविसकुरु विसविसित्तु ण पलयकालु हुयवहु पलित्तु।
तज्जियदासि व भउ धरइ[5] चरइ जसु असिधारइ[6] धर मरइ तरइ।
जसु सत्तसत्तसहसाइ आउ वरिसह जो सुव्वइ वज्जकाउ।

घत्ता—जसु भइए[7] रवि ण अत्थवइ चदु व चदगहिल्लउ ॥
फणि पुरिसरूवु परिहरिवि हुउ दीहदेहु कीडुल्लउ ॥5॥

घत्ता—कुल मे श्रेष्ठ धुरन्धर रावण जिस समय मा से उत्पन्न हुआ तो मुझे लगता है कि उस समय इन्द्र ने मदराचल को दुर्ग वनाया।

(5)

देव कुसुमो के समूह के लिए नव सूर्य के समान, गरजते हुए समुद्रो के लिए प्रतिमल्ल के समान, श्रेष्ठ दिग्गजो के लिए कठिन अंकुश के समान, वडे-वडे शत्रुओ के मन और मस्तक पर शूल के समान, नदनवनो के लिए मतवाले भ्रमर के समान, तरुणी जनो के लिए काम वास के समान वह रावण था। जिसने वडी-वडी नदियों के जल को छेडा है, जो पृथ्वी के वडे-वडे पहाडो के संचालन मे श्रेष्ठ है, जो रग मे विष और भ्रमरसमूह के समान काला है, लाल-लाल आँखो वाला और दुश्मन के लिए काल वह रावण युवक हो गया। यम समूह को पीड़ित करने वाला वह इस प्रकार दूरदर्शनीय था मानो मध्याह्न का सूर्य हो। मानो विष से विषावल विषय विष का अ कूर हो। मानो प्रलयकाल हो या अग्नि प्रदीप्त हो उठी हो। जिसके कारण धरती डाँटी गई दासी के समान डरती हुई चलती है और जिसकी तलवार की धार मे वह मरती और तिरती है, जिसकी सतत्तर हजार वर्ष आयु है, ऐसा वह वज्र शरीरवाला समझा जाता है।

घत्ता—जिसके भय के कारण रवि अस्त नही होता और चन्द्रमा को राहु लग गया है, और फणि भी अपने पुरुष रूप को छोडकर एक लम्वी देह वाला खिलौना जिसके लिए वन गया है।

5. A भावहि।

(5) 1. A कुमुयावराह। 2. AP मणि मत्थय। 3. AP कामबाणु। 4. A ण सविसु विसकुरु विसपसित्तु, PT ण समविसमकुरु, K records a *p* समविसमकुर। 5. P करइ डरइ। 6. P °धारहि। 7. AP जसु रवि ण भइयए अत्थमइ।

6

खयरेण कण्ण इच्छियजएण मदोयरि[1] तहु दिण्णी मएण ।
आरुहिवि चारु पुप्फयविमाणु सहु कतइ णहयलि विहरमाणु ।
रययायलि अलयावइहि धीय विज्जासाहणि सजमविणीय[2] ।
जोइवि मणिवइ[3] झाणाणुलग्ग[4] मइ रायहु मयणवसेण भग्ग ।
पारद्धु विग्घु परिगलियतुट्ठि उववाससोसकिसकायलट्ठि ।[5]
वारहसवच्छरपीडियगि कुद्धी कुमारि ण खयभुयगि[6] ।
णासिउ वीयक्खरलीणु झाणु इहु खगवइ चिधें जाउहाणु ।
महु वप्पु होउ मइ रणि हरउ[7] आयामि जम्मि महु कज्जि मरउ[8] ।
णिक्किउ विरत्तु विवरीयचित्तु जाणिवि रोसगिउ[9] रत्तणेत्तु ।
गउ दहमुहु खेयरि मरिवि कालि थिय मदोयरिगब्भतरालि ।

घत्ता—उप्पण्णी धीय सलक्खणिय कपावियकेलासहु ॥
ण लकाणयरिहि जलणसिह णाइ भवित्ति दसासहु ॥6॥

7

दिणि पडिउ जलिउ उक्काणिहाउ अप्पपरि जायउ णरणिहाउ ।

(6)

जय की इच्छा करने वाले उस विद्याधर मय के द्वारा रावण को अपनी कन्या दे दी गई। सुन्दर पुष्पक विमान मे चढकर अपनी कान्ता के साथ वह आकाश में विहार कर रहा था। विद्या की साधना के कारण सयम से विनीत और रचित चूडा पाशवाली अलकापुरी के राजा की कन्या मणिवती को ध्यान मे लीन देखकर राजा की मति काम से भग्न हो उठी। उसने विघ्न प्रारम्भ किया। जिसकी तुष्टि नष्ट हो चुकी है, तथा उपवास के कारण जिसकी दुवली पतली देह रूपी सृष्टि सूख चुकी है ऐसी वारह वर्षो से अपने शरीर को पीडा पहुँचाने वाली वह विद्याधर कुमारी प्रलयकाल की नागिन के समान फुफकार उठी। बीजाक्षरो मे लगा हुआ उसका ध्यान नष्ट हो गया। उसने कहा : यह विद्याधर जो चिह्न से राक्षस है, मेरा वाप होकर मुझे जगल मे हरे और इस प्रकार आगामी जन्म मे मेरे कारण मृत्यु को प्राप्त हो। उसे निष्क्रिय, विरक्त, और विपरीत चित्त जानकर क्रुद्ध और लाल-लाल आँखो वाला रावण चला गया और विद्याधरी भी मरकर मदोदरी के गर्भ मे स्थित हो गई।

घत्ता—वह लक्षणवती कन्या के रूप मे उत्पन्न हुई, जो मानो कैलाश पर्वत को कँपाने वाले रावण की भवितव्यता और लका नगरी के लिए अग्नि की ज्वाला थी।

(7)

दिन मे तारो का समूह जल कर गिर पडा। अपने आप हाहाकार शब्द होने लगा। धरती

(6) 1. मदोवरि। 2 A °विलीय। 3 A मद्दिवइ। 4 P झाणेणुलग्ग। 5. A °कायजट्ठि। 6 P खए भुयगि। 7. A हरइ। 8 A मरइ। 9. P रोसें इगिउ रत्तु णेत्तु।

महि कपइ जपइ को वि साहु   किह चुक्कइ एवहिं पुहइणाहु ।
एयइ धीयइ सभूइयाइ   खज्जेसइ णाइ[1] विसूइयाइ ।
खयकाले ढोइय मरणजुत्ति   वणि णिज्जणि घिप्पइ कहि वि पुत्ति ।
सुइसुहहराउ[2] विहुणियसिराउ   आयण्णिवि णेमित्तियगिराउ ।
खगभूगोयरसिरिमाणणेण   मारियउ[3] पवुत्तु दसाणणेण ।
कि गरलवारिभरियइ[4] सरीइ   किं सविसकुसुममयमंजरीइ ।
बधवयणहियवियारणीइ   कि जायइ धीयइ वइरिणीइ ।
णवकमलकोसकोमलयराउ   उद्दालिवि मदोयरिकराउ ।
णिम्माणुसि काणणि घिवहि तेम   पाविट्ठ दुट्ठ णउ जियउ जेम ।

घत्ता—त णिसुणिवि[5] ते मारीयएण भणिय देवि वररूवउ ।।
तुह गब्भि भडारो[6] थीरयणु गोत्तखयकरु हूयउ ।।7।।

8

मुइ[1] मुइ दहमुहखयकालदूय   ते होते होसइ अवर धूय ।
वाहापवाह[2] ओहलियणयण   ता तरुणि चवइ ओहुल्लवयण ।
मारीयय णवतरुफलरसड्ढि   कीलतपक्खिरमणीयसद्दि ।
घल्लिज्जसु[3] कत्थइ पुत्ति तेत्थु   रविकिरणु ण लग्गइ देहि जेत्थु ।

काँप उठी । तब कोई सज्जन व्यक्ति कहता है कि इस समय राजा किस प्रकार बच सकता है । यह उत्पन्न हुई कन्या महामारी की तरह सबको खा जायेगी, यह क्षयकाल के द्वारा मरण की युक्ति यहाँ लाई गई है, इसलिए इस पुत्री को निर्जन वन मे डाल दिया जाए । कानो के सुख का हरण करने वाली तथा शिरो को प्रताडित करने वाली ऐसी ज्योतिषी की वाणी सुनकर विद्याधर और मनुष्यो की लक्ष्मी का भोग करने वाले रावण ने मारीच से कहा कि विषजल से भरी हुई नदी से क्या ? विष से परिपूर्ण कुसुम मजरी से क्या ? बाँधवजनो के हृदय को विदीर्ण करने वाली इस दुश्मन लडकी के पैदा होने से क्या ? इसलिए नव कमलकोष से भी अधिक कोमल मदोदरी के हाथ से इसे छीनकर मनुष्यो से रहित जगल मे इस प्रकार छोड दो, जिससे यह पापात्मा दुष्ट जीवित न रहे ।

घत्ता --यह सुनकर उस मारीच ने मंदोदरी से कहा—हे देवी, तुम्हारे गर्भ से सुन्दर रूप वाला स्त्रियो मे रत्न हुआ है, परन्तु गोत्र का नाश करने वाला है ।

(8)

तुम रावण क्षयकाल की दूती के समान इसे छोडो-छोडो । क्यो कि रावण के रहने पर दूसरी कन्या होगी । तब आँसुओ के प्रवाह से जिसका नेत्र मलिन है, ऐसी उस युवती ने नीचा मुख करते हुए कहा—हे मारीच, जो नव वृक्षो के फलो के रस से आई हो, जहाँ क्रीडा करते हुए पक्षियो का सुन्दर शब्द हो और जहाँ इसकी देह को सूर्य की किरण न लगे ऐसे वन मे कही इस पुत्री

---

(7) 1 A ताइ वि, P तासु वि । 2 A °सुहयराउ । 3. A मारीयउ वुत्तु । 4 A गरुडवारि° । 5 A णिसुणतें मारियएण । 6 P भउरिए धीरयणु ।

(8) 1. A मुय मुय । 2. A बाहप्पवाह° । 3. A घल्लिज्जइ ।

अह एयइ काइं जियतियाइ कुरइ णियतायकयंतियाइ ।
गिरिदारणीइ कि गिरिणईइ हो हो किं एयइ दुम्मईइ ।
आलिहिउ पत्तु मच्छरकराल[4] रावणदेहुब्भव[5] एह वाल ।
वहुदुक्खजोणि बंधुहु असीय सुविसुद्धवस णामेण सीय ।
इय भासिवि मंजूसहि णिहित्त सहुं रयणहिं वरराईवणेत्त ।
दहगीवजीवरक्खणकएण णिय णिविसे[6] णहि मारीयएण ।
चंपयधवचंदणचूयगुज्झि[7] वहि मिहिलाणयरुज्जाणज्झि ।

घत्ता—मंजूसई सहु छणयंदमुहि सरिसरणिज्झरसीयलि ॥
णं रहुवइसिरिलयकंदसिरि णिक्खय सुय धरणीयलि ॥8॥

9

गउ विज्जापुरिसु णहंतरेण तिक्खे महि दारिय लंगलेण ।
आरामुहछित्तधुरंधरेण मंजूस दिट्ठ पामरणरेण ।
वणवालहु अप्पिय तेण णीय[1] रायालउ[2] राएं दिट्ठ सीय ।
वाइवि वइयरु बुज्झिय विणीय णियपियहि दिण्ण पडिवण्ण धीय ।
वड्ढइ परमेसरि दिव्वदेह णं वीयायदहु[3] तणिय रेह ।

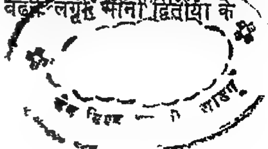
को छोडना । अथवा अपने पिता का अन्त करने वाली या अपने पिता के लिए यम के समान इस कन्या के जीने से क्या ? पहाड को ही चीरने वाली पहाडी नदी से क्या ? हो-हो, इस दुर्मति कन्या से क्या ? पत्र लिखा गया कि ईर्ष्या से भयकर यह वाला रावण की देह से उत्पन्न हुई है। वन्धुजनो के लिए दु ख की कारण, सताप देने वाली, अच्छे वश वाली इसका नाम सीता है। ऐसा कह कर उत्तम कमलो के नेत्रो वाली उसे रत्नो के साथ मजूषा मे रख दिया गया। और रावण के जीव की रक्षा करने वाला मारीच पल भर मे उसे आकाश मे ले गया। मिथिला नगरी के बाहर चपक, धवल, चदन, आम्र वृक्षो से गहन उद्यान के मध्य मे।

घत्ता—उसने नदी, तालाव, निर्झर से ठण्डे धरती तल पर पूर्ण चन्द्रमा के समान मुख वाली उस कन्या को मजूषा के साथ इस प्रकार रख दिया मानो राम की लक्ष्मी रूपी लता के अकुर की शोभा हो।

(9)

विद्यापुरुष (मारीच) आकाश मार्ग से चला गया। एक किसान ने अपने तीखे हल से धरती को फाडा। और हल के आरा के मुख से धरती को फाडने में निपुण किसान ने उस मजूषा को देखा। उसने वह मजूषा वनपाल को दी, वह उसे राज्यालय ले गया। राजा ने उसे देखा, वृत्तान्त को पढकर उसने अपनी पत्नी को वह विनीत कन्या दी और उसने भी उसे स्वीकार कर लिया। वह दिव्य देह वाली परमेश्वरी दिन-दूनी रात-चौगुनी इस प्रकार वढने लगी मानो द्वितीया के

4 P अच्छर° । 5 P रावण° 6. A णिवसें । 7. AP धवचदण° ।
(9) 1. A सीय । 2. AP रायालइ । 3. AP वीयाइदहु ।



ण ललिय महाकइपयपउत्ति ण मयणभावविण्णाणजुत्ति ।
ण गुणसमग्ग सोहग्गथत्ति ण णारिरूवविरयणसमत्ति[4] ।
लायण्णवत्त[5] ण जलहिवेल सुरहिय[6] ण चपयकुसुममाल ।
थिर सूहव ण सप्पुरिसकित्ति[7] बहुलक्खण ण वायरणवित्ति ।
घत्ता—जसवेल्लि व अट्ठमराहवहु अमरदिण्णकुसुमजलि ।।
पुरि वड्ढिय जणयणरिंदसुय रामणरामहु[8] णाइ कलि ।।9।।

10

पयकमलहु रत्तत्तणु जि होइ इयरह कह रगु वहति जोइ ।
गुफहु[1] पुणु[2] गूढत्तणु जि चारु इयरह कह मारइ तिजगु मारु ।
जघाबलेण जायउ अजेउ इयरह कह वग्गइ कामएउ ।
णालोइउ जाणुहु[3] सधिठाणु इयरह कह सधइ कुसुमबाणु ।
ऊरूयलचिंतइ हयसरीर इयरह कह जालधरियसार ।
कडियलु गरुयत्तणगुणणिहाणु[4] इयरह कह गरुयहु महइ माणु ।
गभीरिम णाहिहि णवर होउ इयरह कह णिवडिउ तहिं जि लोउ ।
पत्तलउ उयरु सिंगारु करइ इयरह कह मुणिपत्तत्तु हरइ ।

चन्द्रमा की देह हो। मानो महाकवि के पद की सुन्दर युक्ति हो। मानो गुण की समग्रता हो। सौभाग्य की सीमा हो। मानो नारी रूप के रचने की समाप्ति हो। मानो सौन्दर्य की पिटारी हो। मानो सुगंधित चम्पक कुसुमो की माला हो। मानो स्थिर हुई सत्पुरुष की कीर्ति हो। मानो अनेक लक्षणो वाली व्याकरण की वृत्ति हो।

घत्ता—मानो आठवे बलभद्र के यश की बेल हो। मानो देवताओ द्वारा दी गई कुसुमाजलि हो। इस प्रकार जनक राजा की वह कन्या नगर मे बडी हो गई, राम और रावण की कलह के समान।

(10)

उसके चरणकमलो मे रक्तता है, नही तो मुनि उसे देखने मे राग धारण क्यो करते है? उसकी एडियो मे अत्यन्त सुन्दर गूढता है, नही तो कामदेव तीनों लोको को कैसे मारता है? वह जघाबल से अजेय है, नही तो कामदेव इतना इतराता क्यो है? उरुतल की चिन्ता से वह क्षीण शरीर हो गई अन्यथा वह कदली की तरह (तुच्छ) क्यो है?

उसकी कमर गुरुता के गुण का खजाना है। नही तो वडे लोगो का मान क्यो धारणकरती है? उसकी नाभि मे केवल गभीरता है, नही तो उसमे लोक क्यो गिरता है? उसका पतला उदर उसकी शोभा को बढाता है, नही तो वह मुनियो की पात्रता का हरण क्यो करती है? उस मुग्धा

---

4 A °समग्गि। 5 A लायण्णवण्ण। 6 P सुरहिय णवचयय°। 7 P सुप्पुरिस°। 8. A ण रामहु रावण कलि, P रावणरामहु णाइ कलि।

(10) 1. A गुप्फहु, P गुप्पहु। 2 A omits पुणु। 3 A जण्णुहि, P ज तुहु। 4 AP गरुयत्तणु।

घत्ता—जहिं दीसइ तहिं जि सुहावणिय सीय काइ वण्णिज्जइ ॥
रक्खेवि जण्णु जणयहु तणउ रामे धुवु परिणिज्जइ[10] ॥11॥

12

ता कुलजयलच्छिसुहावहेण पेसिय णियतणुरुह दसरहेण ।
वलणाहे समउ महाबलेण परिवारिय चउरंगे बलेण ।
गय[1] ससुरणयरु सुर[2] सणर तसिय चलवलिय मयर मयरहरल्हसिय ।
भड रह[3] करि तुरिय[4] तुरग चलिय दसदसिवह एक्कहिं णाइ मिलिय ।
घरु आयहं[5] मामे कुसलु कयउ प्रगणि[6] जयमंगलु[7] तूरु हयउ ।
गय कइवय दियह मणोरहेहिं[8] हा पहु वेहाविउ पसुवहेहिं ।
चलपचवण्णधयधुव्वमाणु मडउ णिहित्तु जोयणपमाणु ।
दिज्जइ दीणहं आहारदाणु घिप्पइ कपतहं मृगहं[9] प्राणु ।
खज्जइ मासु वि किज्जइ विहाणु महु मिट्ठउ पिज्जइ सोमपाणु ।
इय णिव्वत्तिउ[10] कउ रित्तिएहिं भणु को ण वि खद्धउ सोत्तिएहिं ।
हिंसाइ धम्मु पावासवेण अण्णहि वासरि जयजयरवेण ।

घत्ता—इस प्रकार वह जहाँ दिखाई देती है, वही सुहावनी है, उसका वर्णन किस प्रकार किया जाए। जनक के यज्ञ की रक्षा करते हुए, राम की रक्षा करते हुए, उसका परिणय किया जाएगा।

(12)

तब कुल लक्ष्मी से सुन्दर दशरथ ने अपने पुत्रों को भेज दिया। सेनापति महाबल के साथ चतुरंग सेना से घिरे हुए वे ससुर के नगर गए। मनुष्यो सहित देवता त्रस्त हो उठे। समुद्र से च्युत मगर चंचल हो उठे। योद्धा, रथ, हाथी, घोडे चल पड़े मानो दसो दिशा-पथ एक साथ मिल गए हो। घर पर आए हुए उनका (राम, लक्ष्मण) का ससुर ने अभिवादन किया। प्रागण मे जय मगल और तूर्य वजा दिये गए। इस प्रकार कुछ दिन बीत गए। लेकिन अफसोस है कि राजा पशु वधो से प्रवचित हुआ। उसने चचल पचरगे ध्वजो से आन्दोलित एक योजन प्रमाण का मडल बनाया, दीनो को आहार दान दिया जाने लगा। कॉपते हुए पशुओ के प्राण आहूत किए जाते हैं। इस प्रकार मॉस खाया जाता है, और विधान किया जाता है। पुरोहितो ने इस प्रकार के यज्ञ का विधान किया है, वताइए ब्राह्मणो के द्वारा कौन नही ठगा गया कि वे जो हिंसा और पाप के आश्रय का धर्म वताते है। दूसरे दिन जय-जय शब्द के साथ।

---

10. A परणिज्जइ।

(12) 1 A गउ। 2. A सुरसेण्ण तसिय, P सुर सण्णर तसिय। 3 AP करि रह। 4 A तुरय। 5. आयउ। 6 AP पगणि। 7 A मगलतूरु, P मगलतरु। 8. AP मणोहरेहिं। 9. AP मिगह पाणु 10 A णिव्वित्तिउ।

घत्ता—धणुकोडिचडावियघणगुणहु[11] दरिसियवइरिविरामहु ॥
णियधीय सीय णवकमलमुहि जणएं दिण्णी रामहु ॥12॥

13

वइदेहि धरिय करि हलहरेण णं विज्जुल धवले जलहरेण ।
ण तिहुयणसिरि परमप्पएण णं णायवित्ति पालियपएण ।[1]
ण चंदे वियसिय कुसुममाल[2] गोविंदे ण सिरि सारणाल ।
दुव्वारवइरिवारणभुएण सहु सीयइ सहु केक्कयसुएण ।
अच्छइ दासरहि सुहेण जाम पिउणा णियदूयउ पहिउ[3] ताम ।
आणिउ विणीयपुरि सीरधारि सकलत्तु सभाउ दुहावहारि ।
अहिसिंचिवि जिणपडिमउ घएहि दहियहि दुद्धहि धारापएहि[4] ।
णिव्वत्तिय जिणपुज्जा महेण सिसुणेहे तूसिवि दसरहेण ।
अवराउ सत्त कण्णाउ तासु दिण्णाउ मुसलकरपहरणासु ।
सोलह तहु महिलच्छीहरास अलिकुवलयकज्जलसामलासु ।
गभीरधीरसाहसधणाह रइयउ विवाहु दोह मि जणाह ।
कोणाहयतूरइ रसमसति[5] मिहुणाइ मिलतइ दर हसति ।
समाणवसइ सयणइ णडति पिसुणइ चितासायरि पडति ।

घत्ता—शत्रुओ को अत दिखाने वाले तथा धनुष की कोटि पर सघन शब्द के साथ डोरी चढाने वाले राम को जनक ने नव कमल के मुखवाली अपनी कन्या दे दी।

(13)

राम ने सीता का पाणिग्रहण कर लिया मानो धवल मेघ ने विजली को पकड लिया हो, मानो परमात्मा ने त्रिभुवन की लक्ष्मी को ग्रहण कर लिया हो, मानो प्रजा के पालन करने वाले राजा ने न्यायवृत्ति को पकड लिया हो, मानो चन्द्रमा ने पुष्पमाला को विकसित किया हो, मानो गोविन्द ने लक्ष्मी के कमल को पकड लिया हो। तव दुर्वारशत्रुओ से निवारण करने वाली भुजाओ वाले, कैंकेयी के पुत्र और सीता के साथ, लक्ष्मण के साथ राजा राम जब सुख से रहते थे, तो पिता ने एक अपना दूत भेजा और दु.ख का हरण करने वाले श्रीराम को पत्नी सहित अयोध्या वुलवा लिया। घी, दही, दूध की धाराओ से जिन भगवान् की प्रतिमा का अभिषेक कर महान् पुत्र स्नेह से सतुष्ट होकर राजा दशरथ ने जिनेन्द्र की पूजा की। हाथ मे मूसल अस्त्र को धारण करने वाले राम को और भी सात कन्याएँ दी गईं, तथा भ्रमर नील कमल और कज्जल के समान श्यामल तथा धरती की लक्ष्मी को धारण करने वाले लक्ष्मण को सोलह कन्याएँ दी गई। और इस प्रकार गंभीर, धीर, साहस रूपी धन वाले उन दोनों का विवाह किया गया। दड से आहत नगाड़े वजने लगे, मिथुन जोड़े मिलने लगे, कुछ-कुछ और मुस्कराने लगे। सम्मान के वशीभूत होकर स्वजन लोग नृत्य करने लगे, दुष्ट लोग चिंता रूपी सागर मे पड गये।

11 A दाणगुणहु, P धणुगुणहु ।
(13) 1. A पालियवएण। 2. P कुसुयमाल। 3. AP पिहिउ। 4 P धारवएहिं। 5. A समसमति।

घत्ता—काणीणहु दीणहु देसियहु दिण्णइ दाणइ लोयहु ॥
तहिं समइ पराइउ[6] महुसमउ ण विवाहु अवलोयहु ॥13॥

14

सोहइ वसंतु जगि पइसरंतु अहिणवसाहारहिं महमहंतु ।
महुकारि व महु धारहिं सवंतु हेमंतपहुत्तणु णिट्ठवंतु ।
णियचिंधइ दसदिसु पट्ठवंतु अंकुरफुरंतु[1] पल्लवचलंतु[2] ।
सारंतु सुवाविहिं वारिचीरु दावंतु णीलसेवालतीरु[3] ।
खरकिरणपयाउ[4] वि णेलरासु अवरु वि दीहत्तणु वासरासु ।
पयडंतु असोयहु पत्तरिद्धि मोक्खयहु दुफग्गुणमोक्खसिद्धि ।
वउलहु वउ सुच्छायउ[5] करंतु वणलच्छिहि ओसासुय[6] हरंतु ।
तिलयहु दलतिलयविलासु देंतु वेल्लीकामिणियहं रसु जणंतु ।
वल्लहकामुयवम्मइ हणंतु कणयारफुल्लरयधूसरंतु[7] ।
माणिणिहिं माणगिरि जज्जरंतु हिंडिरमसलावलिगुमुगुमंतु ।
उत्तगमड्डि[8] दियहइ गमंतु[9] ।
मंदारकुसुमरयमहमहंतु[10] रमणाहिलासविब्भमु भमंतु ।

घत्ता—कानीन, दीन, देशी लोगो को दान दिया गया। ठीक उसी समय बसंत का समय आ पहुँचा। मानो उस विवाह को देखने के लिए ही ऐसा हो रहा है।

(14)

जग मे प्रवेश करता हुआ वसत शोभित होता है, अभिनव सहकार वृक्षो से महकता हुआ कलाली की तरह मधु धाराओ से वहता हुआ, हेमन्त की प्रभुता को नष्ट करता हुआ, अपने चिह्न को दसो दिशाओ मे भेजता हुआ, नवाकुंरो से चमकता हुआ, पल्लवो से हिलता हुआ, वापिकाओ के जल रूपी चीर को हटाता हुआ, उनके नीले शैवालो के तीरो को दिखाता हुआ, सूर्य के तीक्ष्ण किरण प्रताप को और दिनो के लम्बेपन को दिखाता हुआ, अशोक के पत्तो की वृद्धि करता हुआ, मोक्ष (अर्जुन) वृक्ष की दुष्ट फागुन से मुक्ति की सिद्धि को प्रगट करता हुआ, मौलश्री के शरीर को कांतिमय वनाता हुआ, वन लक्ष्मी के ओस रूपी आसुओ को पोंछता हुआ, तिलक वृक्षो के पत्तो को तिलक की शोभा देता हुआ, लता रूपी कामिनियो मे रस उत्पन्न करता हुआ, प्रियो के कामुक मर्मो को आहत करता हुआ, कनेर के फूलो की धूल को धूसरित करता हुआ, मानिनियो के मान रूपी पहाडो को जर्जर करता हुआ, घूमते हुए भ्रमरो की आवलि से गुनगुन करता हुआ, उत्तम वृक्ष विशेपो पर दिनो को विताता हुआ, मदार कुसुमो की धूल से महकता हुआ, रमण की अभिलाषा के विलास को उत्पन्न करता हुआ, वसत-आ पहुँचा।

6 AP पराइयउ।

(14) 1 A फुरंत। 2. A °ललंतु। 3 AP °सेवालणीरु। 4. AP °पयाउ दिणेसरासु। 5. A सच्छायउ। 6. AP ओससुय। 7 AP कणियार°। 8 AP उत्तुंगमहिड। 9 AP add after this मज्जतपक्खिकुलचुमुचुमंतु, K writes it but strikes it off 10 AP read this line as रमणाहिलासविब्भमं भमंतु (A रमणीहिं विलासविब्भमि भमंतु), मायंदकुसुमरयमहमहंतु।

घत्ता—जो मोणे चिरु सचरइ वणि सो सपइ महुसेविरु ॥
कलकोइलु[11] पुण वि पुण वि लवइ मत्तउ को ण पलाविरु ॥14॥

15

वज्जइ वीणा पिज्जइ पाण पियमाणुसचित्त साहीण ।
गिज्जइ महुर सत्तसराल दढपेम्म पसरइ असराल ।
परिमलपउर पोसियराम वज्झइ फुल्लियमल्लियदाम ।
गधकयवयछडयवियारे[1] णेवरकलरवणच्चियमोरे[2] ।
सुप्पइ[3] दवणयविरइयगेहे पुप्फत्थरणे भमियदुरेहे ।
सधइ कामो कुसुमखुरप्प[4] णासइ तावसतवमाहप्प ।
अणुणिज्जइ रूसति पियल्ली दाविज्जइ कदप्पसुहेल्ली ।
सरजलकेलीसित्तसरीरो जतविमुक्कसकुकुमणीरो ।
तिम्मइ[5] पणइणिसुहुमकडिल्लो दिट्ठावयववूढरसिल्लो[6] ।
कुवलयमालाताडणललियउ[7] फुल्लपलासदुमिहिं[8] पज्जलियउ ।
इच्छामाणियकताकतो[9] एव वियभइ जाम वसतो ।

घत्ता—जो अभी तक वन मे वहुत समय से मौन था, वह कोकिल इस समय मधु का सेवन करने लगा और वार-वार सुन्दर आलाप करने लगा । इस दुनिया मे मतवाला कौन नही प्रलाप करता ?

(15)

वीणा वजने लगती है । मदिरापान किया जाने लगता है । प्रियजनो के चित्तो को साधा जाता है । सप्त स्वरो मे मधुर गाया जाता है । अपर्याप्त दीर्घ प्रेम फैलने लगता है । परिमल से प्रचुर स्त्रियो का पोषण करने वाली खिली हुई मल्लिका की माला वाधी जाने लगती है । जिसमे सुगधित द्रव्यो के समुच्चय का छिडकाव किया गया है, और नूपुरो के समान शब्द वाले मयूर नृत्य कर रहे है, जिसमे भ्रमर घूम रहे है ऐसे द्रवण लताओ से रहित घर मे पुष्प-शय्या पर प्रेमी जनो के द्वारा सोया जाता है । रूठी हुई प्यारी को मनाया जाता है, और उसे काम पीडा का सुख दिखाया जाता है । जिसमे सरोवर की जलक्रीडा से शरीर सीचा गया है, जिसमे यन्त्रो से छोडा गया केशर मिश्रित पानी है, जिसमे प्रणयिनी स्त्रियो के सूक्ष्म कटिवस्त्र गीले हो गये हैं, जो दिखाई देनेवाले अवयवो से वढे हुए वृक्षो वाला है, जो कुवलय मालाओ के मारे जाने की क्रीडा से युक्त है, जो खिले हुए पलाशो के वृक्षो से जल रहा है, जिसमे पति-पत्नी अपनी इच्छाओ को मना रहे है, ऐसा वसन्त वढने लगता है ।

---

11 A °कोकिलु ।

(15) 1 A गधकुडवय° । 2 AP णेउर° । 3 A सुप्पय° । 4. P °खुरुप्प । 5. A णिम्मिय°, P तिम्मिय° । 6. P °वयवसुवुड्ढरसिल्लो । 7 A ललिओ । 8 A °दुमेहि ण जलिओ, P °दुमेहि ण जलियउ । 9. A इच्छिय°, P इच्छए ।

घत्ता—ता दसरहपयपकय णविवि विहसिवि रामें वुच्चइ ॥
संताणकमागय तुह णयरि वाणारसि किं मुच्चइ ॥15॥

16

णासिज्जइ किं सो कासिदेसु सुणि ताय रायसत्थोवएसु ।
गुरुगय णियगय णिव दुविह बुद्धि बुद्धीइ पचविह मतसिद्धि ।
दीसति जाइ सछिद्दवेरि सा मतसत्ति साहति सूरि ।
विहुरे वि हु अणिहालियदिसेण उच्छाहसत्ति पुणु पोरिसेण ।
पहुसत्ति कोसदडेहि[1] देव एयइ विणु महियलु वहइ केव ।
जाणेवा[2] अवर अलद्धलाह चत्तारि उवाय धरत्तिणाह[3] ।
वोल्लिज्जइ पहिलारउ जि सामु पियवयणु जीवजणियाहिरामु ।
बीयउ पुणु सीकिज्जति किच्च संमाणिवि वइरिविरत्त भिच्च ।

घत्ता—ते थद्ध लुद्ध अवमाणणिहि भीरु कहति विवक्खहु ॥
णियरायहु केरउ दुच्चरिउ वियलियपह[4] परिरक्खहु ॥16॥

17

उवदाणु वि हरि करि हेम[1] रयणु दिज्जइ जइ लब्भइ को वि सयणु ।
अवयारु देसपुरगामडहणु सो दडु भणति वरारिमहणु ।

घत्ता—तो दशरथ के चरण-कमलो को नमस्कार कर राम ने कहा—आपके द्वारा कुल परम्परा से प्राप्त नगरी क्यो छोडी जाती है ?

(16)

उस काशी देश को क्यो छोड़ा जाय ? हे आदरणीय, राजनीति-शास्त्र का उपदेश सुनिए। हे राजन्, बुद्धि दो प्रकार की होती है, एक गुरु की और दूसरी स्वय की। बुद्धि से पाच प्रकार के मन्त्रो की सिद्धि होती है। जिस बुद्धि से बैरी छिद्रपूर्ण दिखाई देता है, विद्वान् उसकी साधना करते है। सकट के समय भी किकर्त्तव्यमूढता से रहित पौरुष के द्वारा उत्साह शक्ति सिद्ध होती है। हे देव, कोष और दड से प्रभु की शक्ति सिद्ध होती है, इसके बिना धरतीतल की रक्षा कैसे की जा सकती है ? और भी, हे पृथ्वी के स्वामी, जिनसे लाभ प्राप्त नही किया गया है, ऐसे चार उपायो को जानना चाहिए। पहला उपाय साम कहा जाता है, प्रिय वचनवाला जो जीवो के लिए अत्यन्त सुन्दर लगता है। दूसरे भेद उपाय को स्वीकार करना चाहिए। इसके द्वारा शत्रुओ से विरक्त लोगो का सम्मान करके उसका भेदन करना चाहिए।

घत्ता—ये लोभी और जड होते है, अपमान ही इनकी निधि है। ये डरपोक होते है, ये रक्षा करनेवाले अपने राजा और विपक्ष का दुश्चरित बता देते है।

(17)

हाथी, अश्व, स्वर्ण, रत्न का दान करना चाहिए। यदि कोई स्वजन मिल जाता है, तो अवश्य देना चाहिए। और देश, पुर, ग्राम को जलानेवाला अपकार भी करना चाहिए, उसे श्रेष्ठ

---

(16) 1 A कोसु दडेहिं। 2 A जाणेव्वा, P जाणेव। 3. AP धरित्तिणाह। 4 A वियडिय°।
(17) 1. AP हेमु।

जिप्पंति हरिस मय कोह काम रिउ माण लोह दुक्कम्मधाम।
जउ वक्खाणिउ इंदियजएण संधि वि मित्तत्तणसंगएण।
सावहि णिरवहि इच्छंति के वि पट्टणइ वत्थु वाहणइ लेवि[5]।
विग्गहु विरइज्जइ दोसदुट्ठु दोसेण होइ बंधु वि अणिट्ठु।
आसणु गुरु कहइ असक्ककालि अवरोहि विउलि रणतरालि।
जाणु वि सलाहु परिवारपोसि किज्जइ वज्जियदुंदुहिणिघोसि।
जा किर विग्गहसंधाणवित्ति तं दोहीअरणु[2] ण का वि भंति।
जहिं ण वहइ णियकरहत्थियारु असरणि रिउसेव वि किं ण चारु।
णरवइ अमच्चु जणठाणु दंडु धणु दुग्गु[3] मित्तु संगामचंडु।
सत्त वि पयईउ हवंति जेण उज्जउ णउ मुच्चइ ताय तेण।

घत्ता—तं णिसुणिवि जणसंतावहर ताए चावविहूसिय ॥
णं जलहर[4] बे वि धवल कसण सुय वाणारसि पेसिय ॥17॥

18

णियतायपसायपसण्णभाव सविणय पणमंत[1] विमुक्कगाव।
देहच्छविदूसियरवियरोह[2] जुवरायत्तणसिरिलद्धसोह।

शत्रुओ का नाश करनेवाला दड कहते हैं। हर्ष, मद, क्रोध और काम रूपी और दुष्कर्मो के आश्रय लोभ और मान रूपी अन्तरग शत्रुओ को जीतना चाहिए। इन्द्रियो की विजय से जीत का वखान किया जाता है, और मित्रत्व की सगति के साथ सधि भी करनी चाहिए। कितने ही लोग अवधि पूर्वक या विना अवधि के नगर वस्तु और वाहन लेकर सधि की इच्छा करते हैं। दोषो से सहित दुष्ट के साथ विग्रह करना चाहिए क्योकि दोष के कारण बन्धु भी अनिष्ट होता है। गुरु असभव काल मे दुर्गाश्रय की बात कहते हैं, और विशाल परिवार का पोषण करनेवाले बजते हुए नगाडो के घोष के साथ गमन करना ही सराहनीय है, तथा जो युद्ध और सधि की सधान वृत्ति है, उसे द्वैधीकरण कहा जाता है, इसमे जरा भी भ्रान्ति नही और यदि अपने हाथ मे हथियार नही रहता है, तो अशरण की उस अवस्था मे शत्रु की सेवा करना क्या अच्छा नही है ? राजा, अमात्य, जनस्थान, दड, धन, दुर्ग और सग्राम मे प्रचड मित्र—ये सात प्रकृत्तियाँ होती हैं। हे पिता, उससे उद्यम नष्ट नही होता।

घत्ता—यह सुनकर लोगो के सताप को दूर करने वाले पिता दशरथ ने धनुष से शोभित दोनो पुत्रो को वाराणसी भेज दिया। मानो वे दोनो काले और सफेद मेघ हो।

(18)

अपने पिता के प्रसाद से प्रसन्न, गर्वरहित वे दोनों प्रणाम करते है, जिन्होने अपने शरीर की काति से सूर्य के किरणसमूह को दूषित कर दिया है, और जो युवराज की लक्ष्मी से शोभा

2 A दोहीकरणु, P दोहीअरणु। 3 A दुग्ग मित्त। 4 जलहर धवल बे वि कसण।
(18) 1 A पणवंत, P णयवंत, K records a p : णयवंत। 2. A °भूसिय°

मणिमउडसुपट्टालिंगियंग[3] ण सुरमहिहर उत्त गसिग[4]।
सेविज्जमाण णरखेयरेहिं विज्जिज्जमाण चलचामरेहिं।
जोइज्जमाण जणवयजणेहिं पेल्लिज्जमाण कामिणिथणेहिं।
अलिकसणपीयणिवसणणिउत्त सुदर सुवलाकेक्कयहिं पुत्त।
दियहेहिं वधु ते जत जत रमणीयपएसहिं[5] थत थत।
पहचोइय गय सुहजणणपत्त वाणारसि[6] विण्णि वि वीर[7] पत्त।
धयमालातोरणमगलेहि दहिदोवहिं[8] सियकलसुप्पलेहिं।
णाणाणायरियहिं दीसमाण पइसति[9] णयरि ण कामवाण॥

घत्ता—जणु वोल्लइ दसरहजेट्ठसुउ इहु ससहोयरु[10] आवइ॥
कचीकलाव गुप्पतु[11] पहि पुरणारीयणु[12] धावइ॥18॥

19

क वि मेल्लइ कोंतलफुल्लदामु णीससइ का वि जोयति रामु।
काइ वि थणजुयलउ विहलु गणिउ[1] हा[2] एउ ण लक्खणणहहिं वणिउ।
क वि दावइ ककणु का वि हारु क वि ऊरुयलु[3] क वि मुहविंवयारु।
पयलतउ[4] क वि परिहाणु धरइ क वि कट्ठदिट्ठि जोयति मरइ।

को प्राप्त हैं, जिनके दिव्य शरीर मनि-मुक्ताओ की पदावली से आलिंगित है, जो मानो ऊँचे शिखरो वाले सुमेरू पर्वत के समान है, ऐसे वे मनुष्य और विद्याधरो द्वारा सेवित चंचल चामरो से हवा किये जाते हुए, जनपद लोगो के द्वारा देखे जाते हुए कामिनिजनो के द्वारा प्रेरित किए जाते हुए जो भ्रमर के समान काले और पीले कपड़े पहने हुए थे—ऐसे सुवला और कैकयी के पुत्र अत्यन्त सुन्दर थे। इस प्रकार दिन-दिन जागते हुए रमणीक प्रदेशो मे विश्राम करते हुए वे पूज्य पिता के द्वारा दिये गये वाहनो वाले तथा पथ पर हाथियो को प्रेरित करते हुए वे दोनो वीर वाराणसी नगरी पहुँचे। ध्वजमालाओ, तोरणो, मगलो, दधि और दूर्वाओ और श्वेत कलश पर रखे गए कमलो के साथ अनेक नागरिकाओ द्वारा देखे गए वे दोनो नगरी मे ऐसे प्रविष्ट हुए जैसे कामवाण हो।

घत्ता—लोगो ने कहा—यह दशरथ के सबसे बड़े बेटे है, जो अपने भाई के साथ आए है, तब अपनी करधनियो को छोडती हुई, पुर की स्त्रियाँ पथ पर दौड़ने लगती।

(19)

कोई अपनी चोटी से फूलो की माला छोड देती है, कोई राम को देखती हुई नि श्वास लेने लगती है। किसी ने अपने स्तनस्थल को फलहीन समझा और कहा कि इनको लक्ष्मण के नखों ने घायल नही किया। कोई कगन दिखाती है, कोई हार। कोई उरुतल दिखाती तो कोई मुखविंवाधर कोई अपनी खिसकती हुई धोती धारण नही कर पाती। कोई कष्ट दृष्टि से देखती हुई मर रही

---

3 P सुप्पहा°। 4. AP उत्तु ग°। 5 P रवणीय°। 6 P वाराणसि। 7. P धीर। 8. A दहिदूवहिं। 9 A पयसति। 10 A एहु सहोयरु 11 A गुप्पति पहे। 12. AP पुरे णारी°।

(19) 1 A मुणिउ। 2 A हो। 3 AP उरयलु। 4 A पयलतु का वि।

क वि सिंचइ पेम्मजलेण भूमि क वि चिंतइ एवहिं घरु ण जामि।
जइ इच्छइ कह व धरित्तिसामि तो जियमि माइ सच्चउं भणामि।
दारें भत्तारु ण जाहुं देइ पायारु किं पि अंतरु करेइ।
मणि[5] का वि विसूरइ चंदवयण तलहत्थि[6] ण जाया मज्झु णयण।
णं तो जोयमि उब्भिवि करग्ग गच्छंतु[7] सुहय सुहसारमग्ग।
कर मउलिवि सण्णइ का वि पोमु आवेसमि जावहिं सुवइ पोमु।
क वि णेउरु पहि णिवडिउ ण वेइ क वि भिक्खाचारिहि भिक्ख देइ।
जोयंति रायसुयजुयलतोंडु अण्णेत्तहिं[8] घल्लइ कूरपिंडु।

घत्ता—क वि विहसिवि बोल्लइ चंदमुहि सीयइ काइं वउत्थउं॥
जेणेहउ लद्धउ [9]पइरयणु दरिसियकामावत्थउ ॥19॥

20

अण्णेक्कइ वुत्तउ जाहि माइ लग्गेज्जसु णाहहु तणइ पाइ।
वयणें बहुणेहपवत्तणेण हरि आणहि महु दूयत्तणेण।
जइ एहु ण इच्छइ विउलरमणि तो मारइ मारु मरालगमणि।
इय पुररमणीयणजूरणेण सज्जणह मणोरहपूरणेण।

है। कोई प्रेमजल से धरती को सिंचित करती है। कोई सोचती है कि मैं अब घर नही जाऊँगी, और कहती है कि हे माँ, धरती के स्वामी यह यदि किसी प्रकार मुझे चाहते है तभी मैं जीवित रह सकती हूँ। सच कहती हूँ, पति किसी महिला को जाने नही देता और परकोटे पर कोई आड कर देता है। कोई चन्द्रमुखी भी अपने मन मे अफसोस करती है कि हथेली मे मेरे नेत्र क्यो नही है, नही तो दो हाथ ऊँचे करके मैं देख लेती। शुभ श्रेष्ठ मार्ग मे जाते हुए उन दोनो सुभगो को हाथ ऊँचे करके देख लेती है। कोई अपने हाथ को बन्द कर राम से सकेत करती है कि जब कमल मुकुलित हो जायेंगे, तब मैं आऊँगी। कोई पथ पर गिरे हुए अपने नूपुरो को नही जान पाती। कोई भिक्षा मागने वाले को भिक्षा देती है, लेकिन उन दोनो राजपुत्रो के मुखो को देखती हुई भात का समूह दूसरी जगह डाल देती है।

घत्ता—कोई चन्द्रमुखी हँस कर कहती है कि सीतादेवी ने ऐसा कौन-सा व्रत किया है कि जिससे उन्होने कामदेव की अवस्था को प्रकट करने वाला पति-रत्न प्राप्त किया।

(20)

एक और ने कहा—हे माँ, तुम जाओ और स्वामी के पैरो से लगो। अत्यन्त स्नेह से भरपूर वचनो के द्वारा राम को यहाँ ले आओ। यदि यह इस विशाल रमणी को नही चाहता तो उस हस की चाल वाली को कामदेव मार डालेगा। इस प्रकार नगर की स्त्रियो को पीडा उत्पन्न करते हुए तथा सज्जनो के मनोरथो को पूरा करने वाले ये दोनो भाई, दधि, अक्षत और निर्माल्य को

5 A मणि स विसूरइ क वि चंद°, P मणि सुविसूरइ क वि चंद°। 6. AP हलि हत्थि ण। 7. A गच्छत, P गच्छति। 8 AP अण्णहिं सा घल्लइ। 9 AP पयरयणु।

दहिअक्खयलवहुसेसाउ[1] लेवि रायालइ भाइ पइट्ठ बे वि।
पियवयणें कि वि कि वि पाहुडेण कि वि दुव्वयणेण रणुब्भडेण।
कि वि सुहिसबधपयासणेण कि वि वसिकय वित्तिविहूसणेण।
कि वि णेहें कि वि भुयबलिण घित्त वणवाल[2] चड मडलिय जित्त।

घत्ता—मयरहरहु मलु दूसणु जिणहु अमयहु विसु कि सीसइ॥
गुणवंतहं दसरहतणुरुहहं दुज्जणु को वि ण दीसइ॥20॥

21

अच्छंति बे वि ते तेत्थु जाव एत्तहि लकहि दहवयणु ताव।
वरकणयवीढसणिहियपाउ[1] सीहासणग्गि रायाहिराउ।
अत्थाणि णिसण्णउ सामदेहु अवइण्णु महिहि ण काममेहु।
करचालियाइ चमरइ पडति[2] कप्पूरपउरधूलिउ घुलति।
पाढय पढति तहि णड णडंति वाइत्तताल तेत्थु जि घडति[3]।
गिज्जंति गेय सरठाणलग्ग णच्चति असेस वि देसिमग्ग[4]।
पडिहारहि अणिवद्धउ चवंतु णियमिज्जइ लोउ वियारवतु।
विण्णप्पइ भण्णइ[5] जीय देव अमर वि करति कमकमलसेव।

ग्रहण कर राजदरबार मे प्रविष्ट हुए। कुछ को प्रिय वचनो से, कुछ को उपहारों से, कुछ को रण से, कुछ को उत्कट दुर्वचनो से, कुछ-कुछ को अच्छे सबधों के प्रकाशन से, कुछ को वृत्तियो के भूषण से, इस प्रकार उन्होने लोगो को वश में किया। कुछ को स्नेह से, कुछ को बाहुबल से पराजित किया। इस प्रकार उन्होने वनपाल और प्रचड माडलिक राजाओ को जीत लिया।

घत्ता—समुद्र मे मल, जिन भगवान् मे दूषण और अमृत में विष नही होता। इसी प्रकार गुणवान दशरथपुत्रो को कोई भी व्यक्ति दुर्जन दिखाई नही दिया।

(21)

जब वे दोनो इस प्रकार वहाँ रह रहे थे। तब यहाँ लका नगरी मे, जिसने सुन्दर स्वर्ण पीठ पर अपना पैर रखा है, ऐसा राजाधिराज रावण सिंहासन के अग्रभाग पर बैठा था। श्याम शरीर सिंहासन पर बैठा हुआ वह ऐसा मालूम हो रहा था, मानो धरती पर काम मेघ उत्पन्न हुआ हो। हाथो से चलाये गए चमर उस पर गिरते थे। कपूर से प्रचुर धूल उस पर गिरती थी। पाठक चारण पढते, नट नाचते, वाद्यो का ताल भी वहाँ रचा जा रहा था, स्वर और ताल से युक्त गीत गाये जा रहे थे, और सब लोग देशी ढर्रे से नाच रहे थे, प्रतिहारियो के द्वारा अट-शट बोल कर, विकार युक्त लोग नियन्त्रित किए जा रहे थे। यह निवेदन और कथन किया जा रहा था—हे देव, आप जीवित रहे। देवगण भी आपके चरण-कमलो की सेवा करते है।

(20) 1 AP सिद्धत्थक्खयसेसाउ। 2 A वलवाल।
(21) 1 AP णवकणय° 2 AP चलति। 3 A घुलति। 4, A देसमग्ग। 5, P जणवइ।

घत्ता—दसकंधरु दुद्धरु धरियधरु[6] तेयविहूसियदिसवहु ॥
जहिं अच्छइ भरहधरत्तिवइ[7] पुप्फयतसंकावहु ॥21॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयतविरइए महाकव्वे सीयाविवाहकल्लाणं णाम
सत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो[8] ॥ 70 ॥

घत्ता—तेज से दिशापथो को विभूषित करनेवाला धरती को धारण करनेवाला रावण जहाँ था, वही सूर्य और चन्द्रमा के भय को उत्पन्न करनेवाले भारत मे धरती के अधिपति राम भी थे।

त्रेसठ महापुरुषो के गुणालकारो से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित एव महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का सीता-विवाह-
कल्याण नाम का सत्तरवा परिच्छेद समाप्त हुआ।

6 A धीरयकरु। 7. AP °धरित्तिवइ।

एकहत्तरिमो संधि

णरसिरकरखंडणु[1] कहि त भंडणु एम भणतु जि सचरइ ॥
तहिं विप्पियगारउ आयउ[2] णारउ अत्थाणंतरि पइसरइ ॥ ध्रुवक ॥ छ ॥

1

उद्धावद्धपिंगजडमंडलु[3] पोमरायरयणमयकमंडलु ।
तारतुसारहारपंडुरतणु[4] णं ससहरु णावइ सारयघणु ।
विमलफलिहमणिवलयालंकिउ णं जसु[5] पुरिसरूवु विहिणा किउ ।
दीसइ एतउ[6] रायहु केरउ[7] रणकायरभडभयइ जणेरउं ।
कडियलणिहियहेममयमेहलु हसणु भसणु सवसणु[8] सकलुसु खलु ।
सोत्तरीयउववीयउरुज्जलु[9] हिंडणसीलु समीहियकलयलु ।
कयदेवगवत्थकोवीणउ जुज्झु अपेच्छमाणु णिरु झीणउ ।
दिट्ठउ रावणेण[10] पडिवत्तिइ वइसारिउ आसणि गुरुभत्तिइ ।

इकहत्तरवी संधि

वह लडाई कहाँ है कि जिसमे मनुष्यो के सिर, हाथो का खडन होता है, इस प्रकार कहता हुआ जो विचरता रहता है, ऐसा लोगो का अप्रिय करने वाला नारद वहाँ आता है, और दरबार के भीतर प्रवेश करता है।

(1)

जिसने अपने पीले जटा समूह को ऊपर बाँध रखा है, जिसका कमडलु पद्मराज मणियो से वना है, जिसका शरीर स्वच्छ हिमकण के हार के समान सफेद है, मानो-चन्द्रमा हो या शारदीय मेघ। स्वच्छ स्फटिक मणि के वलय से अकित वह, ऐसा मालूम होता है, मानो उसके पुरुष रूप की विधाता ने स्वयं रचना की है, आता हुआ वह ऐसा दिखाई देता है कि जैसे राजा के रण में कायर यौद्धाओं के लिए भय उत्पन्न करने वाला हो। उसके कटितल मे स्वर्णमेखला थी। जो वहुत हँसता वोलता, ईर्ष्या से युक्त और युद्ध मे आसक्ति रखनेवाला था। उत्तरीय को पहने हुए उसका वक्षस्थल उज्जवल था। घूमते हुए, और युद्ध की इच्छा रखते हुए, उसकी कौपीन वस्त्रों की वनी हुई थी। जो युद्ध न होने से अत्यन्त क्षीण हो गया था। रावण ने उसे देखा और

(1) 1. 1 AP णरकरसिर° । 2. A वोल्लइ णारउ, P आइउ णारउ। 3 P उद्धावद्धु पिंगु जडमडलु। 4. P पडर° । 5. A जसरूउ पुरिस विहिणा । 6. A एतहो, P एत्तउ। 7. P केइउ। 8 AP वसणु। 9 A° उरज्जलु। 10 A रामणेण।

पुच्छिउ पहुणा परमणसूलउ   कहहि वत्त को महु पडिकूलउ ।
तं णिसुणिवि संगामपियारउ   आहासइ दहगीवहु णारउ ।

घत्ता—सुरगिरिसिरि णिवसइ महिहि ण विलसइ संचइ धणयहु तणउ धणु ॥
णिसि णिद्द ण पावइ सयमहु भावइ णावइ तुज्झु जि भीयमणु ॥ 1 ॥

2

सिहि ण करइ तुहारउं भाणसु   इहु वइवसु वइरिहिं तुहुं वइवसु ।
णेरिउ णेरियदिस[1] ता रुंभइ   जाव ण तुज्झु पयाउ वियंभइ ।
रयणायरु ज गज्जइ त जडु   तुहु जि एक्कु तइलोक्कि महाभडु ।
वाउ वाइ किर तुह णीसासें   वज्झइ फणिवइ तुह फणिपासें ।
चदु सूरु किर[2] तुह घरदीवउ   सीहु वराउ वसउ वणि सावउ ।
ससुरु सणरु खगु जगु तुह बीहइ   पर पइ जिणिवि एक्कु जसु ईहइ ।
दसरहतणउ मुसलहलपहरणु   दूरमुक्कपररमणीपरहणु ।
परबलपबलसलिलवडवामुहु   जासु भाइ रणरसवियसियमुहु ।
लक्खणु मुहडलक्खविक्खेवणु   अण्णु वि जासु पवरपीणत्थणु[3] ।
जणएं कण्णारयणु विइण्णउं   तासु[4] रूवि थिउ विहिणेउण्णउ ।

स्वागत किया। गुरु-भक्ति के साथ आसन पर बैठाया। राजा ने दूसरो के मन के लिए शूल के समान उससे पूछा—येह बात बताइए कि कौन मेरे प्रतिकूल है ? यह सुनकर जिसे सग्राम प्यारा हैं, ऐसा नारद रावण से कहता है—

घत्ता—यद्यपि इन्द्र सुमेरु पर्वत के शिखर पर रहता है, वह धरती पर शोभित नही होता। वह कुवेर का धन सचित करता है, फिर भी रात को उसे नीद नही आती। ऐसा मालूम होता हैं जैसे तुमसे भीत मन उसे अच्छा नही लगता।

(2)

आग तुम्हारे यहां मानो रसोइये का काम करती है। यम दग्ध हो जाए, तुम शत्रुओ के लिए यम हो, नैऋत्य नैऋत्य दिशा को रोकता है तब तक कि जब तक तुम्हारा प्रताप नही फैलता। समुद्र जो गरजता हैं वह मूर्ख है, क्यो कि तीनो लोको मे एक तुम्ही महासुभट हो। तुम्हारे निश्वास से हवा चलती है। तुम्हारे नागपाश में नागराज बंध जाते हैं। सूर्य और चन्द्रमा तुम्हारे घर के दीपक हैं। सिंह बेचारा वन मे निवास करता है और श्वापद भी। देवताओं और मनुष्यो सहित खग और जग तुमसे डरता है, लेकिन एक आदमी ऐसा है कि जो तुम्हे जीतने की इच्छा रखता है। दशरथ का बेटा, हाथ मे मूसल का हथियार रखनेवाला, पररमणी का परिहार करनेवाला (राम) और जिसका भाई शत्रु सेना के प्रबल पानी में वडवाग्नि के समान है, और जिसका मुख वीर रस से विकसित हैं ऐसा लक्ष्मण लाखो योद्धाओ को क्षुब्ध करने वाला है, और भी जिसे राजा जनक ने अपनी विशाल पीन स्तनो वाली वाला प्रदान की हैं, जिसके रूप में विधाता का नैपुण्य स्थित है।

---

(2) 1 AP णेरियदेसि। 2 AP किह। 3 AP पीणपीवरथणु। 4. AP ताहि।

घत्ता—सा तुज्झु जि जोग्गी लयललियंगी हिप्पइ मड्डइ[5] किंकरहं ॥
सुरसरि झसमुद्दहु होइ समुद्दहु णउ जम्मि वि पक्कयसरहं ॥2॥

3

विप्फुरियाणणु ण पचाणणु तं णिसुणिवि पडिलवइ दसाणणु ।
धीर विमुक्ककेर करिकरभुय खल बलपबल[1] चवल दसरहसुय ।
रामसाम गयसाम सहोयर मारमि सुहड तुमुलि भूगोयर ।
हरमि घरिणि गुणमणिसचयखणि अहिणवहरिणणयण मयणावणि ।
पभणइ णारयरिसि कि गावे रावण[2] विहले वीरपलावे ।
सरह सीह को वणि सघारइ काल कयंत बे वि को मारइ ।
चद सूर को खलइ णहगणि हरि बल को णिहणइ समरगणि ।
केसरिकेसछडा[3] को[4] छिप्पइ जाणइ केण णराहिव हिप्पइ[5] ।
चवइ राउ विरइयअवराहहं बालहं वाणारसिपुरिणाहहं[6] ।
सिरकमलइं खडेसमि जइयहुं तुहु वि तेत्थु आवेसहि तइयहुं ।

घत्ता—तेलोक्कभयकरु[7] वइरिखयंकरु धणुगुणटकारु जि झुणइ ॥
खेयरउरदारणि महु सरधोरणि रणि रामहु वम्मइ लुणइ ॥3॥

घत्ता—वह स्त्री लता के समान सुन्दरता अग वाली तुम्हारे योग्य है। अपने चातुर्य से उसे बलपूर्वक किंकरो से छीन लीजिए। क्यो कि गगा नदी मछलियो से भरे समुद्र की होती है, वह जन्म भर तलावो की नही होती।

(3)

जिसका मुख चमक रहा है, ऐसे शेर के समान वह रावण यह सुनकर बोला—मैं धीर, मर्यादा से हीन हाथी के सूड के समान भुजाओ वाले दुष्ट बलवान, चचल दशरथ के बेटे राम और श्यामल लक्ष्मण को, जो हाथी के समान श्याम है, ऐसे सुभटो को तुमुल-युद्ध मे मारूँगा और मैं गुणो और मणियो के सचय की खान अभिनव हरिणियो के समान नेत्र वाली कामदेव की भूमि, उसका अपहरण करूँगा। नारद मुनि कहते हैं—हे रावण, गर्व से विह्वल प्रलाप से क्या ? क्यो कि वन मे श्वापद और सिंह का श्रृ गार कौन कर सकता है ? काल और कृतान्त को कौन मार सकता है ? सूर्य और चन्द्र को आकाश के प्रांगण से कौन स्खलित कर सकता है ? युद्ध के प्रांगण मे राम और लक्ष्मण को कौन छू सकता है ? हे राजन्, जानकी का कौन अपहरण कर सकता है ? तब राजा कहता है—अपराध करनेवाले वाराणसी नगरी के राजा उन दोनो बालको के सिर-कमलो को जब मैं काटूँगा, हे मुनि तब आप वहाँ आना।

घत्ता—फिर तीनो लोको मे भयकर शत्रुओ का नाश करनेवाला रावण धनुष की टकार करता है। और कहता है—विद्याधरो के वक्षस्थलो को चीरने वाली मेरी बाणो की परम्परा युद्ध मे राम के कवच को छिन्न-भिन्न करेगी।

---

5 AP मडइ। 6. P ससमुद्दहु।

(3) 1 AP रणपवल। 2. P रामण। 3. A °केसरसढ, P °केसरसढ। 4. AP किं। 5. AP घिप्पइ। 6 AP वाराणसि°। 7. A तइलोक°।

4

ता परियाणवि कलहहु कारणु　　अवसे होसइ एत्थु महारणु ।
गउ णारउ णियमणि सतुट्ठउ　　वीसपाणि मतणइ पइट्ठउ[2] ।
दुट्ठु अणिट्ठु वि सिट्ठु ण[3] सिट्ठउ　　मतिउ[4] मतु सबुद्धिइ दिट्ठउ ।
तणुलायण्णवण्णजलवाहिणि　　हिप्पइ रहुकुलणाहहु गेहिणि ।
मारिज्जति भाइ ते भीसण　　भणु मारीयय भणइ विहीसण ।
त णिसुणिवि मारीए वुत्तउं　　परवहुरमणु णरिंद अजुत्तउ ।
परवहुरमणु धम्मणिल्लूरणु　　परवहुरमणु सयणसयजूरणु ।
परवहुरमणु कित्तिविद्धसणु　　परवहुरमणु विमलकुलदूसणु ।
परवहुरमणु पराहवगारउ　　परवहुरमणु णरयपइसारउ ।

घत्ता—परयारु सुविट्टलु दुक्खह पोट्टलु दुग्गमु दुज्जसपरियरु ।।
बहुभवसंसारणु सिवगइवारणु पावासवविहिवासघरु ।।4।।

5

दुत्तरमोहमहण्णवि छूढउ　　परवहुरमणु करइ जो मूढउ ।
तुहु पइ[1] बहुसत्थत्थवियाणउ　　अण्णु वि सयलहि पुहइहि राणउ ।

(4)

तब इस कलह के कारण को जानकर कि अब अवश्य ही महायुद्ध होगा, नारद अपने मन मे सतुष्ट होकर चला गया और रावण भी परामर्श के लिए महल मे प्रविष्ट हुआ। उसने यह दुष्ट अनिष्ट बात विद्वान् मत्री से नही कही, अपनी बुद्धि से ही इस बात का विचार किया कि शरीर के सौन्दर्य और वर्ण की नदी रघुकुलनाथ की गृहणी का हरण किया जाए, उन भयकर भाइयो को मार दिया जाए। यह मारीच से कहो। तब विभीषण कहता है। यह सुनकर मारीच बोला, हे राजन्, परवधू से रमण करना अनुचित है, परवधू का रमण धर्म का नाश करने वाला होता है, परवधू का रमण आत्मीय जनो को सताप पहुँचाने वाला होता है। परवधू का रमण कीर्ति का नाश करने वाला होता है। परवधू का रमण पवित्र कुल को दोष लगाने वाला है। परवधू का रमण दूसरो का अपकार करने वाला है, परवधू का रमण नरक मे प्रवेश कराने वाला है।

घत्ता—परस्त्री अत्यन्त नीच दु ख की पोटली होती है। दुर्गम और खोटे यश की समूह है, अनेक लोको मे घुमानेवाली एवं मोक्ष गति का निवारण करनेवाली और पापाश्रय विधि का वास-घर होती है।

(5)

जो मूर्ख व्यक्ति परवधू से रमण करता है, वह नही तरने योग्य मोह रूपी महासमुद्र में जा गिरता है। तुम अनेक शास्त्रार्थों को जानने वाले हो, और फिर सकल धरती के राजा हो। जो

(4) 1 A परितुट्ठउ । 2. AP वइट्ठउ । 3. AP वसिट्ठउ । 4. AP मनिए ।
(5) 1 AP सइ ।

जो पडिकूलु होइ सो हम्मइ परवहु पुणु सिविणि वि ण रम्मइ ।
भणइ दसाणणु जणसामण्णहं[2] जणएं जाणिवि दिण्णी अण्णहुं ।
थीयणसारी णयणपियारी चपयगोरी हियविवियारी[3] ।
सेलसिहरसचालणचडहिं सा[4] अवरुंडमि जइ भुयदडहिं ।
तो सकयत्थु महारउं जीविउ तो मइ णरभवफलु सप्राविउ[5] ।
जइ तहि त मुहकमलु ण चुंबमि तो अप्पाणउ काइ विडवमि ।
कम्मणिबधणेण णिक्कज्जें[6] किं महुं महियलेण किं रज्जें ।

घत्ता—हरिणच्छिहि वत्तइ सुइसुहमेत्तइ[7] उप्पाइउ मणि कलमलउ ।। 1
रइकायरु कपइ पुणु पुणु जपइ दहमुहु विरहविसठुलउ ।। 5 ।।

6

बुज्झिवि अतरगु दहगीवहु वाय विणिग्गय मुहि मारीयहु ।
कामबाणसताणहि भग्गउ जइ तुहुं महिवइ सीयहि लग्गउ ।
तो वि मयणु मग्गे माणेवउ[1] रत्तविरत्तचित्तु जाणेवउ[2] ।
त जाणिज्जइ विविहपयारे विडगुरुभासिएण सुयसारें ।
असयदेसिजाइपरइत्थहु[3] इगियसत्तभावरसगुत्थहु[4] ।

तुम्हारे प्रतिकूल है, उसे तुम्हे मारना चाहिए । लेकिन परवधू का रमण तुम्हें स्वप्न मे भी नहीं करना चाहिए। तव दशानन कहता है—जनक ने जान-बूझकर (मुझे छोड़कर) किसी अन्य जन-सामान्य को जानकी दे दी है । स्त्रीजन मे श्रेष्ठ नेत्रो के लिए प्यारी, चपक के समान गोरी, हृदय को चूर कर देने वाली ऐसी उसका, मै (रावण) पर्वत शिखरों के सचालन से प्रचड अपने भुजदडो के द्वारा यदि उसका आलिगन करता हूँ तो मनुष्य जीवन पाने का फल पा लेता हूँ । इसलिए यदि उसका मुखकमल मैं नही चूमता तो मैं अपने को विडम्बित क्यो करता हूँ ? बेकार क. (निष्प्रयोजन) से क्या ? मेरे राज्य से क्या और धरती से क्या ?

घत्ता—कानो के लिए सुख की मात्रा के समान उस मृगनयनी के वार्तामात्र से मेरे मन मे हलचल मच गई है। रति मे कायर रावण विरह से अस्त-व्यस्त होकर कांप उठता है, और वार-वार कहता है ।

(6)

तव रावण का मन जानकर मारीच के मुँह से यह वात निकली—काम के वाणो की परम्परा से नष्ट हुए हे राजन्, यदि तुम सीता से लग गए हो तव भी तुम्हे कामदेव के मार्ग से उसे मानना चाहिए । रागी विरागी चित को जानना चाहिए । तथा काव्य-शास्त्र मे कामाचार्य द्वारा कहे गए विविध प्रकार के इगितो, सात भावो और रसो से परिपूर्ण हसादि देसी तथा जाति भेदो वाले स्त्रीसमूह मे कामिनी को जानना चाहिए । इस प्रकार जो धरती पर कामिनियो को जानता

---

2. A °सावण्णह 3 AP हिययपियारी । 4. AP omit सा, A अवरुडिवि । 5 AP सपाविउ । 6 A णियकज्जें । 7. A सुयसुह° ।

(6) 1. AP माणिव्वउ । 2 P जाणेव्वउ । 3 A °जाईपयओ, P °जाइपयइत्थउ । 4. A °रस-गुइपउ ।

कामिणीउ जो महियलि जाणइ सो लंकाहिव रइसुहुं माणइ।
भद्द मद लय हंसि चउत्थी चउविह महिलाजाइ पसत्थी।
भद्द भणमि सव्वगसुरूविणि[5] मद[6] थूलगुरुपेढालत्थणि[7]।
लय दीहरतणु लय जिह पत्तल खुज्जी णारि मरालि समासल।
रिसिविज्जाहरजक्खपिसायह अंस होंति रमणीसंघायह।
तावसि उज्जुय भुभुलभोली[8] खेयरि मइराकुसुमरसाली।
जक्खिणि धणकणलोहपरव्वस अडण पिसल्ली भणिय सतामस।

घत्ता—सारसि मिगि रिट्ठिणि ससि धयरट्ठिणि[9] महिसि खरी मयरि वि जुवइ॥
सत्ते दीसते[10] रइसइकते वसुविह कहिय णिसुणि णिवइ॥ 6॥

7

वच्छत्थलु थणकलसहिं पेल्लइ सारसि पिययमसंगु ण मेल्लइ।
मिगि[1] णियबंधवदाणे मण्णइ तज्जिय तसइ गेउ आयण्णइ।
पुत्तहडदुक्खिणि वायसरव रिंणि ठाणु मुयइ रणभइरव।
ससि णिम्मीलियच्छि दुहभायण णिग्घिण परहरगासालोयण।
धयरट्ठिणि सररुहसरकीलिणि महिसि कराल रोसरसवालिणि।

है, हे लकाराज, वह रति सुख को मानता है। भद्रा, मदा, लता और चौथी हसा यह चार प्रकार की महिलाजाति प्रशस्त मानी गई है। भद्रा को मैं कहता हूँ कि वह सर्वांग सुन्दर होती है, जबकि मदा अत्यन्त मोटी और भारी चौडे स्तनो वाली होती है। लता लंबे शरीरवाली एव लता के समान पतली होती है। हसा नारी कुबडी और थुलथुल (मासल) होती है। ऋषियो, विद्याधरो, यक्षो और पिशाचो को जो रमणीय समूह है, वह हसा होती है। तापसी नारी सीधी और स्वभाव से भोली होती हैं। विद्याधरी मदिरा और कुसुमो मे आसक्त होती हैं। यक्षिणी धन-धान्य के लोभ के अधीन होती है, और पिशाचिनी घूमने वाली और तामस भाव से युक्त कही जाती है।

घत्ता—सारसी, मृगी, रिष्टणी, शशि, धृतराष्ट्रणी, महीपी, खरी और मयूरी युवतियां भी होती है। इस प्रकार कामदेव की आठ प्रकार की युवतियां कही गई हैं। हे राजन् उन्हे सुनिए।

(7)

इनमे सारसी प्रिय के वक्षस्थल को अपने स्तनरूपी कलशो से प्रेरित करती है और प्रियतम के सग को नही छोड़ती। मृगी अपने भाइयो के दान के द्वारा सतुष्ट होती है। डांटने पर त्रस्त होती है। और गीत सुनती रहती है। रिष्टणी पुत्र रूपी भाड से दु खी कौवे के समान स्वर वाली, रण से भयकर अपने स्थान को छोड देती है। शशि अपनी आँखे वद किए हुए दु.ख की भाजन होती है। दूसरो के घर पर भोजन करने वाली होती है। धृतराष्ट्रणी कमलो के तालावों में क्रीडा

5 P adds after this ' णरवर मदा णिसुणि णियत्तिणि 6 P जाणि थूलगुरुपोढविलासिणि । 7. AP add after this णउ सेविज्जइ सा वि यलक्खणि। 8 AP भुंभुरभोली, T भुभुर°। 9 AP धयरिट्ठिणि। 10 AP दीसत्तें।

(7) 1 A मृगि णिवबधव°।

खरि खेल्लंति हसइ कहकहसरु सहइ पायपहरु वि घल्लिउ करु।
मयरि मासगासिणि दढगाहिणि कयसाहस कुकम्मणिव्वाहिणि।
सुणि[2] देसीउ णिहिलदेसाहिव इह मालविणि होइ इच्छियसिव।
ससहावे लंपडि खरभासिणि वाणारसिसभव वणवासिणि।

घत्ता—अव्वुइ[3] जा कामिणि मथरगामिणि सा पहिलउं जि दव्वु हरइ॥
दिणमेर णिबधिवि रईरसु सधिवि पच्छइ सरकीलणु[4] करई॥ 7॥

8

सिंधुवि पुणु पियगेयहु[2] रप्पइ प्राणु[3] वि दविणु वि दइयहु अप्पइ।
मायावहुलु भाउ कोसलियहि लब्भइ रइगुणेण[4] सिंघलियहि।
दविडि[5] दतणहछेयहु सक्कइ अंध्रिणि[6] णिब्भररयहु चमक्कइ।
ललियालावे लाडि लइज्जइ उड्डि रमणविण्णाणे भिज्जइ।
कालिंगी उवयारु पउंजइ[7] रक्खसु सुक्कउ[8] रुक्खु[9] वि रंजइ।
सोरट्ठिय आउंवणतुट्ठी गुज्जरि णिच्चवसयज्जहु लट्ठी।
अवरु महारट्ठी जइ सीसइ ता तहि धुत्तत्तणु पर दीसइ।

करने वाली होती है। महिषी अपने भयकर क्रोध रस का निर्वाह करने वाली होती है। खरी खिलखिलाती है, और ठहाका मार कर हँसती है। मारे गए हाथ और पैरो के प्रहार को भी वह सहती है। मयरी मांस खाने वाली मजबूत पकड़ वाली अत्यन्त साहसी तथा कुकर्मो का निर्वाह करने वाली होती है। हे अखिल देशों के राजा, देसी स्त्री को सुनिये। मालवी स्त्री अपना मतलब चाहने वाली होती है। स्वभाव से लपट और अत्यन्त कर्कशवोलने वाली होती है। बनारस की स्त्रियाँ क्रीड़ा को चाहने वाली होती हैं।

घत्ता—अर्बु द की जो स्त्री है, वह मदगामिनी होती है, और सबसे पहले आदमी का धन हरण करने वाली होती है। और दिन की मर्यादा मानकर रतिसुख का सधान कर वाद मे काम क्रीडा करती है।।

(8)

सिंधु देश की स्त्री अपने घर मे प्रसन्न रहती है। और अपने प्राण और धन दोनो ही अपने पति को अर्पित कर देती है। कौशल देश की स्त्री का भाव अत्यन्त मायावी होता है। सिंहल देश की स्त्री को रति गुण से ही पाया जाता है। द्रविड देश की स्त्री दातो और नखो के क्षत को सहन कर सकती है। आन्ध्र देश की स्त्री परिपूर्ण रति से चौक उठती है। मधुर आलाप से गुजरात की स्त्री शरमा जाती है। उडीसा की स्त्री का भेदन रमण-विज्ञान से ही किया जा सकता है। कलिंग देश की स्त्री उपचार का प्रयोग करती है। राक्षस, पुण्यात्मा और रूखे किसी का भी रजन करती है। सौराष्ट्र देश की स्त्री चुम्बन से सतुष्ट होती है। गुजरात की स्त्री नित्य अपने काम मे निपुण

2, AP मुणि। 3 A अच्छए। 4. AP सुरयकील।
(8) 1. AP सेंधवि। 2 A पियणेहहु, P पियगेहहु। 3 AP पाणु 4 P घणेण। 5 AP

कोंकणियहिं जइ काइ वि दिज्जइ तो तं चिंतवंति सा झिज्जइ[10]।
दरिसियहरिसियवम्महलीलउ पाडलिउत्तियाउ करणालउ।
करइ किं पि चंगउ ववसायउ पारियत्तपणइणि पुरिसाइउ।
हिमवंती वि मंतवीयक्खरु जाणइ जेण[11] पडइ पायहिं वरु।
मज्जएसणारीउ कलालउ होंति राय सयदलसोमालउ।

घत्ता—देससयजुत्तहं जाइहिं सत्तहं सयलहं पयइणिवासु किह।।
गिरिसरिहरठाणहं अमरविमाणहं मयरहरहं तेलोक्कु जिह।।8।।

9

सा वि तिविह णरजम्मि णिवेज्झइ[1] पित्तसिंभमारुयहिं णिरुज्झइ।
पित्तपयइ आरूसइ खणि खणि संतोसेवी धुत्तें दिणि दिणि।
गोरी बुद्धिवंत णहपिंगल मउए किज्जइ सा रइभिंभल[2]।
उण्णयसिहिणवरंगु[3] मुणेज्जसु सीयलु तहि आलिंगणु देज्जसु।
सीयलु गंधु सेउ[4] पंगुरणउ सीयलु[5] ताहिं जि सुरयारुहणउ।
सिंभपयइ सामल वण्णुज्जल अहिणवकयलीकंदलकोमल।

होती है। और यदि मराठी स्त्री के बारे में कहा जाये तो उसमे केवल धूर्तता ही दिखाई देती है। कोकण देश की स्त्री को यदि कुछ दिया जाये तो वह उसका विचार करती हुई दुबली होती जाती है। जो हर्षित होकर कामदेव की क्रीडा का प्रदर्शन करती है, ऐसी पाटलीपुत्र की स्त्री अपने स्तन के ऊपर स्तन रखने वाली होती है। पारियात्र देश की स्त्री पुरुष के प्रतिकूल कुछ भी अच्छा या बुरा व्यवसाय करती है। हिमवत देश की स्त्री मन्त्र के बीजाक्षरो को जानती है। इससे पति उसके पैरो पर गिरता है। हे राजन्, मध्यदेश की स्त्रियाँ कलायुक्त होती है, और कमल के समान कोमल होती है।

घत्ता—सैकडो देशो से युक्त सभी सातो जातियो की प्रकृति का निवास इनमें उसी प्रकार होता है, जिस प्रकार पहाड, नदी, धरती के स्थान, अमर विमानो और समुद्रो का त्रिलोक मे होता है।

(9)

उस स्त्री को भी मनुष्य जन्म मे तीन प्रकार से रचा गया है—पित्त, कफ और वात के द्वारा उसे अवरुद्ध किया गया है। पित्त प्रकृति वाली स्त्री क्षण-क्षण मे क्रुद्ध होती है। उसे प्रतिदिन धूर्तता से सतुष्ट करना चाहिए। गौरी, बुद्धिमती, पीले नख वाली को कोमलता के साथ रति से विह्वल बनाना चाहिए। उन्नत स्तनों और श्रेष्ठ अग वाली को समझना चाहिए और उसे धीरे-धीरे आलिंगन देना चाहिए। जो शीतलगध, श्वेतपट और शीतल हो उसे सुरति का आरोहण देना चाहिए। कफ प्रकृतिवाली श्यामल और उजले रग को होती है, तथा नये केले के पत्ते के

---

10 A भिज्जइ। 11 AP जेहिं। 12. AP मज्झदेस°। 13. AP °महि°।

(9) 1. AP विबज्झइ। 2. AP रइवेंभल। 3. AP उण्हय° 4. A सीउ। 5. AP सीयलु सीयलु सुरयाहरणउ।

दिट्ठइ दोसि णिरुत्तउ चुक्कइ पुणु जम्मि वि ण समुहु ढुक्कइ।
सच्चे विणए दाणे घिप्पइ इयरहु पुणु तहि अगु ण छिप्पइ।
रइजल पोभल मउ सोणीयलु णिप्पडियध[6] चारु तणुपरिमलु।
आयविरणहु सोहियकमकर सुदरि साहारणसुरयायर।
कसण फरुस मरुपयइ विलासिणि वहु अहारु लेइ वहुभासिणि।

घत्ता—करकढिणपहारहिँ सद्दगहीरहिँ पयडउं पडु विडु जइ रमइ॥
परिभमणपरिक्खहिँ[7] कालकडक्खहिँ ता[8] कामग्गि ताहि समइ॥9॥

10

जहिँ पयइइ पयइइ फुडु भिण्णी सा तोतडिय दोहि संकिण्णी।
जिह पयइउ[1] तिह विहिँ विहिँ जायइ असयसत्तइं मइ विण्णायइ।
जाइउ[3] देसिउ तिह मइ वुद्धउ भाउ दुविहु अविसुद्धु विसुद्धउ।
पहिलारउ सवत्तिसहवासे वयपरिणामे दीहपवासें[4]।
आसकइ चामीयरलोहे अवरेहिँ[5] वि कारणसंदोहें।
वहइ असुद्धभाउ णारीयणु तेण वि वेयारिज्जइ जडयणु[6]।
आलोयतहु समुहु जोयइ मुहु वियसावइ[7] करयलु ढोवइ।

समान कोमल होती है। दोष दिखाई देने पर वह चुप-चाप हो जाती है। फिर जन्म भर सामने नही आती। फिर सत्य, विनय और दान से ही वह ग्रहण की जाती है। दूसरी तरह से शरीर का स्पर्श नही किया जा सकता। वह रति जल से प्रचुर होती है। उसका स्वर्णिम तल कोमल होता है। और उसका शरीर रूपी सौरभ दुर्गन्धरहित होता है। उसके नख लाल होते है। काम करती हुई शोभित होती है, ऐसी वह सामान्य सुरति मे आदर रखने वाली होती है। कृष्ण कठोर और विलासिनी होती है। वात प्रकृति वाली वहुत खाती है और वहुत वोलती है।

घत्ता— चतुर, प्रेमी उससे हाथ के कठिन प्रहारो और गभीर शब्दो के द्वारा, रूप से उसे रमण करता है। आलिगन, चुम्बन आदि तथा कठोर कटाक्षो के द्वारा वह उसकी कामाग्नि को शात करता है।

(10)

जहाँ प्रकृति-प्रकृति से स्त्री भिन्न होती है, दोनो से सकीर्ण वह मिश्रित होती है। जिस प्रकार की प्रकृति होती है, उसी प्रकार दो-दो प्रकार के भेद होते है। इस प्रकार हस आदि और सात्विक स्त्रियो को मैंने जान लिया। देसी जाति को भी मैंने उसी प्रकार जान लिया। भाव भी दो प्रकार के होते है। विशुद्ध और अविशुद्ध। पहला भाव अपनी पत्नी के सहवास से होता है। दूसरे (अविशुद्ध भाव) को वय के परिणाम, दीर्घ प्रवास, स्वर्ण लोभ और दूसरे कारण समूह से नारीजन धारण करती है। इनसे भी मूर्खजन विकार को प्राप्त होते है। वह देखनेवालो के सामने देखता है, मुख का विकास करता है, और करतल उस पर रख देता है। हे देव, ऐसे भी नारीजन

6 APT णिप्पडियम्मु, K णिप्पडियध but records a p णिप्पडियम्म इति पाठे सस्काररहित। 7. AP °भवण°। 8. A तो।

(10) 1 A पइओ। 2. F जणुउ। 3. AP सवित्ति° 4. AP °पयासें। 5. AP अवरेण। 6 AP जडमणु। 7. AP विहसावइ।

सो[8] वि देव विउसहिँ पालिज्जइ बुद्धिइ सकिण्णत्तणु णिज्जइ।
मदु तिक्खु तिक्खयरु पउत्तउ सुद्धभाउ तिहिँ भेयहिँ जुत्तउ।
घत्ता—भल्लारउ णिवसणु रयणविहूसणु जोव्वणु णारिहि हरइ मणु ॥
त[9] पुणु पियदूए णियडीहूए मयणहुयासे डहइ[10] तणु ॥10॥

11

ता तहिँ दूवि का वि पेसिज्जइ ताइ भावसंभवु जाणिज्जइ।
इगिएहिँ देहुब्भवलिगहि कयणिण्णेहसणेहपसगहिँ।
भुक्खइ भग्गी अण्णहु लग्गी धणलपडि कयखलससग्गी।
गमणकख णिद्दालस मत्ती सुहिसोयाउर परगयचित्ती।
रुट्ठी णिट्ठुर कटुपलाविणि एही णउ सेविज्जइ भाविणि।
सीय[1] विसेसिं परकुलउत्ती एक्क वि एत्थु जुत्ति णउ जुत्ती।
तो वि जाउ चदणहि सुदेहिहि मणअवहरणु करउ वइदेहिहि।
ता पेसिय सा[2] राए तेत्तहि त वाणारसिपुरवरु[3] जेत्तहि।
गय गयणगणेण सा खेयरि पडुरभवणावलि जोइवि पुरि।
जोयइ[4] चित्तकूडु णदणवणु ण महिमहिलहि केरउ जोव्वणु।

का चतुर लोगो को पालन करना चाहिए और उसे बुद्धि से सकीर्ण भाव की ओर ले जाना चाहिए। मद, तीक्ष्ण और तीक्ष्णतर—शुद्धभाव इन तीन भेदो से युक्त कहा गया है।

घत्ता—सुदर निवसन, रत्नभूषण और यौवन नारी का मन हरता है। फिर उसे प्रिय के दूत के निकट होने पर कामदेव की आग जलाने लगती है।

(11)

इसलिए वहाँ पर किसी दूती को भेजना चाहिए। उसके द्वारा सकेतो, शरीर से उत्पन्न चिह्नो, किए गए स्नेह और अस्नेह के प्रसगो के द्वारा उसके भावों की उत्पत्ति को जानना चाहिए। भूख से मग्न, किसी दूसरे से लगी हुई, धन की लालची, दुष्टो का संसर्ग करनेवाली, गमन की आकाक्षा रखने वाली, निद्रा से आलसी, मतवाली, सुधीजनो के लिए शोकातुर, दूसरे मे चित लगाने वाली, रूठी हुई, निष्ठुर और कठोर भाषण करने वाली स्त्री का सेवन नही करना चाहिए। सीता विशेष रूप से श्रेष्ठ कुल की पुत्री है। उसके सबध मे यह एक भी युक्तियुक्त नही है। तब भी हे चन्द्रनखे, तुम जाओ और सीतादेवी के मन का अपहरण करो। तब राजा ने उसे वहाँ भेजा जहाँ श्रेष्ठ वाराणसी नगरी थी। आकाश के प्रागण से वह देवी वहाँ गई, और सफेद घरो की पक्तियो वाली उस नगरी को देखकर वह चित्रकूट और नदन वन को इस प्रकार देखती है, मानो धरती रूपी महिला का यौवन हो।

8 A सा वि। 9 P तें पुणु। 10 AP दहइ।

(11) 1 सीलविसेसिं। 2. AP राए सा। 3 AP वाराणसि° । 4. AP जोइय।

घत्ता—महुधारहिँ सित्तउं णावइ मत्तउ मलयाणिलसंचालिउं।
णवतरुवरसाहहिँ पसरियबाहहिँ णं णच्चंतु णिहालिउं ॥ 11 ॥

12

रुक्खमूलरोहियधरायल[1] कुसुमधूलिधूसरियणहयल।
कीलमाणसाहामयालयं गयणलग्गतालीतमालयं[2]।
बिल्लचिल्लवेइल्लसद्दलं हरिणदतदरमलियकदल[3]।
सच्छविच्छुलुच्छलियजलकण अयरुदेवदारुयहि घणघण।
विडवि णिहसणुग्गमियहुयवह सुरहिधूमवासियदिसामुहं।
परिघुलतककेल्लिपल्लव पवणचलियमहिलुलियमहुलव।
बालवेल्लिविलएहि णवणव कीरकुररकारडकलरव[5]।
अलयवलयविलुलत अलिउल विविहकीलणावासपविउल।
केयईर[6]उक्खुसियमाणव रमियखयरजक्खिददाणव।

घत्ता—तहिँ पयडियभावइ वहुरसदावइ सिसुमाणिणिमणमोहणइ ॥
जणइच्छियकोमलि वरवण्णुज्जलि णाइ कव्वि सुकइहि तणइ ॥ 12 ॥

घत्ता—मधु की धाराओ से सीचा गया एकदम मतवाला जो मानो मलयपवन के द्वारा संचालित हो, वह नववृक्षवरो की शाखाओ से मानो बाहे फैलाकर नाचता हुआ दिखाई दिया।।

(12)

जहाँ भूमितल वृक्षों की जडों से अवरुद्ध है, आकाशतल कुसुमधूलि से धूसरित है, जो खेलते हुए वानरो का घर है, जिसमे ताडी और तमाल वृक्ष आकाश को छू रहे हैं, बिल्व चिचा और बेल के पत्तो से जो युक्त है, अगुरू और देवदारू वृक्षो से जो आच्छादित है, जिसमे वृक्षो के सघर्ष से अग्नि उत्पन्न हो रही है, जिसमे सुरभित धूप से दिशामुख सुवासित है, जो अशोक वृक्ष के पत्रो से व्याप्त है, हवा के चलने के कारण जिसमे बसत लता धरतीतल पर लु ठित है। बाल लताओं के घरो के द्वारा, जिसमे कीर, कुरइ और कारड पक्षियो का नव कलरव हो रहा है, बालों के समूह के समान जिसमे भ्रमर मडरा रहे है, जो विविध क्रीडावरो से प्रचुर है, जिसमे मनुष्य केतकी पुष्पो की रज से लिप्त है, जिसमे विद्याधर, यक्षेन्द्र और दानवेन्द्र क्रीड़ा करते हैं।

घत्ता—सुकवि के काव्य की तरह जो भावो को प्रगट करने वाला है, अनेक रसो को प्रदर्शित करने वाला है। शिशु माननियों के मन को मोहने वाला है, जो जनो की इच्छाओ की तरह कोमल है। (जिसमे लोगो के द्वारा कोयल को चाहा जाता है), जो श्रेष्ठ रगो से उज्ज्वल है, ऐसे उस नंदन वन में ॥

---

(12) 1. A सोहिय°। 2. AP वड्ढमाणहितालतालय। 3. P °दरदरिय°। 4 AP °धूव°। 5 A °कारंडकुलरव। 6 A °रउ उक्खुसिय°।

13

उरगयचदणि उरगयचदण[1] उण्णयवंदणि कयजिणवदण[2] ।
लोहियकदइ सुहितरुकंदा[3] गुरुमाइदइ जियमाइदा[4] ।
व ड्ढियमोयइ कयरइमोया[5] फुल्लासोयइ वियलियसोया[6] ।
लग्गपियाले णिच्चपियाला[7] कीलासेले धीर व सेला[8] ।
खगरावाले बहुरावाला सरकमलाले गुरुकमलाला ।
महुयरगीए[9] मणहरगीइ[10] छाहियसीयइ[11] ते सहुं सीयइ[12] ।
वहुपुहईरुहि पुहइसमेया सिवए सिवढोइयरिउमेया ।
पइरिक्कामइ[13] कामियकामा लक्खणरामइ लक्खणरामा ।
णदणवणि छुडु छुडु जि पइट्ठा लकेसरवरवहिणिइ दिट्ठा ।
सहु अतेउरेहिं कीलारय गहियणवल्लफुल्लमजरिरय ।

घत्ता—कयकिसलयकण्णउ कुसुमरवण्णउ ण देविउ वणवासिणिउ[14] ॥
दुमसाहदोलणि उववणकीलणि लग्गउ रायविलासिणिउ ॥ 13 ॥

---

(13)

जिसमे चदन वृक्ष उगे हुए है, ऐसे उस वन मे राम और लक्ष्मण के हृदय मे चदन सलग्न है। जिसमे रक्त चदन के वृक्ष उन्मत है, ऐसे वन मे जिनेन्द्र की वदना करते हैं। जिसमें रक्तकद वृक्ष है, ऐसे वन मे वे (राम और लक्ष्मण) मित्र रूपी वृक्षो के लिए मेघ के समान हैं। जिसमे प्रचुर आम वृक्ष है, ऐसे वन मे जो चन्द्रमा और लक्ष्मी को जीतने वाले है। जिसमे कदली वृक्ष वढ रहे है, ऐसे वन मे जो रति क्रीडा करने वाले है। जिसमे अशोक वृक्ष विकसित हैं, ऐसे जो शोक से रहित है, जिसमे अचार वृक्ष आकाश को छूते है, ऐसे उस वन मे वे दोनो नित्य अपनी प्रियाओ से युक्त हैं। क्रीडा वन में जो पर्वत के समान धीर है, पक्षियो के कलरव से युक्त वन में जो गुरुके चरणो को चाहने वाले हैं, भ्रमरो के मधुर गीत वाले वन मे, मधुरग्रीवा (सीता के साथ) छाया से शीतल वन मे (सीता के साथ) प्रचुर महीवृक्षो वाले वन मे, पृथ्वी (लक्ष्मण की पत्नी का नाम) के साथ सुखद वन मे वे पशुओ को शत्रुओ का मास देने वाले हैं। जिसमे अमल और प्रचुर जल है ऐसे वन मे जो वाछित अर्थो को भोगने वाले है, जो सारसो से रमणीय है, ऐसे नदन वन मे राम और लक्ष्मण शीघ्र प्रविष्ट हुए। अपने हाथो मे नई पुष्प मजरी धारण करने वाले और अन्त पुर के साथ क्रीडा करने वाले वे दोनो रावण की वहिन द्वारा देख लिए गए।

घत्ता—जिसने किसलयो के कर्ण फूल धारण कर रखे है, जो पुष्पो से ऐसी सुन्दर है मानो वनवासिनी देवी हो, वे राजवनिताएँ वृक्षो की शाखाओं को आन्दोलन वाली उपवन क्रीडा में रत हो गई।।

---

(13) 1 AP °चदणे। 2. AP °वदणे। 3 AP °कदए। 4 AP °मायदए। 5. AP °मोयए। 6 P °सोया। 7 P °पियाले। 8 P वीर व सेला, T वीर वसेला वशा इला ययोस्तौ वशेली। 9. AP °गीयइ। 10, A °गीया। 11 AP छाही° छाहिय। 12. A सीया। 13. AP पयरिक्कीमए। 14 A उववण।

14

काइ वि जणणयणह रुच्चतिड मोरे सहु सहासु णच्चतिइ।
सोहइ कमलु दुवासिहि[1] धरियउ णालंतालिपिंछविच्छुरियउ।
णाइ कडु रइणाहहु केरउ दावइ[2] सुरणरहियवियारउ।
काइ वि समउ[3] वि हंसु चमक्कइ गइलीलाविलासि सो चुक्कइ।
काहि वि छप्पउ लग्गउ करयलि जडु अप्पउ मण्णइ थिउ सयदलि।
काहि वि णियडउ ण ओलग्गइ एणउ दीहकडक्खिउ मग्गइ।
काइ वि उप्पलु सवणि णिहित्तउ कुम्माणउ ण णयणिहिं जित्तउ।
कुवलयकिंकिणिमालाजुत्तउ काइ वि बद्धु वेल्लिकडिसुत्तउ।
काइ वि जाइवि मड्डइ[5] धरियउ कुसुमरएण[1] रामु पिंजरिउ।
सझाराए ण मयलछणु तेण[6] य सोहइ ण सारयधणु।
जाइहुल्लु अण्णइ तहु ढोइउ अण्णइ सरसु वयणु सजोइउ।
जाइवंत कि जाइ भणिज्जइ जा महुयरसएहिं माणिज्जइ।
तो वि भडारी सीसें वज्झइ अप्पकज्जि जणु सयलु वि मुज्झइ।

घत्ता—सव्वगहिं सुरहिउ वरमरुवउ पिउ रुणुरुटेप्पिणु धुत्तडिय[7]॥
मोग्गरउ मुएप्पिणु अगु धुणेप्पिणु तासुप्परि[8] महुयरि चडिय ॥14॥

---

(14)

लोगों के नेत्रों को प्रिय लगती हुई, मयूर के साथ एवं हसी के साथ नाचती हुई किसी के द्वारा अपने दोनों पार्श्व भागों मे धारण किया गया नाल (मृणाल के) के अत मे मधुकर रूपी पुंख से शोभित कमल ऐसा मालूम होता है, मानो सुर नर के हृदय को विदारित करने वाले कामदेव का तीर दिखाई दे रहा हो। किसी के साथ हस चलता है, परन्तु वह उसकी गति लीला विलास मे चूक जाता है। किसी की हथेली से भ्रमर आ लगा। वह मूर्ख समझता है कि मैं कमल दल पर आ बैठा हूँ। मृग किसी के निकट आकर उसकी सेवा करता है, और उसका दीर्घ कटाक्ष माँगता है। किसी के द्वारा कानो पर रखा गया कमल मुरझा गया है, मानो उसके नेत्रो के द्वारा जीत लिया गया हो। किसी ने कुवलय रूपी किंकिणी माला से युक्त लता रूपी कटिसूत्र बाध लिया। किसी ने जबर्दस्ती राम को पकड लिया और पुष्प पराग से उन्हे पीला कर दिया, मानो सध्या राग ने चन्द्रमा को पीला कर दिया हो या मानो उसी से शारदीय मेघ शोभित हो। किसी ने जाती पुष्प दे दिया। दूसरी ने सरस मुखश्री की ओर देखा जो (जाती पुष्पो) सैकडो मधुकरो के द्वारा भोगा जाता है, उसे जाति वाला (उत्तम जाति का) क्यो कहते है। तो भी आदरणीया वह उसे सिर से बाँधती है। अपने काम मे सभी लोग मोहित होते है।

घत्ता—मोगर पुष्प को छोडकर अपने शरीर को फडफडा कर तथा रोकर धूर्त मधुकरी सर्वांग-सुरक्षित प्रिय मरुवक पुष्प पर चढ गई।

---

(14) 1 AP दुवासहि। 2. P दावइ ण सुर°। 3. AP समउ हसु चम्मक्कइ। 4 को माणउ त णयणहि। 5 P मथइ, K मत्थइ but corrects it to मड्डइ। 6 AP तेण जि। 7. A धुत्तलिया। 8. AP जासुप्परि।

15

का वि कुंदकुसुमइ णियदंतहिं जोयइ दप्पणि समउ फुरंतहिं ।
वउलु[1] परिक्खइ णियतणुगंधें बिंबीहलु अहरहु सबंधें ।
क वि फुल्लिउ साहारु णिरिक्खइ वाली हरिसाहारणु[2] कंखइ ।
जंपमाणु णवकलियइ मत्तउ खरसताउ ण मुणइ सइत्तउ ।
धरिउ ताइ रूसिवि मणदूसउ अग्गिवण्णु जायउ[2] मुहि पूसउ ।
का वि उच्छुकरयल सुहकारिणि णावइ[3] विसमसरासणधारिणि[4] ।
का वि फुल्लमालउ सचारइ[5] सरु[6] सरपंतिउ ण दक्खालइ ।
का वि पलासपसूयइ वीणइ केकयतणयहु[7] पाहुडु आणइ ।
णिद्धइ रत्तइ कुडिलइ तिक्खइ णाइ वसंतमइंदहु णक्खइ ।
काइ वि कोइल कसण णिरिक्खिय पुच्छिय[8] अवरइ विहसिवि अक्खिय ।
सपहिं एहु[9] वि वोल्लणसीली[10] जणविरहाणलधूमें काली ।
एयहि सद्दु[11] महुरु महुरउ विसु दोहिं मि हम्मइ पवसिउ माणुसु ।
जइ महु लक्खणु अज्जु रमेसइ ता हलि कलपलविउ[12] सुहु देसइ ।

घत्ता—लयमंडव माणिवि कील समाणिवि कामभोयसपुण्णरइ ॥
ण[13] करिवरु करिणिहिं सहु णियघरिणिहिं सरि पइसंति णराहिवइ ॥15॥

(15)

कोई दर्पण में चमकते हुए अपने दाँतो के साथ कुंद पुष्पो को देखती है। अपनी देहगंध से मौलश्री पुष्प की ओर अधरो के संबंध से बिम्बाफल की परीक्षा करती है। कोई फूले हुए सहकार वृक्ष को देखती है, और वाली वासुदेव के साथ बाहुयुद्ध चाहती है। नवकलियों से मतवाला और बोलता हुआ निष्कपट शुक वियोग दुःख को कुछ भी नही मानता। मन को कुपित करनेवाले उसे उसने कसकर पकड लिया, इसीसे वह (शुक) मुख मे (चोंच मे) लाल रंग का हो गया। कोई शुभ करनेवाली, हाथ मे इक्षुदंड लिये हुए ऐसी प्रतीत होती है, मानो विषम धनुष को धारण किये हुए हो। कोई पुष्पमाला का इस प्रकार संचार करती है, मानो कामदेव तीरो की पंक्तियाँ दिखा रहा हो। कोई पलाश पुष्पो को इकट्ठा करती है, और लक्ष्मण के लिए उपहार मे देती है। स्निग्ध लाल कुटिल और तीखे वे ऐसे मालूम होते थे, मानो वसंत रूपी सिंह के नख हो। कोई काली कोयल को देखती है और पूछती है। दूसरी हँसकर उत्तर देती है कि लोगो के विरहानल के धुएँ से काली यह इस समय भी बोल रही है। इसका मधुर मधु मे रत विष दोनो ही प्रवासियो के मानस को आहत करता है। यदि आज मुझ से लक्ष्मण रमण करता है तो कोयल का यह प्रलाप मुझे सुख देता है।

घत्ता—लतामंडप का उपभोग कर क्रीडा को मानकर जिसने कामभोग मे अपनी रति पूर्ण कर ली है ऐसा राजा अपनी स्त्रियो के साथ सरोवर मे इस प्रकार प्रवेश करता है, मानो कविवर अपनी स्त्रियो के साथ प्रवेश कर रहा हो।

(15) 1 A ववलु। 2 KT record a p अथवा हरियासायण चुम्बनम्। 2 AP मुहि जायउ। 3 AP ण विममसरसरा° 4 A °धोरिणि। 5 AP सचालइ। 6 AP सर। 7 A केकइतणयहु, P केइयतणयहु। 8 A अच्छिय अवइ विहसिय अक्खिय, P अच्छिय अवरइ विहसिवि अक्खिय। 9. P एहु जि। 10 AP वोलण°। 11. AP मइ। 12. A कललवियउ। 13. P omits ण।

16

सीयापंजलिपाणियसित्तहु ण दप्पणयलि पुण्णपवित्तहु।
दीसइ रामहु उरि णीलुप्पलु सोहइ ण छणचदहु[2] मयमलु।
कसणे हरिणा का वि महासइ सित्ती ण मेहेण वणासइ।
णं रोमावलिअकुर मेल्लइ मुहकमलेण णाइ पप्फुल्लइ[3]।
क वि घणथणफलसंपय दावइ सुदरि वेल्लि अणंगहु णावइ।
सिंचिय सिंचिय हसइ सलीलउ उच्छलतकप्पूरकणालउ।
काहि वि पियकरजलविच्छुलियहि सुत्तजालु तुट्टउ कचुलियहि।
अल्लउ[4] परिहणु ढलिउ[5] विहाविउ लज्जइ सलिलि अगु ल्हिक्काविउं।
काइ वि महुमहकतिइ कालिउ रत्तउ सयदलु कण्हु[6] णिहालिउ।
सहियहु दसिवि कहिवि[7] वियप्पिउ कण्णालग्गइ काइ वि जपिउं।
सिचहि ललिय[8] एह पोमावइ विरहिणि जेण[9] भडारा जीवइ।
कुकुमपिंडउ एयहि घल्लहि एह देव वच्छयले पेल्लहि।

घत्ता—तं सुणिवि कुमारें माणवसारें एक्क धरिय चीरचलइ॥
अण्णेक्कहि जते दरविहसते मुक्कउ सलिलु थणत्थलइ ॥ 16 ॥

---

(16)

सीता की अजुलियो के पानी से सीचा गया नील कमल पुण्य से पवित्र राम के उर पर ऐसा प्रतीत होता है, मानो दर्पणतल मे मृग से लाछित पूर्ण चन्द्र शोभित हो। श्याम नारायण (लक्ष्मण) ने किसी महासती को इस प्रकार सीच दिया, मानो मेघ ने वनस्पती को सीच दिया हो, मानो वह (नाभि का) रोमावली रूपी अकुर को छोड रहा हो, मानो वह मुखकमल से खिल गई हो। कोई सघन स्तन रूपी फलसपदा को दिखाती है, जैसे कामदेव की सुन्दर लता हो। वार-वार सीचे जाने पर वह, जिसमे कपूर के कण उछल रहे है, ऐसे लीलापूर्वक हँसती है। प्रिय के हाथो से नहलाई गयी किसी की चोली का सूत्रजाल टूट जाता है, शिथिल गीला वस्त्र गिर जाता है, वह लजा जाती है, और पानी मे अपना अग छिपाती है। कोई लक्ष्मण के मुख की काति से श्याम रक्त कमल को काला देखती है, सखियो को दिखाकर अपना विचार वताती है। कोई कानो से लगकर कहती है, हे ललिते! इसे सीचो यह पद्मावती है। जिससे यह आदरणीया विरहिणी जीवित रह सके। इसे केशर का लेप दो। हे देव, इसे वक्षस्थल पर दबाओ।

घत्ता—यह सुनकर मानवश्रेष्ठ कुमार ने एक को वस्त्र के अचल से पकड लिया तथा एक और दूसरी के स्तनो पर थोडा-थोडा मुसकाते हुए उसने जलयत्र से जल छोडा।

---

(16) 1 AP पाणियपजलि°। 2. A छणयदहु, P छणइदहु। 3 AP पफुल्लइ। 4 AP पुलए, K records a p पुलए 5 A पल्हसिउ, P ल्हसिउ। 6. AP किण्हु। 7. A कहव। 8. AP एह ललिय। 9. A जेम भडारा णीवइ।

17

त[1] हारावलि तिम्मिवि[2] पडियउं विहिणा किं णउ तेत्थु जि जडियउ।
कहिं लब्भइ पियसंगें आयउ काहि वि मणि उच्छल्लउ जायउ।
काइ वि वल्लहहत्थ[4] गलत्थिय देहतावहय[5] ते ज्जि समत्थिय।
णहणिवडत[6] धरिय धवलामल तोयबिंदु णावइ मुत्ताहल।
का वि णियविणि णाहहु णासइ वणि णिम्मज्जइ दूरहु दीसइ।
सरि परिघोलिरु सण्हउ पडुरु[7] पाणियछल्लि व कड्ढइ अ वरु।
का वि उरत्थलि चडिय उविंदहु णावइ विज्जुल अहिणवकंदहु।
पत्तिणिपत्तइ पेच्छिवि जलकण हारु ण तुट्टउ[8] अवलोइय थण।
क वि हियउल्लइ विभिय मतइ अलयहं अलिहिं मि अतरु चिंतइ।
का वि ण इच्छइ जलपक्खालणु[9] कज्जलतिलयपत्तपक्खालणु।
उड्डइ अ तरि करइंदीवरु तहु णवणालु[10] व थिउ धारासरु।
चवलरहल्लिजलोल्लियकेली एम करेप्पिणु चिरु जलकेली।

घत्ता—सरि ण्हाइवि णिग्गय णावइ दिग्गय थणयलघुलियहारमणिहिं[11]॥
पयलियरसधारहु तलि साहारहु सहु णिसण्णु णियपणइहिं ॥17॥

(17)

हारावली को गीला करता हुआ वह उसके ऊपर गिरा, विधाता ने उसे क्यो नही जड दिया। इसने प्रिय का सग कैसे प्राप्त कर लिया ? किसी के मन में यह उत्सुकता पैदा हुई। किसी ने कठ मे स्थित देह के ताप को दूर करने वाले प्रिय के उन्ही हाथो का समर्थन किया। किसी ने आकाश से गिरते हुए धवल और अमल जलबिन्दुओ को इस प्रकार धारण कर लिया जैसे मोती हो। कोई नितम्बिनी अपने स्वामी से भाग जाती है, और जल मे डूबकर दूर दिखाई देती है। सरोवर मे हिलते हुए सूक्ष्म और सफेद वस्त्र को वह पानी की छाल की तरह निकालती है। कोई लक्ष्मण के वक्ष स्थल पर चढी हुई ऐसी प्रतीत होती है, मानो अभिनव मेघ की बिजली हो। कमलिनी के पत्र पर जलकणो को देखकर वह अपने स्तन देखती है कि कही हार तो नही टूट गया। कोई अपने मन मे विस्मित होकर विचार करती है और भ्रमर तथा बालो के अतर को सोचती है। कोई काजल, तिलक और पत्र-रचना का प्रक्षालन करने वाले जलप्रक्षालन को नही चाहती। किसी का कर रूपी कमल पानी के भीतर है, चंचल लहरों और जल से आर्द्र है। ऐसी जलक्रीड़ा चिरकाल तक कर—

घत्ता—जल मे नहाकर वे इस प्रकार निकले मानो दिग्गज हो। जिनके स्तनतलों पर हारमणि व्याप्त है, ऐसी प्रणयिनियो के साथ रस की धारा से प्रगलित उत्तम आम्र वृक्ष के नीचे जब वे बैठे हुए थे॥

(17) 1 AP ण। 2 P णिम्मिवि। 3 AP उच्छुल्लउ। 4. P °हत्थि। 5 AP °तावहर। 6 P णहणियडत। 7 P पडरु। 8 AP तुट्ठइ। 9 A जलपव्वालणु। 10 AP °णालु थविउ। 11 P थणयलघुलिय°।

18

णावइ सीयसुरूवे[1] णिज्जिय विज्जाहरि तारुण्णे लज्जिय।
तहिं अवसरि कचुई होएप्पिणु सा चदणहिं[2] तेत्थु आवेप्पिणु।
जोयइ[3] सीय पसाहिज्जती कवि सकइ तिलउल्लउ देती।
भालयलहु कलंकु परि किज्जइ एए ण महु हासउ दिज्जइ।
का वि ण वधइ मोत्तियकठिय कबु पलोइवि णिहुणिय[5] सठिय।
का वि कवोलइ पत्त् लिहेप्पिणु जूरइ कि पह पहय[6] णिहेप्पिणु।
चिंतइ खेयरि माणणिसुभहु उव्वसिगोरितिलोत्तमरभहु[7]।
रूवे सीयाए वि गुरुक्की पुरिसहु वम्महभल्लि व ढुक्की।
हा हा हय कि कयउ[8] पयावइ दुक्करु रामणु[9] जोइवि जीवइ।
जासु एहु कुलहरि[10] कुलउत्ती रिद्धि विद्धि तहु तहु जि धरित्ती।
णिच्छउ होसइ[11] जित्तमहाहउ धण्णउ पुण्णवतु जगि राहउ।

घत्ता—जरधवलियकेसइ कपिरसीसइ मायारूवे भावियउ॥
मणहरणवियड्ढइ[12] खेयरिवुड्ढइ[13] तरुणीयणु पहसावियउ॥18॥

19

ता तहिं एक्क भणइ नृवरण्णी[1] का तुहु कि कारणु अवइण्णी।
हलि हलि कचुइ काइ णियच्छसि भणु भणु कि लिहिया इव अच्छसि।

(18)

उस अवसर पर सीता के रूप से जैसे पराजित हो कर तथा तारुण्य से लज्जित विद्याधरी वह चन्द्रनखा वहाँ आकर सीता को प्रसाधित होते हुए देखती है। कोई तिलक देते हुए शका करती है कि इससे (तिलक देने से) मुझे लज्जा आती है। कोई उसे मोतियो का कठा नही बाँधती। उसके कठ को देखकर निश्चल हो जाती है। कोई गाल पर पत्ररचना लिखकर प्रभा के द्वारा प्रभा को देखकर पीडित हो उठती है। वह विद्याधरी चन्द्रनखा विचार करती है कि मान को नष्ट करने वाली उर्वशी गौरी तिलोत्तमा रभा आदि के रूप से सीता देवी महान् है, और यह पुरुषो के लिए, काम की मल्लिका के समान आई है। हा हा हत भाग्य प्रजापति, तुमने क्या किया ? इसको देखकर रावण को जीवित रहना कठिन है, जिसकी ऐसी कुलपुत्री कुलगृहणी है, उसी की ऋद्धि, वृद्धि और धरती है। निश्चय ही वह महायुद्ध का विजेता होगा। राघव विश्व मे धन्य और पुण्यवत है।

घत्ता—बुढापे से जिसके केश धवल है, जिसका सिर काँप रहा है, जो मन चुराने मे चतुर है, ऐसी उस विद्याधरी वृद्धा ने मायावी रूप वना लिया और उसने तरुणी जन को हँसाया।

(19)

उस अवसर पर वहाँ एक राजरानी कहती है कि तू कौन है, और यहाँ किसलिए आई है, हे कंचुकी तू क्या देखती ? वोल-वोल लिखित हुए के समान क्यो है ? यह सुनकर वह मायाविनी

(18) 1. सीयारूवें, P सीयासुरूवें। 2. A चदणवि। 3. P जोइय। 4 AP कठु। 5. AP णिहुवी सठिय। 6. AP णिहिय पिहेप्पिणु। 7 A उव्वसिगोरी°, P उव्वसिमीणी। 8. AP कियउ। 9 A रावणु। 10 A कुलहर। 11. A होसइ तहि जि मइाजउ। 12 A °विसड्ढहें। 13 P खेयरवुड्ढइ।

(19) 1. A णिरवण्णी, P शिवरण्णी।

त णिसुणिवि बोल्लइ[2] मायारी हउ मायरि वणवालहु केरी।
तुम्हिहि परभवि ज व्रउ[3] चिण्णउ जेणेहउ जायउ लायण्णउ।
लद्धा जेण णाह हलहर हरि जेण लच्छि एही सवसुधरि।
त मज्झु वि उवइसह वइत्तणु साहमि सवसा[4] ह वि जुवइत्तणु।
ता त सीयइ झ त्ति दुगु छिउ महिलत्तणु कि किज्जइ कुच्छिउ।
रयसलवासरि चडालत्तणु णउ पावइ णियवसपहुत्तणु।
अण्णहि कुलि कत्थइ उप्पज्जइ वड्ढती अण्णेण जि णिज्जइ।
सयणविओयवसेण रुयती वहलवाहविंदुयइ मुयती।
मतिकज्जि[5] णउ कासु वि भावइ जा जीवइ ता परवस[6] जीवइ।
दूहउ दुट्ठु दुगधु दुरासउ अधु वहिरु वाहिल्लु अभासउ।
असहणु अहणु कुडिलु जाणेव्वउ जो भत्तारु सो ज्जि माणेव्वउ।

घत्ता—जइ सइ चक्केसरु अहव सुरेसरु तो वि अण्णु णरु जणणसमु ॥
चितेव्वउ णारिहि कुलगुणधारिहि णउ लघेव्वउ गोत्तकमु ॥19॥

20

विहवत्तणि पुणु सिरु मुडेव्वउ अप्पउ तवचरणे दडेव्वउ[1]।
रक्खइ पिउ अव्वत्तसिसुत्तणि[2] रक्खइ तृय[3] पइ[4] पुणु पोढत्तणि।

कहती है कि मैं वनपाल की माँ हूँ। तुम लोगो ने दूसरे जन्म मे जो व्रत ग्रहण किया था, और जिसके लिए तुम लोगो को यह सौन्दर्य मिला, जिससे तुमने बलभद्र और नारायण जैसे पतियो को प्राप्त किया और जिससे इस भूमि सहित लक्ष्मी को प्राप्त किया है, उस व्रत का उपदेश तुम मुझे दो, जिससे मैं इस स्वतत्र युवतीत्व को पा सकूँ। तब सीता देवी ने उसे शीघ्र डाँटा कि कुत्सित महिलापन से क्या करना। रजस्वला के दिनो मे उसे चडालत्व (धूर्तपन) प्राप्त होता है, और वह वश की प्रभुता को नही पा सकती। किसी कुल मे उत्पन्न होती है, और बडी होने पर किसी दुष्ट कुल के द्वारा ले जाई जाती है, स्वजनो के वियोग के वश से रोती हुई तथा प्रचुर बाष्प विंदुओं को बहाती हुई। मत्रणा के समय वह (नारी) किसी को अच्छी नही लगती। वह जब तक जीती है, तब तक परवश जीती है। चाहे वह दुर्भग दुष्ट दुर्गन्ध और दुराशयी, अधा बहरा रोगी और गूगा, असहनशील, निर्धन और कुटिल जाना जाए जो पति है, उसे पति ही माना जाना चाहिए।

घत्ता—यदि वह स्वय चक्रवर्ती हो अथवा इन्द्र, तो भी कुलगुणो को धारण करने वाली स्त्रियो के द्वारा पर पुरुषो को पिता के समान माना जाना चाहिए। उन्हे अपने गोत्र का उल्लंघन नही करना चाहिए।

(20)

विधवापन मे उन्हे अपना सिर मुडवा लेना चाहिए, और स्वयं तपश्चरण से दडित करना चाहिए। अत्यन्त बचपन मे पिता रक्षा करता है, प्रौढ काल मे स्त्री की रक्षा पति करता है,

---

2. P भासइ। 3. AP वउ। 4 AP रामसामि° 5. A मतकज्जि। 6 P परवसिं।
(20) 1. A डडेवउ। 2 A अच्छतसिसुत्तणि। 3 AP तिय। 4 AP पुणु पइ।

रक्खइ वुड्डुत्तणि तणुरुहु तिह ण करइ किं पि वि कुलविप्पिउ जिह ।
परवसहिंडण सयणाहारहु महिल ण मुच्चइ कारागारहु ।
वुड्ढिइ वुड्ढयालि णिब्भग्गिउ डज्झउ महिलत्तणु किं मग्गिउ ।
किज्जइ जिणवरिंदभासिउ तउ त मग्गिज्जउ जहिं णउ सभउ ।
रुहिररसावहु अट्ठियपंजरु त मग्गिज्जउ जहिं ण कलेवरु ।
जहिं इंदियइं ण इच्छियकामइं जहिं सुव्वंति ण जारह णामइं ।
तं मग्गिज्जइ मोक्खमहासुहुं त णिसुणिवि वुड्ढहि[5] मउलिउ मुहु ।
हियवउ भिण्णउं तक्खणि एयहि भरड[6] सीलु को खडइ सीयहि ।
जाणियतच्चहि सच्चहि सतहि जहिं एहउ वियप्पु गुणवतहि ।
तहिं मइ धुत्तिइ[7] काइ करेव्वउ पासहि हिंडिवि णवर मरेव्वउ ।

घत्ता—इय चिंतिवि सुदरि णिवसे[8] णहयरि चचलगय गयणगणइ ॥
थिय मणियरणिम्मलि कणयधरायलि लकाहिवघरप्रगणइ[9] ॥20॥

21

अंजणसामहु लच्छिविलासहु णविवि ताइ विण्णविउ दसासहु ।
देव दियतदतिदतच्छवि— जसपसरणयर[2] जगपकयरवि ।
पइ[3] इच्छइ सा जइ सिहि सीयलु जइ ठाणाउ चलइ धरणीयलु ।

उसी प्रकार वृद्धापन में पुत्र रक्षा करता है, जिससे कि वह कुल के लिए अप्रिय कुछ भी नही कर सके। दूसरो के अधीन घूमने वाली महिला स्वजनो के आभार रूपी कारागार से नही छूट पाती। वृद्धा, तूने बुढापे मे भाग्यहीन महिलापन क्यो माँगा ? इस महिलापन मे आग लगे। जिनेन्द्र के द्वारा बताए गए तप को करना चाहिए और वह माँगना चाहिए कि जिसमे फिर जन्म न हो, वह माँगना चाहिए कि जहाँ रक्त रस को धारण करने वाला अस्थिपजर से युक्त शरीर न हो, जहाँ इन्द्रियाँ कामनाओ की इच्छा करने वाली नही है, जहाँ जारो का नाम सुनाई नही देता—ऐसे उस मोक्ष रूपी महासुख को माँगना चाहिए। यह सुनकर वृद्धा का मुख मैला हो गया। उसका हृदय तत्काल विदीर्ण हो गया। वह सोचती है कि सीता के शील का खडन कौन कर सकता है ? जहाँ तत्त्व को जानने वाली सच्ची शात और गुणवती सीता देवी का यह विकल्प है, वहाँ मेरे द्वारा क्या धूर्तता की जाएगी ! मैं केवल वधनो में पडकर भ्रमण कर मर जाऊँगी।

घत्ता—यह विचार कर वह चंचल सुन्दरी विद्याधरी एक पल में आकाश के आँगन से गई और मणि किरणो से निर्मल, स्वर्ण धरातल वाले लकानरेश के प्रांगण में जा पहुँची।

(21)

अजन की तरह श्याम, लक्ष्मी के विलास दशानन को प्रणाम कर उसने निवेदन किया—हे दिग्गज के दाँतो की छवि के समान यश के प्रसारण करने वाले तथा विश्व रूपी पकज के रवि हे देव, यदि आग शीतल हो जाए तो वह आपको चाह सकती है। यदि धरणी-तल अपने

---

5. A वुड्ढिइ। 6 A भणइ, T भरइ चिन्तयति। 7 A धुत्तें। 8. P णिविसें। 9 AP °पगणइ।

(21) 1. A °दतहो छवि। 2. A °पसरणजगवणपकय°, P °पसरणपर। 3. A इच्छइ पइ जइ सा, P इच्छइ पइ सा जइ।

जइ णियमेण वसंति ण सायर जइ पडंति सिसिरयर[4] दिवायर ।
जइ जिणु राए दोसे छिज्जइ तो पइ[5] सीय खगिंद रमिज्जइ ।
तं णिसुणिवि दहवयणे वुच्चइ अवसु वि वसि किज्जइ ज रुच्चइ ।
किं विसभइयइ फणिमणि मुच्चइ अलसहु सिरि दूरेण पवच्चइ ।
सुहिसयणत्तणु पुरिसपहुत्तणु गिरिमसिणत्तणु[6] सइहि सइत्तणु ।
दूरयरत्थु सुणतह चगउ पासि असेसु वि दरिसियभगउ ।
हरमि सीय किं पउरपलावे ता सा पुणु[7] वि कहइ सब्भावे ।
दहमुह एउ अजुत्तु अकित्तणु[8] इय बोल्लंति संति मतित्तणु ।

घत्ता—चदणहि णिवारिवि असिवरु धारिवि सुरसमरओहिं[9] असकियउ ॥
भरहद्धणरेसरु सुरकरिकरकरु रावणु[10] पुप्फयति थियउ ॥21॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे णारयआगमणं रावणमणखोहणं
णाम एकहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ 71 ॥

स्थान से चलित हो जाए, यदि समुद्र नियमित रूप से न रहे, यदि चन्द्रमा और सूर्य गिर पड़ें, यदि जिन भगवान् राग-द्वेष से छिन्न हो जाए, तो हे देव, सीता देवी आपके साथ रमण कर सकती है। यह सुनकर रावण कहता है—जो अच्छा लगता है, ऐसे अवश को भी वश मे किया जाता है। क्या विष के भय से नागमणि को छोड दिया जाता है? आलसी व्यक्ति से लक्ष्मी दूर रहती है। सुधियो का स्वजनत्व, पुरुषो की प्रभुता, पहाड़ की रम्यता और सती का सतीत्व दूरस्थ होने के कारण सुनने मे अच्छा लगता है, निकट होने पर उनकी अशेष खामियाँ प्रकट हो जाती हैं। मैं सीता का अपहरण करूँगा। अत्यधिक प्रलाप से क्या? तब वह पुन सद्भाव से उससे कहती है—"हे दशमुख, यह अयुक्त और अशोभनीय है।" ऐसी मत्रणा देती हुई—

घत्ता—चन्द्रनखा का प्रतिकार कर, असिवर अपने हाथ मे लेकर देवो के युद्धो में अशकित, भारत का अर्ध चक्रवर्ती और ऐरावत की सूड़ की तरह बाहुवाला रावण अपने पुष्पक मे बैठ गया।

त्रेसठ महापुरुषो के गुणालकारो से युक्त महापुराण मे महाकवि पुष्पदत द्वारा विरचित,
महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का रावण-मन-क्षोभन नाम का
इकहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

4 A ससिरयर। 5. A पय। 6. AP गिरिहि महत्तणु। 7 AP कहइ पुणु वि। 8. P अखत्तणु। 9. A °समरेहिं अस°, P समरउहे अस°। 10 P रामणु। 11. AP रामणखोहणु।

दुसत्तरिमो संधि

सहुं मारीयएण पहु मुक्कदेसजइसजमु ॥
पुप्फविमाणे[1] थिउ गउ सीयहरणकयउज्जमु[2] ॥ ध्रुवक ॥

1

कामवाणोहविद्धेण मुद्धेण णो कि पि आलोइय
ता विमाण विमाणे णहे राइणा तेण सचोइय ।
तारयाऊरियायासकासबद्धुज्जलुल्लोवय
हेमघटाविसट्टतटकारसतासियासागय ।
चारुचदक्कभाभारि माणिक्कसमुक्कझुवुक्कय[3]
वाउधुव्वतकेऊलयालोलणाइण्णदिच्चक्कय ।
तुगसिगग्गणिब्भिण्णणीलब्भसच्छबुधारोल्लिय
वोमपोमायरे हसवत्तम्मि[4] पोमं व[5] पप्फुल्लिय ।
दिण्णधूव रयक्ख गवक्खतलबंतभिगचिय[6]

बहत्तरवी संधि

जिसने मुनि के एकदेश सयम (अणुव्रत) को छोड़ दिया है, तथा जिसने सीता के अपहरण का उद्यम किया है, ऐसा स्वामी रावण, पुष्पक विमान मे बैठकर मारीच के साथ गया।

(1)

कामबाणो के समूह से आबद्ध उस मुर्ख ने कुछ भी नही देखा। उस राजा ने नि'सीम आकाश मे अपना विमान चला दिया। जिसमे तारको से भरित आकाश के समान उज्ज्वल वितान बँधा हुआ है, स्वर्ण घटाओ की प्रसरित होती हुई टकार से जिसने दिग्गजो को सन्त्रस्त कर दिया है, जो सुन्दर स्वर्ण-आभा को धारण करता है, जो माणिक्यो से निर्मित गुच्छो से युक्त है, जिसने पवन से आदोलित ध्वज रूपी लताओ के हिलने से दिग्मडल को आच्छादित कर दिया है, जो ऊँचे शिखरों के समूह से उद्भिन्न नीले मेघो के स्वच्छ जल की धारा से आर्द्र है, जो आकाश रूपी सरोवर मे कमल की तरह खिला हुआ है, जिसे धूप दी गई है, जिससे धूल नष्ट हो चुकी है, जिसके गवाच्छों के निकट भ्रमर समूह लगा हुआ है। पक्षी, सिह, सारंग और मातगो

---

(1) 1 P °विवाणे । 2 P सीयाहरण° । 3 AP माणिक्कणिमुक्क° । 4. A हसवतम्मि । 5 P· च पुप्फुल्लिय । 6 AP गवक्खतलगत° ।

पक्खिसेहीरसारंगमायंगउक्किण्णरूवंकिय[7]।
वद्धसोहिल्लकप्पघिवुद्धू यपत्तावलीतोरण[8]
इंदणीलसुकाल असीयसुसीयसुणिव्वारग[9]।
तेयवत णहुम्मिल्लकतिल्लदिव्वत्थसोहावह
भम्मपिंग पलित्त व सत्तच्चिणा रंजियासावह।
कित्तिवेल्लीइ फुल्ल व सेय दसासालिणा माणिय
जायवेय कुधीरेण वीरेण[10] वाणारसी आणिय।
घत्ता—दिट्ठउ तेत्थु वणु अण्णेक्क वि सीयहि जोव्वणु॥
रावणु चिंतवइ विहि समसजोयवियक्खणु॥1॥

2

वणु दीसइ णच्चियणीलगलु सीयहि जोव्वणु मणमीणगलु[1]।
वणु दीसइ णिम्मलभरियसरु सीयहि जोव्वणु णिरु महुरसरु।
वणु दीसइ सचरतकमलु सीयहि जोव्वणु वरमुहकमलु।
वणु दीसइ ललियलयाहरउ सीयहि जोव्वणु विवाहरउ।
वणु दीसइ कालालिंगियउ सीयहि जोव्वणु सालिंगियउ।
वणु दीसइ अलयतिलयसहिउ सीयहि जोव्वणु विहलीसहिउ।

के उत्कीर्ण रूपो से जो अंकित है, जिसमे कल्पवृक्षों से उत्पन्न पत्रावलियों का बधा हुआ तोरण शोभित है, जो इन्द्रनील मणियों की किरणो से काला है, जो सूर्य और चन्द्रमा की किरणो का निवारण करने वाला है, जो तेज से युक्त है, जो आकाश मे चमकने वाले क्राति से युक्त प्रहरणो की शोभा को धारण करने वाला है, स्वर्ण से पीला, अग्नि के द्वारा प्रदोप्त के समान जो दिशा-पथो को रंजित करने वाला है, कीर्ति रूपी लता के फूल के समान जो दशानन रूपी भ्रमर के द्वारा मान्य है, ऐसे उस वेगशाली विमान को खोटी वुद्धि वाला वह रावण वाराणसी ले आया।

घत्ता—उसने वहाँ वन देखा तथा एक ओर सीता का यौवन देखा। रावण, श्रम और सयोग मे विचक्षण विधाता का चिंतन करता है।

(2)

जिसमे नील मयूर नाच रहा है, वन ऐसा दिखाई देता है, सीता का यौवन मन रूपी मत्स्य के लिए लोहे के काँटे वाला है। वन निर्मल भरे हुए सरोवरो वाला दिखाई देता है, सीता का यौवन मधुर स्वर वाला दिखाई देता है। वन प्रवहनशील जल वाला दिखाई देता है, सीता का यौवन श्रेष्ठ मुखकमल वाला है। वन सुर लतागृहो वाला दिखाई देता है, सीता का यौवन विम्बाधरो वाला है। वन भ्रमरो से आलिंगित दिखाई देता है, सीता का यौवन लक्ष्मी से आलिंगित है। वन प्रचुर तिलक वृक्षो से युक्त दिखाई देता है, सीता का यौवन बलभद्र के लिए

---

7 A °सीहीर° । 8 AP °विवुब्भूय° । 9 P omits सुसीय° । 10. A धीरेण ।
(2) 1. A मणिणीलगलु ।

वणु दीसइ फुल्लासोयतरु सीयहि जोव्वणु परसोययरु।
वणु दीसइ दुग्गउ कचुइहिं सीयहि जोव्वणु घरकचुइहिं[2]।
वणु दीसइ तरुकीलतकइ सीयहि जोव्वणु वण्णति कइ।
वणु दीसइ मूलणिरुद्धरसु[3] सीयहि जोव्वणु कयमयणरसु।
वणु दीसइ वड्ढियधवलवलि सीयहि हारावलि धवलवलि।
हियउल्लउ कामसरहि भरिउ लकालकारे सभरिउ।

घत्ता—इय एयहि तणउ णरु माणइ जो णउ[4] जोव्वणु ॥
मंदिरु परिहरिवि रिसि होइवि सो पइसउ वणु ॥ 2 ॥

3

अहो कयत्थो भुवणतरे हली महेलिया जस्स घरम्मि मेहली।
पलोयए लोयणएहिं[1] समुह मुहेण मल्हति विउवए[2] मुह।
हरामि[3] एय कवडेण सपय करेइ मती महिणाहसपय।
उयार मारीयय होहि तं मओ खुरेहि सिगेहि जवेण तम्मओ।
कुकम्मए मंतिवरो णिवेसिओ विचितए हा विहिणा णिवे सिओ।
जसो ण जाओ भवणतमेरओ कहं परत्थीरमणे[4] तमे रओ।
भणामि किं सिभजरे पय पिय दुलघमेय पहुणा पयपिय।

सुखदायी है। वन खिले हुए अशोक वृक्ष के समान दिखाई देता है, सीता का यौवन दूसरो के लिए खेद उत्पन्न करने वाला है। वन साँपो से दुर्गम दिखाई देता है, सीता का यौवन गृहकचुकी से युक्त है। जिसके वृक्षो पर वानर क्रीड़ा करते है वन ऐसा दिखाई देता है, सीता के यौवन का वर्णन कवि करते है। जिसने अपने मूल भाग मे जल को अवरुद्ध कर रखा है, वन ऐसा दिखाई देता है, सीता का यौवन कामदेव के रस को वढाने वाला है। जिसमे धव और धवली लता (चंदन लता) वढ रही है, वन ऐसा दिखाई देता है। सीता की हारावली गले मे वधी हुई है। रावण का मानस कामदेव के तीरो से भरा हुआ था, उसे याद आया—

घत्ता—यहाँ इसके यौवन का जिसने भोग नही किया, घर छोडकर और मुनि होकर उसने वन मे प्रवेश किया।

(3)

अरे, भुवन मे वलभद्र ही कृतार्थ है कि जिसके घर मे मैथिली (सीता) गृहिणी है। राम नेत्रो के द्वारा सामने देखने पर, उसके हर्षित मुख से मुख चूमते है। इस समय मैं कपट से इसका अपहरण करता हूँ। मत्री राजा की सपदा करता है। हे उदार मारीच, तुम मृग वन जाओ। खुरों और सीगों के द्वारा वेस से उसके अनुरूप वन जाओ। इस प्रकार कुमार्ग मे निर्देशित वह सोचता है—खेद है कि विधाता ने राजा को भुवनात तक सीमित श्वेत यश नही दिया, स्त्री-रमण रूपी अधकार मे वह कैसे रत हुआ ? लेकिन मैं क्या कहूँ, उसने कफ-ज्वर मे दूध पी लिया है, प्रभु के द्वारा कहा गया अलघ्य पदार्थ है। उस समय विषाद से विकृतअग वह एक क्षण मे

2 A घरु। 3. P °णिवद्धरसु। 4 A वल्लियधवल°। 5 AP ण वि।

(3) 1. P लोयणेहिं। 2. A विओवए, P विउवए। 3. AP हरेमि। 4. A रमणतमेरउ।

तओ विसाएण वियारियगओ खणेण होऊण मओ तहिं गओ।
णिसण्णिया जत्थ धरासुया सई पिए मणो जोइ[5] समप्पिओ सइ।
कुरंगओ वालतणकुरासओ सुयाहिरामकियरामरासओ।
णियच्छिओ दिट्ठिमओ रवण्णओ विचित्तपिंछोहमऊरवण्णओ।
महीरुहाए भणियं हिया सय इमं मह लोयणलोलणासय[6]।
णरिंद हे राम पुलिंदकायरं रएण[7] गतु धरिऊण कायर।
अणेयमाणिक्कमय मय मह कुलीण दे देहि णियच्छिमो मह।[8]

घत्ता—णिसुणिवि प्रियवयणु[9] सो रामे दीसइ केहउ ॥
सावउ चित्तलउ चलु मणु काउरिसह जेहउ ॥3॥

4

पविरलपएहिं लंघतु महि लहु धावइ पावइ दासरहि।
थोवंतरि मणहरु जाइ जवि कह कह व करगुलि छित्तु ण वि।
पहु पाणि पसारइ किर धरइ मायामउ मउ अग्गइ सरइ।
दूरंतरि णियतणु दक्खवइ खेलइ दरिसावइ मदगइ।
णवदूवाकदकवलु[1] भरइ तरुवरकिसलयपल्लव[2] चरइ।
कच्छतरि सच्छसलिलु पियइ वकियगलु पच्छाउहुं[3] णियइ।

मृग होकर वहाँ गया कि जहाँ पृथ्वीपुत्री सती सीता देवी बैठी हुई थी। उस सती ने अपने प्रिय मे मन समर्पित कर रखा था। वाल तृणो को खाने वाला तथा जिसने सुनने में मधुर राम शब्द का उच्चारण किया है, ऐसा देखने मे कोमल और सुन्दर वह मृग देखा गया कि विचित्र पूँछ समूह से मयूर के रग का था। सीता ने स्वय कहा—यह मृग मेरे नेत्रो के लिए खेलने का साधन है। हे राजन्, हे राम, शरों के द्वारा आहत और अधीर उसे (मृग को) वेग से जाकर और पकडकर लाओ और अनेक मणिक्यो से युक्त उस महान् मृग को, हे कुलीन दे दो, मैं उसे देखूँगी।"

घत्ता—प्रिय के वचन सुनकर राम के लिए वह मृग इस प्रकार दिखाई दिया जैसे कापुरुष लोगो का चचल मन हो।

(4)

अपने प्रविरल पैरो से धरती को लाँघता हुआ वह शीघ्र दौडता है, राम को पाता है। वह सुन्दर थोडी दूर तक वेग से जाते है, किसी प्रकार हाथ की अगुली से उसे छू भर नही पाते। स्वामी (राम) हाथ फैलाते और उसे पकड़ते है, वह मायामय मृग आगे वढ जाता है, दूरी पर अपना शरीर दिखाता है, फिर मद गति दिखाता है, और क्रीडा करता है। नई दूव की जड़ो के कौर को खाता है, तरुवरो के किसलय पल्लवो को खाता है, वन के मध्य में स्वच्छ जल पीता है, टेढ़ी गर्दन और पीछे मुँह करके देखता है। जिनके फल तोतो की चोचो के आघातो से गिर रहे

---

5 A जाइ। 6. A लोयणलोयणासय। 7 A रएण तुंग। 8 T णियत्थियामह पश्याम्यहं, पश्यामि तेज: (उत्सव ?)। 9. AP पियवयणु।

(4) 1 AP °कमलु। 2 AP तरुवरपल्लवकिसलय। 3 AP पच्छामुहु।

सुयचचुघायपरियलियफलि[4] खणि दीसइ चपयचूयतलि[5]।
खणि वेल्लिणिहेलणि पइसरइ अण्णण्णपएसहिं[6] अवयरइ।
ओहच्छइ[7] अइकोड्डावणउ लइ माणमि णयणसुहावणउ।
इय चिंतिवि राहउ सचरइ पसु पुणु धरणास तासु करइ।
धरिओ वि करग्गहु णीसरइ कहिं वेसायणु कहिं णीसरइ।
णिद्दइयहु[8] किं करि चडइ णिहि कहिं कवडहरिणु कहिं बधविहि।

घत्ता—गउ गयणुल्ललिउ मिगु ण कुवाइहत्थहु रसु ॥
थिउ दसरहतणउ समणीससंतु विभियवसु ॥4॥

5

भयणभूमिआयासगामिणो[1] मतिणा वि कहिय ससामिणो।
देवदेव जयलच्छिसगमो वचिओ[2] रहुरायपुगमो।
ता ससक्क[3]तेल्लोक्क[4]रामणो[5] राम एव रूवेण रावणो।
कासकुसुमसकासदेहओ चावधारि ण सरयमेहओ।
कसणवाससोहियणियबओ हत्थणिहियमणिमयसिलिंवओ[6]।
झ त्ति जणयतणयासमीवय आगओ कयाणगभावय[7]।

है ऐसे चंपक और आम्रवृक्ष के नीचे एक पल मे दिखाई देता है, एक क्षण मे लताघरो मे प्रवेश कर जाता है, तथा दूसरे-दूसरे प्रदेशो मे अवतरित होता है। अत्यन्त कुतुहल उत्पन्न करने वाला वह लो यह बैठा है, लो नेत्रो के लिए सुहावने लगने वाले इसे मैं मानता हूँ। यह विचार कर राम सचरण करते हैं। मृग उनमे पकड जाने की आशा उत्पन्न करता है। पकड़े जाने पर भी वह हाथ की पकड़ से छूट जाता है। कहाँ वेश्याजन और कहाँ दरिद्रो की रति ? भाग्यहीन के हाथ क्या निधि चढ़ती है ? कहाँ कपटमृग और कहाँ उसके पकडने की विधि ?

घत्ता—आकाश मे उछलता हुआ मृग चला गया, मानो कुवादी के हाथ से पारद चला गया हो। विस्मय से विस्मित राम, श्रम से श्वास लेते हुए रह गए।

(5)

मत्री ने नक्षत्रो की भूमि, आकाश से जाने वाले अपने स्वामी से कहा—"हे देव विजय और लक्ष्मी के सगम रघुराजश्रेष्ठ को वचित कर लिया गया है। तव इन्द्र सहित तीनो लोको को रुलाने वाला रावण ही राम वन गया। कास पुष्प के समान उज्ज्वल शरीर वाला धनुष-धारी, जैसे शरद मेघ हो, मृग चर्म से उसका नितम्ब भाग शोभित था। जिसने अपने हाथ मे मणिमय तीर धारण कर रखे थे, ऐसा वह (रावण) शीघ्र ही जनक तनया सीता देवी के पास आया। शत्रुओ के मान को नष्ट करने की शक्ति वाले उस दुश्चरित्र ने काम की अभिलाषा से

4 AP °परिगलिय°। 5 P °चूययलि। 6. P पवेसहिं। 7. P इहु अच्छइ। 8 A णिद्दइयहु कहिं करि, P णिद्दइवहु करि कहिं।

(5) 1. A गयणभूमि°, T भयणभूमि°। 2 A वणि वइट्ठ रहुवसपु गमो, P वणि पइट्ठु रहुवस-पु गमो। 3 A ससक°। 4 P तइलोक्क°। 5 AP °रावणो। 6 A °सिलवओ। 7 A °तावय

वइरिमाणणिम्महणसत्तिणा भासियं कुसीलेण[8] ण तिणा ।
दूरय[9] पि मणपवणवेयय पचवण्णमाणिक्कतेयय ।
आणिय मए हरिणपोययं कुणसु देवि कीलाविणोयय ।
ता सईइ अवलोइओ मओ ण सुदूसहो दुक्खसंचओ ।
विप्फुरततणुकिरणमालओ विरहसिहि व वित्थिण्णजालओ ।
विंभियावलायाणमाणिया रयणिगमणचिंधेण भाणिया[10] ।

घत्ता—पिए जरदिवसयरु अत्थगउ दीसइ रत्तउ ।।
जरजुण्णु वि तिजगि भणु अत्थहु को णासत्तउ ।।5।।

6

उज्झिऊण इंदियसम सविमाण सिवियासम ।
सव्वत्थ वि भद्द[1] सिय तीए तेण दसिय ।
वुद्ध किं पि णव च ण ण[2] हु खलरइय वचण ।
त धरणीयलरूढिया अमुणती आरूढिया ।
उववणवासविणिग्गय अप्पाण हरिवरगय ।
दहवयणेण विलासिणा रिउकित्तीयविलासिणा ।
तीए पुरओ[3] दाविय वइयालियसद्दाविय ।
सा तुरिय लक णिया वम्महधणुगुणकण्णिया[4] ।

पूर्ण इस प्रकार कथन किया—मन और पवन के समान वेग वाला, पाँच प्रकार के माणिक्यो से तेजस्वी हरिण का बच्चा दूर होते हुए भी मैं ले आया हूँ। हे देवी, तुम क्रीडा-विनोद करो। तब सीता देवी ने उस हरिण को देखा। मानो असह्य दु ख का सचय हो। शरीर की विस्फुरित किरणमाला से युक्त यह विरह की ज्वाला की तरह विस्तीर्ण ज्वाला वाला था। राक्षस चिह्न धारण करने वाले रावण ने, विस्मित और मायापुरुष को नही जाननेवाली सीता से कहा

घत्ता—हे प्रिये, बूढा सूर्य भी अस्त होता हुआ रक्त दिखाई देता है। बताओ तीनो लोको मे जरा से जीर्ण होने पर भी कौन है जो अर्थ मे आसक्त नही होता !

(6)

इन्द्रियो की थकान को दूर कर उसने शिविका के समान अपना विमान, जो सर्वत्र भद्र और श्रीसपन्न था, सीता देवी को दिखाया। उसने समझा कि यह कोई अपूर्व विमान है, न कि कोई दुष्ट के द्वारा रचित प्रवचना है। इस प्रकार, नही जानती हुई धरतीतल पर प्रसिद्ध वह उपवन वास के बाहर स्थित, अश्वो पर आरूढ उस विमान पर चढ गई। शत्रु की कीर्ति से क्रीड़ा करने वाले विलासी रावण ने उसे सामने वैतालिको के द्वारा वर्णित लका दिखाई। कामदेव के धनुष की डोरी की कर्णिका उस सीता को वह लंका ले गया। सारसो के जोड़े द्वारा मान्य

---

8 A कुसी-लेण मतिया। 9. दूरिय। 10 A भासिया।

(6) 1 A भद्दासिय। 2 P तहु खल०। 3 AP पुरउ। 4 P वम्महु।

सारसजुयमाणियवणि   सणिहिया णदणवणि।
माणवाहिराम गओ   दूरमुक्करामगओ।
पयडीकयससरीरओ   भूहरभेडसरीरओ।
इर[5] भुवणयले विस्सुओ   रक्खकेउ महिवइसुओ।
घत्ता—कालउ दहवयणु णवमेहु व दुहयरु सीयइ ॥
पियविरहाउरइ दिट्ठउ कठट्ठियजीयइ ॥6॥

7

चित्ते मउलते मउलियउ   लोयणजुयलसुउ[1] पयलियउ।
आपडुरत्तु[2] गडत्थलइ   विलसिउ विलसिउ विरहाणलइ।
कडकडकडति ससहरपहइ   अंगइं लायण्णवारिवहइ।
का[3] दिसि केणाणिय केव कहि   को पावइ एवहि रामु जहि।
इय चिंतवति मोहेण हय   परपुरिसु णिहालिवि मुच्छ गय।
पइवय परपइवयभगभय   ण पवणे पाडिय ललिय लय।
भत्तारविओयविसठुलिय[4]   विहिवस सिलसकडि पक्खलिय।
ण कामभल्लि महियलि पडिय   ण वाउल्लिय कंचणघडिय।
सुहिसुंयरणपसरियवेयणिय[5]   सा जइ वि थक्क णिच्चेयणिय।
परिहाणु ण तो वि ताहि ढलइ   चल जारदिट्ठि कहि परिघुलइ।

जल वाले नदन वन में वह ठहरा दी गई। तब मनुष्य शरीर की रमणीयता को प्राप्त, राम के वेष को जिसने दूर फेंक दिया है, जिसके पास भूधरो का भेदन करने वाली नदी के समान वेग है, जिसने अपना शरीर (रूप) प्रगट कर दिया है, जो राक्षस की ध्वजावाले राजपुत्र के रूप मे प्रसिद्ध है—

घत्ता—काले रावण को प्रिय विरह से आतुर एव कठस्थित प्राणोवाली सीता देवी ने इस प्रकार देखा जैसे नवमेघ को देखा हो।

(7)

चित्त के मुकुलित होने पर नेत्र युगल भी बन्द हो गए, आँसू प्रगलित होने लगे। गालो पर सफेदी शोभित हो उठी। विरह की ज्वाला के प्रदीप्त होने पर, चन्द्रमा-सी प्रभा वाले सौन्दर्य जल को धारण करने वाले उसके अंग कडकडाने लगे। यह कौन दिशा है, किसके द्वारा यहाँ लाई गई हूँ, किस प्रकार, कहाँ ? कौन मुझे वहाँ प्राप्त कराएगा कि जहाँ राम है ? इस प्रकार विचार करती हुई वह मोह से आहत हो उठी। परपुरुष को देखकर, दूसरे के पति द्वारा व्रत भग से भयभीत पतिव्रता वह मूर्च्छा को प्राप्त हुई, मानो पवन ने सुन्दर लता को गिरा दिया हो। अपने पति के वियोग से अस्त-व्यस्त वह भाग्य के वश से शिलासकट स्थान पर इस प्रकार स्खलित हो गई, मानो काम की मल्लिका धरती पर गिर पडी हो। फिर भी उसका परिधान (साड़ी) नही खिसका। चंचल जार की दृष्टि कहाँ ठहरती ?

5 AP इह।

(7) 1 P °जुउ असुय। 2 A आपडुरत्थु। 3 AP का दिस। 4. A विसठुलिया। 5 A सुहिसुअरण°; P सुहिसुमरण°।

घत्ता—दढणिवसणु सइहि सुहडहु करासि ण वियट्टइ ॥
मरणि समावडिइ परियरिविहि[6] विहि वि ण फिट्टइ ॥7॥

८

परदारलुद्ध ढुक्कतु खलु   किं लज्जइ कहिं मि गामकमलु ।
रावण[1] किं आणिय परजुवइ   तरु चुयसिण्हसुएहिं रुवइ ।
वणु णाइ करइ साहुद्धरणु   हा पत्तउ णारिरयणमरणु ।
अलि कण्णासण्णउ रुणुरुणइ   पहु एउ अजुत्तु णाइ भणइ ।
इच्छइ दससिरु पररमणिसुहु   कणइल्लउ वकिवि जाइ मुहु ।
ण[2] सो वि णिवहु उव्वेइयउ   कोइलु[3] विलवतु व आइयउ ।
दुज्जसु महु महणिहु महहि जइ   वइदेहिं भडारा रमहि तइ ।
हसावलि लवइ व लोयपिय   मइ जेही तेरी[4] कित्ति सिय ।
मा मइलहि माणिवि एह तिय   मा णासहि लकाउरिहि सिय ।
अवउ लोहियपल्लवललिउ   ण णिवअण्णायसिहिं जलिउ ।
चदणु पुणु विसहर दक्खवइ   पडिवक्खवाणमाणु[5] व थवइ ।
रामाणीरमणकम्मतुरिउ   खयरिंदें[6] मणु मड्डइ[7] धरिउ ।

घत्ता—स्त्री के दृढ वस्त्रो को सुभट का हाथ रूपी खड्ग नही काट सकता, मृत्यु आ जाने पर भी विधाता उसके कटिवध को नही तोड सकता।

(8)

परस्त्री का लोभी दुष्ट रावण वहाँ आ पहुँचता है। क्या गाँव के कुत्ते को कही भी लाज आती है? हे रावण, तू दूसरे की युवती को क्यो लाया? जैसे वृक्ष अपनी गिरती उष्ण किरणों से यह कह रहा है। वन मानो अपनी शाखाएँ उठाता है (और खेद व्यक्त करता है) कि नारी रत्न की मृत्यु आ पहुँची। कानो के समीप आकर भ्रमर गुनगुनाता है और मानो कहता है कि स्वामी, यह अयुक्त है। रावण परस्त्री के स्मरण सुख को चाहता है, (यह सोचकर) शुक मुँह टेढा करके चला जाता है, मानो वह भी राजा से उद्विग्न है। कोयल भी विलाप करती हुई वहाँ आई (और बोली): यदि तुम मेरे समान अपना दुर्यश ही चाहते हो तो आदरणीया वैदेही से रमण करना। हसावली मानो कहती है कि तुम्हारी कीर्ति मेरे समान श्वेत और लोक प्रिय है, इस स्त्री का उपभोग कर तुम इसे मैला मत करो और न ही लकापुरी की लक्ष्मी का नाश करो। अपने लाल-लाल पल्लवो से सुन्दर आम्रवृक्ष ऐसा मालूम होता है मानो वह नृप के अन्याय की अग्नि में जल गया हो। चदन वृक्ष विषधरो को दिखाता है, और प्रतिपक्ष के मान को स्थापित करता है। जिसे रामभार्या के साथ रमण कर्म की शीघ्रता है ऐसे अपने मन को विद्याधर ने शीघ्र ही बलपूर्वक रोका।

---

6. AP परियरविहि ।

(8) 1 P रामण। 2 A त सो। 3 A कोकिलु। 4. A तेही किंत्ति।
5. पडिवक्खमाणमाणु व। 6 AP खयरिंदए। 7. A मडइ।

घत्ता—परवस परमसइ जइ छिवमि करे थणु पेल्लिवि ॥
अवरयारिणिय तो[8] जाइ विज्ज मइ मेल्लिवि ॥8॥

9

इय णिज्झाइवि पकयकरिहि आएसु दिण्णु विज्जाहरिहिं ।
जीवावहु भावहु कह[1] वि तिह मइ इच्छइ सु दरि अज्जु जिह ।
ता तरलइ[2] तारइ णाइणिइ चपयमालइ मदाइणिइ ।
अविउलइ अंबइ अबालियइ मयमत्तइ मल्हणसीलियइ ।
पियछदइ णदइ णदिणिइ रइरुदइ[3] चंदइ चदिणिइ ।
कप्पूरपूरपरिमलजलइ[4] पल्हत्थियाइ हिमसीयलइ ।
सीयहि अगगि रमति किह सीयइ रहुवइअगाइ जिह ।
णियपत्थिवपेसणकारिणिहि लहु विज्जिय चामरधारिणिहिं ।
दहमुहवहदाइणि कालणिह सधुक्किय ण खयजलणसिह ।
उट्ठिय परणरणिट्ठुरहियय सचितइ हा हउ कि ण मय ।

घत्ता—हा रहुवसपहु हा लक्खण कहि[5] पइ पेच्छमि ॥
दावहि ताव मुहु जांवज्जु जि मरवि[6] ण गच्छमि ॥9॥

घत्ता—यदि मैं परम सती परवश सीता के स्तनो को हाथ से दबाकर छूता हूँ, तो आकाशगामिनी विद्या मुझे छोडकर चली जाएगी ।

(9)

अपने मन मे यह विचार कर, उसने कमल के समान हाथो वाली विद्याधरियो के लिए आदेश दिया—उसे इस प्रकार जिलाओ और मनाओ कि वह आज किसी प्रकार मुझे चाहने लगे । तब तरला, तारा, नागिनी, चपकमाला, मदाकिनी अविपुला, मदमत्त प्रसन्न स्वभाव वाली अवा अवालिका, प्रिय स्वभाव वाली नन्दा नदिनी, रति से सुन्दर चन्दा और चाँदनी के द्वारा छोडा गया कपूर के पूर से सुवासित, हिम के समान ठण्डा जल सीता देवी के अ गो पर इस प्रकार क्रीडा करता है, जैसे राम का अग हो । अपने राजा की आज्ञा मानने वाली चामरधारिणी दासियो ने जब हवा की तो, रावण के वध को करने वाली वह काल के समान प्रलय की आग की ज्वाला की तरह जल उठी । परपुरुष के लिए कठोरहृदय सीता अपने मन मे सोचती है—मैं मर क्यो नही गई ?

घत्ता—हे रघुवश के स्वामी (राम) हे लक्ष्मण, मैं तुम्हे कहाँ देखूँ, मेरे मरने तक तुम अपना मुँह दिखा दो ।

8. P ता जाइ विज्जु ।

(9) 1. A कह व । 2. AP अवलोइय अंव वालियए । 3 AP रइरुदइ । 4 AP कप्पूरपउर° । 5. A पइ कहि पेच्छमि । 6 AP मरेवि ।

10

चउपासिहिं थियउ णियच्छियउ पुणु खयरपुरंधिउ[1] पुच्छियउ ।
भणु भणु सदेहु मज्झु हुयउ णिवु कालउ जमु किं वा मणुउ ।
पुरि एह कवण किं जमणयरि तावेक्क पजंपइ तहिं खयरि ।
जसु तलवरु जमु किर भणइ जणु जसु देइ णिच्च वइसवणु धणु ।
जसु इंदु वि समरि थरहरइ जसु मारुउ घरकयारु[2] हरइ ।
जसु वासइं[3] वइसाणरु धुवइ दिक्करिउलु णामे मउ मुयइ ।
जसु अग्गइ णडइ सरासइ वि कुसुमंजलि घिवइ वणासइ वि ।
जसु पगणि मेहहिं दिण्णु छडु जसु को वि णत्थि पडिमल्लु भडु ।
सो एयहि लंकहि एडु पइ रावणु णामे तिहुवणविजइ ।
भत्तारु समिच्छहि माइ तुहु अणुभुंजहि इच्छियकामसुहु[5] ।

घत्ता—सामिणि राणियहं णीसेसहं होइवि अच्छहि ॥
महएवित्तणयहु[6] परमेसरि पट्टु[7] पडिच्छहि ॥ 10 ॥

11

किं किज्जइ हरिणु अधीरमइ जइ लब्भइ सीहकिसोरु[1] पइ ।
किं किज्जइ दीवउ तुच्छछवि जइ अंधयारु णिट्ठवइ रवि ।

(10)

उसने चारों ओर स्त्रियो को बैठे हुए देखा, फिर विद्याधरियो से पूछा—बताओ-बताओ मुझे सदेह उत्पन्न हो गया है कि यह राजा काल है या यम या कि मनुष्य ? यह कोई नगरी है या यमनगरी ? तब एक विद्याधरी उससे कहती है—लोग यम को जिसका तलवर (कोतवाल) बताते है, कुबेर जिसे नित्य प्रति धन देता है, युद्ध मे इन्द्र भी जिससे थर-थर काँपता है, पवन जिसके घर का कचरा निकालता है, अग्नि जिसके कपडे धोती है, जिसके नाम से दिग्गज समूह मद छोडता है, सरस्वती जिसके आगे नाचती है और वनस्पतियाँ कुसुमाजलियाँ बरसाती है, मेघ जिसके आगन मे छिडकाव करता है, विश्व मे जिसका प्रति योद्धा दूसरा कोई नही है, वह इस लका का स्वामी है। त्रिभुवन के विजेता उसका नाम रावण है। हे आदरणीया, तुम उसे अपना पति मान लो और अभिलषित काम सुखो का भोग करो ।

घत्ता—नि शेष रानियो की स्वामिनी होकर रहो। हे परमेश्वरी, तुम महादेवी के पद को स्वीकार करो ।

(11)

अधीरमति उस हरिण से क्या करना यदि किशोर सिंह के रूप मे पति मिलता है ? तुच्छ प्रकाशवाले दीपक से क्या यदि सूर्य अन्धकार को नष्ट कर देता है ? वहाँ कौए से क्या,

(10) 1 AP खयरि°। 2 A घरु कयारु। 3. AP वत्थइं। 4 A omits this foot. 5. A इच्छिउ काम। 6 A महएविहिं तणउ, P महएवीए पहुत्तणहु। 7. A पट्टु।
(11) 1. A सीहु किसोरु।

किं किज्जइ वाइसु[2] जइ गरुलु[3] सुपसण्णु होइ वहुवाहुवलु ।
किं किज्जइ खरु जइ दुद्धरहु पाविज्जइ कधरु सिधुरहु ।
किं किज्जइ पिप्पलु सलसलिउ जइ दीसइ सुरतरुवरु[4] फलिउ ।
किं किज्जइ राहउ[5] मुद्धि तइ रावणमहिलत्तणु होइ जइ ।
ता सीयइ उत्तरु मणि थविउ एयइ अण्णाणिइ कि लविउ ।
जहिं ककु रायहसु व गणिउ एरडु कप्परुक्खु व भणिउ ।
जहिं गुणवतु वि दोसिल्लसमु तहिं जे विरयति वयणविरमु ।
ते विउस पससिय विउसजणि[6] णिक्खिवइ वुद्धि को मुक्खयणि[7] ।
घत्ता—पेयहु तणउ मुहु वियसावइ को जगि चुविवि ।।
इय चिंतिवि हियइ मोणव्वउ थिय[8] अवलविवि ।। 11 ।।

12

जयजसरामहु रामहु तणिय णिसुणेसवि वत्त सुहावणिय ।
जइहु[2] पेसियलेहेण सहु तइहु[3] आहारपवित्ति महु ।
ण तो पुणु जिणवरिंदु सरणु सपज्जउ सल्लेहणमरणु ।
एत्तहि जक्खाहिवरक्खियउ[1] पहवतु फुरतु णिरिक्खियउ ।
पहरणपरिपाले रक्खियउ पणविवि दहगीवहु अक्खियउ ।
आउहसालहि खयरविसरिसु[5] उप्पण्णउ चक्कु जणियहरिसु ।

जहाँ बाहुबल वाला गरुड प्रसन्न होता है ? उस गधे से क्या यदि दुर्धर महागज का कधा प्राप्त होता है (बैठने के लिए) ? काँपते हुए पीपल के पत्ते से क्या जहाँ कल्पवृक्ष फला हुआ दिखाई देता हो ? हे मुग्धे, राम से क्या यदि रावण का पतीत्व प्राप्त होता है ? (यह सुनकर) सीता ने उत्तर अपने मन मे रख लिया । (उसने सोचा) इस अज्ञानी ने क्या कहे ? जहाँ बगले को राज हस समझा जाता है, एरड को कल्पवृक्ष कहा जाता है, जहाँ दोषी व्यक्ति ही गुणवाद है, ऐसे स्थान पर जो लोग अपने शब्दो के विराम की रचना करते हैं, उन पडितो की विद्वत्सभा मे प्रशसा की जाती है । मूर्खजनो मे अपनी वुद्धि कौन वर्बाद करता है ?

घत्ता—कौन व्यक्ति विश्व मे प्रेत के मुख को चूम कर उसे विकसित कर सकता है, अपने मन मे यह विचार कर वह मौन का सहारा लेकर स्थित हो गई ।

(12)

जय और यश से सुन्दर राम की सुहावनी वार्ता, जब मै प्रेषित लेखपत्र द्वारा सुनूँगी—तभी मै आहार ग्रहण करूँगी (अर्थात् भोजन ग्रहण करूँगी) नही तो मेरे लिए जिनवर की शरण है, मै सलेखना मरण को प्राप्त होऊँगी । यहाँ पर, आयुधो की रक्षा करने वाले ने कुवेर के द्वारा रक्षित चमकता हुआ चक्ररत्न देखा। उसने प्रणाम कर रावण से कहा—आयुधशाला मे प्रलयकाल के सूर्य के समान तथा हर्ष उत्पन्न करने वाला चक्र उत्पन्न हुआ है । इससे राजा

2 AP वायसु । 3 P गरलु । 4 AP सुरवरतरु । 5 AP रामे । 6 AP विउसयणि । 7 A मुक्खमणि । 8 A थिउ ।

(12) 1 AP जइयहु लक्खणरामहु तणिय । 2. AP जइयहु । 3 AP तइयहु । 4 K records a p : आरक्खियउ इति पाठे आरै क्षित प्राप्त अराणा वा निवास 5. AP खररवि° ।

ता णिवहृ[6] हियउ रोमचियउ त जाइवि[7] कुसुमहि अचियउ ।
णिवमतिहि इय बोल्लिउ वयणु एवहि[8] कहि चुक्कइ दहवयणु ।
सभूयउ भवणि[9] चक्करयणु आणिउ अण्णेक्कु वि मिगणयणु ।
ज त कलत्तु रामहु तणउं अप्पिज्जउ[10] घणचक्कलथणउ ।
उप्पाउ णयरि भीयरु हवइ[11] त णिसुणिवि णहयरिंदु लवइ ।
उप्पण्णु चक्कु सीयागमणि कि तुम्हहु अज्ज वि भति मणि ।

घत्ता—छिंदिवि[12] अरिसिरइ असिकपावियदेवासुरु ।।
भरहहु हउ जि पहु सिरिपुप्फयतभाभासुरु ।।12।।

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयतविरइए महाकव्वे सीयाहरण णाम
दुसत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ।।72।।

रावण का हृदय रोमाचित हो उठा और उसने जाकर फूलो से उसकी अर्चा की। राजा के मत्रियो ने यह शब्द कहे—हे दशवदन, तुम इस समय क्यो चूकते हो। तुम्हारे घर मे चक्ररत्न उत्पन्न हुआ है। और एक और जो मृगनयिनी तुम ले आए हो वह राम की पत्नी है। घन गोल स्तनो वाली उसे तुम वापस कर दो। नगर मे भीषण उत्पात होगा। यह सुनकर विद्याधर राजा कहता है कि सीता के आगमन से ही चक्ररत्न की प्राप्ति हुई है। क्या आप लोगो के मन मे आज भी भ्राति है ?

घत्ता—मैं शत्रु का सिर काटूंगा ? अपनी तलवार से देव और असुरो को कँपाने वाला तथा सूर्य और चन्द्रमा के समान मै ही भरत क्षेत्र का स्वामी हूँ।

त्रेसठ महापुरुषो के गुणालकारों से युक्त महापुराण मे महाकवि पुष्पदन्त
द्वारा विरचित एव महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का
सीताहरण नाम का बहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

6. AP महिवइवउ। 7 A जोइवि। 8 AP सुदरु पडिवज्जइ दह°। 9 AP भवणि वि। 10 P अप्पिज्जइ। 11 AP वहइ। 12 AP छिंदमि। 13 AP वहत्तरि गे।

तिसत्तरिमो संधि

मायारउ किं माणिक्कमउ जो रहुसीहहु णट्ठउ ॥
महुं णावइ[1] भावइ सो हरिणु चंदहु सरणु पइट्ठउ ॥ध्रुवकं॥

1

दुवई—एत्तहिं रामसामि मृगपच्छइ[2] गउ दूरतर वणे ॥
एत्तहिं णीय सीय दहवयणे एत्तहिं सोउ परियणे ॥छ॥

एत्तहिं दिणंति[3] अत्थइरिसाणु सपत्तउ लहु अत्थमिउ भाणु ।
णरतिरियणयणपसरणु हरंतु चक्कउलहु तणुतावणु करंतु ।
ण दिसइ लइउ रइरसणिहाउ ण णिण्णट्ठउ[4] रावणपयाउ[5] ।
ण रइउ समुद्दे रयणसगु णं महिइ गिलिउ रइरहरहंगु[6] ।
देउ वि वारुणिसंगेण पडइ ण इय भणतु पक्खिउलु रडइ ।

तिहत्तरवीं संधि

वह माणिक्यमय हरिण क्या मायावी था कि जो राम रूपी सिंह से नष्ट हो गया ? वह हरिण मुझे चन्द्रमा की शरण में गया हुआ अच्छा लगता है।

(1)

दुवई—यहाँ स्वामी राम मृग के पीछे वन में दूर तक चले गये। यहाँ सीता दशमुख के द्वारा ले जाई गई और यहाँ स्वजनों में शोक बढ़ गया।

यहाँ दिन का अन्त होने पर अस्तगत सूर्य शीघ्र ही मनुष्यों और तिर्यंचों के नेत्र-प्रसार का हरण करता हुआ, चक्रवाल कुल के लिए शरीर संताप करता हुआ, अस्तगिरि के शिखर पर इस प्रकार पहुँच गया मानो दिशा ने (पश्चिम दिशा ने) रति-रस के निधान को ले लिया हो, मानो रावण का प्रताप नष्ट हो गया हो, मानो समुद्र ने रत्न का (सूर्य का) साथ कर लिया हो, मानो धरती ने रति के रथ चक्र को निगल लिया हो। देव (सूर्य) भी वारुणी (सुरा,

---

(1) 1. AP भावइ णावइ। 2. AP मिग°। 3. A दियति, K दिणति, corrects it to दियति but has a gloss दिनस्यान्ते। 4. AP णिट्ठिउ। 5. AP रामणभुय°। 6. A रविरह°।

गच्छंतु अहोमुहु तिमिरमथु   ण दावइ णरयहु तणउ पथु ।
रामहु कलत्तु इह हित्तु जेण   जाएसइ सो मग्गेण एण ।
गउ अत्थवणहु कदोट्टजूरु   करसहसेण वि णउ धरिउ सूरु ।

घत्ता—णिवडतु जतु हेट्ठामुहुउ रवि कि एक्कु भणिज्जइ ॥
जगलच्छीमंदिरणिग्गयहिं मदहिं को रक्खिज्जइ ॥1॥

2

दुवई—माणवभवणभरहखेत्तोवरि वियरणगमियवासरो ॥
सीयारामलक्खणाणदु व जामत्थमिओ[1] दिणेसरो ॥छ॥

पच्छाइयसयलायासतीरु   ण सझारायकोसु भचीरु[2] ।
णहसिरि परिहइ रडिज्जमाण   दिणवइविओउ[3] अइअसहमाण ।
सिसुससि भग्गउ[4] ण वलयखडु   मउलियउ कमलु ण ताहि तुडु ।
विक्खिण्णउ[5] पत्तु दियतपारु   तारायणु णावइ तुट्टु हारु ।
गय णिसि उययायलकरिहि चडिउ   तमवइरिणरिदहु समरि भिडिउ ।
उग्गउ उण्णइ पहरेण पत्तु   परिपालियखत्तु व रायउत्तु ।
दिणयरु विहडावियपउमसीउ   सोहइ णावइ दहवयणु वीउ ।

पश्चिम दिशा) के सग पड जाते है, मानो पक्षिकुल यह कह कर चिल्ला रहा है, अधकार का नाश करने वाला (सूर्य) अधोमुख जाता हुआ नरक के पक्ष को दिखा रहा है। यहाँ जिसने राम की पत्नी का अपहरण किया है, वह भी इसी मार्ग से जाएगा । कमलो को खिलाने वाला सूर्य अस्त को प्राप्त हो गया, हजार किरणो के द्वारा भी वह नही पकडा जा सका ।

घत्ता—पतित होता हुआ और अधोमुख जाता हुआ क्या अकेला सूर्य ही है ? विश्व मे लक्ष्मी के घर से निकले हुए मद व्यक्तियो से किसकी रक्षा की जा सकती है ?

(2)

मानव जाति के घर भरतक्षेत्र के ऊपर, जो विचरण कर अपना दिन बिताता है, ऐसा सूर्य सीता, राम और लक्ष्मण के आनन्द के समान जब अस्त को प्राप्त होता है, तो आकाश की लक्ष्मी विधवा होती हुई, समस्त आकाश रूपी तीर को आच्छादित करने वाली वह सध्या मानो राग रूपी वस्त्र को पहिन लेती है । दिनपति के वियोग को नही सहन करती हुई, उसने बाल चन्द्र को इस प्रकार खडित कर दिया मानो अपना वलयखड ही खडित कर दिया हो । कमल मुकुलित हो गया, मानो उसका मुख ही मुरझा गया हो । जो इधर-उधर विकीर्ण होकर दिगत पर्वत पहुँच चुका है, ऐसा तारागण मानो उसका टूटा हुआ हार है । रात्रि व्यतीत हो गई । उदयाचल रूपी महागज पर चढा हुआ वह (सूर्य) अधकार रूपी शत्रु राजा से युद्ध मे भिड गया । जिसने क्षात्र धर्म का परिपालन किया है, ऐसे राजपुत्र के समान जो एक प्रहर (प्रहार)

---

(2) 1. AP जामत्थमिउ णेसरो । 2. A सझाराए । 3. A °विओयमइ° । 4 AP ण भग्गउ । 5. APT विक्खिण्णउ पत्तदियतरालु ।

णं सीयाविरहहुयासचडु णं तियसाणीकरघुसिणुपिंडु ।
णं दिसकामिणिसिरि[6] रत्तु फुल्लु णं खयररायतणुरुहिरतल्लु ।
घत्ता—हयसीयउ[7] कयरणागमणु अइरत्तउ सउहाइयउ[8] ।।
दीहरपहरीणे[9] राहविण रवि परवारु[10] व जोइयउ ।।2।।

3

दुवई—पुच्छिउ तेण तेत्थु णियपरियणु वालमरालगामिणी ।।
कहि सा सीय भणसु भो लक्खण सइगुणरयणसामिणी[1] ।।छ।।
तं णिसुणिवि भायरु कहइ एव जावहिं तुहु[2] गउ मृगमग्गि देव ।
जावहि हउं अच्छिउ सरवरंति[3] तावहिं जि ण दिट्ठी उववणंति ।
विण्णवइ एव भिच्चयणु सव्वु कंदइ उब्भियकरु गलियगव्वु ।
एवहिं जाणइ दीसइ जियंति जइ तो[4] तुहु पुण्णाहिउ ण भंति ।
तं णिसुणिवि मुच्छिउ पडिउ रामु जलसिंचिउ उट्ठिउ खामखामु ।
सीयलु विसु विमु व ण संति जणइ हरियंदणु सिहिकुलु अगु छणइ ।

मे उन्नति को प्राप्त हो गया । जिसने पद्म सीय कमलो की शीत (राम और सीता) को विघटित कर दिया है, ऐसा दिनकर दूसरे दशमुख के समान शोभित होता है । मानो वह सीता देवी की विरह रूपी ज्वाला से प्रचड है, मानो इन्द्राणी के हाथो के केशर से पीत शरीर है, मानो दिशा रूपी कामिनी के सिर पर रक्तपुष्प है, मानो विद्याधर राजा के शरीर के रक्त का तालाव है ।

घत्ता—लम्बे रास्ते से थके राघव ने सूर्य को रावण के समान देखा जो शीत दूर करने वाला (सीता का अपहरण करनेवाला) युद्ध के लिए आगमन करनेवाला, अत्यन्त रक्त (अनुरक्त) और सामने दौडता हुआ है ।

(3)

दुवई—राम ने वहाँ अपने परिजनो से पूछा—हे लक्ष्मण, बताओ बाल-हस के समान गतिवाली तथा सतीत्व गुणरूपी रत्नो की स्वामिनी वह सीता बताओ कहाँ है ?

यह सुनकर भाई ने इस प्रकार कहा—हे देव, जब तुम हरिण के मार्ग पर गए थे, और जब मैं सरोवर मे था, तब वह उपवन मे दिखाई नही दी। समस्त भृत्यजन भी निवेदन करते है, और दोनो हाथ उठाकर गलितगर्व रुदन करते है कि यदि इस समय जानकी जीवित दिखाई देती है, तो तुम पुण्यशाली हो। इसमे भ्राति नही। यह सुनकर राम मूर्छित होकर गिर पडे। पानी छिडकने पर अत्यन्त दुर्बल वह उठे। शीतल जल भी विष की तरह उन्हे शांति उत्पन्न नही करता, हरिचन्दन भी अग्निकुल की तरह शरीर को जलाता। कमल भी सूर्य के साथ अपनी

6 A दिसिकामिणिकररत्तु फुल्लु। 7 AP हिय°। 8 A सविहायउ, P सउहाइउ। 9 P °पहरेण। 10. AP परिवारु वि जोइउ।

(3) 1. A सयगुण°। 2. AP गउ तुहु भिग°। 3. A सरवणति। 4. P तइ।

णलिणु वि सूरहु सयणत्तु वहइ सयणीयलि घित्तउ देहु डहइ ।
पियविरहु[5] जलद्दइ सिहि व जलइ चमराणिलु तासु सहाउ[6] घुलइ ।

घत्ता—सरु गेयहु वइरिविमुक्कसरु कव्वु कायकव्वासउ ॥
विणु सीयइ भावइ राहवहु णाडउ णाडयपासउ ॥3॥

4

दुवई—जलि थलि गामि गामि पुरि घरि घरि गिरिकंदरणिवासए ॥
जोयहु[1] कहिं मि घरिणि जइ जाणहु वहुदुग्गमपवेसए ॥छ॥

अवियाणिउ जगि को कहइ कासु पेसिय किंकर दससु वि दिसासु ।
सइ काणणि रहुवइ हिंडमाणु पुच्छइ वणि[2] मिगइ अयाणमाणु ।
रे हंस हंस सा हंसगमण पइ दिट्ठी कत्थइ[3] विउलरमण ।
चंगउ चिम्मक्कहु[4] सिक्खिओ सि महु अकहंतु जि खल कि गओ सि ।
रे कुंजर तुहु कुंभत्थलाइं ण महु[5] महिलाइ थणत्थलाइं ।
सारिक्खउ लइयउ एउ काइं भणु कंतइ कहिं[6] दिण्णइं पयाइं ।
सारंग कहहि महु जणयधीय णयणहि उवजीविय पइं मि सीय ।
अलि घरिणिकेसणिद्धत्तचोर णिसि सररुहदलकयवंधणार ।

स्वजनता प्रकट करता है, शयनतल पर रखा गया भी वह देह को जलाता है। जल से गीले वस्त्र भी प्रियविरह की आग के समान जलाते है, और चवरो की हवा उनकी सहायक हो जाती है।

घत्ता—गीत का स्वर शत्रु के द्वारा छोडे गए शर के समान मालूम होता है, और काव्य-शरीर का मासभक्षक होता है । विना सीता के राम को नाटक, नाटक-बंधन के समान लगता है।

(4)

दुवई—जल थल ग्राम ग्राम-पुर घर-घर और जिनमे प्रवेश दुर्गम है, ऐसे गिरि-कदरा के निवासो मे कही भी देखो, यदि गृहिणी वहाँ मिल जाए।

अविज्ञात को विश्व मे कौन किस से कहता है ? इसलिए दसों दिशाओ मे अनुचरो को भेज दिया जाए ! राम स्वय कानन में अज्ञानी की तरह भ्रमण करते हुए पशु-पक्षियो से पूछते है—हे हंस, तूने उस विपुल रमण करने वाली हंसगामिनी को देखा है ? तूने सुदर चलना सीख लिया है । हे दुष्ट, मुझसे कहे विना तुम कहाँ चले गए थे ? रे गज, ये तुम्हारे कुंभस्थल है, मेरी पत्नी के स्तनस्थल नही है । तुमने यह समानता क्यो ग्रहण की ? वताओ काता ने किस ओर पग दिए है ? हे मृग, तुम वताओ कि जनक की बेटी, मेरी सीता के नेत्रो से तुम उपजीवित हुए थे ? मेरी गृहिणी के केशों की स्निग्धता को चुराने वाले तथा रात्रि मे कमल दल में अपना वन्धन करनेवाले हे भ्रमर, तुम मेरी

5. A विरहजलद्दइ । 6 A सहासु ।

(4) 1 A जोवहु । 2 A वणमिगइ । 3 A कत्थवि । 4 P चिमक्कहु । 5. A ण महु महिलहि घणथणथलाइ ।6. A कि ।

ण वियाणहि कतहि तणिय वत्त रे णीलगीव घणरामवत्त[7]।
णच्चंति दिट्ठ भणु कहिं मि देवि इयरह कहि णच्चहि भाउ लेवि।
रे कीर ण लज्जहि जपमाणु जइ दिट्ठउ पइ मुद्धहि पमाणु।

घत्ता—णिरु विरहे झीणउ दासरहि देविहि अज्जु जि सुच्चहि ॥
णीसेसजीवसतावहर मेह दूअउ[8] तुहु वच्चहि ॥4॥

5

दुवई—अइउक्कठिएण धरणीसे सज्जणदिण्णजीयय ॥
ता दिट्ठं मयच्छिथणकुकुमपिजरु[1] उत्तरीयय ॥छ॥

दीसइ वसग्गविलवमाणु ण रिउ[2] गयगयणगणणिवाणु।
ण दावइ कतहि तणिय वट्ट इह दहमुहमारीयइ[3] पयट्ट।
ण उब्भिय सीयइ सइवडाय त लेप्पिणु किकर झ त्ति आय।
आलिंगिउ रामे णीससेवि पुणु वाहुल्लइ णयणइ पुसेवि।
जपिउ णिय सुदरि खेयरेहिं मायाविएहिं रणदुद्धरेहिं[4]।
सहु लक्खणेण सदेहि छूढु जामच्छइ पहु किकज्जमूढु।
तावायउ दूयउ दसरहासु ते घित्तु पत्तु आलिहिउ तासु।
उच्चाइवि त सहसा सिरेण इय वाइउ देवे हलहरेण।

काता का समाचार नही जानते ? हे सुन्दर रमणीय पूँछवाले मयूर बताओ, क्या तुमने देवी को कैसे नृत्य करते हुए देखा ? अन्यथा तुम उसका भाव ग्रहण कर कैसे नाच रहे हो ? हे शुक, तू बोलता हुआ लजाता नही है, क्या तू मेरी पत्नी का पता जानता है ?

घत्ता—पवित्र देवी के विरह मे राम आज भी अत्यन्त क्षीण हैं। नि शेषजीवसतापहर हे मेघ, तुम दूत हो तुम बताओ।

(5)

दुवई—अत्यन्त उत्कठित धरणीश (राम) ने सज्जनो को जीवन देने वाला, मृगाक्षी (सीता) के स्तनकेशर से पीला उत्तरीय देखा।

बाँस के अग्र भाग पर अवलम्बित वह ऐसा दिखाई देता है, मानो शत्रु के आकाश-प्रागण से जाने का चिह्न हो। मानो वह काता का मार्ग बता रहा हो कि दशमुख रावण के द्वारा वह यहाँ से ले जाई गई है। मानो सीता के सतीत्व की पताका उठी हुई हो। उसे अनुचर लेकर शीघ्र आए। राम ने नि.श्वास लेकर उसका आलिगन किया और फिर बाँहो से अपने नेत्रो को पोछ कर कहा—मायावी और अत्यन्त दुर्धर विद्याधरो द्वारा सीता ले जाई गई है। इस प्रकार जब राम लक्ष्मण के साथ सदेह मे किकर्त्तव्यविमूढ थे, तभी शीघ्र दशरथ राजा का दूत आया, और उसने उनका लिखा हुआ पत्र (सामने) रख दिया। उसे सहसा उठाकर देव बलभद्र राम

7 A घणरावमत्त, P घणरामपत्त, T घणरावमत्त अतिशयेन रमणीयपिच्छ। 8. AP दूउ।

(5) 1 AP °पिंजरि। 2 A ण रिउ गयणगणि णिज्जमाणु। 3. AP °मारीयय। 4 P रणि दुद्धरेहिं।

दसरहु जिणचरणभोयभसलु[5]   उवइसइ सुयहं णियदेहकुसलु।
मइ दिट्ठउ सिविणउ हयविलासु   हिय राहु[6] रोहिणि ससहरासु।

घत्ता—एक्कल्लउ ससि णहयलि भमइ अवलोइवि अवहारिउ ॥
वज्जरिउ पहाइ पुरोहियहु तेण वि मज्झु वियारिउ[7] ॥5॥

6

दुवई—जो दिट्ठउ विडप्पु सो रावणु जा णिसि पइं विलोइया ॥
रोहिणि तुहिणकिरणविच्छोइय सा तुह सुयविओइया ॥छ॥

परमत्थे जाणमु राय सीय   अज्जु जि खयरिंदे घरहु णीय।
जा हिप्पइ सा[1] पुणरवि णिरुत्तु   ता किज्जइ णियदेहहु पयत्तु।
जे[3] चक्कवट्टि पालइ सजीव   भरहंतरालि छप्पण्ण दीव।
तहिं सायरि लंकादीवु अत्थि   अण्णु वि तिकूडु गिरि मणिगभत्थि।
पुरि लंक राउ दहवयणु णाम   णिय तेण सीय रामाहिराम।
आयण्णिवि विसरिसविसम वत्त   ते बे वि भरह सत्तुहण पत्त।
हिंसंततुरय गज्जंतणाय   सामंत सुहड दसदिसिहिं आय।
आवेप्पिणु तणयासोक्खहेउ   ससुरेण णिहालिउ रामएउ।
दुम्मणु जोइवि रिउमद्दणेण   गलगज्जिउ तेत्थु जणद्दणेण।

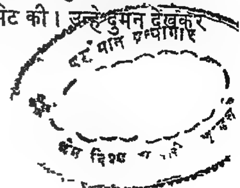
ने सिरे से उसे पढ़ा—"जिनवर के चरणकमलो का भ्रमर राजा दशरथ पुत्रो को अपनी देह की कुशलता का आदेश करता है। मैने स्वप्न मे देखा कि राहु द्वारा चन्द्रमा की छतविलास रोहिणी का अपहरण किया गया है।

घत्ता—अकेला चन्द्रमा आकाश मे परिभ्रमण करता है, यह देखकर मैने समझ लिया और सवेरे पुरोहित से कहा। उसने मुझे बताया—

(6)

तुमने जो राहु देखा है, वह रावण है, और जो तुमने रात्रि मे चन्द्रमा से वियुक्त रोहिणी को देखा है, वह तुम्हारे पुत्र से वियुक्त सीता है।

हे राजन्, तुम इसे परमार्थ जानो कि आज ही वह विद्याधर के द्वारा घर ले जाई गई है। यदि उसे फिर से वापस लाना है तो निश्चय ही अपनी देह से प्रयत्न करना चाहिए। चक्रवर्ती जो भरतक्षेत्र मे जीव सहित छप्पन द्वीपो का परिपालन करता है उसके समुद्र मे लका द्वीप है। और भी त्रिकूट मणि किरण आदि द्वीप है। लका नगरी मे राजा रावण है, उसके द्वारा स्त्रियो मे सुन्दर सीता का अपहरण किया गया है। यह असमान विपतुल्य बात सुनकर भरत और शत्रुघ्न दोनो वहाँ पहुँचे। हिनहिनाते हुए घोडे, गरजते हुए हाथी, सामत और सुभट दसो दिशाओ से आये। पुत्रो के सुख के कारणभूत राम देव से ससुर ने भी आकर भेट की। उन्हे दुर्मन देखकर शत्रु का मर्दन करनेवाला लक्ष्मण एकदम गरज उठा।



5 AP जिणकमलभोय°। 6 A राहे। 7 AP वियारियउ।
(6) 1 A सो। 2 A जो। 3 उद्धयकेसरु।

घत्ता—रिउ जरकुरंगु महु आवडइ हउं हरि उद्धुयकेसरु[3] ॥
जइ दुट्ठु दिट्ठिगोयरि पडइ तो मारमि लंकेसरु ॥6॥

7

दुवई—सीयागुणविसेससंभरणचुयसुयसित्तवसुमई ॥
उम्मोहिउ विओयविसधारिउ कह व णिवेहि महिवई[1] ॥छ॥

पियविप्पओयकद्दमणिमण्णु[3] जांवच्छइ सेज्जायलि णिसण्णु ।
तावाय बेण्णि खग विमलदेह ण रामसासथिरकरणमेह ।
ण सीयामग्गपयासदीव बेण्णि वि पणवेप्पिणु थिय समीव ।
सम्माणिय हरिणा सणिसण्ण सुहिदंसणरुहरोमंचभिण्ण ।
वोल्लाविय बेण्णि वि दिव्वकाय कहु तुम्हइं किं किर एत्थु आय ।
तं णिसुणिवि भासइ जेट्ठु खयरु खगदाहिणसेढिहि अत्थि णयरु ।
णामें किलिकिलु कलहंससहिय जहिं विविहवास चोरारिरहिय ।
तहिं महु[4] वलिदु माणियपियंगु तहु धण पियंगसुंदरि[5] पियंगु ।
सामल सलोण उडुणिहणहालि तहि पढमपुत्तु णामेण वालि ।
हउ लहुयारउ सुग्गीउदेव अणवरउ करमि णियपियरसेव ।

घत्ता—ता तेत्थु मरंते पुरि पिउणा वालि रज्जि वइसारिउ ॥
हउ जुवराणउ कउ मइं जणणि[6] दाइएण णीसारिउ ॥7॥

घत्ता—शत्रु मुझे बूढे हरिण की तरह प्रतीत होता है। मैं, जिसकी अयाल ऊपर उठी हुई है, ऐसा सिंह हूँ। यदि वह लंकेश्वर मेरी निगाह में पड़ता है, तो मैं उसे मार डालूँगा।

(7)

सीता के गुण विशेष के स्मरण से गिरे हुए आँसुओं से जिन्होंने धरती को सिंचित कर दिया है, ऐसे वियोग के विष से व्याकुल महीपति राम को राजाओं ने किसी प्रकार समझाया।

प्रिया के वियोग के कीचड़ में निमग्न राम जब अपनी सेज पर बैठे हुए थे, तब पवित्र शरीर विद्याधर ऐसे आए मानो, राम रूपी धान्य को स्थिर करने के लिए मेघ हो, मानो सीता के मार्ग को प्रकाशित करने वाले दीप हो। दोनों प्रणाम करके वहाँ पास में बैठ गए। बैठे हुए उनका लक्ष्मण ने सम्मान किया। सुधि और दर्शन से उत्पन्न रोमांचित दिव्य शरीर वाले उन दोनों से लक्ष्मण ने पूछा—कहाँ से किसलिए आए? यह सुनकर बड़ा विद्याधर कहता है—विजयार्ध पर्वत की दक्षिण श्रेणी में एक नगर है, जो नाम से किल-किल कलहंसों से सहित है। जहाँ चारों ओर शत्रुओं से रहित विविध आवास घर है, वहाँ जिसने प्रियंगु को माना है, ऐसा मेरा राजा वलि है। उसकी पत्नी प्रियंगु सुंदरी प्रियंगु के समान सुन्दर श्यामल और नक्षत्र पंक्ति के समान नखों वाली है। उसका पहला पुत्र बालि नाम का है, और मैं छोटा सुग्रीव देव हूँ। मैंने अनवरत रूप से पिता की सेवा की है।

घत्ता—पिता ने मरते समय बालि को राजगद्दी पर बैठा दिया, और मैं युवराज बना दिया गया। मुझे भाई ने निकाल दिया।

---

(7) 1 A वसुमई। 2 P has ता before पिय°। 3 P °णिसण्णु। 4 A पहु। 5 AP पियंगुसुंदरि। 6 A जणेण।

8

दुवई—सुणि रायाहिराय हे हलहर मणिमयसिहरमंदिरे[1] ॥
तित्थु जि रययसिहरि खगसेढिहि खणरुइकंतपुरवरे ॥छ॥
विज्जाहरु णामें अत्थि पवणु लीलाणिहि वेयविजित्तपवणु ।
तहु अंजण मणरंजणवियार महएवि वूढसिंगारभार ।
इहु मेरउ सहयरु गयगईहि तहि जायउ गब्भि महासईहि ।
पंडिउ पडु भडु विज्जाणिकेउ जगि वुच्चइ एहु जि मयरकेउ ।
एक्कहिं दिणि कोक्किवि खयरलक्ख एएं दिण्णी विज्जापरिक्ख ।
गिरिसिहरि णिवेसिउ एक्कु पाउ अण्णेक्कु[2] दिण्णु उद्दंडवाउ ।
दीहुद्धु पसारिउ गयउ ताम गयणंगणि ससि दिवसयरु जाम ।
पुणु रूवु धरिउ तसरेणुमेत्तु अणुमेत्तु मिलिवि खयरेहिं वुत्तु ।
पेक्खिवि सहायसाहसु अभेज्जु वालें महु दिण्णउ जउवरज्जु[3] ।
कालें जंतें तं हित्तु पुणु वि आसंकिवि तें सहु ण किउ रणु वि ।
गय वेण्णि वि जण माणिक्कचूडु समेयजिणालउ सिद्धकूडु ।

घत्ता—तसथावरजीवहु दय करिवि धम्मि थवेप्पिणु अप्पउ ॥
तहिं देहिदेहदुहणासयरु वंदिउ जिणु परमप्पउ ॥8॥

---

(8)

दुवई—हे राजाधिराज, हे हलधर सुनिए, वहाँ ही विजयार्ध पर्वत की विद्याधर श्रेणी के मणिमय शिखर मंदिर वाले विद्याधर विद्युत्कांत नगर में पवन नाम का विद्याधर है। अपने वेग से पवन को जीतने वाले उसकी लीलाओं की निधि और मनोरंजन के विचार से युक्त शृंगारभार धारण करने वाली अंजना नाम की महादेवी थी। गजगामिनी उस महासती के गर्भ से उत्पन्न यह मेरा सहचर है—चतुर पंडित और भटविद्या-निकेत। विश्व में इसे कामदेव कहा जाता है। एक दिन एक लाख विद्याधरों को बुलाकर इसने विद्याओं की परीक्षा दी। पहाड़ के शिखर पर इसने एक पैर रखा और दूसरा उद्दंड पैर आधा लम्बा फैलाया। वह वहाँ तक गया, जहाँ तक आकाश के आँगन में सूर्य और चन्द्रमा हैं। फिर उसने अपना रूप त्रसरेणु तथा अणु बराबर बनाया। विद्याधरों से मिलकर उसका अभेद्य स्वभाव और साहस देखकर वालि ने मुझे युवराज पद दे दिया। लेकिन समय बीतने पर उसने अपहरण कर लिया। आशंकित होकर हमने उसके साथ युद्ध नहीं किया। हम दोनों, जिसके शिखर माणिक्य के हैं ऐसे, सिद्धकूट समेदजिनालय गये।

घत्ता—वहाँ त्रसस्थावर जीवों की दया कर और अपने आपको धर्म में स्थापित कर शरीरधारियों के शरीर के दुःखों का नाश करने वाले परमात्मा जिनदेव वंदना की।

---

(8) 1 A रमणिगणदित्तमंदिरे, P रमणियसियमंदिरे। 2 P adds वि after अण्णेक्कु। 3. A जुउविरज्जु, P जुउवरज्जु।

9

दुवई—जय देविंदचंदखयरिंदफणिंदणरिंदपुज्जिया[1] ॥
जय णिट्ठवियदुट्ठकम्मट्ठट्ठारहदोसवज्जिया[2] ॥छ॥
ण भोएसु कखा ण णिद्दा ण भुक्खा ।
ण तण्हा ण सोओ ण राओ ण रोओ[3] ।
ण चाव ण वेरी ण ताण[4] ण मारी ।
ण काय[5] ण चेल ण सीस सिहाल ।
ण णिदा ण थोत्त ण मुद्दापवित्त[6] ।
ण हिसाइ सग्गो ण सोडालमग्गो[7] ।
ण गोभूमिदाणं ण[8] वेओ पमाण ।
ण चम्मुत्तरीय[9] ण जण्णोववीय ।
उरे णत्थि सप्पो मणे णत्थि दप्पो ।
पसूणतयाल करे णत्थि सूल ।
सिरे णत्थि गगा जडागोवियगा[10] ।
भवाणी ण देहे रई णो सणेहे[11] ।
पुरारी ण कामी तुमं मज्झ सामी ।
जिणो मोक्खहेऊ भवभोहिसेऊ ।
घत्ता—जय परमणिरजण जणसरण[12] वीयराय जोईसर ॥
जलि पत्थरि पाणिइ धम्मु णउ तुहु जि धम्मु परमेसर ॥9॥

(9)

देवेन्द्र चन्द्र विद्याधरेन्द्र नागेन्द्र और नरेन्द्रो के द्वारा पूज्य, आपकी जय हो। जिन्होने आठो दुष्टकर्मो का नाश कर दिया है, और जो अठारह दोषो से रहित है, ऐसे आपकी जय हो।

न भोगो मे आकाक्षा है, न नीद है, और न भूख, न तृष्णा है, और न शोक, न राग है, और न रोग। न चाप है, और न शत्रु है, न त्राण है, और न मारी। न शरीर है, और न वस्त्र है और न जटायुक्त सिर है, न निन्दा है और न स्तुति, न पवित्र मुद्रा है। न हिसादि से स्वर्ग है, न सुरा मार्ग है, न गौ और भूमि का दान है, न वेदो का प्रमाण है, न चर्म का उत्तरीय (मृगछाला) है और न यज्ञोपवीत है। उसपर सर्प नही है, मन मे दर्प नही है, पशु-पशुओ का अन्त करने वाला शूल हाथ में नही है। न सिर पर गगा है, न जटाओ मे गुप्त अग है। न देह मे भवानी है और न स्नेह मे रति है, और न त्रिपुर शत्रु है, न कामी है। हे देव, आप मेरे स्वामी है। जिनदेव ही मोक्ष के कारण है, भवरूपी समुद्र के सेतु है।

घत्ता—हे परम निरजन जनशरण, आपकी जय हो। हे वीतराग ज्योतीश्वर, आपकी जय हो, जल, पत्थर और पानी मे धर्म नही है। हे परमेश्वर, धर्म आप ही हैं।

(9) 1 AP °पुज्जिय। 2. AP °वज्जिय। 3 AP पाओ। 4 AP ताव। 5. A ण काय सुचेल, P ण काये सुचेल। 6 AP ण मुद्दा ण वित्त। 7 A ण सो जण्णमग्गो। 8 AP ण वेउप्पमाण। 9 A वसुत्तरीय। 10 P जडग्गोवियगा। 11 AP सणाहे। 12 P जगसरण।

10

दुवई—दिणयरु हरइ तिमिरु सलिलु वि तिस खगवइ विसवियभिय ॥
जिण तुह दसणेण खणि णासइ गुरुदुरिय णिसुभिय ॥छ॥

इय वदिवि जिणवरु सेस लेवि खणु एक्कु जाम तहिं थक्क बे वि ।
ता तेयवतु ण विज्जुदडु[1] ण सुरवरसरिडिडीरपिंडु ।
वियडजडजूडु विवरीयवाणि मणिरयणकमंडलु[2] दडपाणि ।
खणखणियमणियगणियक्खसुत्तु[3] कोवीणकणयकडिसुत्तजुत्तु ।
ससहरु व विसाहारूढगत्तु असुरसुरसमरसणिहियचित्तु ।
सोत्तरियफुरियउववीयवतु ता दिट्ठउ णारउ गयणि एतु ।
अरहतु णवेप्पिणु सुहु[4] णिविट्ठु अम्हहि सभासणु करिवि दिट्ठु ।
तुहु जाणहि णिसुयसुयगरिद्धि पुच्छिउ पावेसहु किह सरिद्धि ।
मुहु वकइ सकइ वालि कासु को देसइ कुलरज्जावयासु ।
ता दाणवमाणवरणरएण विहसेप्पिणु वोल्लिउं णारएण[5] ।

घत्ता—भो खेयरपहु भूगोयरु वि धुउ तिजगुत्तमु भावहि ॥
सेवहि रामहु पणपकयइ जइ तो कुलसिरि पावहि ॥10॥

---

(10)

दिनकर अधकार को नष्ट करता है, जल प्यास को और गरुण विष के फैलाव को। हे जिन, तुम्हारे दर्शन मात्र से भारी पाप एक क्षण मे चूर-चूर हो जाते है।

इस प्रकार जिनवर की वन्दना कर निर्माल्य लेकर जैसे वे दोनो एक क्षण के लिए ठहरे कि इतने मे तेज से युक्त मानो विद्युत दड हो, मानो देव-गगा का फेन समूह हो, विकट जटा-जूट वाला, विपरीत वाणी वाला, जिसका कमडलु मणि और रत्नो का है, जो हाथ मे दण्ड लिये हुए है, जो खनखनाता हुआ, मणियो का अक्षसूत्र जप रहा है, कोपीन और कनक कटिसूत्र से युक्त जो विशाखा नक्षत्र मे रूढ चन्द्रमा के समान पाडुगात्र पर आरूढ है, जो असुर और सुरो के युद्ध में समाहित चित्त है, जिसके उत्तरीय पर यज्ञोपवीत चमक रहा है, ऐसे नारद को आकाश में आते हुए देखा। अरहत को प्रणाम करके वह सुख से बैठ गए। हम लोगो ने सभाषण करने के लिए उनसे भेट की और पूछा—आप निश्रुत और श्रुताग की ऋद्धि को जानते है, हम अपनी ऋद्धि कब प्राप्त करेगे ? वालि किससे मुख टेढा रखता है और आशंका करता है ? कुलराज्य का आलिंगन कौन देगा ? तब दानवो और मानवो के युद्ध मे रत नारद ने हँस कर कहा—

घत्ता—हे विद्याधर स्वामी, भूगोचर (मनुष्य) भी विजय मे उत्तम होते है। यदि तुम राम के चरणकमल चाहते हो, और सेवा करते हो, तो कुललक्ष्मी प्राप्त कर सकते हो।

---

(10) 1 AP विज्जदडु । 2 AP मणिरइय° । 3 A °गलियक्ख° । 4 A सहु । 5. V विहसे-विणु ।

11

दुवई—अण्णु वि हरिणणयण णियपणइणि तासु दसासराइणा ॥
विरसियअमरडमरडिंडिमरवरिउवहुतासदाइणा ॥छ॥
दुक्खेण ण याणइ दियहु रत्ति जो दावइ कतहि तणिय वत्ति ।
सो जाणमि जिह भमरहु सुगंधु तिह रामहु होसइ परमबधु ।
लब्भइ मणोज्जकज्जेण[1] कज्जु सो देसइ तुह[2] सुग्गीव रज्जु ।
त णिसुणिवि आया एत्थु राय जलयग्गिसिंगसणिहियपाय ।
ते णहयर पुज्जिय राहवेण सभासिय तोसिय माहवेण ।
हणुमते मग्गियपेसणेण जपिउ णवजलहरणीसणेण ।
भो दसरहणदण णद णंद मा झिज्जहि सज्जणकुमुयचद ।
णियरामालोयणकयपयत्त हउं आणमि सीयहि तणिय वत्त ।

घत्ता—सुग्गीवहु मुहु पप्फुल्लियउ[3] मित्तवयणु पडिवण्णउ ॥
अहिणाणु लेहु अगुत्थलउ रामे हणुयहु दिण्णउ ॥11॥

12

दुवई—ता णविउ पयाइ हलहेइहि णवदलणलिणणिहमुहो ॥
उल्ललिओ[1] णहेण पवणो इव चलगइ पवणतणुरुहो ॥छ॥

---

(11)

और भी विशेष रूप से बजाए गए अमरो के लिए भयानक डिडिम के शब्द से शत्रु के लिए अत्यधिक त्रास देने वाला राजा दशानन उनकी मृगनयनी प्रणयिनी को ले गया है । वह दु ख के कारण दिन रात नही जानती । जो पत्नी की वार्ता को बताएगा, मैं जानता हूँ, कि भ्रमर के लिए सुगन्ध की तरह वह राम का परम बधु होगा । मनोज्ञ काम से ही मनोज्ञ कार्य प्राप्त किया जाता है । हे सुग्रीव, वे तुम्हे राज्य दे देगे । यह सुनकर, हे राजन्, हम लोग यहाँ आये है । मेघो के अग्र शिखरो पर चरण रखने वाले उन विद्याधरो का राम ने सम्मान किया । लक्ष्मण ने बात कर उन्हे सतुष्ट किया । आदेश चाहने वाले तथा नवमेघ के समान शब्द वाले हनुमान् ने कहा—हे दशरथपुत्र, तुम प्रसन्न होओ, तुम प्रसन्न होओ । हे सज्जन कुमुदचन्द्र तुम क्षीण मत होओ, अपनी स्त्री के अवलोकन का जिसमे प्रयत्न है, ऐसी सीता सबधी वार्ता मैं ले आऊँगा ।

घत्ता—सुग्रीव का मुख खिल गया । उसने मित्र का वचन स्वीकार कर लिया । राम ने पहिचान का लेख और अगूठी हनुमान के लिए दे दी ।

(12)

तब नवदल वाले कमल के समान मुख वाले हनुमान् ने राम के चरणो मे प्रणाम किया । पवनगति वह पवनपुत्र आकाश मार्ग से पवन की तरह उड़ गया ।

---

(11) 1. A °कज्जाण कज्जु । 2 P तुम्हह । 3. A पफुल्लियउ, P पहुल्लियउ ।
(12) 1 P has गउ before उल्ललिओ ।

तओ तेण जंतेण दिट्ठो समुद्दो पधावंतकल्लोलमालारउद्दो ।
जलुम्मग्गणिम्मग्गवोहित्थवंदो अथाहंभपब्भारसंकंतचंदो ।
झसप्फोडफुट्टंतसिप्पीसमूहो[2] णहुक्खित्तमुत्ताहलो भाणुरोहो ।
दिसाढुक्कणक्कुग्गयंत करालो चलुप्पिच्छपल्हत्थवेलाविसालो[3] ।
पवालंकुरुक्केरराहिल्लरूहो पगज्जंतमज्जंतमायंगजूहो ।
सुभीसो असोसो[4] असेसंबुवासो विडिंदु व्व पीयाहरो ढकियासो ।
सरीसंगतुंगत्तणालीढरिक्खो[5] अलंकारओ कूलकीलंतजक्खो ।
करिंदो व्व गाढं गहीरं रसंतो अहिंदो व्व पायालमूले विसंतो ।
णरिंदो व्व धीरो[6] समज्जायवंतो रिसिंदो व्व अंतोमलं णिग्गहंतो ।
गिरिंदो व्व रेहंतमाणिक्कमोहो सुरिंदो व्व देवासिओ दिण्णसोहो ।

घत्ता—गंभीरु घोरु आवत्तहरु लीलाइ जि आसंघिउ[7] ॥
संसारु व परमजिणेसरिण सायरु हणुएं लंघिउ[8] ॥12॥

13

दुवई—खेयरिचरणघुसिणमसिणारुणरयणसिलायलामलो ॥
दीसइ तहिं तिकूडु गिरि दरितरुवियसियकुसुमपरिमलो ॥छ॥

उस समय उसने जाते हुए समुद्र को देखा जो दौडती हुई लहरमाला से भयंकर था। जहाज समूह जल मे डूब उतरा रहे थे। अथाह जल के प्रवाह से चन्द्रमा आशंकित हो रहा था। मत्स्यो के आघात से सीपी समूह फूट रहे थे। आकाश मे उछलते हुए मोती किरणो को रोक रहे थे। दिशाओ मे प्राप्त मगरो से निकले हुए मध्य भाग से जो भयंकर था, जो ऊपर जाते और पीछे हटते हुए तटो से विशाल था, जिसका तट प्रवाल के अंकुरो के समूह से शोभित था, जिसमे गरजते हुए गज समूह डूब उतरा रहे थे। जो अत्यंत भीषण अशेष जल का घर था। जो विडेन्द्र (कामुक) की तरह, पीताधर (अधरो का पान करने वाला, धरा तक व्याप्त रहने वाला), ढकितास (दिशा आच्छादित करनेवाला, आशा को आच्छादित करनेवाला) था। जिसने नदियो के साथ ऊंचाई के द्वारा नक्षत्रो को छू लिया था, जो अलंकृत था, जिसके तट पर यक्ष क्रीडाकर रहे थे, करीन्द्र के समान जो पातालमूल मे प्रवेश कर रहा था, नरेंद्र के समान जो धीरऔर मर्यादा वाला था, ऋषीन्द्र की तरह जो अन्तर्मल को नाश करने वाला था, गिरीन्द्र की तरह जिसमे माणिक्य किरणे चमक रही थी, जो सुरेन्द्र के समान देवाश्रित और शोभायुक्त था।

घत्ता—गंभीर भयंकर आवर्तो को धारण करने वाले समुद्र को हनुमान् ने उसी प्रकार पार कर लिया, जिस प्रकार परम जिनेश्वर संसार को पार कर लेते हैं।

(13)

वहाँ विद्याधरियो के चरणो की केशर से चिकने और लाल, रत्नशिलातल की तरह स्वच्छ तथा जिसमे घाटियो के वृक्षो के विकसित कुसुमो का परिमल है ऐसा त्रिकूट पर्वत दिखाई दिया।

---

2 A झसुप्फाल° । 3 P चलप्पत्थ° । 4. असेसो । 5 AP °रिखो । 6. AP वीरो । 7. AP आसंघियउ । 8 AP लंघियउ ।

लबतरत्तपत्तोहतबु गुरुसिहरालिगियसूरबिबु ।
वेलापक्खलणविसट्टकबु किणरसु दरिसेवियणियबु ।
णाइणिणेउरबहिरियदियंतु णच्चियजक्खिणिरसभाववतु ।
करिमयकद्दमखुप्पतहरिणु गुमुगुमियभमिरछच्चरणसरणु[1] ।
हिंडतकालणाहलकुडबु[2] खेल्लतसरहसरहससिलिबु[3] ।
णउलउलफणिउलाढत्तसमरु चमरीमयचालियचारुचमरु ।
हरिकुंजरकलहकलालवतु[4] चुयरत्तलित्तमोत्तियफुरतु ।
दुमणियरगलियमहुवारिथिंमु[5] सबरीपरियदणसुत्तडिंभु ।
हयमुहकिलिकिंचियसद्दरम्मु[6] महियरदुग्गमु णहयरह गम्मु ।
घत्ता—णावइ णिउणइ महिकामिणिइ एइ सग्गपरिछदहु[7] ॥
गिरिणियकरु उब्भिवि णिहिय तहिं दाविय लक सुरिंदहु ॥13॥

14

दुवई—परिहादारतोरणट्टालयधयजयलच्छिसगमा ॥
लकाणयरि दिट्ठ हणुमंतें[1] मणिपायारदुग्गमा ॥छ॥
दीहत्ते बारह जोयणाइ वित्थारे णव हियलोयणाइ ।
बत्तीस विसालइ गोउराइ मोत्तियमरगयघडियइं घराइ ।

जो लटकते हुए रक्त पत्र समूह से लाल था, जिसके गुरु शिखर पर सूर्य अवलबित था, तटो के प्रस्खलन से जिसमे शख टूट चुके थे, जिसके तट किन्नरियों के द्वारा सेवित थे, नागिनो के नूपुरो से जहाँ दिगत बहरा था, जो नृत्य करती हुई यक्षिणियों के रस भाव से युक्त था, जहाँ गजो के मदजल की कीचड मे हरिण निमग्न हो रहे थे, जो गुम-गुम करते भ्रमणशील भ्रमरो की शरण था, जिसमे कोल भीलो के कुटुम्ब घूम रहे थे, जिसमे शरभ के बच्चे हर्ष पूर्वक क्रीडा कर रहे थे, जिसमे नकुल कुल और नागकुल में युद्ध प्रारम्भ होने जा रहा था, जिसमे चमरी-मृगो के द्वारा सुन्दर चमर चलाए जा रहे थे, जो सिंहो और गजों के युद्ध से रक्त रजित था, जहाँ रक्त मे गिरते हुए मोती चमक रहे थे, जो वृक्षसमूह से झरते मधुजल मे आर्द्र था। जिसमे भीलनियो के द्वारा आदोलित बच्चे सो गए थे, जो अश्वो के सुरति-शब्द से सुन्दर था, जो पर्वतो से दुर्गम और विद्याधरो के लिए गम्य था।

घत्ता —मानो निपुण धरती रूपी कामिनी द्वारा गिरि रूपी अपना हाथ उठाकर उस पर स्थित लका नगरी देवेन्द्र के लिए दिखाई जा रही हो कि स्वर्ग का प्रतिबिम्ब आ रहा है।

(14)

परिखाओ, द्वारो, तोरणो, नाट्य-गृहो और विजयलक्ष्मी का जिसमे सगम है, ऐसी मणियो के प्रकारो से दुर्गम लका नगरी हनुमान् ने देखी। लम्बाई मे जो बारह योजन थी, और विस्तार मे हृदय को आकर्षित करने वाली नौ योजन। उसमें बडे-बडे बत्तीस गोपुर थे। मोतियो और पन्नो से विजडित घर थे। जहाँ कपूर की धूल, धूल के रूप मे व्याप्त थी जहाँ कल्पवृक्ष, वृक्ष थे,

(13) 1. AP °भमिय° । 2. AP हिंडतकोल° । 3. AP सछाइयतरुदलसूरबिबु । 4 A °किलाल-वतु । 5. AP °महुपाणथिंमु । 6 AP हयमुहि° । 7. पडिछदहु ।

(14) 1 AP हणवतें ।

जहिं घुलइ रेणु कप्पूररेणु सुरतरु तरु धेणु वि कामधेणु।
वणु णहवणु वेल्लि वि णायवेल्लि रणु रइरणु भल्लि वि मयणभल्लि।
जरु विरहजरु² जि णउ अत्थि अण्णु वहुवण्णचित्तु³ णउ चाउवण्णु।
घरु सिरिघरु चोर⁴ वि चित्तचोर वज्झंति केस रोवंति मोर।
वउ णववउ रूवु वि णिरु सुरूवु रिसि खीणदेहु वम्महु विरूवु।
रिणु तिलरिणु वधणु पेम्मवधु जलु चदकतजलु दलु सुगधु।
कामिणि खगकामिणि अलिवमालु धूमु वि कालागरुधूमु कालु।
दीव वि जलति माणिक्कदीव जीव वि वसंति जहिं भव्वजीव।
गुणु⁶ जिणगुणु धम्मु अहिंसधम्मु फलु पुण्णफलु जि कम्मु वि सुकम्मु।
किं वण्णमि भूमि वि भोयभूमि सामि वि दहमुहु खयरायसामि।

घत्ता—एक्केक्कउ जो गुण सभरइ सो तहु अतु ण पेक्खइ॥
जगसुदरत्तु⁷ लंकहि तणउ कवणु कईसरु अक्खइ॥14॥

15

दुवई—कलरवु रुणुरुणतमाणिणिमुहमंडणु जणमणिट्ठओ॥
छडयणरूवधारि ता पावणि रावणभवणि पइट्ठओ॥छ॥

और कामधेनुएँ धेनुएँ थी। जहाँ नखव्रण (व्रण और वन) वन थे। जहाँ रति युद्ध था, दूसरा युद्ध नही था। जहाँ काममल्लिका मल्लिका थी, दूसरी मल्लिका नही थी। ज्वर भी विरह ज्वर था, दूसरा ज्वर नही था। जहाँ अनेक रगो का चित्त था, परन्तु चतुर्वर्ण्य नहीं था; जहाँ घर लक्ष्मी का घर था, और चोर भी चितचोर थे, जहाँ केश बाँधे जाते थे, और मयूर आवाज करते थे। जहाँ उम्र नई उम्र थी और रूप भी स्वरूप था। जहाँ ऋण तिलऋण था, और बधन प्रेम-बँधा था, जहाँ जल चन्द्रकात मणि का जल था और दलो मे सुगन्ध थी। जहाँ कामिनियाँ विद्याधर कामिनियाँ थी। भ्रमरो का कलकल शब्द था, काला गुरु काला धूम था। माणिक्य के ही माणिक्य के दीप जलते थे, जिनगुण ही गुण थे। अहिंसा धर्म ही धर्म था। जहाँ पुण्यफल ही फल था और सुकर्म ही कर्म था। क्या वर्णन करूँ, वह भूमि भोगभूमि थी और उसका स्वामी विद्याधर स्वामी रावण था।

घत्ता—जो उसके एक-एक गुण को याद करता है, वह उसके अन्त को नही देख पाता। लका के विश्व सौन्दर्य का कौन कवीश्वर वर्णन कर सकता है?

(15)

जिसका शब्द सुन्दर है, जो गुनगुनाती हुई माननियो के मुख का मडन है, जो जनमन के लिए इष्ट है, ऐसे भ्रमर का रूप बनाकर हनुमान् ने रावण के भवन मे प्रवेश किया।

---

2. AP विरहजूरु णउ। 3 A वहुवण्णु चित्तु गउ वाउवण्णु, P वहुवण्णु चित्तु णउ वाउवण्णु। 4 AP चोरु वि चित्तचोरु। 5 A णिरुवु। 6. A गुण जिणगुण। 7 AP जगि सुदरत्तु।

चक्केसरु वरलक्खणपसत्थु दिट्ठउ दहमुहु सीहासणत्थु।
ण गिरिसिहरासिउ णीलमेहु पण्णारहचावपमाणदेहु।
चामीयरवीढि णिहित्तचरणु वलवतकालु बलहीणसरणु।
विज्जिज्जइ चलचमरीरुहेहिं वण्णिज्जइ वरवदिणमुहेहिं।
गाइज्जइ सरगयभावएहिं सलहिज्जइ सुरणरसेवएहिं।
दीसइ णवकप्पद्दुमफलेहिं माणससरवररत्तुप्पलेहिं।
मउडग्गरयणमहियललिहेहिं पणविज्जइ सुरवइसणिहेहिं।
चिंतइ मारुइ उव्विण्णचित्तु[1] हा एण णिहित्तउ परकलत्तु[2]।

घत्ता—एसज्ज एउ एवड्डु कुलु तो वि कयउ[3] सकलकणु॥
हयविहि सुवण्णभिगारयहु खप्परु दिण्णउ ढकणु॥15॥

16

दुवई—पुणु णिवसवणपूरकत्थूरियपरिमलगहणकुसलओ॥
दहमुह देहि सीय मा णासहि ण गुमुगुमइ भसलओ[1]॥छ॥
सो सइ जि कामु णं कामबाणु तरुणीविबाहरि[2] ढुक्कमाणु।
कोमलकरयलवारिज्जमाणु चमराणिलेण पेरिज्जमाणु
थणजुयलि णाहिमडलि घुलतु पिछहि कवोलपत्तइ[3] दलतु।

उसने उत्तम लक्षणो से युक्त चक्रेश्वर दशमुख को सिहासन पर बैठे हुए देखा। मानो नील मेघ पर्वतशिखर पर आश्रित हो। उसका शरीर पन्द्रह धनुष प्रमाण था। स्वर्णपीठ पर अपने पैर रखे हुए था। वह बलवानो के लिए काल था और बलहीनो के लिए आश्रयदाता था। चमरी गाय के बालों से जिसे हवा की जाती है, श्रेष्ठ चारण मुखो के द्वारा जिसका वर्णन किया जाता है, सरगम भावों से जो गाया जाता है, सुर-नर सेवको के द्वारा जिसकी प्रशसा की जाती है, नव कल्पवृक्षो के फलो और मानसरोवर के रक्त कमलो के साथ जिसके दर्शन किए जाते है, जिनके मुकुटो के अग्र भाग से भूमि तल लिखित है ऐसे इन्द्र-समूह द्वारा जिसे प्रणाम किया जाता है, हनुमान् अपने मन मे उद्विग्न होकर सोचता है—खेद है कि फिर भी इसने परस्त्री का अपहरण किया।

घत्ता—यह ऐश्वर्य, इतना बडा कुल, फिर इसने उसे क्यो कलकित कर दिया? हा हत, विधाता ने स्वर्णभिगार को ढाँकने के लिए खप्पर दिया (या खप्पर का ढक्कन दिया)।

(16)

फिर जो राजा के कानो मे पूरित कस्तूरी के परिमल को ग्रहण करने मे कुशल था, ऐसा वह भ्रमर मानो गुन-गुना रहा था कि हे रावण, तुम सीता दे दो, अपना नाश मत करो।

वह भ्रमर (हनुमान्) स्वय कामदेव और कामबाण था, युवतियो के बिम्बाधरो पर पहुँचता हुआ, कोमल हथेलियो के द्वारा हटाया जाता हुआ, चमरो की हवा से प्रेरित होता हुआ, स्तन युगल और नाभिमडल मे प्रवेश करता हुआ, अपने पखो से कपोलो की पत्ररचना को दलित

(15) 1 A ओविण्ण°। 2 AP वि हित्तउ। 3. P कय सकलकणु।
(16) 1 P भसलुओ। 2 A विबाहर°। 3. A कवोलि।

कुडिलालयपतिउ दरमलतु मुहकमलवाससासहु[4] चलंतु ।
थिउ दारि[5] सहइ ण इदणीलु थिउ भालि गहियवरतिलयलीलु ।
थिउ उरि पियपहरकिणकु णाइ[6] थिउ मणि सरसरपुखु व सुहाइ[7] ।
थिउ कण्णमूलि ण मम्मणाइ वोल्लइ मणियाइं[8] घणघणाइं ।
थिउ उरुयलि सद्दइ सुराहि ण किंकिणि कामिणिमेहलाहि ।

घत्ता—सो महुयरु वम्महु कि भणमि णारिहिं वयणइ[9] चुबइ ॥
जाइवि खयरिदहु रयणमइ कुडलकमलि विलवइ ॥16॥

17

दुवई—बुज्झिवि णयणवयणतणुलिगहि सीयारइवस गय ॥
दहवयण विमुक्कणीसासरुहाणलतावियगय ॥छ॥

गउ अलि पुरपच्छिमगोउरग्गु आरूढउ जोयइ[1] वणु समग्गु ।
दिट्ठी वणसिरि सहु खेयरीहिं सीय वि परिवारिय खेयरीहिं ।
वणु देइ ससाहिहिं रामविरहु सीयहि पुणु वट्टइ रामविरहु ।
वणि लोहियाउ पत्तावलीउ सीयहि पुसियउ पत्तावलीउ ।
वणि पमयइ फलसार गयाइ सीयहि झीणइ[2] सारगयाइ ।

करता हुआ, टेढी केश पंक्तियों को विदलित करता हुआ, मुख रूपी कमल की सुगंधित हवा से उडता हुआ द्वार पर स्थित वह इस प्रकार शोभित था, मानो इन्द्र नीलमणि शोभित हो। भाल पर स्थित होकर वह श्रेष्ठ तिलक की शोभा धारण कर रहा था। उर पर स्थित होकर वह प्रिय के प्रहार के चिह्न के समान शोभित था। मन पर स्थित वह कामदेव के तीर के पुख के समान शोभित हो रहा था। कानो के मूल मे स्थित होकर मानो वह व्यक्त घन-घन काम वचन बोल रहा था। किसी सुन्दरी के उरुतल पर स्थित होकर ऐसे शब्द कर रहा था, मानो कामिनी की करधनी की किंकिणी हो ?

घत्ता—कामदेव के उस भ्रमर को क्या कहूँ ? वह स्त्रियों के मुखो को चूमता है, वह विद्याधर राजा के कुण्डल रूपी कमल पर जाकर बैठता है।

(17)

नेत्र मुख और शरीर के चिह्नो से यह जानकर कि रावण सीता के प्रति प्रेम के वशीभूत है, और उसका शरीर छोडे गए नि श्वासो से उत्पन्न आग से सतप्त है।

भ्रमर चला गया और नगर के पश्चिमी गोपुर के अग्र भाग पर स्थित होकर समग्र वन को देखता रहा। विद्याधरियो के साथ उसने वनश्री को देखा। और सीता को भी विद्याधरियो से घिरा हुआ। वन अपनी शाखाओ के द्वारा स्त्रियो को विशेष एकान्त देता है, परन्तु सीता के लिए केवल राम का विरह है। वन मे लाल-लाल पत्रावलियाँ थी, परन्तु सीता की पत्रावलि (पत्ररचना) पुछ चुकी थी। वन मे प्रमद (वानर) श्रेष्ठ फल पर है, लेकिन सीता के श्रेष्ठ

---

4. AP °सासवासहु । 5 AP हारि । 6. A भाइ; P जाइ । 7 AP विहाइ । 8. AP मणियाइ व घण° ।
9. AP वत्तइ ।

(17) 1 P जोइय । 2. P झीणाइ ।

वणि एत्तहि तेत्तहि वेल्लिवलय सीयहि थिय पसिढिल वाहुवलय।
वणि खेल्लइ हरिसिज्जइ वि हसु सीयहि वट्टइ जीवियविहसु।
वणि दिसमुहि सोहइ लग्गु तिलउ सीयहि णिडालु[3] णिल्लुहियतिलउ।
वणि तरुवदइ रूढजणाइ सीयहि णयणइ विगयजणाइ।
वणि साहारु जि मारइ पियत्थि सीयहि साहारु ण को वि अत्थि।
भडसत्ति व बलविहडणविसण्ण जहि अच्छइ परमेसरि णिसण्ण।
त[4] सीसवितलु खगभमरु आउ ण वइदेहीजीवियहु आउ।

घत्ता—पडिबिंबिउ दहहिं वि पयणहहिं आसण्णउ परिघोलइ॥
सो छप्पउ सीयहि कमकमलु पसरियपत्तहि लोलइ॥17॥

18

दुवई—सीयासावभाउ[1] ण भीसणु ण हुयवहु समिद्धओ॥
असरिससुहडचक्कचूडामणि पावणि मणि विरुद्धओ॥छ॥
सीयहि केरउ दुचरित्तरहिउ[2] तणुचिंधु पलोइवि रामकहिउ।
णियहियवइ चिंतइ अजणेउ परणारिदेहसतावहेउ[3]।
मरु[4] मारमि अज्जु जि रणि दसासु गलि लायमि कालकियतपासु[5]।
पइवय णीरय पइबद्धपणय वाणारसि पावमि जणयतणय।

अग क्षीण है। वन मे यहाँ-वहाँ लतामडल है, परन्तु सीता का वाहुवलय शिथिल है। वन मे हस से क्रीडा-हर्ष किया जाता है, परन्तु सीता के जीवन का विध्वश है। वन मे दिशामुख मे तिलक वृक्ष लगा हुआ शोभा देता है, सीता के ललाट से तिलक पुछ गया है। वन के वृक्ष, जनो से अधिष्ठित है, परन्तु सीता के नेत्र अजन से रहित है। वन मे प्रियार्थी को सहकार (आमवृक्ष) ही मारता है, परन्तु सीता के लिए कोई भी आधार (सहारा) नही है। जहाँ परमेश्वरी सीता देवी वल के विघटन से उदास मठशक्ति की तरह बैठी हुई है वह विद्याधर रूपी भ्रमर (हनुमान्) वहाँ शिंशिपा वृक्ष के नीचे आया मानो वैदेही का जीवन ही आया हो।

घत्ता—बैठा हुआ वह भ्रमर दसो चरणो मे प्रतिबिंबित होकर भ्रमण करता है। वह सीता के चरणकमलो मे अपने पख फैलाये घूमता है।

(18)

असामान्य सुभटो का चक्रचूडामणि हनुमान् अपने मन मे इस प्रकार विरुद्ध हो उठा, मानो सीता का शाप भाव हो या मानो आग समृद्ध हो उठी हो।

राम के द्वारा कहे गए, सीता के दुश्चरित्र से रहित शरीर चिह्न को देखकर, परस्त्रियो के लिए सताप का कारण हनुमान् अपने मन मे विचार करता है—मै आज युद्ध में रावण को मार डालता हूँ, और उसे काल रूपी यम के पाश मे डाल देता हूँ तथा पतिव्रता निष्पाप, अपने पति मे

---

3 AP णिलाडि। 4 P तँ।

(18) 1. AP °भाव। 2. A दुचरित्तु। 3. AP °देहु सताव°। 4. परु। 5 AP कालकयत°।

णं ण हुउ दूयउ राहवेण पट्ठविउ मज्झु किं आहवेण।
किंकरु पहुवयणुल्लघणेण णिंदिज्जइ हियकारि वि जणेण।
अक्खमि भत्तारहु तणिय वत्त मा मरउ महासइ चारुणेत्त।
इय चिंतिवि अवसरु मग्गमाणु जा णिहुयगउ थिउ कुसुमबाणु।
अत्थमिउ सूरु ता उइउ चंदु णं सीयहि[6] दुहवल्लरिहि कंदु।
आपडु गडमडलि घुलंतु तहु तेउ डहइ अग्गि व जलंतु।
अरुणच्छवि ण रामणहु कुद्धु णहसरि ण सियसररुहु विउद्धु।
अहवा लइ ससहरु किं ण चारु णहसिरिकरदप्पणु अमयसारु।
मिगमुद्दइ[7] मुद्दिउ कंतिपिंडु पियलेहहु केरउ ण करडु।
मेहलियहि ण संतोसकारि खेयरणाहहु[8] णं पाणहारि।
घत्ता—जणलोयणणियरणिवासघरु सुहणिहि अमयकलालउ ॥
ससि सीय[9] वि रामणतणु डहइ ण खयसिहिसिहमेलउ ॥18॥

19

दुवई—ण[1] सहइ हसइ रसइ परु पुच्छइ माणिणिविसयसगहु ॥
ढकइ दोसणिवहु गुण पयडइ अहणिसु करइ सक्कहु ॥छ॥
सिरु धुणइ कणइ णीसासु मुयइ सयणयलि पडइ अलियउ जि सुयइ।

वद्धप्रणय सीता को वाराणसी ले जाता हूँ। परन्तु नही-नही। मैं दूत हूँ। क्या मुझे युद्ध के लिए भेजा गया है? भला करने वाले अनुचर की भी प्रभु की आज्ञा के उल्लघन के कारण लोगो के द्वारा निन्दा की जाती है। इसलिए मैं स्वामी की वात कहता हूँ। जिससे सुन्दर नेत्रो वाली वह महासती मरे नही। यह सोचकर अवसर की प्रतीक्षा करता हुआ कामदेव हनुमान् जब तक अपना शरीर छिपाकर बैठता है तवतक सूर्यास्त हो गया और चन्द्रमा का उदय हो गया, मानो वह सीता देवी की दु खरूपी लता का अकुर हो। एकदम सफेद गड मडल पर व्याप्त होता हुआ उसका तेज सीता को अग्नि के समान जलाता है। अरुण छवि वह ऐसा लगता मानो रावण के प्रति क्रुद्ध हो, मानो आकाश रूपी नदी मे श्वेत कमल खिला हुआ हो, अथवा लो चन्द्रमा सुन्दर क्यो न हो, अमृत श्रेष्ठ वह आकाशरूपी लक्ष्मी के हाथ का दर्पण है, मृगमुद्रा (हरिण लाछन) से मुद्रित मानो वह काति का पिंड है, अथवा प्रियलेख का पिटारा है मानो मैथिली के लिए सतोष-कारी है, मानो विद्याधर राजा के लिए प्राणहारी है।

घत्ता—जनो के नेत्रो के समूह का निवासगृह सुखनिधि अमृत कलाओ का घर, चन्द्रमा और सीता भी रावण के शरीर को इस प्रकार जलाती है कि मानो क्षय काल की अग्नि की ज्वालाओ का समूह हो।

(19)

उसे (रावण को) कुछ भी सहन नही होता। वह हँसता है, वोलता है, दूसरो से पूछता है, अपना दोष-समूह छिपाता है, गुणो को प्रकट करता है, और मानिनी स्त्रियो के विषय से सगत समीचीन क्रियाओ को करता रहता है।

अपना सिर पीटता है, क्रन्दन करता है, नि श्वास छोड़ता है, शयनतल पर गिर पड़ता है,

6. A सीयादुह° । 7. A मृग° । 8 AP ण खेयरणाहहु । 9. A सीउ, P सीयलु ।
(19) 1 A तसइ ण हसइ सरइ परु ।

परिभमइ रमइ णउ कहिं मि ठाणि पियमित्तभवणि उज्जाणि जाणि।
ण ायण्णइ गेउ मणोज्जवज्जु ण पउंजइ किं पि वि रायकज्जु।
णउ ण्हाइ ण परिहइ दिव्वु[2] वत्थु णउ ढोयइ विविहाहारि हत्थु।
णउ बंधइ णियसिरि कुसुमदामु णउ मण्णइ खगकामिणिहिं कामु।
ण विलेवणु सुरहिउ अगि[3] देइ विरहाउरु णउ अप्पउ विवेइ।
णउ भूसइ तणु णउ महइ भोउ णउ रुच्चइ तहु एक्कु वि विणोउ।
जहिं जाइ तहिं जि सो सीय णियइ वारिज्जइ ढुक्की केण णियइ।
अंधारए वि समुहउं घडिउ सीयहि मुहु पेक्खइ दिसहिं जडिउ।
पाणिउं वि पियइ सो तहिं ससीउ परवसु वट्टइ वीसद्धगीउ।
करदीवदित्तु उववणहिं चलिउ पियविरहहुयासे णाइ जलिउ॥
घत्ता—जहिं अच्छइ णियडपरिट्ठिउ[4] अजणतणुरुहु वालउ॥
तहिं दहमुहु रइसुहु कहि लहइ वम्महु जहिं पडिकूलउ॥19॥

20

दुवई—अह अणुकूलु होउ मयरद्धउ सीयहिं सीलदूसण॥
किज्जइ कहिं मि वप्प खज्जोए किं रवियरविहूसण॥छ॥
थिउ सीयहि पुरउ खगिंदु केम णियमरणभवित्तिहि जोउ जेम।
पभणइ सत्तमु दिणु जइ वि पत्तु पिइ तो वि ण किं सवरहिं चित्तु।

और झूठ-मूठ सो जाता है, परिभ्रमण करता है, किसी एक स्थान पर रमण नही करता, प्रिय मित्र, भवन, उद्यान और यान मे वह न गेय सुनता है, और न मनोज्ञ वाक्य और न कुछ भी राज-काज करता है। न नहाता है, न दिव्य वस्त्र पहिनता है और न विविध आहारो को अपने हाथ से लेता है। अपने सिर पर पुष्पमाला नही बाँधता, विद्याधर स्त्रियो के साथ काम सुख नही भाता। सुरभित विलेपन अपने शरीर पर नही देता। विरह से व्याकुल वह स्वय को नही जानता। शरीर पर भूषण नही पहनता और न भोग को महत्त्व देता है। उसे एक भी विनोद अच्छा नही लगता है। वह जहाँ भी जाता है, उसे वही सीता देवी दिखाई देती है। आई हुई नियति का निवारण कौन कर सकता है? अन्धकार मे भी वह सीता का मुख सामने गढा हुआ देखता है, उसे दशो दिशाओ मे जडा हुआ देखता है। वह पानी भी पीता है तो वह ससीय (शीत सहित, सीता सहित) होता है। इस प्रकार रावण परवश हो उठा था। हाथ के दिए से दीप्त वह उपवन मे इस प्रकार चला मानो प्रिय विरह की ज्वाला मे जल गया हो।

घत्ता—जहाँ पर अजना का पुत्र बालक हनुमान् निकट बैठा हुआ है, वहाँ रावण रति सुख कैसे प्राप्त कर सकता है कि जहाँ विधाता ही उसके प्रतिकूल है।

(20)

अथवा कामदेव अनुकूल भी हो, तो क्या सीता देवी का शील-दूषण हो सकता है? हे सुभट, क्या खद्योत के द्वारा सूर्य किरणो का आभूषण किया जा सकता है?

सीता देवी के सम्मुख विद्याधरराज इस प्रकार स्थित था, जैसे अपनी मरण-भवितव्यता के सामने जीव बैठा हो। वह (रावण) कहता है - यद्यपि आज सातवाँ दिन समाप्त हो गया है,

2 A दिव्ववत्थु। 3. AP देहि। 4. A णियडि परि°।

विच्छिण्णु मयरहरु कवणु तरइ तिमिगिलतग्गिलगिलियगु[1] मरइ।
दुग्गमु तिकूडु गिरि कवणु चडइ कक्करि सयसक्करु होवि पडइ।
पायालपरिहं जणजणियसक भूगोयरु पइसइ कवणु लंक।
जइ चिंतहि कुलु तो तुहु जि कासु पोसिय जणए जणवयपयासु[2]।
जइ चिंतहि परिहउ तो सलग्घु हउ उत्तमु भुवणत्तइ महग्घु।
जइ चिंतहि एवहि रामपेम्मु तो तहु दसणि तुह[3] अण्णु जम्मु।
जइ चिंतहि सिरि तो हउ जि राउ किं लग्गउ तुज्झु सइत्तवाउ।
हलि वीणालाविणि मणविमद्दि महएवि महारी होहि भद्दि।

घत्ता—हलि सीय महारइ खग्गजलि आहंडलु वि णिमज्जइ॥
आलिंगहि मइ सुललियभुयहि रामे किं किर किज्जइ॥20॥

21

दुवई—करिसिररत्तलित्तमोत्तियणियररचियकेसरालओ॥
सतइ सीहि सीय ससहरमुहि किं रम्मइ सियालओ॥छ॥

अच्छउ स रामु लक्खणु हयासु दसरहु वि महारउ ताम दासु।
किं किज्जइ चरणविहूसणत्तु जइ लब्भइ हलि चूडामणित्तु।
किंकरमहिलहि किं तणुगुणेण[1] किं पाउयाहि मणिमंडणेण।

हे प्रिये, तुम अपने चित्त का संवरण क्यो नही करती ? विस्तीर्ण समुद्र का सवरण कौन कर सकता है ? तिमिगल मत्स्य को खानेवाले तग्गिल मत्स्य के द्वारा गिलितशरीर वह मर जाएगा। त्रिकूट पर्वत दुर्गम है, उस पर कौन चढ सकता है ? गिरि रूपी दाँत पर पड़कर सौ टुकडे हो जाएगा। पाताल की खाई लोगो को शका उत्पन्न करने वाली है, कौन भूगोचर (मनुष्य) लका मे प्रवेश कर सकता है ? यदि तुम अपने कुल की चिन्ता करती हो तो तुम किस की हो ? जनपद मे यह बात प्रकाशित है कि जन ने तुम्हारा पोपण किया है। यदि तुम अपना पराभव सोचती हो तो मैं तीनो भुवनो मे श्लाघनीय उत्तम और आदरणीय हूँ। यदि इस समय तुम राम के प्रेम के विपय मे सोचती हो उसके दर्शन मे तुम्हारा दूसरा जन्म हो जाएगा। यदि तुम लक्ष्मी का विचार करती हो तो मै भी राजा हूँ। हे वीणा के समान वोलने वाली, मन का विमर्दन करनेवाली भद्रे, तुम मेरी महादेवी हो जाओ।

घत्ता—हे सीता देखो, मेरी तलवार के पानी मे इन्द्र भी डूव जाता है। अपनी सुन्दर भुजाओ से मेरा आलिंगन करो, राम से क्या लेना-देना।

(21)

हाथियो के सिर के रक्त से लथ-पथ मोतियो के समूह से जिसका अयाल अंचित है, ऐसे सिंह के विद्यमान रहते हुए, हे चन्द्रमुखी, क्या मृणाल से रमण किया जाएगा ?

हताश राम और लक्ष्मण तो रहे, दशरथ भी हमारा दास है। हे सीते, जव चूडामणित्व प्राप्त होता है तो पैरो के आभूपण से क्या प्रयोजन ? और फिर दास की स्त्री के शरीर गुण से क्या,

(20) 1. A °तग्गिल°। 2 AP जणवए पयासु। 3 AP हलि अण्णु।
(21) 1. AP किं किर गुणेण।

महु दासि वि तुहु महएवि होहि लच्छिहि एंतिहि कोप्परु म देहि।
उरयलु मेरउ लालउ विसत्थु मा मुसलकिणकिउ² होउ हत्थु।
अणुवसहु एहि महु पंजलीइ मा सलिलु वहहि फणिचुभलीइ।
महु खग्गघायलच्छणहरेण खंडे रहुवइसिरखप्परेण।
मा वहउ विणेउरु चरणजुयलु करमरि कालायसलोहणियलु।
थिय सइ णियपियमलीणचित्त उत्तरु ण देंति पहुणा पउत्त।

घत्ता—पइ सीइ अज्जु तिलु तिलु करमि भूयह देमि दिसावलि॥
पर पच्छइ दूसह होइ महु विरहजलणजालावलि ॥21॥

22

दुवई—ता मंदोयरीइ दिण्णुत्तरु जपसि सुयणगरहिय॥
किं तियसिंदवदकदावण रावण जुत्तिविरहिय ॥छ॥

हा पुरिस हुंति सयल वि णिहीण घरघरिणि जइ वि उव्वसिसमाण।
कामेण तइ वि ते खयहु जति परघरदासिहि लग्गिवि मरति।
कहिं काइहि रत्तउ रायहसु कहिं खरि कहिं सुरकरिहत्थफसु।
कहिं भूगोयरि कहिं खेयरिंदु हा मयणजोग्गपरिणाणि¹ मंदु।

पादुकाओ के मणि विभूषणो से क्या ? मेरी दासी होते हुए भी तू मेरी महादेवी बन। आती हुई लक्ष्मी को हाथ मत दे। तुम विश्वस्त हो मेरे उर का लालन करो। तुम्हारा हाथ मूसलो के चिह्नो से अंकित न हो, तुम मेरी अंजलि मे आकर निवास करो, नाग के शिरोभूषण पर पानी मत डालो। मेरी तलवार के आघात के चिह्न को धारण करने वाले खडित राम के सिररूपी खप्पर के साथ, नूपुर से रहित हे दासी, अपने पैरो को कालायस लौह श्रृंखला से युक्त मत कर। अपने प्रियतम मे लीन चित्त वह सती चुपचाप रह गई। उत्तर न देने पर राजा (रावण) ने कहा—

घत्ता—हे सीता, आज मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकडे कर दूंगा और भूतो को दिशावलि छिटकवा दूँगा। फिर वाद मे मेरी विरहाग्नि-ज्वाला असह्य हो उठेगी।

(22)

तब मन्दोदरी ने उत्तर दिया, हे इन्द्र को कपानेवाले रावण, तुम सज्जनो के द्वारा निंदनीय और युक्ति से विरहित यह क्या कहते हो—

हत, सभी पुरुष नीच होते हैं। यद्यपि उनकी घरवाली उर्वशी के समान भी हो, फिर भी वे काम के द्वारा क्षय को प्राप्त होते है, और दूसरे के घर की दासी के लिए मरते हैं। क्या हस कभी कौए की स्त्री मे अनुरक्त होता है ? क्या कही ऐरावत की सूँड गधी का स्पर्श करती है ? कहाँ मनुष्यनी, और कहाँ विद्याधर राजा ? तुम कामशास्त्र के परिज्ञान मे मद हो। जिसने अन्धकार समूह को ध्वस्त कर दिया है, ऐसा चन्द्रमा जैसे गगा मे दिखाई देता है, वैसा ही नगर की जलवाहिनी मे भी। कामुक लोग जो भी दुश्चरित्र करते है, वे महिलाओ मे कुछ भी अन्तर

2. P मुसलु किणकिउ।
(22) 1. A °परियाणि, P °परिमाणि।

दीसइ विद्ध सियतिमिरचदु[2] जिह[3] गगहि तिह वाहलहि चदु ।
महिलतरु णर ण मुणति कि पि कामुय करति दुच्चरित्तु ज पि ।
ना णियघरु गउ लज्जिवि दसासु मयसुय ढुक्की जाणइहि पासु ।
अवलोइय सीयाएवि ताइ ण जलहिवेल ससहरकलाइ ।
ण विउसमईइ [4]सुकइत्तलील[5] ण स ज्जि ताइ सुविसुद्धसील[6] ।
ओलक्खिय पयजुयलछणेण जा चिरु घल्लिय णिदिय जणेण ।
मजूसइ सहु कत्थइ वणति सरिसरसीयलसिंचियदियंति ।
घत्ता—हा अघडिउ[7] घडिउ विहायएण इदीवरदलणयणहु ॥
आणिय सा मेरी एह सुय कालरत्ति दहवयणहु ॥22॥

23

दुवई—[1]जणणसुयाहिलासणियवइखयचिंतामउलियच्छिया ॥
मेइणियलि दड त्ति णिवडिय मदोयरि दुस्सहदुक्खमुच्छिया[2] ॥छ॥
पच्छाइय कामिणिकरयलेहि सिचिय सुयधसीयलजलेहि ।
विज्जिय[3] पडिचमरुक्खेवएहि आसासिय चदणलेवएहि ।
कह कह व देवि सज्जीव जाय भणु कासु अवच्छल[4] होइ माय ।
मुहकुहरहु वियलिय महुर वाय हा सीय पुत्ति तुहु महु जि जाय ।
हा विलसिउ कि[5] विहिणा खलेण वोलीणु[6] जम्मु दुक्कियफलेण ।

नही करते । रावण तब लज्जित हो कर अपने घर चला गया । मदोदरी सीता देवी के पास पहुँची । उसने सीता देवी को इस तरह देखा मानो चन्द्रमा की कला ने समुद्र को देखा हो, मानो विद्वान् की मति ने सुकवित्व की लीला को देखा हो, मानो उसी ने (सुकवित्व की क्रीडा ने) सुविशुद्ध-शील व्यक्ति को देखा हो । दोनो पैरो के चिह्नो से उसने (मन्दोदरी ने) पहिचान लिया कि लोगो द्वारा निंदित जिसे पहिले मजूषा के साथ नदी सरोवर से शीतल और सिंचित वन के भीतर कही फेंक दिया था (यह वही है) ।

घत्ता—हा, विधाता ने अघटित को घटित कर दिया । उसने मेरी वह पुत्री ला दी जो नील कमल के समान नेत्र वाले रावण के लिए काल रात्रि के समान है ।

(23)

पुत्री की अभिलाषा और अपने पति के विनाश की चिन्ता से जिसकी आँखे मुकुलित है, ऐसी मन्दोदरी असह्य दु ख से मूर्च्छित होकर धरती तल पर शीघ्र गिर पडी ।

बाद मे कामिनियो के करतलो और सुगधित शीतल जलो से सिची जाने, प्रतिचमरो के उत्क्षेपो से हवा किए जाने पर और चदन के लेपो से वह देवी किसी प्रकार से होश मे आई । उसके मुखविवर से मधुर वाणी निकली—हे सीता पुत्री, तू मुझसे उत्पन्न हुई थी । हा, दुष्ट विधाता ने क्या किया ! दुष्कृत के फल से तुम्हारा जन्म बीत गया । पिता का चित्त तुम पर अनु-

2. A तिमिरचदु । 3 P omits जिह । 4 P सुकइत्तणेण । 5. P adds after this ण जिणवरधम्मु अहिंसणेण । 6. P adds after this . ण सुरसरीइ मयरहरलील । 7 P अयडिउ ।

(23) 1 A जणणि । 2. A omits दुस्सह° । 3 AP विजिय । 4. A ण वच्छल । 5. AP विहिणा कि । 6 A वोलीणजम्मि, P वोली णुजम्मि ।

तुज्झुप्परि रत्तउ तायचित्तु हा दइवे विहुरतरि णिहित्तु।
इय सोयभावणिम्मोयणाइ वाहुल्लकणोल्लइ[7] लोयणाइ।
पेच्छिवि सीयाइ सदुक्ख[8] रुण्ण मदोयरिथणणीसरिउ थण्ण[9]।

घत्ता—आसण्णइ थिइ विहवत्तणइ एतउ सीयइ जोइउ[10] ॥
थण मेल्लिवि रामणगेहिणिहि हारु व खीरु पधाइउ[11] ॥23॥

24

दुवई—णिम्मलसीलसलिलभरवाहिणि णिच्छह[1] णिययदेहए[2] ॥
जाणइ[3] तेण सीयदुद्धोहे जिणपडिम[3] व्व रेहए ॥छ॥

त किं सीयलु रहुवइअसगि णिवडतु दुद्धु सिमिसिमइ अगि।
खगवइकतइ पुणरवि पवुत्तु मा इच्छहि पुत्ति पुलत्थिपुत्तु।
हउ जणणि तुहारउ[4] जणणु एहु ता सीयहि रोमचियउ देहु।
वुत्तउ पइवयगुणदिण्णछाइ सच्चउं तुहुं मेरी माय माइ।
सच्चउ दहमुहु महु होइ वप्पु णासिवि तहु केरउ दुव्वियप्पु।
मइ पेसहि रामहु पासि ताम कुडि मेल्लिवि जाइ ण जीउ जाम।
जणणीइ पवोल्लिउ रामरामि कुरु भोयणु पुत्तिइ मज्झखामि।
आहारे अगु अणगधामु अगे होते पुणु मिलइ रामु।

रक्त है। हा, विधाता ने तुम्हें दुःखों के भीतर डाल दिया। इस प्रकार शोकभाव के कारण जिनका आमोद (हर्ष) चला गया है, ऐसे तथा वाष्प-कणो से आर्द्र नेत्रो, तथा मन्दोदरी के स्तनो से रिसते दूध को देखकर सीता देवी फूट-फूट कर रो पडी।

घत्ता—वैधव्य के निकट होने पर आते हुए दूध को सीता देवी ने इस प्रकार देखा, मानो स्तन को छोड कर दूध हार के समान दौडा हो।

(24)

निर्मल शील रूपी जल के भार की वाहिनी अपने ही शरीर मे निस्पृह सीता उस शीतल दुग्ध प्रवाह से जिन प्रतिमा के समान शोभित थी।

राम का सगम न होने के कारण गिरता हुआ भी वह शीतल दूध शरीर पर रिम-झिम ध्वनि कर रहा था (शरीर की उष्णता के कारण)। विद्याधर की पत्नी मदोदरी ने पुन. कहा—हे पुत्री तुम रावण को मत चाहो, मैं तुम्हारी माँ हूँ, और यह तुम्हारा पिता है। तब सीता का शरीर पुलकित हो उठा। वह बोली—जिसने पतिव्रत गुण को आश्रय दिया है, ऐसी हे आदरणीया, क्या सचमुच तू मेरी माँ है? सचमुच दशमुख मेरा पिता होता है, तो उसके दुर्विकल्प को नष्ट कर तुम मुझे तब तक राम के पास भिजवा दो, जब तक जीव इस शरीर को छोड कर नही जाता। माता मदोदरी बोली—हे मध्यक्षीण रामपत्नी, मेरी पुत्री, तुम भोजन करो, आहार से ही शरीर

7. AP वाहवुकणोल्लइ। 8 A सुदुक्खरुण्णु, P सदुक्खु रुण्णु। 9. AP थण्णु। 10 P जोइयउ। 11. P पधाविउ।

(24) 1. AP णिच्छिह। 2. A णियइ। 3 AP सित्त तेण दुद्धोहे। 3. A जिणपडिबिंब। 4. A तुहारी।

इय भणिवि देवि गय णियणिवासु हियवउ हरिसिउ अजणसुयासु ।
महिवइभिच्चह घल्लिवि रउद्द चेयण चप्पति महत णिद्द ।
समरगणि णिज्जियअरिवरेण लहुं धरिउ वाणरायारु तेण ।

घत्ता—अविहियण्हाणहि णिरु णिरसणहि मलिणहि मइलियवत्थहि ॥
सो सीयहि रामविओइयहि[5] गंडयलासियहत्थहि ॥24॥

25

दुवई—लक्खणु पेक्खमाणु भारहियहि सणिय[1] पयइ देतओ ॥
ढुक्कइ[2] कइवरिंदु तहि णियडइ कइगुण अणुसरतओ ॥छ॥

पत्तलवट्टुन्नयरत्तकण्णु णवकणयकजकिजक्कवण्णु ।
सिहिविप्फुलिंगचलपिंगलच्छु णीरोमभउहु लबतपुच्छु[3] ।
ससिकतिवततिक्खग्गदतु[4] कयकरजुयलजलि वुक्करतु ।
अवलोइउ देविइ पमउ एतु थिउ अग्गइ पयपकय णमतु ।
तेणवहि[5] दाविउ[6] दइयणेहु सहु अगुत्थलियइ घित्तु लेहु ।
परमेसरि मइ रजियमणासु परियाणहि पुत्तु पहजणासु ।

कामदेव का धाम वनता है। शरीर होने पर राम फिर से मिल सकते है। यह कहकर देवी अपने निवास स्थान पर गई। पवन-अजना के पुत्र का हृदय प्रसन्न हो उठा। महापति (रावण) के अनुचरो को भयकर नीद देकर और उनकी महान चेतना शक्ति को चाँपते हुए, समर-प्रांगण में शत्रुओ को जीतने वाले हनुमान् ने शीघ्र वानर का रूप धारण कर लिया।

घत्ता—जिसने स्नान नही किया है, जो भोजन से अत्यन्त रहित है, जो मलिन है, जिसके वस्त्र मैले है, जो राम से वियुक्त है, जिसका हाथ गड-स्थल पर आश्रित है, ऐसी सीता—

(25)

भारती (सीता और कवि की वाणी) के लक्षणो को देखते हुए और धीरे-धीरे पथ (पद और चरण) देते हुए वह कपीन्द्र हनुमान् कई गुण (कविगुण, कपिगुण) का अनुसरण करते हुए उनके निकट पहुँचा।

जिसके कान पतले और एकदम लाल और गोल है, जो नव स्वर्ण कमल के पराग के समान रंग वाला है। आग के स्फुलिंग के समान जिसकी पीली आँखे है, जिसकी भौहे बिना रोम की हैं, और जिसकी पूँछ लम्बी है, जिसके आगे के दाँत तीखे चन्द्रमा की काति के समान है, जिसने दोनों हाथो से अजलि बाँध रखी है, जो बुक्कार कर रहा है, ऐसे वदर को देवी ने आते हुए देखा। चरणकमलो को प्रणाम करता हुआ, वह आगे आकर स्थित हो गया। उसने सीता के लिए पति के प्रेम को वताया और अगूठी के साथ लेख रख दिया। वह बोला—हे परमेश्वरी, तुम मुझे मन को रजित करने वाले प्रभजन का पुत्र, राम का दूत समझो। मेरा नाम हमुमान् है। मैं श्रेष्ठ

---

5. P रामविलइयहि ।

(25) 1 A सणियइ। 2 A ढुक्कउ। 3 P °पुछु। 4 AP ससिकंतकति। 5. A तेण तहिं।
6 AP दाविय°।

रामहु दूयउ हणुवंतणामु[7] विज्जाहरुवरु वीसमउ कामु।
तुह विरहझीणु मायंगगामि पइ सुमरइ अणुदिणु रामसामि।

घत्ता—णउ बोल्लइ ण परिग्गहि रमइ का वि णारि णालोयइ ॥
जोईसरु सासइ सिद्धि जिह तिह पइ पइ[8] णिज्झायइ ॥25॥

26

दुवई—दहमुहकुइयचित्तु अवलोयइ असिझसपरुसपहरण[1] ॥
लक्खणु खणु वि माइ णउ मेल्लइ तुह कमकमलसुयरण[2] ॥छ॥

ता सीयइ चिंतिउ णियमणेण णिल्लक्खण हउ कि लक्खणेण।
महु हयरामहु कहिं मिलइ रामु कहि वाणरु कहिं भत्तारु[3] णामु।
कहिं वाणरु कहिं भिच्चत्तु पत्तु आलिहियउ कहिं आणियउं पत्तु।
परिचिंतिवि[4] महु भोयणउवाउ रिउरइउ एहु मायासहाउ।
जाणिवि[5] वइदेहिहि अतरगु पुणु भासइ सुइसुहयरु अणगु।
सुणि रामदूउ हउ कह ण होमि गूढइ अहिणाणवयाइ देमि।
एक्कहिं दिणि पइ किउ पणयकोउ छिकिउ[6] राहवु अणुहुत्तभोउ।
वलउल्लउ चप्पिउ[7] सहु करेण पइ णिद्धणाहणेहायरेण।

विद्याधर और बीसवाँ कामदेव हूँ। विरह से क्षीण और गजगामी राम स्वामी तुम्हे प्रतिदिन याद करते है।

घत्ता—वह न बोलते है, और न परिग्रह मे रमते है, किसी स्त्री को नही देखते। जिस प्रकार योगीश्वर शाश्वत सिद्धि को देखता है, उसी प्रकार वह तुम्हारा ध्यान करते है।

(26)

दशमुख के प्रति जो कुपित चित्त है, ऐसा लक्ष्मण असि झस और फरसे के प्रहार को देखता है, और हे आदरणीया, वह एक क्षण के लिए भी तुम्हारे चरणकमलो के स्मरण को नही छोडता।

तब सीता ने अपने मन मे सोचा कि मैं लक्षणहीन हूँ, लक्षण (लक्ष्मण) से क्या? हत-सौदर्य मुझसे राम कहाँ मिलेगे? कहाँ वानर और कहाँ स्वामी राम? कहाँ वानर? और कहाँ अनुवरत्व को प्राप्त हुआ पत्र? 'कहाँ पत्र लिखा गया और कहाँ लाया गया? लगता है मेरे भोजन के उपाय की चिंता कर, यह शत्रु द्वारा रचित माया स्वभाव है। तब वैदेही के मन की बात जानकर कामदेव हनुमान् कानो को मधुर लगने वाला कथन करता है—सुनो, मैं रामदूत कैसे नही हूँ? मै तुम्हे गूढ अभिज्ञान वचन देता हूँ। एक दिन तुमने प्रणय कोप किया था। तुमने अनुभुक्त भोग राम को छि छि किया था। स्नेही राम ने स्नेह और आदर के साथ हाथ से कडा चापा था।

7. A हणुमतु, P हणवतु। 8. P पइ पणइणि झायइ।

(26) 1. AP °घरसु°। 2 A सुमरण। 3. AP भत्तार। 4. P परिचिंतइ। 5. P आणिवि। 6. A जक्किउ, P छिक्किउ। 7. A चपिउ।

घत्ता—हारावलि थणयलि सजमिय णयणइ वि सताविच्छइ ॥
पइ वियसियकुसुमइ सिरि कयइ पइजीवियणेवत्थइ[8] ॥26॥

27

दुवई—णियवइ[1] चित्ति धरिवि[2] पसरियजसु कउ मिसु णिसुउ रहुसुओ ॥
मदिरपजरत्थु जयजीवरवेण पसाइओ[3] सुओ ॥छ॥

अभणतिइ[1] रहुपहुजीयभद्दु पुणु रइउ तिलउ कुकुमरसद्दु ।
थिरु चियउ[5] ससवणि कणयवत्तु जइयहु थिउ पिउ जववणि रमतु ।
णासाणालिहि परिमलु पियतु दलवेल्लहलउ[6] वेल्लिउ णियतु ।
फलघणथणाउ[7] अकुरणहाउ फुल्लधयलीलालयसुहाउ[8] ।
पल्लवकराउ महुरत्तियाउ णावइ वसतरायहु तियाउ ।
तइयहु तुह मण[9] ईसाविहिण्णु[10] णाइद्धउ कचुउ दइयदिण्णु ।
परिहिउ[11] पणामवित्थारएण फुट्टउ पुलए गरुआरएण ।[12]
परिपालियधम्मसउच्चसच्चु ता सीयइ बुज्झिउ रामभिच्चु ।
करपल्लवेण पियलेहु गहिउ मेल्लेप्पिणु वाइउ कवडरहिउ ।
मणु पसरइ कर पसरति णेय[13] को जाणइ दुज्जयकम्मभेय ।

घत्ता—तुमने हारावलि को स्तनो पर सयत किया था, नेत्रो मे काजल लगाया था। तुमने खिले हुए फूल सिर मे खोसे थे जो कि प्रिय के जीवित होने के आभूषण थे।

(27)

दुवई—चित्त मे प्रसरित यश वाले अपने पति को धारण कर, तुमने राम के लिए मगल शब्द किया था कि रघुसुत नरो मे विख्यात है। अपने घर के पिंजडे मे स्थित शुक को 'जय जीव' शब्द से प्रसाधित किया था।

रघुपति की जय हो, कल्याण हो, यह नही कहते हुए तुमने केशर से गीले तिलक की रचना की थी। और अपने कानो में स्थिर कर्ण फूल धारण किया था। उस समय प्रिय उपवन मे रमण करता हुआ, अपनी नासिका रूपी नली से सौरभ पीता हुआ, कोमल पत्तो वाली उन लताओ को देख रहा था जो फलो के सघनस्तनो वाली थी, अकुर ही जिनके नख थे, जो भ्रमरो की लीलाओ से शोभित थी, पल्लव जिनके हाथ थे, मधु मे अनुरक्त जो मानो वसतराज की स्त्रियाँ थी। तब तुम्हारा मन ईर्ष्या से फट गया था और प्रिय के द्वारा दिया गया वस्त्र तुमने नही पहना था। उनके प्रणाम करने पर पहना था, पर भारी पुलक के कारण वह फट गया था। तब सीता को समझ मे आया कि जिसने विश्वास धर्म पवित्रता और सत्य का पालन किया है ऐसा यह राम-अनुचर है। उसने अपने करपल्लव मे लेखपत्र ले लिया, और उसे खोल कर पढा, मन फैलता है, परन्तु हाथ नही फैलते। अजेय कर्मभेद को (रहस्य को) कोई नही जानता, दूर रहते हुए भी हे

8 P पयजीविय° ।

(27) 1. A णियपइ । 2 P वरिवि । 3 AP पसाहिओ । 4 A अभणति परहु । 5 A थवियउ, P थविय । 6 हलवेल्लिहलउ, P दलवेल्लहलउ । 7 AP °घणघणाउ अकुरहणाउ । 8 AP फुल्लधयणीलालयभुहाउ । 9 AP मणु । 10 P ईसाविहिल्ल । 11. A परहिउ । 12 P वित्थारएण । 13 A एण ।

दूरत्थ वि गाढउ देवि खेमु णियकुसलवत्त हउ कहमि रामु।
मणवासिणि दहरहरायसुण्हि[14] लइ सव्वु चारु सरयदजोण्हि[15]।
घत्ता—धीरी होज्जसु हलि जणयसुए भडरणरंगि भिडेप्पिणु ॥
ढोएवी तुहु महु बंधविण दससिरसीसु खुडेप्पिणु ॥27॥

28

दुवई—अणुदिणु लच्छिणाहु पइ सुमरइ[1] तसियकुरंगलोयणे ॥
झायवि तिजगसामि णिवसिज्जसु कइवय दियह परयणे[2] ॥
तूसेप्पिणु[3] सीयइ अद्दुईउ ता कउ अंगुलियहि अंगुलीउ।
कइ पुच्छिउ लंघियविउलखयलु तेण वि अक्खिउ वित्ततु सयलु।
विण्णविय देवि लइ भत्तु पाणु विणु तेण ण थक्कइ [4]मणुयप्राणु[5]।
तं तासु वयणु पडिवण्णु ताइ गउ पावणि सूरुग्गमि पहाइ।
सीयासुंदरिहि खगोयरीइ उवयरिउ चारु मंदोयरीइ।
अइरावयलीलागामिणीहिं मज्जणउ भरिउ खगकामिणीहिं।
पल्हत्थियाइ तत्तइ जलाइ किं ताविंयाइ जइ णिम्मलाइ।
णियकुलु वि डहइ णिग्घिणु हुयासु[6] कह खमइ विवक्खहि जणियतासु।
तिलमुक्के तेल्लें मुक्क केस विणु तिलसंबंधे सुहि वि वेस[7]।

देवी, मेरा प्रगाढ आलिंगन है। मैं राम अपनी कुशलवार्ता कहता हूँ। मन मे बसने वाली हे दशरथ राज की वधू, शरद की चाँदनी मे सब सुन्दर होगा?

घत्ता—हे जनकसुते, तुम्हे धैर्य धारण करना होगा, योद्धाओ के युद्धरग मे भिडकर, रावण का सिर काटकर, मेरे भाई के द्वारा लाई जाओगी।

(28)

हे त्रसित हरिण के समान नेत्र वाली, लक्ष्मण तुम्हे दिन-रात याद करता है, त्रिजगस्वामी का ध्यान कर कुछ दिन तुम शत्रुजनो में निवास करो।

तब सीता ने सतुष्ट होकर, उस अद्वितीय अ गूठी को अपनी अ गुली मे पहिन लिया और विशाल आकाशतल को पार करने वाले वानर से पूछा। उसने भी समस्त वृतात कह सुनाया। उसने निवेदन किया—हे देवी, भोजन जल ग्रहण करो, उसके बिना मनुष्य के प्राण नही ठहरते। उसने उसका वचन स्वीकार कर लिया। सवेरे सूर्योदय होने पर हनुमान् चला गया। विद्याधरी मदोदरी ने सीता सुन्दरी का सुन्दर उपकार किया। एरावत की चाल से चलने वाली विद्याधर सुन्दरियो ने स्नान कराया। गर्म जल निकाला गया। यदि वह निर्मल है तो जल को गर्म क्यो किया गया? निर्दय अग्नि अपने कुल को भी जला देती है, तो फिर वह त्रास उत्पन्न करने वाले विपक्ष को कैसे क्षमा कर सकता है? तिल मुक्त तेल से उसने बाल खोले। बिना स्नेह संबध के

14 A °सुण्ह। 15. A °जुण्ह।

(28) 1 A सुमरइ। 2 A परवणे, P परियणे। 3 P रूसेप्पिणु। 4. AP मणुअपाणु। 5 AP add after this आहारें अंगु अणग्घधामु, अंगें होतें पुणु मिलइ रामु। 6 A हुयासु। 7. AP सेस।

किं पुणु धम्मिल्लय कुडिलभाव   हरिणीलणील हयभमरगाव।

घत्ता—सण्हइ चोक्खइ ससहरसियइ राहवजससकासइ ॥
दीहरइं[8] सुविउलइ सुहयरइ देविहि दिण्णइ वासइ ॥28॥

29

दुवई—थिय परिहिवि[1] मयच्छि ण पसाहणु गेण्हइ पियविओइया ॥
ताव रसोइ सव्व तहि आणिय मदोयरि पराइया[2] ॥छ॥

वंदिइं[3] जिणि मणि समसुहपयट्टि   आसीण भडारी रयणपट्टि।
कलहोयथालकच्चोलपत्त[4]   ण धरणिवीढि णक्खत्त पत्त।
उण्हुण्हउ दिण्णउ पढमपेउ   ण दाविउ दहमुहि[5] विरहवेउ।
ण तिक्खु मिट्ठु मलदोसणासु   ण भासिउ परमजिणेसरासु।
पुणु दिण्णइ णाणासालणाइ   ण दहमुहरइआसालणाइ।
आणेप्पिणु घल्लिउ दीहु कूरु   ण दहमुहि[5] सीयाभाव कूरु।
ढोइयइ ससूवइ रसवहाइ   ण दहमुहि[5] सीयारइवहाइ।
उवणिय चियधार महासुयध   दहमुहि[5] सीयादिट्ठि व सुअ ध।
णिण्णेहयरु णिरु मउ तक्कु   ण दहमुहि[5] सीयामणवियक्कु।

सुधिजन से भी द्वेष हो जाता है, फिर कुटिल स्वभाव वाली चोटी के वारे मे क्या कहना ? हरि और नील के समान नीली वह, भ्रमर के गर्व को नष्ट करने वाली थी।

घत्ता—सूक्ष्म, उत्तम चन्द्रमा की तरह श्वेत, राम के यश की तरह लम्बे, विपुल और शुभ-तर वस्त्र सीता देवी के लिए दिए गए।

(29)

वह मृगनयनी वस्त्र पहिनकर बैठ गई। प्रिय से वियुक्त होने के कारण देह प्रसाधन ग्रहण नही करती। इतने मे वहाँ सब प्रकार की रसोई ला दी गई। मदोदरी भी वहाँ पहुँची।

अपने सम और शुभ प्रवृत्ति वाले मन मे जिनदेव की वदना कर आदरणीया सीता रत्नपट्ट पर आसीन हो गई। स्वर्ण के थाल और कटोरी पात्र ऐसे लग रहे थे, मानो धरती पर नक्षत्र प्राप्त हुए है। पहले गर्म-गर्म पेय दिया गया, मानो रावण के लिए विरह वेग दिखाया गया हो, जो मानो तीखा, मीठा और मल दोष का नाश करने वाला था। मानो जिनेश्वर का कथन था। फिर उन्हे तरह-तरह के सालन दिए गए, जो मानो रावण के लिए रति की आशा दिखाने वाले थे। लाकर खूब भात दिया गया मानो रावण के मुख मे दुष्ट सीता का भाव हो। रसदार सुन्दर दाल दी गई, मानो रावण के मुख मे सीता की रति का प्रवाह हो। अत्यन्त सुगंधित घी की धारा लाई गई, जो मानो दशमुख मे सीता की अत्यन्त सुगन्धित रसदृष्टि हो। स्नेह (चिकनाई) से रहित, अत्यन्त कोमल तक्र (मट्ठा) दिया गया मानो दशमुख मे सीता का विमुक्त मन हो।

8 A दीहयरइं।

(29) 1 A परिहवि। 2 AP पराणिया। 3. AP वंदिवि जिण मणि। 4 AP चित्त। 5 A दहमुह°। 6 A थड्ढगव्वु।

उवणिउ माहिसु दहि थड्ढु[6] गव्वु ण दहमुहि सीयामाणगव्वु ।
उवणिउ बहुविहु वोराइपाणु[7] ण दहमुहरमणहु कोसपाणु ।
अइसरसइ भक्खइ चक्खियाइ ण दहमुहि सर सइ भक्खियाइ ।
कइकव्वु व कयमत्तापवाणु[8] भोयणु भुत्तउ खीरावसाणु ।
अच्चवियउ[9] पुणु मुद्धहि विहाइ पाणिउ दिण्णउ दहमुहहु णाइ ।

घत्ता—पूयफलेण सचुण्णएण पत्तगुणेण समग्गउ ॥
तंबोलराउ रामु व सइहि छज्जइ अहरविलग्गउ ॥29॥

30

दुवई—इय भु जेवि भोज्जु भूमीसुय सीलगुणबुवाहिणी ॥
थिय णदणवणति सीसवतलि[1] सीरहरस्स गेहिणी ॥छ॥

एत्तहि हणुमतु[2] वि पत्तु तित्थु अच्छइ दुग्गतरि रामु जेत्थु ।
हा सीय सीय सकलुणु कणतु[3] णियकरयलेण उरु सिरु हणतु ।
वोल्लाविउ मारुइ ते कयत्थु मउडग्गचडावियउहयहत्थु[4] ।
भणु कि दिट्ठउ सिसुहरिणणेत्तु कि णउ कुमार मेरउ कलत्तु ।
किं मुच्छिउ णिवडइ जीवचत्तु किं महु विरहे पचत्तु पत्तु ।

भैस का गाढा दही लाया गया, मानो दशमुख मे सीता का मान गर्व हो । अनेक प्रकार का वेरादि का पानी लाया गया, जो मानो दशमुख के रमण के कुसुम्भ रग का पान था । इस प्रकार अत्यधिक सरस खाद्य पदार्थो को उसने चखा मानो दशमुख मे कामानुवद्ध वचन स्वय खा लिए गए हो । कवि के काव्य के समान जिसमे मात्रा का प्रमाण किया गया था । फिर मुग्धा के लिए आचमन हेतु दिया गया पानी ऐसा शोभा देता था, मानो दशमुख के लिए पानी दिया गया हो ।

घत्ता—चूने से सहित पत्र (पात्र, पान) के गुण और सुपाडी से समग्र अधरो पर लगा हुआ ताम्बूल राग उस सती के लिए राम के समान शोभित होता था ।

(30)

शील जल की नदी पृथ्वी-सुता श्रीराम की पत्नी सीता इस प्रकार भोजन कर नदन वन मे शिशपा वृक्ष के नीचे बैठ गई ।

इधर हनुमान् भी वहाँ पहुँचा जहाँ दुर्ग के भीतर राम थे । हा सीते हा सीते कहकर करुण रुदन करते हुए तथा अपने हाथ से उर और सिर पीटते हुए उन्होने, जिसने अपने दोनो हाथ मुकुट के अग्र भाग पर चढा रखे है ऐसे कृतार्थ हनुमान् से पूछा—हे कुमार बताओ तुमने शिशुमृगनयनी मेरी स्त्री को देखा या नही ? मेरे विरह मे मूर्च्छित पड़ी है, या कि त्यक्त जीवन वह मृत्यु को प्राप्त हो गई है ? यह सुनकर हनुमान् ने कहा—हे देव मैंने जानकी को जीवित देखा है । कलिक्कतात रावण को सीता देवी से सकाम वचन कहते हुए देखा है । प्रिय कहती हुई तथा देवी के मन की

7 P कोराइपाणु । 8 A कइमत्तावपाणु, P कयमत्तापमाणु । 9 AP अचवियउ ।
(30) 1. P सीसवयलि । 2. A हणवतु । 3 A रुयतु । 4. A उभयहत्थु ।

त णिसुणिवि हणुए उत्तु एव   दिट्ठी जाणइ जीवति देव ।
दिट्ठउ रावणु ण कलिकयतु   सीयहि सकामवयणाइ देंतु ।
दिट्ठी मदोयरि पिउ चवति   देविहि हियउल्लउ सथवति ।
अवरु वि दिट्ठउं आरामहतु   उप्पण्णउं चक्कु पहाफुरंतु[5] ।

घत्ता—सिरिमतु सरूवु[6] वि दहवयणु सीयहि मणु णासंघइ ।।
भरहुप्परिगामिय तेयणिहि पुप्फयत[7] को लघइ ।।30।।

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयतविरइए महाकव्वे सुग्गीवहणुवतकुमारागमण[8]
सीयादसण णाम तिसत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ।।73।।

सस्तुति करती हुई मदोदरी देवी को देखा है। और भी मैंने देखा है—आराओ की महान् प्रभा से चमकता उत्पन्न हुआ चक्र।

घत्ता—श्रीसम्पन्न एव रूपवान् होकर भी रावण सीता के मन का आश्रय नही पा सका। भारत के ऊपर जाने वाले तेजनिधि सूर्य चन्द्र का उल्लघन कौन कर सकता है ?

त्रेसठ महापुरुषो के गुणालकारो से युक्त महापुराण मे महाकवि पुष्पदत्त द्वारा
विरचित एव महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का सुग्रीव-
हनुमान्-कुमारागमन-सीतादर्शन नाम तेहत्तरवाँ
परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

5 AP महाफुरतु। 6 AP सुरूवु। 7 P पुप्फयतु। 8. A हणवतकुमारगमण णाम तिहत्तरिमो।

चउहत्तरिमो संधि

परहु ण देइ मणु अवसे मउलइ सकलकहो ॥
फुल्लइ पउमिणिय करफसें कहिं मि मियकहो[1] । ।ध्रुवक ॥

1

हेला—सीयादेवि देव दीहुण्ह णीससती ॥
सुअरइ तुह पयाइ भत्तारभत्तिवती ॥छ॥

सिरि व उविदहु सरि व समुद्दहु[2] ।
मेत्ति[3] व णेहहु मोरि व मेहहु ।
भमरि व पोमहु सति व सामहु[4] ।
करिणि व पीलुहि करहि[5] व पीलुहि ।
विउसि व छेयहु हरिणि व गेयहु ।
णववणकतहु[6] जेव वसतहु ।
सुअरइ कोइल धीरत्ते इल ।
जिणगुण[7] जाणइ तिह तुह जाणइ ।

चहत्तरवी संधि

(कमलिनी सीता) दूसरे के लिए मन नही देती । वह सकलक (चन्द्रमा और रावण) से अवश्य ही मुकुलित होती है । क्या चन्द्रमा के करस्पर्श से कमलिनी कभी भी खिल सकती है ।

(1)

हे देव, लम्बे और उष्ण उच्छ्वास लेती हुई तथा पति के प्रति भक्ति से ओत-प्रोत सीता देवी तुम्हारे चरणो को याद करती है, जिस प्रकार लक्ष्मी उपेन्द्र की, जिस प्रकार नदी समुद्र की, जिस प्रकार मैत्री स्नेह की, मयूर मेघ को, भ्रमरी कमल की, जिस प्रकार शान्ति साम की, जिस प्रकार हथिनी हाथी की, जिस प्रकार ऊटनी पीलू वृक्ष की, जिस प्रकार विदुषी चतुर व्यक्ति की, हरिणी गेय की तथा कोयल नवीन वन से मनोहर वसन्त की याद करती है, धैर्य से जिस प्रकार वह इला और जिन गुण को जानती है, उसी प्रकार जानकी तुम्हे जानती है।

---

(1) 1 A मयग्हु । 2 P adds after this महि व णरिंदहु, सइ व सुरिंदहु । 3. A मित्तेय । 4 A सोमहु । 5 AP हरि व सुसीलहि । 6 AP णववहुकतहु । 7. AP read *a* as *b* and *b* as *a* ।

तुह सा राणी खंतिसमाणी ।
भव्वह रुच्चइ खणु वि ण मुच्चइ ।
लक्खणचिंतइ वहुजसवतइ[8] ।
वरकविवित्ति[9] व धम्मपवित्ति व ।
समसपत्ति व साहसथत्ति व ।
कुलहरजुत्ति व जिणवरभत्ति व[10] ।
णिरु परलोइणि तुह सुहदाइणि ।
सा आणिज्जइ रिउ मारिज्जइ ।

घत्ता—विरहहुयासहउ पियवत्तइ सुइवहढुक्कइ ।।
वियसिउ रामदुमु ण सित्तउ अमियझलक्कइ[11] ।।1।।

2

हेला—गाढालिंगिऊण रामेण पवणपुत्तो ।।
सीयासगमो व्व हरिसेणेव[1] वुत्तो ।।छ।।

तुह समु किं भणइ अवरु णरु अजणिसुय[2] तुहु सुहिविहुरहरु ।
तुहु मुहु मणकमलहु दिवसयरु विरहावडणिवडणधरणतरु[3] ।
जलु थलु णहयलु तुह गम्मु जहिं वण्णेव्वउ सव्वु समत्तु तहिं ।
तहिं अवसरि रूसिवि अतुलवलु सिरिणाहे जोइउ भुयजुवलु ।

तुम्हारी वह रानी आर्यिका के समान है, वह भव्यो को अच्छी लगती है, एक क्षण के लिए भी नही छोडी जाती, जो अत्यधिक जस (जसादि प्रत्यय, यश) वाली, लक्खन की चिन्ता (व्याकरण की चिन्ता, लक्ष्मण की चिता) के द्वारा श्रेष्ठ कवि की वृत्ति के समान है। जो धर्म की पवित्रता के समान, समता रूपी सम्पत्ति के समान, साहस की स्थिरता के समान, कुलगृह की युक्ति के समान, जिनवर की भक्ति के समान है, जो पर की आलोचना करने वाली है, और तुम्हे सुख देने वाली है, ऐसी उसे लाया जाए और शत्रु को मारा जाए ।

घत्ता—रामरूपी जो वृक्ष विरह की आग मे जल चुका था, कर्ण-पथ पर प्राप्त प्रिया की वार्ता से वह इस प्रकार विकसित हो गया मानो अमृत की धारा से सिंचित हो ।

(2)

पवनपुत्र का प्रगाढ आलिंगन लेकर राम ने मानो हर्ष के द्वारा ही अपना सीता-सगम व्यक्त कर दिया ।

हे अजनापुत्र, दूसरा तुम्हारे समान क्यो कहा जाता है ? तुम सुधीजनो का सकट दूर करने वाले हो । तुम मेरे मन रूपी कमल के लिए दिवाकर हो, विरह की आपत्ति मे पडने वाले को वचाने के लिए आधार वृक्ष हो । जहाँ जल स्थल और आकाश तुम्हारे लिए गम्य हैं वहाँ मैं कहता हूँ कि सारा काम समाप्त है । उस अवसर क्रोध करते हुए लक्ष्मण ने अपना अतुल-वल

---

8. A °जसवतिइ । 9 AP °कइ° । 10 AP add after this सज्जणमेत्ति व । 11. AP अमय° ।
(2) 1. AP हरिसेण एम वुत्तो । 2. AP अ जणसुय । 3. A °धरणि° ।

बलएवहु पायपोमु णवड   कोवारुणच्छु लक्खणु[4] चवइ ।
मइं रविथरदारियतिमिरबलि   हणवतु[5] णेइ जइ गयणयलिं ।
जइ सायरु सलिलु दुग्गु कमइ   जड लकाणयरिणियडि थवइ ।
तो कुडलमडियगडयलु   तोडेप्पिणु दहमुहसिरकमलु ।
तुह गेहिणि देमि समेइणिय   णच्चावमि विड्डर[6] डाइणिय ।

घत्ता—दे आएसु महु सर[7] करउ गमणु साहेज्जउ ॥
कताहरणरुहु फेडमि अज्जु जि वयणिज्जउ ॥2॥

3

हेला—ता सीराउहेण उवसामिओ अणतो ॥
ण केसरिकिसोरओ रोसविप्फुरतो ॥छ॥

भडयणु णिहिलु वि ओसारियउ   पचगु मतु अवयारियउ ।
सउवाउ[1] अवाउ सहाउ धणु   मतिउ महु किं[2]वइरिहि वलु कवणु ।
आरभ कम्मफलसिद्धि किह   किह दइवु हवइ भणु मुणिउ जिह ।
त णिसुणिवि मगलेण कहिउ   णिव णिसुणि मतु विगईरहिउ ।
दुग्गासिउ वलवतु वि विजइ   खगराउ तिखडधराहिवइ ।
जइ सीय देइ रणि णब्भिडइ   तो भल्लउ महु मणि आवडइ ।

वाहुवल देखा। वह राम के चरणकमलो मे प्रणाम करता है, और क्रोध से लाल आँखो वाला लक्ष्मण कहता है—यदि हनुमान्, जिसने सूर्य की किरणो से अधकार की शक्ति विदारित की है, ऐसे आकाश मे मुझे ले जाए, समुद्र जल और दुर्ग का उलघन करवा सके, यदि लका नगरी के निकट स्थापित कर सके तो मैं कु डलो से मडित गडतल वाले दशमुख के सिरकमल को तोड कर भूमि सहित सीता देवी को लाकर दे दूँ। तथा भयानक डाइनी नचाऊँ।

घत्ता—आप आदेश दे ! कामदेव हनुमान् गमन मे सहायता करे तो मैं कान्ताहरण के कलंक को आज ही नैस्तनावूद कर दूँ।

(3)

तव श्रीराम ने लक्ष्मण को इस प्रकार शान्त किया कि मानो क्रोध से स्फुरित सिंह-किशोर हो।

समस्त योद्धा समूह को हटा दिया गया और पचाग मत्र का विचार किया गया। उपाय सहित उपाय सहाय और धन मे मेरा क्या मत्र है ? शत्रुओ की सेना कितनी है ? आरभ और कर्मफल सिद्धि किस प्रकार होती है, दैव किस प्रकार होता है ?मुझे वताओ, जिस प्रकार तुमने विचार किया है। यह सुनकर मगल ने कहा—हे राजन्, अन्यथा नही होने वाला मंत्र सुनिए। विद्याधर राजा, तीन खड धरती का स्वामी है। दुर्गाश्रित वलवान और विजयी है। यदि वह सीता दे देता है और युद्ध मे नही लडता तो यह वात मेरे मन के लिए अच्छी लगती है। इसका उपहास करते

4. A माहउ, P माहड्डु । 5. P हणुवतु । 6. T डावर भयानक सग्रामो वा, विड्डर इति पाठेऽप्ययमेवार्थं ।
7. AP सरु । 8 AP कताहरणु रुहो ।
(3) 1. A सउवायउ वाउ सहाउ वलु । 2. AP महु वइरिहि कवणु वलु ।

त[3] विहसिवि सुग्गीवें भणिउ पइ रावणजीविउ कि गणिउ।
हणुवंतु सहाउ हउं वि पवलु हरि पुण्णवंतु चालइ अचलु।
विज्जउ पहरणइ वि चिंतियइं होंहिंति मंतविहिमंतियइं[4]।
हलहर तुहुं राणउ देव जहिं पडिवक्खु पसंसिउ काइं तहिं।
धुउ[5] लक्खणहत्थें रिउ मरइ णिद्दइवहु दुग्गु काइं करइ।
भो मगल मा किं पि वि भणहि तहु चक्कु कालचक्कु व गणहि।

घत्ता—तेण जि तासु[6] सिरु छिंदेव्वउ रणि गोविंदें॥
दिणयरि उग्गमिइ किं पयडिज्जइ चंदें॥3॥

4

हेला—उत्त रामसामिणा जइ[1] अह महंतो॥
लच्छीहरपसाहिओ पउरपुण्णवंतो॥छ॥

णियदूउ तो वि तहु पट्ठवमि उप्पिच्छु समत्थु व णिट्ठवमि।
णिय सो[2] किं देइ ण देइ वहु पेक्खहुं किं वोल्लइ पुहइपहु।
भणु कवणु वओहरविहिकुसलु जिणवरचरणारविंदभसलु।
सुग्गीउ कहइ रिउछिंदणहु जेट्ठहु दससंदणणंदणहु।
गुणवंत अत्थि णर[3] धरणियर ते जंति ण खे ण होंति खयर।
सुकुलीणु अदीणु दीणसरणु अग्गि व सीहु व दूसहफुरणु।

हुए सुग्रीव ने कहा—तुमने रावण के जीवन को क्या समझा ? हनुमान् सहायक है और मैं भी प्रवल हूँ। लक्ष्मण पुण्यवान है, वह अचल को चलित कर देते हैं। मंत्र विधि से आराधित, चिंतित प्रहरण और विद्याएँ भी प्राप्त हो जाएँगी। हे हलधर, जहाँ आप राजा हैं वहाँ इसने प्रतिपक्ष की प्रशंसा क्यों की। निश्चय ही लक्ष्मण के हाथ से शत्रु मरेगा। दैवहीन व्यक्ति का दुर्ग क्या करेगा ? हे मगल, तुम कुछ भी मत कहो, उसके चक्र को तुम कालचक्र समझो।

घत्ता—युद्ध में लक्ष्मण के द्वारा, उसी से उसके सिर का छेदन किया जाएगा ? दिनकर के उदय होने पर चन्द्रमा के द्वारा क्या प्रगट किया जाएगा ?

(4)

तव स्वामी राम वोले—यद्यपि हम महान् हैं, लक्ष्मी गृह से प्रसाधित है और प्रचुर पुण्य से युक्त है,

तो भी उसके पास मैं अपना दूत भेजता हूँ। फिर सैन्यसहित समर्थन उसे मारता हूँ। ले जाई गई वधू को वह देता है, या नहीं ? हम देखें राजा क्या कहता है ? वताओ दूतविधि में कौन कुशल है ? जिनवर के चरण-कमलों का भ्रमर सुग्रीव शत्रु का नाश करने वाले जेठ दशरथ-पुत्र राम से कहता है—हे राजन्, धरणीचर (मनुष्य) गुणवान हैं, परन्तु वे आकाश में नहीं चल सकते क्यों कि वे विद्याधर नहीं हैं। सुकुलीन अदीन और दीनों के लिए शरण तथा अग्नि और

---

3. AP ता। 4 P मंत तिहिं। 5 A घ्रुवु। 6 P तासु जि सिरु।
(4) 1 AP जइ वि अह। 2. AP किं सो। 3 A णरवरणियर।

एक्किल्लउ[4] भल्लउ सेल्लवहि[5] रणि सरजालचियसदिसवहि ।
सूहउ सूरूउ गभीरु थिरु पडिवण्णसूरु तेयसि णिरु ।
णिट्ठुरहं वि उप्पाइयपणउ हियमियमहुरक्खरजपणउ ।
किं वण्णमि सहयरु अप्पणउ दूयत्तजोग्गु अ जणतणउ ।
ता रामें सचियणेहरसु पुरिसुण्णउ पोरिसकणयकसु ।
सुग्गीउ वधु बुद्धिइ गहिउ विज्जाहररायत्तणि णिहिउ[5] ।
घत्ता—बधिवि पट्टु सिरि हणुवंतु कियउ सेणावइ ॥
जोत्तिउ दूयभरि पुणु सो ज्जि धवलु णिहयावइ ॥4॥

5

हेला—दिण्णा राहवेण हणुयस्स खयरगया[1] ॥
[2]रविगयविजयकुमुयपवणवेयया[3] सहाया ॥छ॥
गरुयारइ मतिकज्जि थविउ वलहद्दें[4] मारुइ सिक्खविउ ।
जाएज्जसु भवणु[5] विहीसणहु परिपालियखत्तियसासणहु ।
वोल्लेज्जसु मिट्ठउ किं पि तिह अप्पावइ सीयाएवि जिह ।
जइ सामें देइ ण दहवयणु तो पुणु भणु दंडु[6] चडवयणु ।
अम्हहु[7] विवरोक्खइ आवडिय ललियग चित्तवित्तिहि चडिय ।
अण्णाणे रइरहसेण णिय भण्णइ अप्पिज्जउ रामपिय ।

सिंह के समान जो असह्य कातिवाला है, तथा भालो से युक्त सरजाल से जिसमे दिशाओ सहित पथ आच्छादित है ऐसे रण मे जो अकेला ही भला है, जो गभीर, सुभग, सुन्दर और स्थिर तथा स्वीकार की गई वस्तु में शूरवीर, अत्यन्त तेजस्वी, अत्यन्त निष्ठुर, लोगो मे प्रणय उत्पन्न करने वाला, हित मित मधुर वाणी वोलने वाला है, ऐसे अपने सहचर का क्या वर्णन करू ? हनुमान् दूतत्व के योग्य है। जिसमे स्नेह रस सचित है, जो पुरुषो मे उन्नत है, जो पौरुष रूपी स्वर्ण को कसने वाला है, ऐसे सुग्रीव वधु को राम ने बुद्धि से ग्रहण कर लिया, और विद्याधर राजा के पद पर उसे स्थापित कर दिया।

घत्ता—सिर पर पट्ट बाँध हनुमान् को सेनापति वना दिया। आपत्तियो को नष्ट करने वाले और श्रेष्ठ उसी को फिर से दूतकार्य मे जोत दिया।

(5)

राम ने रविगति, विजय, कुमुद तथा पवनवेग आदि विद्याधर हनुमान् के साथ कर दिए।

राम ने हनुमान को महान् मत्री कार्य में स्थापित किया और उसे सीख दी—तुम क्षत्रिय शासन का परिपालन करने वाले विभीषण के घर जाना और उससे मीठा-मीठा कुछ इस प्रकार वोलना कि जिससे वह सीता देवी सौप दे। यदि रावण साम से सीता देवी को नही सौपता, तो दड प्रचड वचन कहना कि हमारे परोक्ष मे तुम आए और चित्तवृत्ति पर चढी हुई सुन्दरी को रति के हर्ष से अन्याय पूर्वक ले गए। तुमसे कहा जाता कि राम की प्रिया अर्पित कर दो। लक्ष्मण

---

4. AP एक्कल्लउ। 5 AP विहिउ।

(5) 1. AP खयरराया। 2. AP रविगइ°। 3 P कुमुयवलवेयया। 4 AP वलभद्दें। 5. A भुवणु। 6 AP चडदडवयणु। 7. A अम्हइ।

गोविंदमुक्कगुणभग्गणहि   दारियसरीरु सहु[9] ससयणहिं।
सोणियजलसित्तछत्तसहिउ[10]   मा होहि कयतणयरपहिउ ॥

घत्ता—बोल्लिउ लक्खणिण सूय[11] सीय वसुधरि ढोयवि ॥
जइ दहमुहु जियइ तो जीवउ किंकरु होइवि ॥5॥

6

हेला—अहवा जइ ण देइ तो जाइ[1] कि जियतो ॥
मइ कुद्धे ण हणुय णउ हणइ क कयतो ॥छ॥

तेलोक्कचक्कजूरावणहु   इय जाइवि साहहि रावणहु।
जइ तिण्णि वि एयउ देह णउ   तो तासु महु वि किर सधि कउ।
जइ जुज्झइ तो कालाणलहु   जइ णासइ तो पुणु काणणहु।
पेसमि दहगीउ ण दूय जइ   रहुवइपयजुवलु ण णवमि तइ।
तो हलि[2] हरि जयकारिवि चलिउ   तणुभूसणमणियरसवलिउ।
तारावलिहारावलिउरहि   उत्तु गहि तुंगपयोहरहि।
पविमलपसण्णदिसवयणियहि   चदक्कमणोहरणयणियहि।
आहडलधणुउप्परियणहि   रजियविज्जाहरगणमणहि।
णहलच्छिहि उवरि देतु पयइ   पडिमुहडह[3] सजणतु भयइ।

के द्वारा डोरी से छोडे गए तीरो के द्वारा विदारित शरीर के रक्त रूपी जल से सिक्त छत्र से सहित तुम अपने जनो के साथ यम नगर के अतिथि मत बनो।

घत्ता—लक्ष्मण ने कहा—सीता और धरती को लेकर यदि रावण जीवित रहता है, तो वह अनुचर होकर ही जीवित रह सकता है।

(6)

अथवा यदि वह सीता देवी को नही देता तो क्या जीवित रह सकेगा? मेरे क्रुद्ध होने पर हनुमान् किस कृतान्त को नही मारता?

त्रिलोक चक्र को सताने वाले रावण से तुम इस प्रकार कहना। यदि वह वे तीनो चीजे (सीता, श्री और भूमि) नही देता, तो उससे मेरी क्या सधि! यदि वह लडता है, तो मै उसे कालानल मे, और यदि भागता है तो फिर कानन मे नही भेज दू, तो हे दूत, मै श्रीराम के चरणयुगल को नमस्कार नही करूँगा। तब वह लक्ष्मण-राम की जय बोलकर चल पडा, शरीर के आभूषणो की मणि-किरणो से घिरा हुआ। जिसके उर पर तारावलियो की हारावलि है, जो ऊँची और विशाल पयोधर वाली है, अत्यन्त विमल और प्रसन्न दिशारूपी मुख वाली है, चन्द्रमा और सूर्य के मनोहर नेत्रो वाली है, जिसका इन्द्रधनुष का स्तरीय वस्त्र है, और जो विद्याधर समूह के मन को रजित करने वाली है, ऐसी आकाश रूपी लक्ष्मी के ऊपर पैर रखता हुआ शत्रु योद्धाओ को भय उत्पन्न करता हुआ।

8 A ललियगि। 9 A सुहु सज्जणेहिं। 10. P omits छत्त। 11. A सिय, P सीय।
(6) 1. P कि जाइ। 2. AP हरि हलि। 3 AP °सुहडहु ण जणतु।

घत्ता—सखपतिदसणु वडवाणलजालाकेसरु ।।
वेलापुछचलु मणिगणणहु सीहु व भासुरु ।।6।।

7

हेला—गभीरो सरमेरउ[1] गीढमयरमुद्दो[2] ।।
मारुइणा तुरंतेण लघिओ समुद्दो ।।छ।।

भुवणतरालि विक्खायएण दीहे जलणिहिसरजायएण ।
तिसिहरगिरिणाले[3] उद्धरिउ पायारकण्णियापरियरिउ[4] ।
छुहधवलट्टालविउलदलु लच्छीमजीररावमुहलु ।
देउलहसावलिपरियरिउ[5] कणयालयकेसरपिंजरिउ[6] ।
कामिणिमुहरसमयरदरसु जसपरिमलपूरियगयणदिसु ।
रावणरवियरवियसावियउ देवाह वि भल्लउ भावियउ ।
वित्थरियकोसु[7] सुभुयगपिउ कह णिउणे विहिणा णिम्मविउ ।
णहि जंतु जतु मारुइभसलु सपत्तउ त लकाकमलु ।।

घत्ता—जोयवि कुसुमसरु णारीयणु असेसु वि खुद्धउ ।।
कपइ णीससइ हसइ व बहुणेहणिवद्धउ ।।7।।

घत्ता—शख-पक्ति ही जिसके दाँत है, वडवानल की ज्वाला जिसकी अयाल है, जो बेला-रूपी पूँछ से चचल है, जिसके मणिगण रूपी नख है, ऐसा जो सिह की तरह भास्वर है।

(7)

जो गभीर और जल की मर्यादा वाला है, जिसने मकर मुद्रा स्थापित कर रखी है, ऐसे समुद्र का हनुमान् ने शीघ्र उल्लघन किया।

भुवनातराल मे विख्यात, लम्बे समुद्र के जल से उत्पन्न त्रिकूट पर्वत रूपी नाल के द्वारा जो उद्धत है, प्राकार रूपी कर्णिका से घिरा हुआ है, चूने की सफेद अट्टालिकाओ के विपुल दल वाला है, लक्ष्मी के नूपुरो के शब्दो से मुखर है, देवकुल रूपी हसावली से घिरा हुआ है, स्वर्णालय रूपी केशर से पिंजरित है, कामिनियो के मुख रस रूपी मकरद के रस से सहित है, यश रूपी परिमल से जिसने गगन और दिशाओ को भर दिया है, जो रावण रूपी रवि की किरणो से विकसित है, जो देवो के लिए भला और रुचिकर है, जिसका कोश विस्तृत है, जो भुजगो (चिह्नो) के लिए प्रिय है, किस निपुण विधाता ने उसकी रचना की है, ऐसे उस लका रूपी कमल मे, आकाश मार्ग से जाता-जाता हनुमान् रूपी भ्रमर जा पहुँचा।

घत्ता—उस कामदेव को देखकर समस्त नारीजन क्षुब्ध हो उठा, अत्यधिक स्नेह से निबद्ध वह काँपने लगता है, नि श्वास लेता है और हँसता है।

---

(7) 1. AP समेरुउ, K सरमेरउ but records a p . अथवा समेरउ समर्याद, T सरमेरउ जलमर्याद', अथवा समेरउ समर्याद, 2 AP गाढमयरसद्दो। 3. A णिसियर°। 4 A पायालें। 5. AP °हंसावलिपहुरउ, K पडुरिउ इप्यपि पाठ 6. A कणयायलकेसरि°। 7 A वित्थारिय°।

8

हेला—कदप्प सुरूविण णिएवि चित्तचोर ॥
का[1] वि देइ सककण चारुहारदोर[2] ॥छ॥

क वि जोयइ दिट्ठिय मउलियइ गुरुयणि[3] सलज्जदरमउलियइ ।
क वि चलिय कडक्खहि विवलियइ[1] क वि वियसियाइ क वि विलुलियइ ।
काहि वि गय तुट्टिवि मेहलिय क वि मुच्छिय धरणीयलि धुलिय ।
काहि वि रइजलझलक्क झलिय[5] क वि उरयलु पहणइ[6] झिंदुलिय ।
काइ वि थणजुयलउ पायडिउ काहि वि परिहाणु झत्ति पडिउ ।
क वि भणइ एहु[7] हलि दूउ जहि केहउ सो होही रामु तहिं ।
सइ सीय भडारी वज्जमिय ण सइत्तणवित्ति अइक्कमिय ।
हलि एहु वि पेच्छिवि पुरिसवरु जइ कह व महारउ एइ घरु ।
पायग्गे जइ थणग्गु छिवइ तबोलु वि जइ उप्परि घिवइ ।
तो हउ सकयत्थी[8] जगि जुवइ क वि पेम्मपरव्वस मूढमइ ।
अप्पाणु परु वि ण सच्चवइ[9] हा मुइय[10] मुइय जणवउ चवइ ।

घत्ता—कामु हरतु मणु पुरवरणारीसघायहु ॥
वलइयउच्छुधणु गउ भवणु विहीसणरायहु ॥8॥

(8)

चितचोर सुन्दर कामदेव को देखकर, कोई अपना कगन और सुन्दर हारदोर देती है।

कोई मुकुलित दृष्टि से देखती है, और गुरुजनो मे लज्जा से थोडा मुकुलित करती है, कोई चचल कटाक्षो से वक्र होती है, कोई विकसित करती है, कोई चचल करती है, किसी की कटिमेखला टूट गई। कोई मूछित होकर धरती पर गिर गई। किसी की रतिजल की धारा बह निकली। कोई कामविह्वल हो अपने उर तल को पीटती है। किसी ने अपने स्तनयुगल को प्रकट कर दिया। किसी का परिधान शीघ्र गिर पडा। कोई कहती है, "हे सखी, जहाँ ऐसा दूत है, वहाँ राम कैसे होगे ? सती सीता देवी वज्र की वनी है, उनकी सतीत्व वृत्ति अतिक्रात नही हो सकी। हे सखी, यह पुरुषवर देखने के लिए यदि किसी प्रकार मेरे घर आता है, और पैर के अग्र भाग से मेरे स्तन के अग्रभाग को छूता है, और यदि पान भी मेरे ऊपर फेकता है, तो मैं विश्व मे कृतार्थ युवती हूँगी।" कोई मूढमति प्रेम के वशीभूत हो जाती है। वह अपने पराए को नही जानती। जनपद चिल्लाता है, "वह मरी मरी"।

घत्ता—इस प्रकार पुरवर के नारी समूह के मन का हरण करता हुआ मुडे हुए ईख के धनुष वाला कामदेव विभीषण राजा के घर जा पहुँचा।

(8) 1. AP का वि हु देइ। 2 P चीरुहार°। 3. A गुरुयण°। 4 P विवालियइ। 5. AP गलिय। 6 A पहरइ। 7 हलि एहु। 8. AP सकियत्थी। 9. A सभरइ। 10 AP मुयइ मुयइ।

9

हेला—णियकुलकुमुयससहरो मुणियरायणाओ ॥
आओ तेण मण्णिओ अंजणगजाओ ॥छ॥

रयणुज्जलु आसणु घल्लियउ मणहारि समजसु वोल्लियउ ।
पाहुणयवित्ति णिस्सेस[1] कय पुच्छिउ कहिं अच्छिय कहिं वि गय ।
किं किज्जइ किं किउ आगमणु त णिसुणिवि पभणइ रइरमणु ।
गुणवतु भत्तिभाउब्भवउ[2] णयवतु संतु महुरुल्लवउ ।
पइ जेहउ माणुसु जासु घरि किं सो लग्गइ परघरिणिकरि ।
लइ एत्थु विहीसण दोसु ण वि कालिंदिसलिलणिहदेहछवि ।
पत्थहि पउलत्थि[3] देउ तरुणि पायालि म णिवडउ णिक्करुणि ।

घत्ता—गिरि गिरिययसरिसु गोप्पउ[4] जासु रयणायरु ॥
ते सहु कवणु रणु किं करइ[5] गव्वु तुह भायरु ॥9॥

10

हेला—दिट्ठादिट्ठकट्ठ पट्ठवउ रामणारी ॥
णहयरणाहमउडि मा पडउ पलयमारी ॥छ॥

(9)

अपने कुल रूपी कुमुद के चन्द्र, राजन्याय को जाननेवाले, अजना के शरीर से उत्पन्न, आए हुए हनुमान् का उसने आदर किया।

उसे रत्नो से उज्ज्वल आसन दिया तथा सुन्दर और उचित बात की। समस्त आतिथ्य वृति पूरी की। उसने पूछा—कहाँ थे और कहाँ गए थे, क्या किया जाए, किसलिए आपने आगमन किया? यह सुनकर कामदेव बोला—तुम जैसा गुणवान् भक्तिभाव से उत्पन्न न्यायवान् शात मधुरभाषी मनुष्य जिसके घर मे है? वह दूसरे की स्त्री के हाथ से क्यो लगता है? लो विभीषण, यहाँ दोष भी नही है, तुम प्रार्थना करो कि यमुना नदी के जल के समान देहछविवाला रावण युवती को दे दे (सीता वापस कर दे) और वह व्यर्थ ही पाताल लोक मे न जाए।

घत्ता—पहाड जिसे गेद के समान है, समुद्र जिसे गोपद के समान है, उसके साथ कैसा युद्ध? तुम्हारा भाई क्यो व्यर्थ अहकार करता है?

(10)

जिसने अदृष्ट कष्ट झेल लिये हैं, ऐसी राम की नारी को वापस कर दो। विद्याधर राजा के मुकुट के अग्रभाग पर प्रलयमारी न पड़े।

(9) 1 AP णीसेस। 2 A भाउत्तमउ। 3 A पहुलच्छि देव। 4. P गोप्पउ व जासु। 5. A करइ तुहारउ भायरु।

अज्ज वि णारूसइ दासरहि अज्ज वि ण खुहइ लक्खणउवहि ।
चउरासीलक्खधरायरहं कोडिउ पण्णास भयंकरहं ।
आहुट्ठ ताउ गयणेयरहं वलवंतहं वहुपहरणकरहं ।
अज्ज वि खुभंति ण नूववलइ[1] दुल्लंघइ पडिवलघवलइ ।
अज्ज वि अप्पावहि सीय तुहुं मा पइसउ बंधउ जमहु मुहुं ।
मा डज्झउ लंक सतोरणिय मा णिवडउ उयरवियारणिय ।
सरधोरणि गोविंदहु तणिय दुद्धरधणुगुणरवझणझणिय ।
मा रिट्ठु रिट्ठलोहिउ रसउ मा कालकियंतु[2] मासु गसउ ।
रायाणुएण ता भासियउ पइ चारु चारु उवएसियउ ।
मज्झत्थु महत्थु सच्चवयणु पइ मेल्लिवि को सुपुरिसरयणु ।
पइ मेल्लिवि को वि वुहाहिवइ को जाणइ एही कज्जगइ ।

घत्ता—इय ससिवि सुयणु पोरिसकंपवियसुरिंदहु ।।
णपि विहीसणेण दाविउ हणवंतु[3] खगिंदहु ।।10।।

11

हेला—णविऊण दसासण तरुणिहिययहारी ।।
आसीणो वरासणे कुसुमवाणधारी ।।

राम आज भी कुपित न हो, आज भी लक्ष्मण रूपी समुद्र क्षुब्ध न हो, पचास करोड़ चौरासी लाख भयंकर मनुष्यो की तथा साढे तीन करोड विद्याधरो की वलवान् एव अनेक आयुध हाथ मे लिये शत्रुसैन्य के लिए विघ्न स्वरूप और दुर्लंघ्य शत्रुसैन्य आज भी क्षुब्ध न हो। आज भी तुम सीता अर्पित कर दो। हे बन्धु, तुम यम के मुख मे प्रवेश मत करो। तोरणो सहित अपनी लका मत जलाओ। उदार विचारणीय दुर्धर धनुष की डोरी के शब्दो से झन-झन झरती लक्ष्मण के तीरो की पक्ति उसके ऊपर न पड़े। कौआ रावण के मास के लिए न चिल्लाए, काल कृतान्त मास न खाए। इस पर राजा का छोटा भाई (विभीषण) वोला—तुमने अत्यन्त सुन्दर उपदेश दिया। तुम्हे छोडकर महार्थवाला और सत्यवादी मध्यस्थ और कौन सुपुरुषरत्न हो सकता है ? तुम्हे छोड़कर और कौन बुधाधिपति हो सकता है ? इस कार्य गति को भला और कौन जान सकता है ?

घत्ता—इस प्रकार सज्जन की प्रशसा कर विभीषण ने हनुमान् को अपने पौरुष से सुरेन्द्र को कपित करने वाले विद्याधर राजा रावण से जाकर मिलवाया।

(11)

दशानन को प्रणाम कर तरुणियो के हृदय का अपहरण करने वाला कामदेव हनुमान् श्रेष्ठ आसन पर जाकर बैठ गया।

---

(10) 1. P णिववलइ। 2 P कालकयतु। 3 AP हणुवतु।

पभणइ पहु जडकोड्डावणिय[1] कि विहिय सेव रामहु तणिय ।
हा कट्ठु कट्ठु कणए जडिउ माणिक्कु अमेज्झमज्झि पडिउ ।
कहि तुहु कहि सो तुह सामि हुउ भणु को ण विहाणवसेण चुउ ।
अह एण वियारें काइ महु आओ सि काइ कहि कज्जु[2] लहु ।
त णिसुणिवि पावणि पडिलवइ विणओणयसिरु[3] पुणु पुणु भणइ ।
भो पुप्फविमाणपुप्फभमर भो सुरसुदरिघल्लियचमर ।
भो[4] मदरसु दरकयभवण[5] भो महिहरकपावणपवण ।
भो देव दसास दसासगय- जसधवलियजग[6] रयणियरधय ।
लक्खणदामोयरणमियकमु अट्ठमु हलहरु रणरसविसमु ।
जसु णामें सकइ विसमु जउ किर कवणु गहणु तहु देव हउ ।
ते तुज्झ पासि[7] हउं सपहिउ इय साहइ सो विणए सहिउ ।

घत्ता—आणिय सीय जइ तो णत्थि दोसु पुणु दिज्जइ ॥
हरिविक्कमहरिणा सहु तुरिय सधि रइज्जइ ॥11॥

12

हेला—आरूढो गयाहिवे मोरु कुल्लमग्ग ॥
को मग्गइ रयधओ एलयाण[1] दुग्ग ॥छ॥

जग को कुतुहल उत्पन्न करने वाला राजा पूछता है—तुमने मूर्खों के लिए कुतुहल उत्पन्न करनेवाली राम की सेवा क्यो की ? खेद की बात है कि स्वर्ण से जडित माणिक्य अपवित्र वस्तु मे जा मिला। कहाँ तुम और कहाँ वह तुम्हारा स्वामी हुआ ! बताओ विधान के वश से कौन नही चूक जाता अथवा मुझे इस विचार से क्या करना। तुम किस काम से आए हुए थे, शीघ्र बताओ ? यह सुनकर हनुमान् कहता है। विनय से नतसिर वार-बार कहता है—हे पुष्पक विमान रूपी पुष्प के भ्रमर, हे सुर-स्त्रियो द्वारा सचालितचमर, हे सुमेरु पर्वत को अपना घर बनाने वाले, हे महीधर को कपाने वाले पवन, हे देव दशानन, दसो दिशाओ मे प्रसारित यश से विजय को धवलित करने वाले हे निशाचरश्रेष्ठ ! लक्ष्मण जैसे नारायण के द्वारा जिनके चरण नमित है, और युद्ध रस मे विषम है, ऐसे वह आठवे हलधर है, जिनके नाम से विषम यम काँप उठता है। हे देव तुम्हारे द्वारा उसका ग्रहण कैसे ? उन्होने मुझे तुम्हारे पास भेजा है, वह (राम) विनय के साथ यह कहते है—

घत्ता—यदि तुम सीता ले आए हो, तो इसमे दोष नही है, उसे दुबारा दे दिया जाए। सिंह के समान पराक्रम वाले हरि (लक्ष्मण) के साथ शीघ्र सधि कर ली जाए।

(12)

हाथी पर चढकर मयूर कौन माँगता है, कौन पापान्ध गाडरो के दुर्ग को चाहता है ? (गाडरो की पद्धति से अपनी रक्षा चाहता है ?)

[11) 1. AP °कोडावणिय । 2 A कज्ज । 3. A विणए णयसिरु । 4 A सुदरमदर° । 5. P °भमण । 6 AP जगधवलियजस । 7 AP पासु ।
(12) 1. AT एडयाण ।

सायरु किं मज्जायहि सरइ महिवइ कि अण्णणारि हरइ ।
जइ दीवउ अधारउ करइ तो किं पाहाणखडु फुरइ ।
जइ तुहु जि कुकम्मइ आयरहि मणु कुवहि वहतउ णउ धरहि ।
तो कासु पासि जणु लहइ जउ जहि रक्खणु तहि उप्पण्णु भउ ।
अण्णु वि णाणाविहदुक्खभरु परहरु इहरत्तपरत्तहरु ।
त णिसुणिवि लकेसरु भणइ को रडकहाणियाउ सुणइ ।
महु किंकरु ताव पढमु जणउ पुणरवि दसरहु दसरहतणउ ।
तहु दिण्णी हुउ किं[2] किर खममि घरलजिय सीय किं[3] ण रममि ।

घत्ता—पुव्व पउत्त महु पच्छइ रहुणाहहु दिण्णी ।।
सो छिद्दिवि मृगेण[4] मइ आणिय णयणरवण्णी ।।12।।

13

हेला—मइ चित्तेण छित्तिया कह अणुहवइ रामो ।।
हो हो मयरकेउणा[1] एत्थु[2] णत्थि सामो ।।छ।।

ज चगउ त[3] त अवठवइ किंकरु सुद्धत्तणु दक्खवइ ।
मणिकारणि मुहि कवलउ अहि वि जइ मग्गइ तो मग्गउ महि वि ।
सयडगु वि मग्गइ एउ खलु सो सपहि वट्टइ वूढछलु ।।

क्या समुद्र अपनी मर्यादा से विचलित होता है ? क्या राजा दूसरे की स्त्री का अपहरण करता है ? यदि दीपक अँधेरा करता है, तो क्या पत्थर का टुकडा प्रकाश करेगा ? यदि तुम कुकर्मो का आदर करते हो, और कुपथ मे जाते हुए अपने मन को नही रोकते तो मनुष्य किसके लिए जय प्राप्त करेगा ? जहाँ रक्षा की आशा है, वहाँ भय उत्पन्न हो गया है। और फिर परस्त्री नानाप्रकार के दु खो से भरी हुई इस लोक और परलोक का अपहरण करनेवाली होती है। यह सुनकर रावण कहता है—तुम्हारी रडा-कहानी कौन सुने ? सब से पहले तो जनक मेरा अनुचर है, फिर दशरथ और दशरथ का पुत्र। उसे उसने कन्या दे दी। मैं कैसे क्षमा कर सकता हूँ। मैं गृहदासी सीता के साथ रमण न करूँ ?

घत्ता—वह पहिले मेरे लिए कही गई थी। बाद मे राम के लिए दे दी गई। अत मृग के द्वारा छलकर उस मृगनयनी को मैं ले आया।

(13)

जिसे मेरे चित्त ने छू लिया है, राम उससे रमण कैसे कर सकता है ? हे कामदेव (हनुमान्), यहाँ साम की आवश्यकता नही।

जो-जो अच्छा होता है अनुचर उस-उसको राजा के लिए सुरक्षित रखकर अपनी शुद्धि को दिखाता है। मणि के कारण साँप को मुख मे काटा जाता है। यदि वह माँगता है, तो धरती माग ले। परन्तु यह दुप्ट तो चक्र भी मागता है। वह इस समय छल करना चाहता है, वह मुझ से

2 AP किर किं। 3 AP ण किं। 4 P मिगेण।

(13) 1. AP मयरकेउणो। 2. A इत्थ णत्थि, P इत्थ णत्थि। 3. A त त अल्लवइ, P त जि अवट्ठवइ।

पुरि मग्गउ लग्गउ मज्झु रणि — किं[4] अच्छइ तहिं हिंडतु वणि।
त णिसुणिवि सुट्ठु[5] दुगुंछियउं — दूएण राउ णिब्भछियउ।
णउ[6] हसिउ देव पइ मण्णियउं — केसवजपिउ णायण्णियउ।
सुय[7] सीय वसु धरि देइ जइ — परमत्थें इच्छइ संधि तइ।
सो लिहियउ तुह रूवु वि पुसइ[8] — णियभायहु उवरोहें सहइ।
हरि केव वि[9] अम्हइ उवसमहु — लकाउरि णेय अइक्कमहु।

घत्ता—मुइ मुइ एह तृय[10] सुहिणेहे[11] कहइ कइद्धउ ॥
रावण वहइ पइं रणरंगि जणद्दणु कुद्धउ ॥13॥

14

हेला—ताव णिकुंभ कुंभ खरदूसणा विरुद्धा ॥
हणुहणुसद्ददारुणा[1] मारणावलुद्धा ॥छ॥

कोवारुणणयण भणंति भड — गोवाल वाल दढमूढ जड।
मयरद्धय धुवु लज्जइ रहिउ — किं झखहि ण जरेण गहिउ।
खज्जोए किं रवि ढकियउ — किं सायरु गरलें[2] पंकियउ।
किं भमरें गरुडु झडप्पियउ — किं दहमुहु अण्णे चपियउ[3]।
जेणेहउ बोल्लहि मुक्ख तुहु — फोडिज्जइ तेरउ दुट्ठ मुहु।

युद्ध कर ले और नगरी माँग ले। वह वन मे व्यर्थ क्यो घूम रहा है? यह सुनकर उसे अत्यन्त घृणा हुई। उसने राजा की भर्त्सना की कि मैने तुम से हँसी नही की, जैसा कि तुमने मान लिया है। तुमने अभी लक्ष्मण का कहना नही सुना—यदि वह वास्तव मे सधि चाहता है तो श्री, सीता और धरती दे वह तुम्हारे लिखित रूप को भी मिटा देता लेकिन अपने भाई के अनुरोध पर लक्ष्मण को हम लोगो ने किसी प्रकार शान्त कर रखा है और लका नगरी पर आक्रमण नही किया।

घत्ता—'तुम इस स्त्री को छोड दो, छोड दो', हनुमान् कहता है—'हे रावण क्रुद्ध लक्ष्मण तुम्हें युद्ध मे मार डालेगा'।

(14)

इतने मे निकुभ कुभ और खरदूषण विरुद्ध हो गए। मारने के लोभी वे मारो-मारो शब्द से कठोर हो रहे थे।

क्रोध से लाल-लाल आँखो वाले भट कहते है—हे गोपालबाल, वज्रमूढ और जड कामदेव (हनुमान्), निश्चित रूप से तुम लज्जा से रहित हो, बुढापे से ग्रस्त तुम क्या कहते हो? क्या खद्योत सूर्य को ढाँक सका है? क्या समुद्र विष से पकिल हुआ है? क्या भ्रमर गरुड को झपट सका है? क्या रावण दूसरे के द्वारा चापा जा सकता है? तुम मूर्ख हो। जिसने यह कहा है—हे दुष्ट, तेरा

4 AP कहिं अच्छइ। 5 P सुद्धदुगु°। 6. A जणहसिउ। 7. AP सिय। 8. AP लुहइ। 9 A वियभइ। 10. AP तिय। 11. सुहिणिहे।
(14) 1 हणहणसद्दें। 2. AP गरलें। 3 AP चप्पियउ।

तुहु एक्कु सहाउ वीय पिसुणु सुग्गीउ वालिपावियवसणु ।
ते लक्खण राम दसाणणहु जइ कमि पडंति पचाणणहु ।
तो हरिणा इव चुक्कति कहि वाएण जति गिरिवर वि जहिं ।
तहिं पत्तलु दलु पइ कि थविउ जइ पयजुयलउ देवहु णविउ ।
तो रामहु तुम्हह त सरणु ण तो आयउ एवहिं मरणु ।

घत्ता—हणुए वोल्लिउ रणु घरि वोल्लतह चगउ ॥
भडकलयलकलहि पइसतहि कपइ अगउ ॥14॥

15

हेला—धणुजुत्ता भडा वि गज्जति जेम मेहा ॥
तेम ण ते भिडति वरिसति सवणदेहा ॥छ॥

चिरु रिक्खपतिसणिहणहहि रत्तउ हयगीउ सयपहहि ।
सरु ससरि तिविट्ठे समरि हउ मुउ सत्तमणरयहु णवर गउ ।
जिह सो तिह तुहु वि अणगवसु लक्खणसरकड्ढियरुहिररसु ।
दहवयण मरेसहि आहयणि रइ कि ण करहि मेरइ वयणि ।
सीहा इव कुडिलचडुलणहर[1] ता उट्ठिय खग हलमुसलकर ।
गज्जतु एतु तिणसमु गणिउ मारुइणा सुहडसत्थु भणिउ ।

मुख फोड दिया जाना चाहिए। तुम्हारा एक ही सहायक है, और उधर वालि से दु ख पाने वाला सुग्रीव चुगलखोर है। वे राम और लक्ष्मण यदि दशानन की चपेट मे पडते हैं, तो सिंह से मृगो की तरह किस प्रकार वच सकते है ? जहाँ हवा से वडे-वडे पेड गिर जाते हैं वहाँ पत्तो और दलो को क्या स्थापित किया गया ? यदि तुमने देव के चरण-कमलो को नमन किया है, तो राम ही तुम्हारे लिए शरण है, नही तो तुम लोगो का इस समय मरण आ गया।

घत्ता—हनुमान् ने कहा कि घर मे युद्ध की वात करते हुए अच्छा लगता है। योद्धाओ की कल-कल मे प्रवेश करने वालो का शरीर काँप जाता है।

(15)

धनुषो से युक्त सुभट भी मेघो की तरह गरजते है लेकिन वे उस प्रकार सव्रण देह (व्रण सहित शरीर, सजल शरीर) नही भिडते, सजल मेघ की तरह वरसते है। वहुत प्राचीन समय में नक्षत्र पक्ति के समान नखो वाली स्वयप्रभा में अनुरक्त अश्वग्रीव कोलाहल से युक्त युद्ध मे त्रिपृष्ठ के द्वारा मारा गया था और मरकर सीधे सातवे नरक मे गया था। जिस प्रकार वह, उसी प्रकार काम के वशीभूत होकर लक्ष्मण के तीरो से जिसका रक्त रूपी रस खीचा गया है, ऐसे तुम दशवदन युद्ध मे मरोगे। तुम मेरे वचन मे प्रेम क्यो नही करते ? तव कुटिल और चचल नखो वाले सिंहो के समान, हल और मूसल हाथ मे लेकर विद्याधर उठे। गरजकर आते हुए उन्हे, उसने तिनके के वरावर समझा। हनुमान् ने सुभट-समूह से कहा—पास आते हुए

---

(15) 1. °चवल°, P °चटुल°।

ढुक्कहु सयलहु सीसइ खुडमि तडिदंडु व पहुउप्परि पडमि।
ता भासिउ मग्गपयासणेण अ तरि पइसेवि विहीसणेण।
हम्मइ ण दूउ जपउ विरसु जाणेसहु पोरिसु कणयकसु।
असिसंकडि धणुगुण रवमुहलि रिउहक्कारणमारणतुमुलि।

घत्ता—राए भासियउ मा मेरउ विहि विहरेज्जसु[2] ॥
राहवलक्खणहु सदेसउ एम कहेज्जसु ॥15॥

16

हेला—सरण सुरवरस्स[1] पइसरइ जइ वि काम ॥
तो वि अहु हणामि[2] सहु किंकरेंहि राम ॥ छ॥

धुवु पावमि भुक्खिउ कालकलि[3] तिलमेत्तइ खडइ देमि[4] बलि।
लक्खणहु सुलक्खणु अवहरमि बंदिग्गहि पुहइदेवि[5] धरमि।
णयरिउ मंदिरणिज्जियससिउ गेण्हिवि कोसलवाणारसिउ[6]।
भडरुहिरमहासमुद्दि तरमि सुग्गीवहु गीवभगु करमि।
खलणीलहु णीलउ सिरु लुणमि कुमुयहु कुमुयप्पएसु वणमि।
दसरहदसप्राणइ[7] णिट्ठवमि जणयहु जिउ जमपुरि पट्ठवमि
कु दहु कु दाहइ अट्ठियइ जाणेज्जसु एवहिं णिट्ठियइ।

तुम सबके मै सिर काट लूँगा और विद्युद् दड की तरह स्वामी के ऊपर गिरूँगा। तब भीतर प्रवेश करते हुए मार्ग का प्रकाशन करने वाले विभीषण ने कहा—बुरा बोलने वाला भी दूत मारा नही जाता, पौरुष को स्वर्ण की तरह दल कर जाना जाएगा। तलवारो से व्याप्त धनुष और डोरियो के शब्द से मुखर शत्रुओ की हुकार और प्रहारो से सकुल (युद्ध मे)।

घत्ता—राजा ने कहा कि मेरे कर्त्तव्य को गोपनीय मत रखो। राम और लक्ष्मण से मेरा सन्देश इस प्रकार कहना—

(16)

यदि कामदेव (हनुमान्) देवेन्द्र की भी शरण मे चला जाए तो भी मैं अनुचरो के साथ राम का वध करूँगा। मै निश्चित रूप से भूखे काल रूपी यम को प्राप्त करूँगा। और तिल के बराबर टुकडे कर उसे बलि दूँगा। लक्ष्मण की सुलक्षणा का अपहरण करूँगा और पृथ्वीदेवी को बदी-घर में रखूँगा। अपने भवनो से चन्द्रमा को जीतने वाली अयोध्या और वाराणसी नगरियो को ग्रहण कर, योद्धाओं के रक्त के महासमुद्र मे तिरा दूँगा। सुग्रीव की ग्रीवा भंग करूँगा। दुष्ट नील के नीले सिर काटूँगा। कुमुद को नाभि प्रदेश मे ,आघात पहुँचाऊँगा। दशरथ के दसो प्राणो को नष्ट कर दूँगा। और जनक के प्राणो को यमपुर भेज दूगा। कुंद की कुंद से आहत हड्डियो को तुम इस समय नष्ट हुआ जानो। मैं नल की जाघो रूपी मलिका से वसा निकालूँगा। और

---

2. AP वि रहेज्जसु।

(16) 1 AP सुरवइस्स। 2 P हणेमि। 3 P कालु कलि। 4. AP देवि। 5 A छुहिवि वे वि। 6. AP वाराणसिउ। 7. A °पाण विणिट्ठवमि, P °पाण वि णिट्ठवमि।

कड्ढमि जघाणलवस णलहु ढोइवि[8] छुहियहु ढंढरउलहु ।
हणुमंत[9] तुज्झु हणु गिद्ध जिह भक्खति हणमि सगामि तिह ।
जज्जाहि मित्त[10] मोक्कल्लिउ ता पावणि णहयलि चल्लियउ ।
ता चिंत पइट्ठ विहीसणहु को चुक्कइ कम्महु[11] भीसणहु ।
परमेसरु अद्धधरत्तिवइ मारेव्वउ लक्खणेण णिवइ ।
तहु दुम्मणु मुहु अवलोइयउ अप्पउ पहुणा पोमाइयउ ।

घत्ता—सभरह एतु खल महु ते कुमुणियदप्पहु[12] ॥
पुप्फयत गयणे किं[13] समुहु थति विडप्पहु ॥16॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयतविरइए महाकव्वे हणुमतदूयगमणं[14]
णाम चउहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥74॥

भूखे भूत-कुल को दूँगा । हे हनुमान् तुम आक्रमण करो, मैं तुम्हे सग्राम मे इस प्रकार मारूँगा, कि जिससे गिद्ध खा सके । हे मित्र जाओ-जाओ, मैंने छोड दिया । हनुमान् आकाश-मार्ग मे उडकर चला गया । तब विभीषण को चिन्ता उत्पन्न हुई कि भीषण कर्म से कोई नही बच सकता । परमेश्वर अर्धचक्रवर्ती है, राजा लक्ष्मण के द्वारा मारा जाएगा । रावण ने विभीषण का उदास मुख देखा, और स्वय की खूब प्रशसा की ।

घत्ता—भरत के साथ आते हुए वे दुष्ट क्या मेरे सम्मुख उसी प्रकार ठहर सकते है, जिस प्रकार आकाश मे धरती पर ज्ञातदर्प राहु के सामने चन्द्रमा ।

त्रेसठ महापुरुषो के गुणालकारो से युक्त महापुराण मे महाकवि पुष्पदत द्वारा
विरचित एव महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का हनुमान्-दूत-
गमन नाम का चहुत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ ॥74॥

---

8 AP णेय वि । 9 A हणवत । 10 P मित्त तुहु मोक्कलिउ । 11. A कम्मविहीसणहु । 12 AP कुमुणिव कदप्पहो, T कदप्पहो कामस्य । 13. A कइ समुहु थति, P किं सम्मु थति । 14 AP दूयकज्ज ।

पंचहत्तरिमो संधि

पवणंजयसुयहु समागमणि ण हरि हरिहि समावडिउ ॥
रहुवइआएसे कुइयमणु लक्खणु वालिहि अब्भिडिउ ॥ध्रुवक॥

1

हणुएण णवेप्पिणु भणिउ रामु — भो यिसुणि भडारा हित्तरामु ।
दहवयणु ण इच्छइ संधि देव — पर गज्जइ जिह बीहंति देव ।
सामहु णामें जो वेउ सामु — सो णायण्णइ वण्णेण सामु ।
तं णिसुणिवि रोमंचिउ उविंदु — गलगज्जइ हसियमुहारविंदु ।
रणि मारमि दससिरु कुंभयण्णु — वणि[1] लोहिउ दावमि कुंभयण्णु ।
असिधारइ दारमि कुंभिकुंभु — दलवट्टमि झ त्ति णिकुंभु कुंभु ।
जीवावहाह[2] खरदूसणाह — दारमि[3] उरु रहुवइदूसणाह ।
पहरंति केम हत्थप्पहत्थ[4] — मइ मुक्कसरावलिछिण्णहत्थ ।
मारीयउ मारिहि देमि गासु — -मउ णिम्मउ रणि कासु वि खगासु ।

पचहत्तरवीं संधि

पवनजयपुत्र के आगमन पर, राम के आदेश से कुपितमन लक्ष्मण बालि से इस प्रकार भिड गया मानो सिंह सिंह पर टूट पडा हो ।

(1)

हनुमान् ने प्रणाम कर राम से कहा—हे आदरणीय देव, सुनिए, सीता का अपहरण करने वाला रावण संधि नही चाहता, केवल इस प्रकार गरजता है कि देवता डर जाते हैं । वर्ण से श्याम वह साम नाम के वेद को नही सुनता । यह सुनकर लक्ष्मण रोमांचित हो उठे । जिसका मुखरूपी कमल हँसता हुआ है ऐसा वह गरज उठता है—मैं युद्ध मे रावण और कुंभकर्ण को मारूँगा । कुंभकर्ण को घावो से लाल दिखाऊँगा । तलवार की धार से हाथी के गंडस्थल को फाड दूँगा । शीघ्र निकुंभ और कुंभ (कुंभकर्ण के पुत्र) को चूर-चूर कर दूँगा ।जीवो का अपहरण करनेवाले, राम के लिए दूषण, खरदूषण के उर को फाड दूँगा । मेरे द्वारा मुक्त बाणावली से छिन्नहस्त हस्त और प्रहस्त किस प्रकार आक्रमण करेंगे । मारीच को महामारी का कौर बना-

(1) 1 A वणलोहिउ । 2. AP जीवावहारु । 3. A दावमि कयरहुँ, T उरु महान्वक्षस्थल ना ।
4 AP हत्थावहत्थ ।

विद्धंसमि[5] इंदइइंदजालु अरिपुरु पलित्तु लग्गग्गिजालु।
पेच्छेसहु कइवयवासरेहिं परबलु पच्छाइउ महु सरेहिं।

घत्ता—मइ कुद्धे राहव सो जियइ जो तुह पयपकय णवइ ॥
तुहु देव पयावपसरतसिउ[7] रवि वि णिरतरु णउ[8] तवइ ॥1॥

2

तहिं अवसरि आयउ वालिदूउ बइसारिउ कज्जालाव हूउ[1]।
ते वुत्तु[2] देव अविलघधाम[3] सीयासइवल्लह णिसुणि राम।
[4]खेयरचूडामणिघडियपाउ[5] अट्ठंगु णवइ तुह वालिराउ।
अण्णु वि विण्णवइ पहुल्लवत्तु जइ इच्छहि मेरउ किकरत्तु।
तो णिद्धाडहि सुग्गीव हणुय रण भरु सहति कि वालतणुय।
णिवडतु कूवि तिणधारि[6] पडइ णग्गोहविलविरु[7] ऊद्धु चडइ।
गरुए सहु जायइ विग्गहेण विहडिज्जइ हीणपरिग्गहेण[8]।
तुह विरहखीण गुणवत सत मारेप्पिणु रामणु हरमि कत।
दासरहि पजपइ लक जाव महु समउ खगाहिउ एउ ताव।

कर छोड़ूँगा ? युद्ध मे किसी भी विद्याधर के मद को निर्मद कर दूँगा ? इन्द्रजीत के इन्द्रजाल को ध्वस्त कर दूँगा। जिसमे अग्निज्वाला लगी हुई है, ऐसे शत्रु पुर को जला दूँगा। देखूँगा कि मेरे तीर कितने दिनो मे शत्रु सेना को आच्छादित करते है।

घत्ता—मेरे क्रुद्ध होने पर, हे राम, वही जीवित रहता है, जो तुम्हारे चरण-कमलो को प्रणाम करता है। हे देव, तुम्हारे प्रताप के प्रसार से त्रस्त सूर्य भी निरन्तर नही तपता।

(2)

उसी अवसर पर वालि का दूत आया। उसे बैठाया और कार्य सबधी बातचीत हुई। उसने कहा—जिनका तेज अतिलंघनीय है, ऐसे सीता सती के स्वामी हे राम सुनिए। जिसका चरण विद्याधरो के चूडामणियो पर आरोपित है, ऐसा वालि राजा तुम्हे आठो अगो से प्रणाम करता है, और प्रफुल्लमुख वह निवेदन करता है कि यदि तुम मुझे अनुचर बनाना चाहते हो तो सुग्रीव और हनुमान् को निकाल दो। वे छोटे-छोटे तिनके क्या युद्ध भार उठा सकेगे ? कुए मे गिरता हुआ तिनके को पकडकर उसी मे गिरता है। वट वृक्ष के तने का अवलम्बन लेने वाला ऊपर चढता है। शक्तिशाली से विग्रह होने पर शनि का साथ लेने से (व्यक्ति) विघटन को प्राप्त होता है। तुम विरह से क्षीण गुणवान् और संत हो। मैं रावण को मार कर कान्ता को ले आऊँगा। इस पर राम उस दूत से कहते है—जब तक लंका है (मैं लका मे हूँ) तब तक यह विद्याधर राजा

---

5 A विद्धसिवि। 6 A इदइ इदजालु, P इदहो इदजालु। 7. A पयावइसरतसिउ। 8. AP णवि।
(2) 1. AP भूउ। 2 A तो वुत्तु। 3 A अविलबधाम। 4 A °चूलामणि°। 5 AP °घिट्ठपाउ। 6. A तणुवारि, P तणधारि। 7. P णग्गोहि। 8. A वीण°।

मयगिल्लगल्लु[9] मित्तत्तहेउ करिवर[10] महामेहक्खु देउ।
पच्छइ[11] ज इच्छइ त जि करमि अहुणा तहु सुक्किउ काइ सरमि।

घत्ता—लइ[12] इच्छउ केर महुतणिय कु जरु ढोइवि गिरिसरिसु॥
इय भासिवि राएं पेसियउ सहुं तहु दूए णियपुरिसु॥2॥

3

किलिकिलिपुरु पत्तउ दिट्ठु वालि तेयाहिउ ण चंडंसुमालि।
मंते पवुत्तु भो सच्छचित्त करि ढोइवि करि पहुसमउ जत्त।
तूसति राय सुद्धे मणेण ता भणइ वालि सथुउ अणेण।
जेणाहवखधइ[2] भग्गएण कायरणरमग्गविलग्गएण।
महु भीएं कउ[3] किक्किधि वासु हा रामे पोसिउ पक्खु तासु।
कंडुयणि होइ पंडुरिय[4] रेह मणगूढहु[5] केरिय विति एह।
जुज्झेसइ सीरि सिलिम्मुहेहिं अणउत्तु[6] वि जाणिज्जइ बुहेहिं।
मग्गणउ धम्मु गुणु मुइवि जाइ सुग्गीवहु हणुयहु उवरि थाइ।
इय चिंतिवि वोल्लिउ रायमति भण्णइ ण देइ सो तुज्झु दति।
देसइ खयराहिउ असिपहारु तोडेसइ पइ सुग्गीवहारु।

मेरे साथ है। मित्रता के लिए वह मद से गीले गडवाला महामेघ नाम का गज दे। वाद मे जो वह इच्छा करेगा वह मैं करूँगा। इस समय मैं उसके उपकार की क्या याद करूँ।

घत्ता—लो गिरि के समान हाथी को लाकर मेरी आज्ञा को चाहो, यह कह कर राजा राम ने उस दूत के साथ अपना आदमी भेजा।

(3)

वह किल-किल नगर पहुँचा। उसने वालि से भेट की। तेज से अधिक वह मानो सूर्य हो। मत्री वोला—हे स्वच्छ चित्त तुम हाथी देकर राजा (राम) के साथ यात्रा करो, शुद्ध मन से राजा संतुष्ट होगे। तव उसके द्वारा सस्तुत वालि बोला—सग्राम की धुरी से भागे हुए कायर मनुष्यो के मार्ग का अनुसरण करने वाले जिसने मुझसे डर कर किष्किधा मे निवास किया, राम ने उसके पक्ष का समर्थन किया। खुजली मे सफेद रेखा होती है। जो मन से गूढ होते है, उनकी यही वृत्ति होती है। वलभद्र तीरो से लड़ेगे। जो अनुक्त है, वह भी पंडितो के द्वारा जाना जाएगा। मग्गणउ (याचक और तीर) धम्म (धर्म और धनुष) गुण (गुण और डोरी) को छोड़कर जाएगा तथा सुग्रीव और हनुमान् के ऊपर स्थिर होगा। इस प्रकार के कथन को सुनकर राजमत्री कहता है कि वह तुम्हे गजवर नही देगा, विद्याधर राजा असि प्रहार करेगा, वह तुम्हारे सुग्रीव हार को (सुग्रीव को धारण करने वाले अच्छी ग्रीवा धारण करने वाले)।

9 A °गिल्लागिल्लमित्तत्त°। 10 A करिवरु वि महा°। 11 P पेच्छइ। 12. A लइ इछउ, P सइ इच्छउ।

(3) 1. P °पुरि। 2. A खधें। 3. A किउ। 4. P पडुरिव। 5. A मणगूढहू केरी, P मणमूढहू केरी। 6. A मणुउत्ति।

घत्ता—ता झ त्ति वओहरु णीसरिउ आविवि[7] कण्णविवरक्खरउ ॥
आहासइ बलणारायणहं रिउदुव्वयणपरंपरउ ॥3॥

4

ता चिंताविउ मणि रामएउ एक्कु[1] जि सिहि अण्णु वि वायवेउ ।
एक्कु जि रवि अण्णु जि गिंभयालु एक्कु जि तमु अण्णु जि मेहजालु ।
एक्कु जि हरि अण्णु जि पक्खरालु एक्कु जि जमु अण्णु जि पुण्णकालु ।
एक्कु जि विसि[2] अण्णु जि सविसदिट्ठि एक्कु जि सणि अण्णु जि तहिं मि विट्ठि ।
एक्कु जि दहमुहु दुद्धरु विरुद्धु अण्णेक्कु तहिं जि बलिपुत्तु कुद्धु ।
मित्तयणु खीणु बलवंतु सत्तु पाणिट्ठु सुट्ठु हित्तउ कलत्तु ।
विरइज्जइ एवहिं कवणु मंतु णउ कुसलकारि एक्कु वि जियंतु ।
ता विहसिवि बोल्लइ वासुएउ किं दीव जिणंति दिणेसतेउ ।
केसरिकिसोरु किं मृग[3] छिवंति ते जगि जियंति जे पइं णवंति ।
असमंजसु सज्जणपाणहारि परमेसर पच्छा कोवकारि ।
सुहडत्तणदियसुरवरालि[4] अच्छउ रावणु ता हणमि वालि ।
घत्ता—मइं कुइइ[5] रणंगणि ओत्थरिए भीरु महागिरिकंदरहु ॥
मा चिंतहि राहव किं पि तुहु सूर जंति जममंदिरहु ॥4॥

घत्ता—तब शीघ्र ही दूत निकला और आकर उसने कानो को विपरीत लगने वाले अक्षरो से युक्त शत्रु की दुर्जन शब्द-परंपरा राम और लक्ष्मण से कही ।

(4)

तब रामदेव ने अपने मन मे विचार किया कि एक तो आग है, और फिर वायु का वेग, एक तो रवि और फिर ग्रीष्मकाल । एक तो अंधकार और फिर मेघजाल; एक तो अश्व और दूसरा कवच पहिने हुए, एक तो यम है और दूसरे पूर्ण आयु, फिर एक तो सांप और विष सहित दृष्टि, एक तो शनि और दूसरे वह आंधी वर्षा है । एक तो दुर्धर रावण विरुद्ध है, और दूसरे बलिपुत्र (वालि) क्रुद्ध है । मित्रजन दुर्बल है, शत्रु बलवान् है । प्राणो के लिए इष्ट कलत्र का अपहरण कर लिया गया है । इस समय कौन-सा मत्र करना चाहिए ? जीतने वाला और कुशल करने वाला एक भी नही है । तब लक्ष्मण हँसते हुए बोले—दीपक क्या दिनकर के तेज को जीत सकते हैं ? सिंह के बच्चे को क्या मृग छू सकते हैं ? वे ही जग में जी सकते है कि जो तुम्हारे चरणो मे प्रणाम करते है। सज्जनो के प्राणो का अपहरण करने वाला और बाद में पश्चात्ताप करने वाला,वह अनुचित है । हे परमेश्वर रावण तो रहे, पहिले मैं अपने सुभटत्व से सुरवर श्रेणी को आनदित करने वाले वालि को ही मारूँगा ।

घत्ता—युद्ध के प्रागण मे क्रुद्ध होकर मेरे उछलने पर, डरपोक गिरिवर की गुफाओ मे और देव यम के घर मे जाते हैं । हे राम, आप कुछ भी चिंता मत करिए ।

---

7 P आयण्णिवि कण्णविरसखरउ, T सुइविवर° श्रोत्रानिष्ट ।

(4) 1. P एक्क वि । 2. A विसु । 3. AP मिग । 4. A सुरवमालि । 5. A कुद्धइ, P कुइएण ।

5

ता पहुणा पेसिउ तक्खणेण सुग्गीउ चलिउ सहु लक्खणेण ।
साहणु पहिं[1] उप्पहि णहि ण माइ गयघड मयवस मल्हंति जाइ ।
हरि खुरखयरयहयभाणुदित्ति रह[2] चक्कधारदारियधरित्ति ।
चूरियभुयंग चलविवलियंग[3] भयकंपिय दिसमायंग तुंग ।
थिउ सिविरु धरेप्पिणु दुग्गमग्गु उव्वेइउ[4] सससारंगवग्गु ।
आसोसियाइं सरिसरजलाइं णिल्लूरियाइं णवदुमदलाइं ।
सिरणलिणारोहियणियकरेण अक्खिउ वालिहि केण वि चरेण ।
दुद्धरदीहरसु डालसोंडु[5] रामें तुम्हुप्परि पहिउ दंडु ।
पडिवलु गयणयलविलग्गतालि आवासिउ खइरवणंतरालि ।
घत्ता—सुग्गीवें सेविउ सीरधरु लद्धउ सहयरु चक्कवइ ॥
तं णिसुणिवि रूसिवि सण्णहिवि[6] णिग्गउ वालि खगाहिवइ ॥5॥

6

गंभीरतूरकोलाहलाइं सुग्गीववालिखेयरबलाइं ।
अब्भिट्टइं[1] कयरणकलयलाइं सरपसरपिहियपिहुणहयलाइं ।
वणवियलियपिच्छिललोहियाइं[2] पयघुलियतावलिरोहियाइं ।

(5)

तब प्रभु राम ने तत्काल आदेश दिया। सुग्रीव लक्ष्मण के साथ चला। सेना पथ उत्पथ और आकाश मे नही समा सकी। मद के वशीभूत होकर गजघटा प्रसन्नता पूर्वक जा रही थी। खुरो से आहत धूल से जिन्होने सूर्य की दीप्ति को आच्छादित कर दिया है ऐसे अश्व थे। चक्र की धारा से धरती को फाड देने वाले रथ थे। विकल अग वाले साप चूर-चूर हो गए। ऊँचे दिग्गज भय से काँप उठे। दुर्गमार्ग को ग्रहण कर शिविर ठहर गया। शश और हरिण समूह उद्विग्न हो उठा। नदियो और सरोवरो का जल सूख गया। नव द्रुम के पत्ते नोच दिए गए। सिर-कमल पर अपने हाथों को आरोपित (लगाते) करते हुए किसी एक चर ने वालि से कहा—राम ने दुर्धर और दीर्घ गजो से प्रचड सैन्य तुम्हारे ऊपर भेजा है। जिसमे आकाश के अग्र भाग मे ताड़वृक्ष लगे हुए है, ऐसे खदिर वन के भीतर शत्रुसैन्य ठहरा हुआ है।

घत्ता—सुग्रीव ने राम की सेवा अगीकार कर ली है और चक्रवर्ती लक्ष्मण को सहचर के रूप मे प्राप्त कर लिया है—यह सुनकर क्रुद्ध विद्याधर राजा बालि तैयार होकर निकला।

(6)

गभीर तूर्यों का कोलाहल होने लगा। सुग्रीव और बालि विद्याधरो के सैन्य भिड गए। युद्ध का कोलाहल होने लगा। तीरो के प्रसार से दोनो ने विशाल आकाशतल आच्छादित कर दिया। दोनो सैन्य घावो से रिसते गाढे खून से लाल हो गए। दोनो पैरो मे व्याप्त आँतो से

(5) 1. P उप्पहि पहि। 2 AP ण णहि विलग्ग साहणसुकित्ति। 3. AP चलवलियअग। 4. P उव्वेयउ। 5. AP दीहरदुद्धर°। 6. AP सण्णिहिवि।

(6) 1 A आभिट्टइ। 2 A° विहलिय°।

मोडियरहाइं[3] फाडियधयाइं　　आसियणहाइं तासियगहाइं।
लुयदढगुडाइं हयगयघडाइं　　ताडियथडाइं[4] पाडियभडाइं।
खयपेक्खिराइं[5] गयपक्खराइं　　चुयहरिवराइं कंपियधराइं।
तुट्ठच्छराइं बहुमच्छराइं　　मरणिच्छिराइं खणमुच्छिराइं।
वंचियपराइं पहरणपराइं　　मयणिब्भराइं हयभयभराइं[6]।
ता तहिं रणंति पीणियकयंति　　सामंतकंति वेयालवंति।
कंतीइ चंदु रिद्धीइ इंदु　　किलिकिलिपुरिंदु धाइउ खगिंदु।
ते भणिउ भाइ रे रे अराइ　　विज्जाहराइं मेल्लिवि सजाइ।
पहुमाणदड्ढ[7] खल दुव्वियड्ढ[8]　　वज्जियगुणड्ढ[9] सुग्गीव सढ[10]

घत्ता—मेल्लेप्पिणु[11] सेव महुतणिय वधुणिबधइं[12] तिलरिणइं॥
पइसरिवि सरणु भूगोयरहं जीवेसहि भणु कइ दिणइं॥6॥

7

मा पावहि आहवि पाणणासु　　जज्जाहि पाव किक्किंधवासु।
तं वयणु सुणिवि सुग्गीउ चवइ　　पइं फेडिवि जइ मइं णाहिं थवइ।
तो लक्खणु भूगोयरु णिरुत्तु　　अह णं तो पइं णिप्फलु पउत्तु[1]।

अवरुद्ध हो उठे। रथ मुडने लगे, ध्वज फटने लगे। दोनो आकाश में व्याप्त हो गए और ग्रहो को पीडित करने लगे। छिन्न हो गए हैं दृढ लगाम जिनके ऐसे घोडो और हाथियो की घटाओ वाले दोनो दल त्रस्त हो उठे। योद्धा गिरने लगे। दर्शक नाश को प्राप्त होने लगे। कवच गिरने लगे। श्रेष्ठ अश्व च्युत होने लगे। दोनो सैन्य धरती कपाने लगे, अप्सराओ को सतुष्ट करने लगे। दोनो मत्सर से भरे हुए थे। दोनो मरण की इच्छा कर रहे थे, दोनो क्षण-क्षण मे मूर्च्छा को प्राप्त हो रहे थे, दोनो शत्रु को प्रवचित करने वाले थे, दोनो प्रहरणो मे तत्पर थे। दोनो मद से परिपूर्ण थे। जिसने कृतांत को प्रसन्न किया है, जो सामतो से कात और वैतालो से युक्त है, ऐसे उस युद्ध के बीच, काति से युक्त चन्द्रमा और ऋद्धि से युक्त इन्द्र के समान किलकिलपुर का राजा विद्याधरेन्द्र वालि दौडा। उसने भाई से कहा—रे शत्रु, विद्याधरो और अपनी जाति को छोडकर, स्वामी के मान से दग्ध दुष्ट दुर्विदग्ध गुण-ऋद्धि से शून्य हे सुग्रीव,

घत्ता—मेरी सेवा, बधु के सबध और स्नेह के ऋण को छोडकर, तथा मनुष्यों की सेवा मे प्रवेश कर बता तू कितने दिन जीवित रहेगा?

(7)

युद्ध मे अपने प्राणो का नाश मत कर। हे पाप, किष्किधा नगरी चला जा। यह वचन सुनकर सुग्रीव कहता है—यदि तुम्हे नष्ट कर, मुझे स्थापित नही करता तो लक्ष्मण निश्चित रूप से भूगोचर है, नही तो तुमने निष्फल कथन किया। फिर वे दोनो विद्याबल से एक

3. AP फाडियधयाइं मोडियरहाइं। 4 AP तासिय°। 5. A °पेक्खराइं। 6 A हियभय°। 7. A °दड्ढु। 8 A दुव्वियड्ढु। 9. A गुणड्ढु। 10 A सढु। 11 मेल्लिवि सेवा। 12 AP बधुणिबद्धइं।
(7) 1. A णिरुत्तु।

ते बे वि लग्ग विज्जाबलेण पुणु हुयवहेण पुणु पुणु जलेण।
पुणु तरुवरेण पुणु मारुएण[2] पुणु फणिणा पुणु विणयासुएण।
जुज्झिय बेण्णि[3] वि पुणु भणइ जेट्ठु मइ कुद्धइ रक्खइ कवणु इट्ठु।
ता भासइ तहिं राहवकणिट्ठु तुहु ण मुणहि सिट्ठु अणिट्ठु विट्ठु।
हउं विट्ठु देउ दसरहकुमारु हउं विट्ठु सदुट्ठद्वियकुठारु।
णउ[4] दिण्ण हत्थि रे देहि घाय तुह एव्वहि कुद्धा रामपाय।

घत्ता—जइ जिणवरु सुमरिवि सतमणु चरहि सुदुद्धरु तवचरणु॥
तो चुक्कइ महु रणि वइरि तुहु जइ पइसहि रामहु सरणु॥7॥

8

ता हसिउ पवलेण[1] बलिरायपुत्तेण संगामपारंभपब्भारजुत्तेण।
भूयरणरिंदस्स किं तस्स किर थामु तुहुं गणिउ जगि केण अण्णेक्कु सो रामु।
जइ अत्थि सामत्थु ता मेरुगिरितुंगु मइ जिणिवि रणरंगि अवहरहि मायंगु।
अक्खिवसि[2] किं मुक्ख पक्खिवदवरपक्ख किं कुणसि मइ कुद्दइ सुग्गीवि परिरक्ख[3]
रत्तोवलित्तेहिं दरिसियपहारेहिं गुणधम्ममुक्केहिं वम्मावहारेहिं।
मारणकइच्छेहिं दुज्जणसमाणेहिं ता बे वि उत्थरिय विप्फुरियबाणेहिं।
कोडीसरत्तेण[4] णिव्वूढगावाइं छिण्णाइं चावाइं जमभउहभावाइं।

दूसरे से भिड गए। फिर आग से, फिर जल से, फिर तरुवर से, फिर पवन से, फिर नाग से, फिर गरुड़ से दोनों लड़े। फिर बडा भाई बोला—मेरे क्रुद्ध होने पर तुझे कौन इष्ट बचा सकता है? तब राम का अनुज लक्ष्मण कहता है—तू नहीं जानता कि लक्ष्मी का इष्ट और तुम्हारे लिए अनिष्ट विष्णु (नारायण) है। मैं विष्णु देव दशरथ-कुमार हूँ। मैं विष्णु (गरुड) हूँ, दुष्टों के लिए अस्थि-कुठार हूँ। तूने हाथी नही दिया। इस समय राम के चरण तुझ पर क्रुद्ध हैं।

घत्ता—यदि तू जिनवर का स्मरण कर शांत मन हो अत्यन्त दुर्धर तप का आचरण करता है और राम की शरण जाता है, तभी तू शत्रुयुद्ध मे मुझसे बच सकता है।

(8)

इस पर संग्राम के प्रारंभ का प्रभार उठाने मे सलग्न बलि राजा का पुत्र वालि हँस पडा। उस भूचर (मनुष्य) राजा की क्या शक्ति? तुम्हे और एक उस राम को जग मे कौन गिनता है? यदि तुझ में सामर्थ्य है तो युद्ध मे मुझे जीतकर, सुमेरु पर्वत के समान ऊँचे महागज का अपहरण कर ले। हे मूर्ख, तू विद्याधर पक्ष पर आक्षेप क्यों करता है? सुग्रीव के प्रति मेरे कुपित होने पर तू उसकी रक्षा क्यो करता है? तब वे दोनों मान से अनुरंजित, प्रहार को प्रकाशित करने वाले, गुण धर्म से रहित, मर्म का छेदन करनेवाले, मारने की इच्छा रखने वाले, विस्फुरित बाणों से युद्ध के लिए उछल पडे। लक्ष्मण ने यम के समान भाव वाले और गर्व का निर्वाह करने

---

2 AP मारुवेण। 3. AP दोण्णि। 4 AP णो दिण्णु।

(8) 1. वालेण। 2. A अक्खवसि। 3 A परपक्खु, P परक्खु। 4. A कोडीसरुत्तेहिं।

अण्णाइ गहियाइ अण्णाइ मुक्काइं चिंधाइ रुद्दद्धयदेहि[5] लुक्काइं[6] ।
धावंत वेवंत सरभिण्ण हिलिहिलिय अंतावलीखलिय महिवीढि रुलुघुलिय[7] ।
गयघायकडयडिय रह पडियजोत्तार भड भीम थिय बे वि संगामकत्तार[8] ।
अब्भिट्ट ते वालि लक्खण महावीर थिरहत्थ सुसमत्थ सुरगिरिवराधीर[9] ।
तडिदंडसरलेहिं तरलेहिं खग्गेहिं संचरणपइसरणणीसरणमग्गेहिं[10] ।
खणखणखणंतेहिं उग्गयफुलिंगेहिं जिगिजिगियधारापरज्जियपयंगेहिं[11] ।

घत्ता—रणसरवरि हयमुहफेणजलि सोणियधाराणालचलु ॥
असिचंचुइ[12] लक्खणलक्खणिण तोडिउ वालिहि सिरकमलु ॥8॥

9

फोडिवि रणि वइरिहि सिरकरोडि किलिकिलिपुरेण[1] सहु गामकोडि ।
दिण्णी सुग्गीवखगाहिवासु एवड्डु फुरणु भणु भुवणि कासु ।
मेल्लेप्पिणु[2] लक्खणु लच्छिधामु[3] सुपसण्णु महाजसु जासु रामु ।
गहियइ णियकुलचिंधइं वराइं[4] सीहासणछत्तइं चामराइं ।
पुरवरि घरि मंडलि णिहिय भिच्च बहुबुद्धिवंत णिब्भिच्च सच्च ।

वाले धनुषो को छिन्न-भिन्न कर दिया। दूसरे धनुष छोड दिए गए। पताकाएँ रौद्र अर्धचन्द्र बाणो से लुप्त हो गईं। तीरो से छिन्न-भिन्न होकर वे दौडते काँपते हुए मूर्च्छित हो गए। आते खिसक गईं और महीपीठ पर व्याप्त हो गईं। गदाओ के आघात से कडकड़ाते हुए रथ और सारथि गिरने लगे। भयकर युद्ध करने वाले दोनो योद्धा स्थित थे। स्थिर हाथ, समर्थ, ऐरावत के समान धीर, वालि और लक्ष्मण दोनो महावीर भिड गए। विद्युद्-दड की तरह सरल और तरल, सचरण प्रविशन और नि सरण के मार्गो से युक्त, खन-खन-खन करती हुई, चिनगारियाँ उडाती हुई, जिग-जिग चमकती हुई धारा से सूर्य को पराजित करती हुई तलवारो से वे दोनो भिड गए।

घत्ता—जिसमे घोडो के मुखो का फेन रूपी जल है, ऐसे युद्ध रूपी सरोवर मे रक्तधारा रूपी कमलदड से चचल, वालि के सिर रूपी कमल को लक्ष्मण रूपी सारस ने तलवार रूपी चोच से तोड दिया।

(9)

युद्ध मे शत्रुओ के सिर के कपाल तोडकर उस (लक्ष्मण) ने किलकिलिपुर नगर के साथ करोड़ो गाँव विद्याधर राजा सुग्रीव को दिए। बताओ इतना वडा शौर्य लक्ष्मण को छोडकर किसका है कि जिसके ऊपर लक्ष्मीधाम, महायशस्वी राम प्रसन्न है? सुग्रीव ने अपने कुल के श्रेष्ठ चिह्न सिहासन छत्र और चमर ग्रहण कर लिए। नगर और घर में अत्यन्त बुद्धिमान, सच्चे और विश्वसनीय अनुचरो को स्थापित कर दिया। महामेघ गज पर आरूढ होकर राजाओ

5 AP रुदद्धयदेहि। 6 A मुक्काइ। 7. AP हय घुलिय। 8 AP °कतार। 9 A °धराधीर। 10. A सवरण°। 11 A पराजिय°। 12 AP असिधाराचचुइ लक्खणेण।

(9) 1 P किलिगिलि°। 2. A मन्नेप्पिणु। 3 P लच्छिवासु। 4 A चडाइ।

आरुहिवि महाघणवारणिंदु[5] सहु सुग्गीवेण णरिंदचंदु ।
संपत्तु जणद्दणु पुण वि तेत्थु णिवसइ वणंति बलहद्दु जेत्थु ।
तहु पायपणउ सीसे करेवि लक्खणु सुग्गीव चवंति बे वि ।

घत्ता—महिरूढउ वारियसूरकरु कामिणिवेल्लिविलासधरु ॥
तुहु देव पयावहुयासणिण हेलइ दड्ढउ वालितरु ॥9॥

10

ता पिसुणमरणसंतोसिएण मेल्लिवि त उववणु ववसिएण ।
जित्ताहवेण सहु माहवेण सुग्गीवें हणुवें राहवेण ।
किक्किंधपुरहु दिण्णउं पयाणु सघट्टउ[1] पहि[2] जाणेण जाणु ।
महिणहयराह रिउरोहिणीउ चलियउ चउदह अक्खोहिणीउ ।
मंडलिय मिलिय वियलियसगव्व[3] दिस पत्तहिं छत्तहिं छइय सव्व ।
णहु दीसइ णउ छायउ धर्एहिं हरिचरणपहयधूलीरएहिं ।
करताडिय गज्जइ गमणभेरि भडहियवइ वड्ढइ वइरिखेरि ।
उण्णिद्दिय रामणगिलणमारि गोविंद कडक्खइ लच्छिणारि ।
करिमयचिक्खिल्लद्दहि[4] णिमण्णु सदणसदाणिउ[5] वहइ सेण्णु ।

में श्रेष्ठ लक्ष्मण सुग्रीव के साथ वहाँ पहुँचे जहाँ वन के भीतर राम थे । सिर से उनके पैरों मे प्रणाम कर लक्ष्मण और सुग्रीव दोनो ने कहा—

घत्ता—धरती पर प्रसिद्ध, सूरकर (सूर्य किरण,शूरवीरो के हाथ) का प्रतिकार करनेवाला, स्त्रियो रूपी लताओ का विलास धारण करने वाला वालि रूपी वृक्ष, हे देव, तुम्हारे प्रताप रूपी आग से खेल-खेल मे जल गया ।

(10)

तब दुष्ट के मरण से संतुष्ट और उद्यमी राम ने उस उपवन को छोड दिया । युद्धो को जीतने वाले माधव, सुग्रीव और हनुमान् के साथ राम ने किष्किधा नगर के लिए प्रयाण किया । रास्ते मे यान से यान टकरा गए । मनुष्यो और विद्याधरो की शत्रु को रोधने वाली चौदह अक्षौहिणी सेनाएँ चली । अपना गर्व छोडकर वे मिल गए । पत्रो और छत्रो से सभी दिशाएँ आच्छादित हो गईं । ध्वजो और घोडो के पैरो से आहत धूलिरज से आच्छादित आकाश दिखाई नही देता । हाथो से आहत रणभेरियाँ बज उठी । योद्धा के हृदय मे शत्रु का क्रोध बढने लगा । रावण को निगलने वाली मारि जाग उठी । लक्ष्मी रूपी नारी लक्ष्मण पर कटाक्ष फेंकने लगी । हाथियों के मद के कीचड मे निमग्न रथ को रथ से बाँधकर सैन्य खीचने लगा ।

---

5 P महाघणुयारणिंदु ।

(10) 1. AP सघट्टिउ । 2 A पहु । 3. AP °सुगव्व । 4 AP °दहि । 5 A सदणि सदाणिए, P सदणसदाणिए ।

घत्ता—हरिणीले कुदें परियरिउ खगसारगविराइयउ ॥
किक्किंधसिहरि णियवसधरु रामें रामु व जोइयउ ॥10॥

11

पइसतहिं हलहरकेसवेहिं[1] अवरेहिं मि वहुभूगोयरेहिं ।
जहि णिवसइ सो सुग्गीउ खयरु अवलोइउ त किक्किधणयरु ।
तोरणदुवारि सुपसत्थियाउ दहिअक्खयमगलहत्थियाउ ।
णरचित्तसारधणसामिणीउ[2] वोल्लति परोप्परु कामिणीउ ।
हलि[3] धवलउ कालउ कवणु रामु विहि रूवहि किं[4] थिउ देउ कामु ।
किं एहु[5] जि एहु ण एहु एहु दीसइ वण्णतरभिण्णदेहु ।
वररूवालुद्धइ जुजियाइ अच्चतपलोयणरजियाइ ।
जणवयणयणइं कसणइं सियाइ णं हरिवलतणुछायकियाइ ।
घरु आया कहिं लब्भति इट्ठ णियमदिरु पडिवत्तीइ दिट्ठ ।
सिरपणमणण्हाणविलेवणेहिं देवगहिं णिवसणभूसणेहिं ।
अविचिंतियसाहसकित्तितण्ह भावे समाणिय रामकण्ह ।
सुग्गीवें वेण्णि वि सामिसाल खलवलगलथल्लणवाहुडाल[6] ।
तहिं दियहं जति किर कइ वि जाव सपत्तउ वासारत्तु ताव ।

घत्ता—किष्किंधा पहाड को राम ने (अपने) समान देखा जो हरि नील (लक्ष्मण और नील, इन्द्रनील मणि) और कुंद (कुद, पुष्प विशेष) से घिरे हुए खग, सारग (विद्याधर और धनुष, पक्षी और हरिण) से शोभित तथा नियवश (कुटुम्ब, वासो) को धारण करने वाला था।

(11)

प्रवेश करते हुए वलभद्र और नारायण तथा दूसरे-दूसरे अनेक मनुष्यो ने, उस किष्किधा नगर को देखा जहाँ विद्याधर सुग्रीव निवास करता था। तोरण वाले दरवाजो पर, अत्यन्त प्रशस्त, जिनके हाथो मे दही अक्षत और मगल द्रव्य है, ऐसी मनुष्यो के चित्त रूपी श्रेष्ठ धन की स्वामिनी स्त्रियाँ आपस मे वातचीत करने लगी। हे सखी, राम कौन है, गोरे या काले ? क्या कामदेव ही दो रूपो मे स्थित हो गया है ? क्या यही है ? यह नही यह हैं। अलग-अलग वर्ण से भिन्न शरीर दिखाई देते है। सुन्दर रूप के लोभी और भूखे, अत्यन्त देखने से रजित, लोगों के मुख काले और सफेद हो गए। सच है कि राम और लक्ष्मण के शरीर की कांति से साथ अंकित हो घर आये हुए इष्ट जन कहाँ मिलते हैं ? इसलिए उन्होने गौरव के साथ उन्हे देखा। सिरो के प्रणामो, स्नानो और विलेपनो, दिव्य वसनो और आभूषणो से सुग्रीव द्वारा अचिंतनीय साहस और कीर्ति के प्यासे, दुष्ट सेना की गर्दनिया देने वाले हाथो रूपी डालो वाले दोनों स्वामी-श्रेष्ठो का सम्मान किया गया। जब तक वहाँ उनके कुछ दिन वीतते है, तब तक वर्षा ऋतु आ गई।

(11) 1. केसवहलहरेहिं। 2. A °धणमाणिणीउ। 3. A हरि। 4 A थिउ किउ देउ। 5. A पहु। 6. °गल्लत्थण°।

घत्ता—घणगयवरि तडिकच्छंकियइ चडिउ धरेप्पिणु इंदधणु ।।
वरिसतु सरहिं पाउसणिवइ ण गिंभें सहु करइ रणु ।।11।।

12

कायउलइ तरुघरि संठियाइ हंसइं सरमुयणुक्कठियाइ[1] ।
सरवर सजाया तुच्छणलिण दिसभाय[2] वि णवकसणब्भमलिण ।
णच्चंति मोर मज्जति कक पथिय वहृति मणि गमणसक ।
चल चायय तण्हाहय लवति पउरदरीउ जललउ पियति ।
पवसियपियाउ दुहसल्लियाउ महमहियउ जाइउ फुल्लियाउ ।
दिसपसरियकेयइकुसुमरेणु[3] चिक्खिल्ले[4] तोसिय किडि करेणु ।
वरिसंते देवें भरिउ देसु जलु थलु सजायउ णिव्विसेसु ।
एक्कहिं मिलियाइं दिसाणणाइ पप्फुल्लकयंबइ[5] काणणाइ ।
अवलोइवि रामु विसायगत्थु थिउ णियकओलि सणिहियहत्थु ।
घत्ता—घणु गज्जउ विज्जु वि विप्फुरउ णडउ सिहंडि वि मूढमइ ।।
विणु सीयइ पावसु[6] राहवहु भणु कि हियवइ करइ रइ ।।12।।

13

पुणु सरउ पवण्णु सचदहासु बाणासणकयरिद्धीपयासु ।
विमलासउ कुवलयभेयकारि बहुबधुजीवदोसावहारि[1] ।

घत्ता—बिजली रूपी कच्छा (वरत्र, रस्सी) से अकित मेघरूपी गज पर आरूढ इन्द्रधनुष लेकर पावस रूपी राजा मानों तीरो से बरसता हुआ ग्रीष्म के साथ युद्ध कर रहा है।

(12)

काककुल वृक्ष रूपी घरो मे बैठ गए। हस सरोवरो को छोडने के लिए उत्सुक हो उठे। सरोवर कमलों से हीन हो गए। दिशाएँ भी काले बादलो से मलिन हो गई। मयूर नाचते है, बगुले डुबकियाँ लगाते है। प्यास से व्याकुल चचल चातक चिल्लाने लगे और मेघो का पानी पीने लगे। प्रेषितपतिकाएँ दु.ख से पीडित हो उठी। जुही की लताएँ महकने लगी। केतकी कुसुम पराग दिशाओं मे प्रसरित होने लगा। गज और सुअर कीचड से प्रसन्न हो उठे। मेघराज के बरसने पर देश (जल से) भर गया। जल और स्थल निर्विशेष हो गए। दिशाओ के मुख एकाकार हो गए। काननो मे कदम्ब के पुष्प खिल गए। विषादग्रस्त राम उसे देखकर अपने गाल पर हाथ रखकर बैठ गए।

घत्ता—मेघ गरजा, बिजली चमकी और मूढमति मोर नाच उठा। बताओ वह पावस राम के हृदय मे सीता के बिना कैसे प्रेम उत्पन्न कर सकता है?

(13)

फिर चन्द्रमा की कांति के साथ शरद् ऋतु रावण के समान आ गई जो मानो रावण के समान, वाणासन (वृक्ष विशेष, धनुष) की ऋद्धि को प्रकाशित करनेवाली, विमल आशयवाली, कुवलय (कमल, पृथ्वीमडल का) भेदन करनेवाली, अनेक बधु जीवो के दोषो का अपहरण करने

(12) 1. A सरसुअणु° । 2 A दिसभीय वि ण कसण° । 3 AP दिसि पसरिउ । 4. A चिक्खल्लें । 5. AP °कलबइ । 6 P पाउसु ।
(13) 1 PA °जीवबधु° ।

परिसतावियपोमंतरगु ण रावणु दावियदुक्खसगु।
णउ रुच्चइ रामहु वट्टमाणु पियविरहिउ किच्छे धरइ प्राणु[2]।
ता सुग्गीवें वुत्तउ पहाणु केसव णिज्झायहि मतझाणु।
मेलावहि सीयारामकामु ता जाइवि सीयारामधामु।
वसुसयसखा वर[3] दुण्णिरिक्ख चउदिसहिं णिउजिवि देहरक्ख।
वरवीर कोतकरवालहत्थ उच्चारिवि थुइमगल पसत्थ।
कयरयणकिरणपरिहववसुज्ज[4] सिवघोसगहामुणिपडिमपुज्ज।
पडिविज्जावारणि पुज्जणिज्ज कण्हे साहिय पण्णत्ति विज्ज।
संमेयमहीहरि सिद्धखेत्ति सुग्गीवें हणुवेण वि पवित्ति।
गुरुयणविहीइ आराहियाउ णाणाविहविज्जउ[5] साहियाउ।

घत्ता—अण्णेक्कहिं अण्णहि गिरिसिहरि[6] भरहि भरेण पसिद्धियउ॥
पणवतिउ आयउ देवयउ पुप्फयतरुइरिद्धियउ॥13॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे वालिणिहणण[7]
रामलक्खणविज्जासाहण णाम पचहत्तरिमो
परिच्छेओ समत्तो॥75॥

वाली, पद्म (कमल, राम) के अतरग को सतापदायक और दुःख का साथ दिखाने वाली थी। वर्तमान शरद्ऋतु राम के लिए अच्छी नही लगती। प्रिया से विरहित वह बडी कठिनाई से प्राण धारण करते हैं। तब सुग्रीव ने प्रधान (राम) से कहा—हे राम, मत्र का ध्यान करिए। वह सीता और राम की कामना को मिलवा देगा। तब पृथ्वी मे आराम स्थान पर जाकर, आठ सौ दुर्दर्शनीय देह वाले, भाले और तलवार लिये हुए श्रेष्ठ वीर रक्षको को चारो दिशाओ मे नियुक्त कर, प्रशस्त स्तुति मगल का उच्चारण कर, जिसने रत्नकिरणो से सूर्य का पराभव किया है ऐसे शिवघोष महामुनि की प्रतिमा की पूजा की तथा प्रतिविद्या का निवारण करने वाली पूजनीय प्रज्ञप्ति विद्या को लक्ष्मण ने सिद्ध कर लिया। पवित्र सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखर पर सुग्रीव और हनुमान् ने भी गुरूजनो की विधि से आराधित नाना प्रकार की विद्याएँ सिद्ध की।

घत्ता—भरतक्षेत्र के अद्वितीय गिरिशिखर पर दूसरो ने स्मरण (आराधना) से विद्याएँ सिद्ध की। सूर्य और चन्द्रमा की काति से समृद्ध देवियाँ प्रणाम करती हुई आईं।

त्रेसठ महापुरुषो के गुणालकारो से युक्त इस महापुराण मे, महाकवि पुष्पदत द्वारा
विचरित तथा महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का वालि-निधन
एव राम-लक्ष्मण-विद्या-साधन नाम का पचहत्तरवाँ
परिच्छेद समाप्त हुआ।

2. AP पाणु। 3. AP धर। 4. AP परिहवियसुज्ज। 5. AP विज्जा। 6. A गिरिवरहे। 7 P वालिणिहणु।

छहत्तरिमो संधि

राहवलक्खणहि जयजयघोसेण जयाणउ ॥
उप्परि दहमुहहु आरूसिवि दिण्णु पयाणउ ॥ध्रु०॥

1

मलयमजरी[1]—उट्ठिओ रउद्दो विविहतूरसद्दो भग्गवइरिधीरो[2] ॥
चलियसाहणाण[3] तुरयवाहणाण कलयलो गहोरो ॥छ॥

संचल्लति[4] रामि महि कपइ धरभरणमिउ ण फणिवइ जपइ।
गयपयकुडिय[5] कुहिणि मयपके दुग्गम भावइ कयजणसके।
रहरहंगगइदारियविसहर महिहर दलिय मलिय मय वणयर।
पवणवसेण वलिय[6] विलुलियधय हयमुहफेणसलिलपसमियरय।
वरभडथडचुण्णीकयमहिरुह सेण्णाउण्ण सगयणासामुह।
सोसिय सरि सर णिसुढिय जलयर असिविप्फुरणगसिय ससिदिणयर।

छिहत्तरवी संधि

राम और लक्ष्मण ने जय-जय घोष के साथ दशमुख पर क्रुद्ध होकर जयशील प्रस्थान किया।

(1)

जिसने शत्रु का धैर्य नष्ट कर दिया है, ऐसा विविध तूर्यो का शब्द तथा चलती हुई सेनाओ और अश्व-वाहनो का गभीर कल-कल हुआ।

राम के चलने पर सेना कॉप उठती है। धरा के भार से नमित नागपति कुछ नही बोलता। हाथी के पैरो से क्षुब्ध मार्ग लोगो को शका उत्पन्न करने वाली मद-पक से दुर्गम प्रतीत होता है। रथो के चक्रो की गति से विषधर कुचले गए। पहाड चूर हो गए। मृग और वन-चर मर्दित हो गए। हवा के कारण ध्वज मुड गए और फट गए। घोडो के मुख के फेन रूपी जल से धूल शात हो गई। श्रेष्ठ योद्धाओ की घटाओ से महीरुह (वृक्ष) चूर्ण-चूर्ण हो गए। आकाश सहित दिशाओ के मुख सेना से अपरित हो गए। नदियो और सरोवरो का पानी सूख गया। जल-

---

(1) 1 AP मलयमजरी णाम। 2 AP °वइरिवीरो। 3 P has कयपसाहणाण before चलिय, K gives कयपसाहणाण in margin and in second hand। 4 A सचल्लतरामे। 4 AP °खुडिय°, K gives खुडिता वा as p। 6 AP चलिय।

रसिय भएण णाइ रयणायर थिय देविंद विसठुल कायर ।
देसु विलंघिवि रणरहसुब्भडु खंधावारु धरिवि जलणिहितडु ।
आवासिउ संचारिमभवर्णाहि कंताकर्तांहि रइरसरमर्णाहि ।
असियसियारुणपीयलहरियहिं सोहइ वहुदूसहिं वित्थरियहिं ।

घत्ता—सिमिरु[7] सुहावणउ परतरुणीसोहाखंडणु[8] ॥
मेइणिकामिणिहि ण पंचवण्णु[9] तणुमंडणु[10] ॥1॥

2

मलयमंजरी—रयणकंतिकंत मयरकेउवंत विजयलच्छिवास ॥
सायरस्स णीर ण विमुक्कमेर रोहिउ[1] दसास ॥छ॥

गज्जिउ परबलु दुद्धरु दिट्ठउ चारएहिं दहवयणहु सिट्ठउ ।
हणुमंतेण तरुणिकमणीए सहु णियभायरेण सुग्गीवें ।
रामु रामरमणीउ[2] रमाहरु खग्गपसाहियसयलवसुंधरु ।
अच्छइ सायरतीरि णिसण्णउ अज्जु कल्लि ढुक्कइ आसण्णउ ।
सज्जणु अहिणवजलहरणीसणु त णिसुणिवि विण्णवइ विहीसणु ।
विणविवसु[3] वरखयरपहुत्तणु भुवणभायणिम्मलजसकित्तणु[4] ।
फार लच्छि देव वि घरि[5] किंकर कवणु गहणु तुह किर पायड णर ।

चर नष्ट हो गए। तलवारो के विस्फुरण से चन्द्रमा और दिनकर ग्रस्त हो गए। समुद्र मानो भय से चिल्ला रहा था। देवेन्द्र ठगा हुआ और कायर रह गया। युद्ध के उत्साह से उद्भट उसने देश का उल्लघन कर समुद्र के तट पर पडाव डाला। चलते हुए घरो में उन्हे ठहराया गया, कांताओ से सुन्दर, रतिरस से रमण, काले सफेद अरुण पीले और हरे अनेक विस्तृत तम्बुओ से वह शोभित था।

घत्ता—शत्रु-स्त्रियो के सौभाग्य का खडन करनेवाला वह सुहावना शिविर ऐसा प्रतीत होता था मानो ,रती रूपी कामिनी का पचरगा शरीरमडन हो।

(2)

रत्नो की कांति से सुन्दर, मकरध्वजो से युक्त, विजय रूपी लक्ष्मी के निवास, सागर का जल ऐसा ज्ञात होता है मानो मर्यादाहीन रावण को अवरुद्ध कर दिया गया हो।

शत्रु-सैन्य गरजा, वह कठोर दिखाई दिया, दूतो ने जाकर रावण से कहा—स्त्रियो के लिए सुन्दर लक्ष्मी को धारण करने वाले तथा अपने खड्ग से समस्त वसुधरा को सिद्ध करने वाले राम हनुमान्, अपने छोटे भाई और सुग्रीव के साथ समुद्र के किनारे ठहरे हुए हैं। आज या कल मे वह निकट आ जाएँगे। यह सुनकर अभिनव मेघ के समान स्वर वाला सज्जन विभीषण निवेदन करता है—एक तो विनमि वश, श्रेष्ठ विद्याधर, सपूर्ण पृथिवी पर निर्मल कीर्ति, प्रचुर लक्ष्मी, घर मे देव अनुचर, फिर वे प्राकृत नर तुम्हारा क्या ग्रहण करा रहे है? आते या न आते हुए उनका

7. AP सिविरु 8 AP खडणउ। 9 A पचजण्णु। 10 AP मडणउ।

(2) 1 A रोहिओ। 2 A रमणीयरमाहरु। 3 AP विणमिवसुधर। 4. A भवणभाविणिम्मल°, P भुवणभाइ णिम्मलु। 5. A वर किंकर।

एतु ण एतु[6] होतु वलदप्पिय सगरि तुहु कहवालझडप्पिय।
णिहिल जंति तिमिरु व दिवसयरहु पइ होंते कहि दिहि रिउणियरहु।
एक्कु जि दोसु[7] णवर परमेसर जं पइं वाहिय परणारिहि कर।

घत्ता—पूरइ तित्ति ण वि रइ पसरइ वछइ सगहु॥
परवहुरत्तमणु परि वडइ दिणेंहि णियगहु॥2॥

3

मलयमजरी—मयणवणियचित्तो परपुरधिरत्तो मरइ साणुअधो॥
पडइ णरयरधे[1] सत्तमे तमधे बद्धकम्मबधो॥छ॥

विसहरसुरणरविरइयसेवहु धीरहु वसुसंखाबलएवहु।
हरिवाहिणिविज्जारहवाहहुं भीमगयाहलमुसलसणाहहु।
वज्जावत्तसरासणहत्थहु दिज्जउ[3] घरिणि[4] देव काकुत्थहु।
चक्कपसूइ ण चगउ दावइ लक्खणु वासुएउ महु भावइ।
अण्णहु[5] किक्किधेसु ण रप्पइ अण्णहु कि रणि वालि समप्पइ।
अण्णहु मारुइ कि घरु आवइ कि पण्णत्तिविज्ज परिधावइ[6]।
अण्णहु पंचयण्णु कि वज्जइ अण्णु एव कि लच्छिइ छज्जइ।
अण्णे धरणिधेणु किह वज्झइ गारुडविज्ज ण अण्णहु सिज्झइ।

वल खंडित हो जाएगा। युद्ध मे तुम्हारी तलवार से वे आहत होंगे। वे तुम से उसी प्रकार चले जाएँगे जिस प्रकार सूर्य से अ धकार हट जाता है। हे परमेश्वर, परन्तु केवल एक दोष है कि तुमने परस्त्री का हाथ जो पकडा।

घत्ता—तृप्ति पूरी नही होती और रति प्रसारित होती है, वाच्छा सग्रह करती है। इस प्रकार परस्त्री का रमण अपने ही शरीर के अंगों पर पडता है।

(3)

काम मे आसक्त चित्त और परस्त्री मे रक्त, पुत्र-कलत्रादि से सहित जिसने कर्म बाधा है ऐसा मनुष्य तमाध नामक सातवे नरक मे जाता है। विषधर-सुर और मनुष्यो के द्वारा जिनकी सेवा की जाती है, ऐसे धीर आठवे बलदेव लक्ष्मण-सेना और विद्याधर, सेना का सचालन करने वाले भयकर गदा, हल और मूसलो से सनाथ, जिनके हाथ मे वज्रावर्त धनुष है ऐसे राम को, हे देव, उनकी गृहिणी दे दीजिए। चक्र की प्रभूति (उत्पत्ति) मुझे अच्छी नही लगती। लक्ष्मण और वासुदेव मुझे अच्छे लगते है। किष्किधा का राजा किसी दूसरे से अनुराग नही करता। क्या युद्ध मे वालि किसी दूसरे के लिए समर्पण करता? हनुमान् क्या किसी दूसरे के घर आता है और क्या प्रज्ञप्ति विद्या दौड़ती है? किसी दूसरे से पाचजन्य बजता है? लक्ष्मी से क्या कोई दूसरा शोभित होता है? किसी दूसरे के द्वारा धरती रूपी धेनु क्या बाँधी जाती है? गारुड विद्या किसी दूसरे के लिए सिद्ध नही हो सकती। परवधू इह लोक और परलोक मे पराभव करने वाली होती

6 यतु। 7. AP णवर दोसु।

(3) 1 A णरइरधे। 2 A °विज्जाहर°। 3. A दिज्जइ। 4. AP देव घरिणि। 5 A अण्णु वि।
6 A परिहावइ।

परवहु इह पर परिहवगारी　　अण्णु वि जाणइ धूय[7] तुहारी ।
केवलिभासिउ देव ण चुक्कइ　　देहि बलहु जा णियइ ण ढुक्कइ ।
घत्ता—जंपइ दहवयणु भो[8] जाहि जाहि जइ भीयउ ॥
पूरइ आहयणि भडु कुंभयण्णु महु वीयउ ॥३॥

4

मलयमंजरी—रे विहीसणुत्तं किं तए अजुत्त मुयसु महिणिवास[1] ॥
हीणदीणवेसो चरणघुलियकेसो जाहि रामपास ॥छ॥
हउं किं[2] पुणु परिवाडि[3] ण जाणमि　　जा[4] ण समिच्छइ सा णउ माणमि ।
एण मिसेण दंतपहविमलइ　　खुडमि रामलक्खणसिरकमलइं ।
तणुसीयइ[5] दंतहं[6] मलु फिट्टइ　　विणु सीयइ महु किं ण पयट्टइ[7] ।
ता पणवंतु थंतु हेट्ठामुहु　　कसणाणणु ण गब्भिणिउररुहु ।
छेउ णिहालिउ बंधुसणेहहु[8]　　णिग्गउ बंधवु गउ णियगेहहु ।
मंतिमईहिं मंतु अवलोइउ　　भायरेण मणु णिच्छइ ढोइउ ।
एउ[9] रहगु खगिंदणिसुंभउ　　जायउ[10] णाइ कुलीरहु डिंभउ ।
हा रावणु जियंतु णउ पेक्खमि　　परहु जंति णियकुलसिरि रक्खमि ।
बलवंतइ विवक्खि असहायहं　　तप्पएसु[11] भल्लारउ रायहं ।
इय चिंततु णिसिहि णीसरियउ　　दिट्ठु समुद्दु तेण जलभरियउ ।

है । और फिर जानकी तुम्हारी कन्या है । हे देव, केवलज्ञानी का कहा हुआ कभी चूकता नही । जब तक तुम्हारी नियति नही पहुँचती, तब तक आप बलभद्र के लिए सीता देवी सौंप दें ।

घत्ता—तब रावण कहता है—अरे तुम डर गए हो तो जाओ-जाओ, युद्ध मे मेरा दूसरा योद्धा कुम्भकर्ण काम मे आएगा ।

(4)

रे विभीषण ,तूने अनुचित बात क्यो कही ? तू इस धरती का निवास छोड दे । हीन-दीन वेश मे पैरो तक अपने केश फैलाए हुए तू राम के पास जा ।

मैं क्या फिर परिपाटी नही जानता ? जो स्त्री मुझे नही चाहती, उसे मैं नही मानता । इस बहाने दाँतो की प्रभा से विमल राम और लक्ष्मण के सिर-कमलो को काट लूंगा । तृण की सीक से दाँतो का मल नष्ट हो जाएगा । बिना सीता के मेरा क्या नही होगा । तब प्रणाम करता हुआ विभीषण अपना मुख नीचा करके रह गया । गर्भिणी के उरोजो की तरह उसका मुख काला हो गया । उसने भाई के प्रेम का अन्त पा लिया । भाई निकलकर अपने घर चला गया । मन्त्रियो की बुद्धि से उसने मंत्र का अवलोकन किया कि भाई ने निश्चित रूप से अपना मन दे दिया है । हा रावण, मैं तुम्हें जीवित नही देखूँगा । फिर भी दूसरे के यहाँ जाती हुई अपनी कुललक्ष्मी की रक्षा करूँगा । विपक्ष के बलवान होने पर असहाय राजाओ का उसमे प्रवेश कर लेना अच्छा है । यह विचार करते हुए वह रात्रि मे निकला, और उसने जल से भरा हुआ समुद्र देखा ।

7 P धीय । 8 A हो जाहि ।

(4) 1 A मह णिवास । 2 AP पुणु किं । 3. A पडिवाडि । 4. A जो । 5 A तणे सीयए । 6 AP दसणहं । 7 A पइट्ठइ । 8. A बंधसणेहहु । 9 A एहु । 10 A जोयउ । 11 P तप्पवेसु ।

घत्ता—झिज्झइ चंदु जइ तो सायरजलु[12] ओहट्टइ ।।
पडिवण्णउं गुरुहुं आवइकालि ण फिट्टइ ।।4।।

5

मलयमजरी—जइ वि णिच्चवको देहए ससंको तो वि एस चंदो ।।
सायरस्स इट्ठो माणसे पइट्ठो कतियाइ रुदो ।।छ।।
हउं पुणु खलु चुक्कउ मज्जायहि बंधुवइरि किं जायउ मायहि ।
इय जूरतु जाम णहि वच्चइ ता रामहु विसारि ससुच्चइ ।
देव विहीसणु दसणु मग्गइ तुह चरणारविंदु ओलग्गइ ।
पेक्खु पेक्खु णहि आयउ वट्टइ जिह पडिवण्णु णेहु णोहट्टइ ।
तिह हरि[1] करि तुहु बेण्णि वि पत्थिय तेण दसासवित्ति अवहत्थिय ।
ता रामे सुग्गीवहु पेसणु दिण्णउ आणहु तुरिउ विहीसणु ।
गय ते तहिं[2] सो वि सुपरिक्खिउ णिरु णिब्भिच्चु भिच्चु ओलक्खिउ ।
आणेप्पिणु दाविउ हलधारिहि पणविउ दाणविंदकुलवइरिहि ।
ते समाणिउ रावणभायरु किउ सभासणु सहरिसु सायरु ।
घत्ता—चित्तु चित्ति मिलिउ जगि परु वि बंधु हियगारउ ।।
बंधु जि परु हवइ जो णिच्चु जि वड्ढियवइरउ ।। 5।।

घत्ता—यदि चन्द्रमा क्षीण होता है, तो समुद्र का जल कम होता है। बडे लोगो की स्वीकृति (शरण) आपत्तिकाल मे नष्ट नही होती।

(5)

यद्यपि यह हमेशा वक्र रहता है, इसके शरीर मे शशाक है फिर भी यह चन्द्र है, सागर का इष्ट, मानस मे प्रविष्ट और काति से सुन्दर।

परन्तु मैं दुष्ट हूँ। मर्यादा से चूका हुआ, एक ही माँ से पैदा हुआ मैं भाई का शत्रु कैसे हुआ? इस प्रकार पीडित होता हुआ जब वह आकाश मे जा रहा था कि इतने मे दूत राम के लिए सूचना देता है—हे देव, विभीषण आपके दर्शन चाहता है, वह आपके चरणो से आ लगा है। देखिए-देखिए वह आकाश मे आया हुआ है। जिस प्रकार स्वीकार किया प्रेम कम नही होता, उसी प्रकार लक्ष्मण और आप दोनो को उसकी प्रार्थना स्वीकार हो। उसने रावण की वृत्ति का तिरस्कार किया है। तब राम ने सुग्रीव के लिए आदेश दिया कि विभीषण को शीघ्र ले आओ। वे लोग वहाँ गए और उन्होने उसकी खूब परीक्षा ली और उसे अत्यत निर्भीक व्यक्ति पाया। लाकर, उन्होने राम से उसकी भेट करवाई। उसने दानवेन्द्र कुल के शत्रु को प्रणाम किया। उन्होने (राम ने) भी शत्रु के भाई का स्वागत किया तथा हर्ष और स्नेह के साथ उससे बातचीत की।

घत्ता—चित्त से चित्त मिल गया। दुनिया में हित करने वाला पराया भी अपना बधु हो जाता है, और नित्य शत्रुता बढाने वाला भाई भी दुश्मन हो जाता है।

---

12 A सायरु जलु। 13 P adds वि after कालि।
(5) 1 AP करि हरि। 2 AP तहिं जि सो।

6

मलयमजरी—पुरिससोक्खगाही अहियदेहवाही[1] तिव्वदुक्खवल्लि[2] ॥
कुणइ कह[3] वि आयं सुण्णरण्णजाय ओसह सुहेल्लि[4] ॥छ॥

रावणरज्जदाणु वित्थिण्णउ　　रामे तासु[5] तिवायइ दिण्णउ।
गय कइवय वासर तहिं जइयहु　　हणुए वुत्तु हलाउहु तइयहु।
दे आएसु[6] देव णउ थक्कमि　　एवहिं लंकहि संमुहु ढुक्कमि।
भीमे वाणररूवे वड्ढमि　　डहमि घरइ भडभडणु[7] कड्ढमि।
भजमि वणइ लवलिदललवइ[8]　　फलणवियगइ पल्लवतवइ।
ता दसरहसुएण परबलहर　　अरिकरिदतघट्टदीहरकर[9]।
कामरूवधर णावइ सुरवर　　तासु सहाय दिण्ण विज्जाहर।
वाणरविज्जइ वाणर होइवि　　सयल वि गय लकाउरि जोइवि।
गयणविलग्गदेह गिरिपहरण　　बुक्करत वग्गिय मग्गियरण।
पुछवलयवलइयतरुवरसिल　　चरणचारचालियधरणीयल।
छिब्बरणास[10] दीहदताणण　　पिंगलणयण कोहभीसावण।
धाइय पत्त दसासहु पट्टणु　　मारुइणा जोइउ णदणवणु।

(6)

पुरुष के सुख को उखाड देनेवाली अधिक देहव्याधि तीव्र दु ख रूपी लता को बढाती है, मैं शून्य वन मे उत्पन्न इस सुखद औषधी को बताता हूँ।

रावण राजा का घमड विस्तृत है। राम ने तीन बार उसे वचन दिया है। जब (वहाँ रहते हुए) कई दिन बीत गए तब हनुमान् ने राम से कहा—हे देव, आदेश दीजिए, मैं नही ठहर सकता। इस समय मैं लका के सम्मुख जाऊँगा। भयकर वानर रूप मे अपने को बढाऊँगा, घरो को जलाऊँगा। योद्धा रूपी वर्तनो को निकालूँगा। लवली लता से अवलबित फलों से झुकी हुई शाखाओ वाले पल्लवो से लाल-लाल वनो को नष्ट करूँगा। उस अवसर पर राम ने शत्रुबल का अपहरण करने वाले, शत्रु-गजो के दाँतो से अपने लम्बे दाँत घिसने वाले, यथेच्छ रूप धारण करने वाले, जैसे देव हो ऐसे विद्याधर उसकी सहायता के लिए दिए। सभी विद्याधर वानर-विद्या से वानर होकर, लका को लक्ष्य बनाकर गए। उनके शरीर आकाश से लगे हुए थे। गिरि प्रहरण करते, बुक्कार करते हुए, क्रुद्ध और युद्ध करते हुए, अपनी पूँछो से तरुवर और चट्टानो को मोडते हुए, पैरो के सचार से धरती को प्रकपित करते हुए, चिपटी नाक और लम्बे दाँतो वाले, पीले नेत्रो वाले और क्रोध से एकदम भयंकर वे दौडे और रावण-नगर पहुँच गए। हनुमान् ने नंदनवन को देखा।

(6) 1 A °देववाही। 2 A दुक्खभल्ली, P दुक्खवेल्लि। 3 AP कहिं वि। 4. A सुहेल्ली। 9. AP तासु वि वायइ। 6. P देहाएसु। 7 P भडसडणु। 8. A विल्लदललवइ, P लवलिदलवतइ। 9. P °करिकत°। 10 AP छिब्विर°।

घत्ता—हरिकररुहवणिउ आलग्गसुरहिणवचदणु ॥
वणु महु आवडइ ण लच्छिहि केरउ जोव्वणु ॥6॥

7

मलयमजरी—रूढबालकद देवदारुमद सूरकिरणवार ॥
दिण्णकुसुमवास दिव्वमिहुणवास जणियमयणसार ॥छ॥
इदसरासणेण घणउलमिव णीलतमालणिद्धय ।
वणमजणसुएण लगूले चउहि वि दिसहि रुद्धय ॥1॥
सुरकरिसोडचडभुयदडबलेण[1] चलेण पेल्लिय ।
मोडियमहिरुहोहसघट्टणचुयचदणरसोल्लिय ॥2॥
[2]करमरकडहकुडयकडयडरवउड्डावियविहंगय[3] ।
भग्गणवल्लफुल्लपल्लवदलगयगुमुगुमियभिंगय ॥3॥
[4]णिविडवडालिवदणुम्मूलणविहडावियरसायल[5] ।
णिग्गयसविसफरुसफुक्कारभयकरसमणिफणिउलं ॥4॥
चूरियचारचूयचवचिंचिणिसमिलवलीलवगय[6] ।
[7]पायाहयपलोट्टचपयचयदलवट्टियकुरगय[8] ॥5॥
दलियलयाणिवासणिण्णासियसुरवरखयररइसुह ।

घत्ता—(वह कहता है) मुझे यह नदन वन लक्ष्मी के यौवन के समान दिखाई देता है कि जो विष्णु के नाखूनो से व्रणित है (जो हाथी के नखों से व्रणित है) और जिसमे सुरभित चदन (चदनवृक्ष) लगा हुआ है।

(7)

जो छोटी-छोटी जडो से अवरुद्ध था, देवदारु वृक्षो से पूर्ण, सूर्य की किरणो का निवारक, कुसुमो से आवासित, दिव्य मिथुनो का निवास और काम के श्रेष्ठतत्त्वो से अधिष्ठित था, नील तमाल वृक्षो से कातियुक्त वह ऐसा लगता था मानो इन्द्रधनुष से युक्त मेघ समूह हो। उस वन को अजनी के पुत्र ने अपनी पूँछ से चारो ओर से अवरुद्ध कर लिया। ऐरावत हाथी की सूड के समान भुजदड के चचल बल से उसे प्रेरित किया। मोडे गए वृक्षो के समूह के सघर्ष से उत्पन्न च्युत चदन रस से जो आर्द्र हो उठा, जहाँ करमर कटभ और कुटज वृक्षो पर होने वाले कटकट शब्द से पक्षी उडा दिए गए है, छिन्न नव पुष्प और लताओ के दलो पर भ्रमर गुनगुना रहे है, जिसमें सघन वट वृक्षावलि एवं रक्त चदन वृक्षो के उन्मूलन से पृथ्वीतल विघटित हो गया है, जिसमे निकलती हुई अपने विष की कठोर फूत्कार से मणि सहित नागकुल भयकर हो उठा है, जिसमे अचार, आम्र, चव, चिंचिणी और शाल्मलिफली और लवग लताएँ चूरित हो चुकी है, पैरों के प्रहार से धरती पर गिरे हुए चम्पक वृक्षो के समूह से हरिण समूह पिच गया है, दलित लतानिवासो में जहाँ सुरो और विद्याधरो का रति सुख नष्ट

(7) 1. AP °छडसुडभुय°। 2 A करमरकुडयकडय, P करमरकुहडकुडयकडय°। 3 AP °कडयडसरउड्डा°। 4 A णिवडियडालि°, P णिवडवडालि°। 5. AP °रसालय। 6 AP °चविचिंचिणि°। 7. AP °चपयरयदल°। 8. P वड्ढिय°।

सुकढिणकरतलप्पमुसुमूरियकीलागिरिगुहामुहु[9] ॥6॥
पविमलमणिसिलायलुत्थल्लणदिग्गयजक्खकतय ।
सरवावीणिवद्धविद्ध सियकीलासलिलजतय ॥7॥
हयवित्थिण्णसाहिसाहाचुयबहुमहुविदुतवय[10] ।
पडियकवित्थभग्गकिंणरकरवीणालग्गतुवय ॥8॥
दूरुद्धरियविडविमूलुज्झियविवरणिलीणसावय ।
पडिरवत्तसियरसियविवियाणणवाणरविरइयावय[11] ॥9॥
खडियतु गमड्ड सिहरुड्डियहसविमुक्कसद्दय[12]।
णिवडियणालिएरसालामलफलमालाविमद्दय ॥10॥
घल्लियसुक्करुक्खसघट्टसमुग्गयजलणजालय ।
दड्ढपियगुपिंगउच्छलियफुलिंगपलित्ततमालतालय[13] ॥11॥
मुक्कतिसूलसेल्लसरधोरणि सव्वलभिडिमालय[14] ।
धाइयभिउडिभगभीसावणभिडिउज्जाणवालय ॥12॥
घत्ता—विज्जाणिम्मियहि अइभीमहि मायारक्खहिं[15] ॥
पावणि वेढियउ रावणणदणवणरक्खहिं ॥7॥

8

मलयमजरी—सगरम्मि कुद्धा पमयएहि[1] रुद्धा वूढवीरमाणा ॥
मारिया अणेया जित्तहरिणवेया रक्खसा पलाणा ॥छ॥

हो चुका है, जहाँ अत्यन्त कठोर प्रहारो से क्रीडागिरि के गुहामुखो को चूर-चूर कर दिया गया है, जो विशाल मणिमय चट्टानो पर उछलते दिग्गजो और यक्षो से सुन्दर है, जिसमे सरोवर और वापियो मे लगे हुए क्रीडा सलिल यत्र ध्वस्त हो चुके हैं, जो आहत बडे-बडे वृक्षो की शाखाओ से च्युत प्रचुर मधु बिंदुओ से ताम्र है, जहाँ गिरते हुए कपित्थो(कैथ) से भग्न किन्नरो के कर मे वीणा की तुम्बी लगी हुई है, जहाँ दूर तक उखडे हुए वृक्षो की जडो से नीचे गिरे हुए विवरो मे पक्षी-शावक लीन है, जहाँ प्रतिशब्द से त्रस्त और चिल्लाते हुए विकसित-मुख वानर चक्कर काट रहे हैं, जो खडित ऊँची और मर्दित शिखर से उडते हुए हसो के द्वारा मुक्त शब्दो से युक्त है, जो गिरे हुए नारियलो की शाखाफल-मालाओ से विमर्दित है, जहाँ दग्ध प्रियगु लता के उछलते हुए पीले स्फुलिंगो से तमाल और ताल वृक्ष प्रदीप्त हैं, जो छोडे गए त्रिशूल सेल, तीरपक्ति, सव्वल और गोफनी से युक्त है, जिसमे दौडकर भृकुटि भग से भयावह उद्यानपालो से भिडत हो गई है।

घत्ता—विद्यानिर्मित अत्यन्त भयकर मायावी राक्षसो और रावण के नन्दन वन के रक्षको द्वारा हनुमान् घेर लिया गया।

(8)

युद्ध मे क्रुद्ध, वानरो द्वारा अवरुद्ध, वीरता का दर्प करनेवाले, हरिण का वेग जीतने

---

9 A °खरतलप्प° । 10. P omits बहु । 11. AP रसियतसिय । 12. A सिहरुट्टिय° । 13 AP omit तमाल । 14 A °भिडमालय । 15 AP अइभीयहिं ।

(8) 1. A एम एहि रुद्धा ।

अवर वि आया मायाणिसियर लउडिमुसुंडिकुंतकंपणकर।
कुडिल वद्धमच्छर इच्छियकलि जलियजलणजालाकेसावलि।
गुंजापुंजरत्तणेत्तुब्भड[2] दाढाचंडतुंड पललंपड।
दीहदीहजीहादललालिर[3] परबलघोलिर हूलिर सूलिर।
ताहं रणंगणि दावियरुडहिं लग्गा वलिमुह गिरिसिलखंडहिं।
सरपुंखहिं भमरेहिं[4] व मंडिय जिह वणि तरु तिह ते रणि खंडिय।
जिह वेल्लिउ तिह अंतइं छिण्णइं जिह पत्तइं तिह पत्ताइं[5] भिण्णइं।
जिह ताडहलइं तिह रिउसीसइं पाडियाइं धरणीयलि भीसइं।
जिह उज्जाणहु णट्ठइं चक्कइं तिह रिउरहवरि[6] भग्गइं चक्कइं।
जिह सर तिह विद्धंसिय रिउसर लंकाणयरि पइट्ठा वाणर।
घरि घरि चडिय जलंतहिं पुंछहिं णीसारियउ जलणु पिंगच्छहिं।
दड्ढइं णायरभवणसहासइं जालाहार व धाहामीसइं।
घत्ता—लग्गउ वइरिपुरि हुयवहु हणुवंतें वित्तउ॥
राहवकोवसिहि ण दुण्णयतणेण पलित्तउ॥8॥

वाले अनेक राक्षस मारे गए और अनेक भाग खड़े हुए। दूसरे मायावी निशाचर लकुटि-मुसुंडी-कोंत से काँपते हुए हाथवाले, कुटिल मत्सर से भरे हुए, लड़ाई की इच्छा रखनेवाले, जिनकी केशावली आग की ज्वालावली से जल रही थी, जो गुंजाफल के समान लाल-लाल नेत्रों से उद्भट थे, दाँतों से प्रचंड मुखवाले, मांस के लंपट, लम्बी-लम्बी लपलपाती हुई जीभवाले, शत्रु सेना में चक्कर देने वाले, शूल वाले और हूलने वाले थे। तब युद्ध के प्रांगण में उनके धड़ों को गिराने वाले पहाड़ के शिलाखंडों से सहित वे वानर भिड़ गए। भ्रमरों के समान तीरपुंखों से वे शोभित हो उठे। जिस प्रकार वन में वृक्ष खंडित हो जाते हैं उसी प्रकार वे युद्ध में खंडित हो गए। जिस प्रकार लताएँ, उसी प्रकार उनकी आँतें छिन्न-भिन्न हो गईं। जिस प्रकार पत्ते उसी प्रकार उनके वाहन नष्ट हो गए। जिस प्रकार ताड़ वृक्ष के फल, उसी प्रकार शत्रु के भयंकर सिर धरती पर गिरने लगे। जिस प्रकार उद्यान से पशु-पक्षी भाग जाते हैं, उसी प्रकार शत्रुओं के श्रेष्ठ रथों के चक्र टूट गए। जिस प्रकार सरोवर उसी प्रकार शत्रु नष्ट हो गए। वानर लंका नगरी में घुस गए। अपनी जलती हुई पूँछों से वे घर-घर पर चढ़ गए। पीली आँखों वाले उन्होंने आग निकाली और चिल्लाहट से भरे हजारों नागर-भवनों को भस्म कर दिया, ज्वाल-माला की तरह।

घत्ता—हनुमान् के द्वारा प्रक्षिप्त आग शत्रुनगरी में जा लगी मानो राघव की क्रोध रूपी आग अन्यायरूपी ऋण से जल उठी हो।

2 AP °णेत्तरत्तुब्भड। 3. AP जीहदीह°। 4 भमरिहिं ण, P भमरहिं ण। 5 AP पव्वइ K पत्तइ and gloss वाहनानि। 6. A रिउ रहे रहे, P रिउ रहवरे।

9

मलयमजरी—छइयकेउसोहो णयणचारुरोहो[1] जणियलोयवसणो ॥
चडइ गयणि धूमो रावणस्स भीमो दुज्जसो व्व कसणो ॥छ॥

धूमतरि जालोलिउ जलियउ ण णवमेहमज्झि विज्जुलियउ।
पुणु वि ताउ सोहति पईहउ ण चामीयरतरुवरसाहउ।
सदाणियसीमतिणिदेहउ सिहिणा पसरियाउ ण वाहउ।
घरसिरकलसु वलतें[2] छित्तउ सरिउणिवासु व पउलिवि घित्तउ।
सहयरु छदगामि णउ मुणियउ धउ परिघोलमाणु किं हुणियउ।
उग्गु ण सज्जणपक्खु विहावइ उड्ढगामि किह[3] परु सतावइ।
गमणे जासु होइ काली गइ तहु किर किं[4] लब्भइ सुद्धी मइ।
वरमदिरजडियइ माणिक्कइ डहइ[5] अछेयपहापइरिक्कइ[6]।
तेयवतु[7] परतेउ ण इच्छइ सइ जि पहुत्तणु विहवहु वछइ।
डज्झतहिं चदणकप्पूरहिं पउरसुरहिपरिमलवित्थारहिं।
रयभंमरइं[8] उक्कोइयमयणइ वासियाइ सयलइ दिसवयणइ।
जिणवरवेसणिसेहकयरत्थइ[9] दड्ढइ मउदेवगइ वत्थइ।

(9)

रावण के भयकर अपयश को तरह काला धुआँ आकाश मे चढता है। छादितकेतुशोभ (ध्वज की शोभा को आच्छादित करने वाला, ग्रह विशेष को निरस्कृत करने वाला), धुएँ के भीतर ज्वालावली इस प्रकार जल उठी मानो नवमेघ के भीतर बिजली चमक उठी हो। फिर वह लम्बी ज्वाला इस प्रकार शोभित होती थी मानो स्वर्ण-वृक्ष की शाखा हो। स्त्रियों के शरीर को पकडने वाली आग ऐसी मालूम होती थी, मानो उसने अपनी बाँह फैला दी हो। जलती हुई उससे गृहकलश गिर पडा मानो उसने अपने शत्रु (जल) के निवास रूप (घडे) को जला कर फेंक दिया हो। उसने स्वच्छदगामी अपने मित्र (वायु) को भी कुछ नही समझा। क्या (वायु से) आदोलित ध्वज को इसलिए होम दिया? उग्र सज्जन पक्ष भी अच्छा नही लगता। ऊर्ध्वगामी होते हुए भी वह, दूसरो को क्यो सताती है? जिसके चलने मे गति काली हो जाती है, उससे शुभ गति किस प्रकार पाई जा सकती है? वह निरन्तर प्रभा से परिपूर्ण श्रेष्ठ प्रासादो मे विजडित माणिक्यो को भस्म करने लगी। जो तेजवाला होता है वह दूसरे के तेज को नही चाहता। वैभव की प्रभुता वह स्वय चाहता है। प्रचुर सुरभि परिमल विस्तारवाले, जलते हुए चदन-कपूर से युक्त, भ्रमरो से व्याप्त काम-कुतूहल उत्पन्न करनेवाले समस्त दिशा-मुख सुवासित हो उठे। जिनवर के वेष (दिगम्बरत्व) का निषेध करने वाले मृदु कोमल वस्त्र जल गए।

(9) 1 P चारुणेहो। 2. वडतें, P वलवतें, but K वलतें ज्वलता। 3 A किं परु। 4 AP कहिं। 5. A परवलु पेक्खिवि णावइ थक्कइ। 6 P °परियक्कइ। 7. P तेयमतु। 8. A रइभयणइ। 9 A जिणवरभवणणिसेह°, P जिणवरवेसणिवेस°। 10. P सरियइं।

घत्ता—घरदुवारु जलइ वरपोमरायविप्फुरियउं ॥
जालापल्लवेहिं ण दीसइ तोरणु भरियउं[10] ॥9॥

10

मलयमंजरी—दहमुहस्स कम्मं मुक्कणायधम्मं जाणिउ व कुद्धो ॥
उक्कवाणजालं मुयइ णं विसाल सिहि सिहासमिद्धो ॥छ॥

होमदव्वरासिउ संपत्तउ तिलजवघयकप्पासहिं तित्तउ[1] ।
हुरुहुरंतु णं संति पघोसइ दिज्जउ[2] रामहु सीय महासइ ।
होउ[3] संधि जीवउ महिमाणणु भुं जउ लच्छि अविग्घ[4] दसाणणु ।
एत्तहि अग्गिजाल पवियंभइ एत्तहि वाणरविंदु णिसुंभइ ।
माय ण पुत्तहंडु समग्गइ[5] जणु हल्लोहलिहुउ कहिं णिग्गइ ।
भवणारोहणु करिवि अभग्गउ ण वइसाणरु जोयहु लग्गउ ।
केत्तिय लंकाउरि मइ दड्ढी णं विडेण कामिणि दुवियड्ढी ।
वाहिरपुरवरु एम डहेप्पिणु कित्तिमणिसियरणियरु वहेप्पिणु ।
चलिउ[6] पडीवउ पावणि तेत्तहि णिवसइ ससिविरु[7] राहउ जेत्तहि ।

घत्ता—उत्तम पद्मराग मणि से विस्फुरित गृहद्वार जल गया। ज्वाला रूपी पल्लवों से वह ऐसा प्रतीत होता था मानो तोरण बँधा हुआ हो।

(10)

क्रुद्ध अग्नि ने रावण के धर्म और न्याय से मुक्त कर्म को जान लिया। शिखाओं से समृद्ध वह मानो विशाल उत्कट वाणज्वाला छोड़ रही थी।

तिल जौ घृत और कपास से परिपूर्ण होम द्रव्य-राशि प्राप्त हो गई जो मानो हुहुर-हुहुर कर शांति घोषित करती है कि महासती सीता राम को दी जाए और संधि हो जाए। मही को मानने वाला वह दशानन जीवित रहे और अविघ्न भाव से धरती का उपभोग करे। यहाँ अग्निजाल बढ़ रहा था। यहाँ वानर समूह नाच कर रहा था। माँ अपने पुत्र रूपी वर्तन का आलिंगन नहीं करती। लोग हड़बड़ा कर कहीं भी चले जा रहे थे। भवनों का आरोहण कर अभग्न आग मानो यह देखने लगी कि मैंने कितनी लंका नगरी जलाई है। मानो विट ने व्यभिचारिणी कामिनी को देखा हो। वाहर पुरवर को इस प्रकार जलाकर तथा कृत्रिम (मायावी) निशाचर समूह को नष्ट कर हनुमान् वापस चला जहाँ पर शिविर सहित राम ठहरे हुए थे।

(10) 1. A सित्तउ। 2. दिज्जहो। 3. A होइ। 4 A अविग्घु। 5 AP सामग्गइ। 6 A वलिउ। 7. A ससिवस, P ससिवह।

घत्ता—भरहे लक्खणेण सहु सीरपाणि अवलोइउ ॥
तेणजणहि सुउ सियपुप्फयतु पोमाइउ ॥10॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयतविरइए महाकव्वे णदणवणमोडण लकाडाहु[8]
णाम छहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥76॥

घत्ता—भरत ने लक्ष्मण के साथ राम को देखा। उन्होंने सूर्य और चन्द्रमा के समान अजना-पुत्र (हनुमान्) की प्रशसा की।

त्रेसठ महापुरुषो के गुणालकारो से युक्त महापुराण मे महाकवि पुष्पदन्त द्वारा
विरचित एव महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य मे नदन-वन मोड़ने
और लकादाह नाम का छिहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

8. P omits लकाडाहु।

सत्तहत्तरिमो संधि

वणु भजिवि[1] पुरवरु णिड्डहिवि हणुइ[2] णियत्तइ जयसिरिकामें ॥
अज्ज वि किं णावइ खयरवइ पुच्छिउ एम विहीसणु रामें ॥ध्रुवक॥

I

हेला—सो तेलोक्ककंटओ[3] सहइ किं पराणं ॥
धणुगुणरववियंभिय विलसिय सराण ॥छ॥

ता भणइ विहीसणु भयणिरीहु   जइ गिरिवरकंदरि वसइ सीहु ।
तो करि कुरंग किं तहिं[4] चरंति   कायर तहु गंधेण जि मरंति ।
महिवइ[5] लंकहि जइ होतु देव   जीवंत एंति तो भिच्च केंव ।
ते जाणिउ[6] तुहु वालिहि कयंतु   रइवइसुग्गीवसहायवंतु ।
जसु भाइ अणंतु अणंतधामु   सो विज्जइ विणु कहिं जिणमि रामु ।
इय चिंतिवि होइवि सुइसरीरु   इंदइ णियरक्ख[7] करेवि धीरु ।
आइच्चपायमहिहरि दसासु   थिरु विरएप्पिणु अट्ठोववासु ।
अच्छइ विज्जासाहणपयत्तु[8]   णेरंतरु झाणारूढचित्तु ।

सतहत्तरवीं संधि

वन को भग्न कर, पुरवर को जलाकर हनुमान् के निवृत्त होने पर, विजयश्री की कामना रखने वाले राम ने विभीषण से इस प्रकार पूछा कि विद्याधर आज भी क्यो नही आया ?

(1)

त्रिलोक के लिए कटक स्वरूप वह दूसरो (शत्रुओ) के तीरो सहित धनुष-प्रत्यचा के शब्द से विकसित चेष्टा को क्या सहन कर सकता है ? तब विभीषण कहता है कि यदि भय से निरीह सिंह गिरिवर की गुफा मे निवास करता है तो क्या हाथी और हरिण वहाँ विचरण कर सकते हैं ? वे कायर तो उसकी गध से ही मर जाते हैं। हे देव, यदि राजा लका मे है तो अनुचर जीवित कैसे लौट सकते हं ? उसने जान लिया कि तुम वालि के लिए यम हो, तथा हनुमान् और सुग्रीव तुम्हारे सहायक हैं। जिसका भाई लक्ष्मण अनतधाम है ऐसे उस राम को मैं विद्या के विना कैसे जीत सकता हूँ। यह विचार कर तथा पवित्र शरीर होकर, वीर इन्द्रजीत को रक्षक वनाकर रावण आदित्यपाद पर्वत पर आठ उपवास कर विद्याओ की सिद्धि मे प्रयत्नशील तथा

---

(1) 1. P भुजिवि । 2 हणुवणियत्तइ । 3. तिल्लोक्क°, P तइलोक्क° । 4. A तहि किम चरंति । 5. AP जइ महिवइ लंकहि होंतु । 6 P तो जाणिउ । 7. AP णियरक्खणु करिवि । 8 P °साहणि ।

त णिसुणिवि आढत्ताहवेण विज्जाहर पेसिय राहवेण।
धाइय ते दुद्धर विग्घकारि हलमुसलसवालतिसूलधारि[9]।

घत्ता—णहि जाइवि दिणयरचरणगिरि मायावाणरेहिं कयरावहिं ॥
वेढिउ विंझु व जलहरहिं गज्जणसीलहिं दरिसियचावहिं ॥1॥

2

हेला—घोरणीलवण्णया छण्णगयणभाया ॥
आहूया घणाघणा सुक्कधीरणाया[1] ॥छ॥

वाओलिधूलिवहलधयारु[2] गडगडिय[3] पडिय पाहाणफारु।
णिवडिय तडि फोडिय गिरिखयालु वरिसाविउ तक्खणि मेहजालु[4]।
जलु[5] थलु महियलु जलभरिउ सयलु पइ ढोइउ आयसवलयणियलु।
दरिसिउ मदोयरिकेसगाहु भडु कुभयण्णु फणिवद्धवाहु।
बधवसिरकमलइ तोडियाइ वच्छयलइ विउलइ फाडियाइ।
कुद्धउ दसासु झाणाउ ढलिउ कहिं चदहासु पभणतु चलिउ।
इदइणा कहिउ खगेसरासु परमेसर खगमायाविलासु।
णीसेसु वियंभिउ एहु ताव तुहुं णियणियमपब्भट्ठु जाव।

ध्यान मे निरन्तर आरूढ़चित्त होकर स्थित है। यह सुनकर युद्ध को प्रारंभ करने वाले राघव ने विद्याधर भेजे। विघ्न करने वाले एव मूसल, तलवार और त्रिशूल धारण किए हुए दुर्धर विद्याधर दौडे गये।

घत्ता—आकाश मे जाकर कोलाहल करते हुए मायावी वानरो ने आदित्यपाद गिरि को उसी प्रकार घेर लिया जिस प्रकार इन्द्रधनुष का प्रदर्शन करते हुए गर्जनशील मेघो के द्वारा विंध्याचल घेर लिया जाता है।

(2)

भयकर और नीले रगवाले आकाश भाग को आच्छादित करने वाले, धीर शब्द करते हुए वे धनीभूत मेघ हो गए।

चक्रवात की धूल से जिसमे वहल अधकार है, ऐसे पत्थरो (ओलो) से प्रचुर मेघ गडगडा कर वरसने लगे। विजली गिरी और विघटित हो गई। मेघ ने तत्क्षण मेघजाल की वर्षा की। जल थल महीथल समस्त जल से भर गए। मदोदरी के पैरो मे लोहे की शृ खला डाल दी। फिर दिखाया मदोदरी के वालो का पकडा जाना और कुम्भकर्ण के हाथो को साँपो से बाँधा जाना। भाईयो के तोडे गए सिरकमल और फाडे गए विशाल वक्षस्थल। (यह देखकर) दशानन क्रुद्ध हो उठा। ध्यान से टल गया। चन्द्रहास कहाँ है ? यह कहता हुआ चला। इन्द्रजीत ने विद्याधर राजा से कहा—हे परमेश्वर, यह विद्याधरो की माया का विलास है। यह समस्त फैलाव (माया का) तब तक के लिए है जब तक तुम अपने नियम से भ्रष्ट नही होते। तब राजा ने

9 A सवाणतिसूल°।

(2) 1 AP °वीर°। 2 P वाउधूलियवहल°। 3 गयघडिय°। 4 P मोहजालु। 5 A जलथल-णहयल जलभरिय।

ता राए विज्जादेवयाउ णिज्झाइयाउ णिहियावयाउ[6]।
आयाउ[7] ताउ पजलियराउ पेसणु महंति पणमियसिराउ।

घत्ता—भणु दसकंधर धरणिधर हरहुं जीउ अरिवरहु सणामहु॥
अम्हइ बलवंतहं हरिबलहं तसहुं[8] णवर रणि लक्खणरामहु॥2॥

3

हेला—ता भणिय महेसिणा जाहु जाहु तुम्हे॥
णियभुयजुयसहायया संगरम्मि अम्हे॥छ॥

सक्कहु सीरिहि लच्छीहरासु किं वसणि दीणु भण्णइ परासु।
एत्तहि इंदइ अब्भिडिउ ताहं मायावियाहं साहामयाहं।
आवट्टइ लोट्टइ जायमण्णु संघट्टइ फुट्टइ वइरिसेण्णु।
दरमलइ थोट्टदुग्घोट्टथट्टु[1] सूडइ[2] विसट्टु पडिभडमरट्टु।
परिखलइ[3] वलइ हणु भणइ हणइ उल्ललिवि मिलइ रिउसिरइं लुणइ।
रुंभइ थंभइ तरवारिधार णिहणइ[4] विहुणइ पवरासवार।
सीसक्कइं फोडइ तडयडत्ति मुसुमूरइ छत्तइं कसमसत्ति।
असिवरइं खलंतइं खणखणंति[5] कडियलकिंकिणिउ[6] झुणुझुणंति।
पइसरइ तरइ कीलालवारि पडिवक्खहु पाडइ पलयमारि[7]।

(रावण) ने आपत्तियो का नाश करनेवाली विद्याओ का ध्यान किया। अजलियाँ बाँधे हुए वे विद्याएँ आईं, और सिर से प्रणाम करती हुई आज्ञा की प्रशसा करने लगी (माँगने लगी)।

घत्ता—हम लोग केवल प्रसिद्ध लक्ष्मण और राम की सेनाओ से युद्ध मे डरते हैं। हे राजन्, बताओ किस महाशत्रु के जीव का अपहरण करूँ ?

(3)

तब दशानन ने कहा, तुम लोग जाओ-जाओ। अपनी दोनो भुजाएँ है, जिनकी सहायता से सग्राम में मैं ऐसा हूँ। क्या सकट मे लक्ष्मी को धारण करने वाले लक्ष्मण और राम से दीन वचन कहे जाएँ? यहाँ इन्द्रजीत उन मायावी वानरो से भिड गया। क्रुद्ध वह शत्रुसेना को घुमाता है, चूर-चूर करता है, उससे भिडता है और नष्ट कर देता है, समर्थ और दुर्धर छटा को कुचल देता है। विशिष्ट शत्रुसेना के गर्व का नाश कर देता है। परिस्खलित होता, मुडता, मारो-मारो कहकर मारता, उछलकर मिल जाता और शत्रुओ के सिर काट डालता। तलवार की धार को रोक देता और स्तभित कर देता। प्रबल घुडसवारो को नष्ट कर चूर-चूर कर देता। तड़-तड कर शिरस्त्राणो को तोड देता। कसमसाते छत्रो को चूर-चूर कर देता। गिरती हुई तलवारे खनखनाने लगती है, कटितलो की किंकिणियाँ रुनझुन करने लगती है। वह रक्त के जल मे प्रवेश करता और तिर जाता। शत्रु-पक्ष पर प्रलय मारि मचा देता। अपने गर्व का निर्वाह

6. A वणदेवयाउ। 7. P आइयउ। 8 P तसहु धरणे सहु लक्खण°।

(3) 1. A °दुग्घट्ट°। 2. AP साडइ। 3 AP पडिखलइ। 4 P णिहुणइ। 5 AP खलखलंति। 6 AP किंकिणियउ रुणुरुणंति। 7. A पडयमारि।

इदइ णिरत्थ कयवूढगव्व आयासयलि गय पमय[8] सव्व ।

घत्ता—विहुरि वि धीरु अविसण्णमणु[9] ण चलइ किं पि सुहडहकारहु ॥
लकेसरु लकहि गपि थिउ खंधु समोड्डिवि[10] गुरुरणभारहु ॥3॥

4

हेला—कयरिउविग्घविब्भमा कमियगगणभाया[1] ॥
आया राममदिर विविहखयरराया ॥छ॥

ता इच्छियणियणाहसिवेणं हणुमते सुग्गीवणिवेण ।
गिरिसमेयसिहरसिद्धाओ[2] अणिमाईहिं रिद्धिहिं रिद्धाओ ।
विज्जाओ परसाहणियाओ केसरिखगवइवाहिणियाओ ।
दिण्णाओ दुल्लंघबलाणं वीराण[3] गोविंदबलाण ।
पण्णत्तीए रइय जाण रयणमय मणहारि विमाण ।
कूडकोडिसघट्टियचद दिव्व[4] कइवयजोयणरुद ।
भित्तिणिरूवियचित्ति[5] सुरूव[6] बद्धसिणिद्धचिंधचंदोव ।
रणझणतमणिकिंकिणिजाल[7] हेममय तोरणसोहाल ।
णाणाविहदुवाररमणीय पारंभियसुरसुदरिगीय ।
आयण्णियणरखयरासीसो अक्खयदहिदोवचियसीसो ।

करने वाला इन्द्रजीत निरस्त्र हो उठा। सारे वानर आकाश-तल मे चले गए।

घत्ता—सकट मे भी धीर, अविषण्णमन वह अपने सुभट होने के अहकार से जरा भी विचलित नही होता। लकेश्वर लका मे जाकर स्थित हो गया, अपने कधो पर भारी रण-भार को उठाने के लिए।

(4)

जिन्होने शत्रुओ मे विघ्न का विभ्रम उत्पन्न किया है और आकाश भाग का उल्लघन किया है ऐसे विविध विद्याधर राजा राम के घर आए।

अपने स्वामी का कल्याण चाहने वाले हनुमान् और सुग्रीव राजा ने, समेदशिखर पर्वत पर सिद्ध की गई अणिमादि ऋद्धियों से सपन्न एव दूसरो को सिद्ध करनेवाली सिंहवाहिनी गरुड़ वाहिनी आदि विद्याएँ अलघनीय बलवाले वीर लक्ष्मण और राम को दे दी। प्रज्ञप्ति विद्या द्वारा यान और रत्नमय सुन्दर विमान रचा गया जिसकी शिखरपक्ति चन्द्रमा से सघर्षित थी। वह दिव्य और कितने ही योजन विशाल था। जो दिवालो पर बनाए गए चित्रो से सुन्दर था, जिसमे स्निग्ध ध्वज चदोवा बँधा हुआ था, मणियो की किंकिणियो का सुन्दर जाल जिसमें रुनझुन-रुनझुन कर रहा था, जो स्वर्णमय तोरणो से सुन्दर था, नाना प्रकार के द्वारों से जो शोभनशील था, जिसमे सुन्दर देवगीत प्रारभ किए गए थे, ऐसे उस विमान में मनुष्यो और विद्याधरो के आशीर्वादो को सुननेवाले तथा अक्षत दही दूध से अचित सिर वाले राम,

---

8 A पवय। 9 ण विसण्णमणु। 10 AP समोडिवि।

(4) 1 AP गयण° 2. AP °सिहरि सिद्धाओ। 3. AP धीराण। 4 A दिव्वा कइ°। 5. A भित्तणिरूविय। 6. AP चित्तसरूव। 7. AP रुणुरुणत°।

तत्थारूढो देवो रामो हरि[8] हरिसिल्लो अजणसामो।
दरिसियहयमुसलंकुसपासं भूगोयरसेण्ण णीसेस।
चलिय गगणे खयराणीय सामिकज्जि परिछेइयजीय।
णाणहरणविहूसियदेह गयवरदंतवियारियमेह।

घत्ता—संदाणिय णहि[9] ससिदिवसयर पेल्लापेल्लि[10] जाय[11] खगरायहं ॥
धयछत्तचलतह चामरहं हरिकरिरहवरभडसघायह ॥4॥

5

हेला—णवणिंत्तिससंणिहे णहयले चलतं ॥
मयगलमयजले[1] वल दीसए वहत ॥छ॥

करिछाहिहिं जलकरिवर विलग्ग जलणर णरवरपडिबिंबभग्ग।
धावति मयर पलगिलणकाम[2] झस सुसुमार गभीरथाम।
सीमतिणिपडिरूवइ णियति जलदेवयाउ सीसइ धुणति।
उज्जलमोत्तियभायणधरेहिं पवणुद्धुयचलवीईकरेहिं।
गज्जइ समुद्दु वाहरइ णाइ मरुकंपियंगु भयवसु व थाइ।
सायरु लघिवि परिहरिवि सक वेढिय विज्जाहरणिवहि लक।
किउ कलयलु रणपडहइ[3] हयाइ भीरुहु[4] चित्तइ विहडिवि गयाइ।

लक्ष्मण तथा प्रसन्न हनुमान् आरूढ हो गए। जिसमे घोडो, मूसलो, अ कुशो और पासो का प्रदर्शन किया गया है ऐसा मनुष्यो का नि.शेष सैन्य चला। आकाश मे स्वामी राम के लिए प्राणो की वाजी लगाने वाली, नाना अस्त्रो से अलंकृत शरीर वाली और गजवरो के दाँतो से मेघो को विदीर्ण करने वाली विद्याधरो की सेना चली।

घत्ता—आकाश, सूर्य, चन्द्रमा स्थित रह गए। विद्याधर राजाओ के चलते ही ध्वजो, छत्रो, चामरो, घोडो, हाथियो, रथवरो और योद्धाओ से सघात से रेलपेल मच गई।

(5)

... नव कृपाण की तरह कातिवाले आकाश मे चलता हुआ तथा मदगज के मदजल मे वहता हुआ सैन्य दिखाई दे रहा था।

गजो के प्रतिविम्बो से जलगज लग गए। जलमानुष नरवरो के प्रतिविम्व से भग्न हो गए। मास खाने की इच्छा से मगर दौड रहे थे। मत्स्य और शिशुमार गभीर शक्तिवाले थे। स्त्रियो के प्रतिविम्बो को देखकर जलदेवियाँ अपना सिर धुनने लगती। उज्जवल मोती रूपी पात्रो को धारण करने वाले तथा हवा से कपित चचल लहरो रूपी हाथों से समुद्र गरज रहा था, मानो उसे निमत्रण दे रहा हो। हवा से प्रकपित शरीर वह ऐसा लगता जैसे भयभीत हो। शका छोडकर, समुद्र को पार कर, विद्याधर राजाओ ने लकानगर को घेर लिया। उन्होने कोलाहल किया और युद्ध के नगाडे बजवा दिए। कायरो के चित्त भग्न हो गए। सातो पाताल थर्रा उठे। उन्मार्ग

8. P omits हरि। 9. A °णहसि°। 10 AP पेल्लावेल्लि। 11. P जाइ।
(5) 1 मयरायले जले, P मयरायलजले। 2. A °गलिण°।

सत्त वि पायालइं थरहरंति उम्मग्गलग्ग सायर तरंति ।
विसहर भयरसवस विसु मुयंति कुंचियकर दिसकरि कुक्करंति[3] ।
दित्तइं णक्खत्तइं ढलढलंति झुल्लतइं णहि एक्कहिं मिलंति ।

घत्ता—वाइत्तयसद्दसमुच्छलेण सखोहणु जायउ तेल्लोक्कहु ।।
किं जाणहुं णहि तडि तडयडिय पडिउ विंबु समियकहु अक्कहु ।।5

6

हेला—ता भुवणुत्तुरडिणिवडणे[1] किं हुओ णिघोसो ।।
आहासइ दसाणणो गाढजायरोसो ।।छ।।

भायर किं सुम्मइ घोरु णाउ किं उड्डइ धूलीरयणिहाउ ।
दीसइ महिमंडलु महिहरेहिं[2] णहयलु सच्छण्णउ णहयरेहिं ।
ता विहसिवि पभणइ कुंभयण्णु अववरिउं देव पडिवक्खसेण्णु ।
हा हरि आढत्तउ जंवुएहिं वइवसु जीवहिं जीवियचुएहिं ।
सेरिहु मयमत्ततुरंगमेहिं[3] पक्खिवइ खलियउ उरजगमेहिं ।
किं तुज्झु वि उप्परि एंति[4] सत्तु किं तुहु वि समिच्छहि परकलत्तु ।
लइ ढुक्कउ[5] दीसइ विहिविहाणु भिडु एवहिं पीडिवि रणि किवाणु ।
तं णिसुणिवि भणिउं दसाणणेण जीवंतें मइं पंचाणणेण ।

में लगे हुए वे उसमे वहने लगे । साप भय के कारण विष उगल रहे थे । अपनी सूंड टेढ़ी कर दिग्गज चिंघाड रहे थे । चमकते नक्षत्र आकाश से गिर रहे थे । आदोलित वे आकाश मे एक हो रहे थे ।

घत्ता—वाद्यो के शब्दो के उठने से तीनो लोको मे सक्षोभ फैल गया । क्या जाने आकाश मे विजली तडतडा कर गिरी अथवा चद्र सहित सूर्य का विम्ब गिर पडा ।

(6)

जिसे अत्यन्त क्रोध उत्पन्न हुआ है, ऐसा रावण पूछता है—क्या एक दूसरे पर स्थित भुवनो के गिरने का यह निर्घोष हुआ है ?

हे भाइयो, यह घोर नाद क्यों सुना जाता है ? धूल का यह समूह क्यो उड रहा है ? महीमडल महीधरो से और आकाशतल नभचरो से क्यो आच्छन्न है ? तब कुंभकर्ण हँसकर कहता है—हे देव, शत्रु की सेना आ पहुँची है । खेद है कि हरिणो ने सिंह को आक्रात किया है और यम को जीवन से च्युत जीवो ने । मदमत्त अश्वो द्वारा महिष घेर लिया गया है । सापो ने गरुड को स्खलित कर दिया है । क्या तुम्हारे ऊपर भी शत्रु आ सकता है ? क्या तुम भी परस्त्री की इच्छा करते हो ? लो विधि का विधान पूरा होता दिखाई दे रहा है ! लो अब युद्ध में कृपाण को पीडित कर भिडो ! यह सुनकर रावण ने कहा—मुझ सिंह के जीते जी शत्रु रूपी मृग मिलकर क्या कर लेंगे ?

3. AP रणतूरई । 4. P भीरहु । 5 A वुक्करंति, P कुक्कुवंति ।

(6) 1 A °त्तकडिणिवडणे, P °त्तुरडिणिवडणे । 2. A महियरेहिं, P महियरेहिं । 3 A मयमत्तु ।
4 इंति । 5. ढूकइ ।

अरिहरिण मिलेप्पिणु किं करंति असिणहरझडप्पिय[6] धुउ मरंति ।
धव[7] पावउ भुक्खिय पलयमारि पहणाविय लहु सणाहभेरि ।

घत्ता—विरसतइ णरकरयलहयइ तूरइ णाइ कहंति दसासहु ॥
राहवहु सीय णउ दिण्ण पइ किं उक्कंठिउ वइवसवासहु ॥6॥

7

हेला—कंचणकवयसोहिओ णवतमालवण्णो ॥
संझारायराइओ णं घणो रवण्णो ॥छं॥

सणज्झमाणु रिउतासणेण भडु सोहइ दिव्वसरासणेण ।
असिविज्जुइ विमलइ विप्फुरंतु जीवियरु जीवणु जणहु दिंतु ।
भडु को वि णिहालइ बाणपत्तु लइ एयहु एवहिं रिउ जि पत्तु ।
भडु को वि पलोवइ तोणजुम्मु ण रणसिरिऊरुजुयलु[1] रम्मु ।
भडु को वि मुयइ सणाहभारु किं कासु वि रुच्चइ लोहसारु[2] ।
कासु वि पइसरइ ण पुलइयंगि सो फुट्टइ पिसुणु व सुयणसंगि ।
किं धणुणा कयबहुसंकएण चरणेण वि आहववंकएण ।
भडु को वि भणइ हउं कोंतवाहु कोंतें वाहमि[3] रिउरुहिरवाहु[4] ।
मायंगकुंभु णिहिकुंभु[5] जेंव हउं फोडमि अज्जु गयाइ तेंव ।

मेरी तलवार रूपी नख के झपट्टे मे पडकर वह निश्चित रूप से नाश को प्राप्त हो जाएगा। भूखी महामारी तृप्ति को प्राप्त होगी। उसने शीघ्र प्रस्थान की रणभेरी बजवा दी।

घत्ता—मनुष्यो के हाथो से आहत और बजते हुए तूर्य मानो रावण से कह रहे है कि तुमने राम की सीता नही दी, तुम यम के निवास के लिए उत्कंठित क्यो हो ?

(7)

स्वर्णकवच से शोभित नव-तमाल वृक्ष के समान वर्णवाला रावण ऐसा लगता था मानो सध्याराग से शोभित सुन्दर वन हो। शत्रु को त्रास देनेवाले दिव्य धनुष से तैयार होता हुआ वह सुभट शोभित हो रहा था। विमल तलवार रूपी बिजली से चमकता हुआ तथा मेघ की तरह जीवन (ग्रासवृत्ति और जल) देता हुआ कोई योद्धा बाणपु ख देखता है कि लो इससे अभी शत्रु प्राप्त हुआ। कोई सुभट तरकस युग्म को इस प्रकार देखता है मानो रणलक्ष्मी का सुन्दर उरुयुगल हो। कोई योद्धा कवचभार को छोड देता है। क्या किसी को भी लोहभार अच्छा लगता है ? किसी के पुलकित शरीर मे वह (कवच) प्रवेश नही करता, सुजन का सग होने पर वह दुष्ट की तरह नष्ट हो जाता है। बहु (बहुत, वधू) की आशका करने वाले धनुष से क्या ? युद्ध मे वक्र चलने वाले चरण से क्या ? कोई सुभट कहता है कि मैं कोंत धारण करता हूँ, कोत से मैं शत्रु के रुधिर को प्रवाहित करूँगा। निधियो के घडो की तरह मैं आज गदा से गजकुभो को फोड़ूँगा। कोई सुभट

6. Ad °णहयर° । 7. A धुउ, P धउ, K धव and gloss तृप्तिम् ।
(7) 1 P °उरूजुयरम्मु । 2. AP लोहभारु । 3. A थाहमि । 4 A °थाहु । 5 A कुभणिहि ।

भडु को वि भणइ महिघत्तियाइं[6] दक्खालमि थूलइं मोत्तियाइं।
अवरु वि करिरयणहं देमि हत्थु णियणिवरिणमेल्लावणसमत्थु।

घत्ता—दहवयणहु णिच्च विरत्तियहि को वि भणइ हियवउं संतावमि ।।
अणरसियहि सीयहि तणिय तणु राहवरत्तंकुसुंभइ रावमि ।।7।।

8

हेला—आरूढा महासवारवाहिया तुरगा ।।
कंचणसारिसज्जिया[1] चोइया मयंगा ।।छ।।

पवणपहयविलंबियधयवड[2] विविहजाणजंपाणसंकड।
सयडचक्कचिक्करणपडिरव बद्धरोसभडभिउडिभइरव।
विप्फुरंतकरवालधारय हणु भणंत ढुक्कासवारय।
पणवतुणवझल्लरिमहासर[3] चित्तछत्तछण्णवरंतर।
चलियधूलिमइलियदिसामुहं पलयकालकालग्गिसण्णिहं।
इंदचंदणाइंदतासणं[4] णं कयंतरायस्स सासणं[5]
णिग्गयं बलं बहलकलयलं रुद्धियणहयलं पिहियमहियलं।
दुमुदुमंतरणहसमद्दलं[6] जायं च पडिसुहडगोंदलं।

कहता है—धरती पर पड़े हुए स्थूल मोतियों को मैं आज दिखाऊँगा और फिर मैं अपने राजा के ऋण को छुड़ाने मे समर्थ गजरत्नों को दूँगा।

घत्ता—कोई कहता है—नित्य विरक्त (विशेष रूप से रक्त) रावण के हृदय को मैं सताऊँगा और अरसिक (अरक्त) सीता के शरीर को राघव के लाल कुसुंभ रंग से रंजित करूँगा।

(8)

महान् अश्वारोहियों द्वारा संचालित अश्व चल पड़े (आरूढ हो गए)। स्वर्ण की काठी से सज्जित हाथी प्रेरित कर दिये गए। जिसमे हवा से आहत ध्वजपट अवलंबित है, जो विविध यानों और जंपानों से व्याप्त है, जिसमे गाड़ियों के चकों के चिक्कार का प्रतिशब्द हो रहा है, जो बद्धरोष योद्धाओं की भ्रुकुटियों से भयंकर है, जिसमे तलवारों की धाराएँ विस्फुरित है, मारो-मारो कहते हुए अश्वारोही पहुँच रहे हैं, जिसमे प्रणव तुणव व झल्लरी का महाशब्द हो रहा है, जिसमे चित्र-विचित्र छत्रों से आकाश आच्छादित है, जिसमे उड़ती हुई धूल से दिशामुख मैले हैं, जो प्रलयकाल की कालाग्नि के समान है, जो इन्द्र, चन्द्र और नागेन्द्र के लिए त्रास दायक है मानो यमराज का शासन हो, जिसमे अत्यन्त कोलाहल हो रहा है, जिसने आकाशतल को आच्छादित कर लिया है और पृथ्वी को ढक लिया है, जिसमे युद्ध के मृदंग डम-डम बज रहे हैं, जिसमे प्रतिभटों की तुमुल हर्षध्वनि हो रही है। तलवारों के आघात से जहाँ सिर छिन्न हो चुके

---

6 P महिथत्तियाइं।

(8) 1 P °सारसज्जिया। 2 AP °पहयपविलंबिय°। 3 A पवणतुणय°। 4. AP °दणुइंदतासणं। 5. P गासणं। 6. A °मदलं।

खग्गघायविच्छिण्णसीसय हुकरंतभूभंगभीसय[7]
कोंतकोडिसघट्टपेल्लियं वणगलतकीलालरेल्लिय।
विचलियतगुप्पतचरणय[8] हयगयासणीदिण्णकरणय[9]।

घत्ता—पणवियराहवरामणपयइ सीयाकारणि अमरिसपुण्णइ ।।
अब्भिट्टइ गिरितरुवरकरइ मायावाणरणिसियरसेण्णइ ।।8।।

9

हेला—झसमुग्गरमुसढिहिं[1] णिहयरवरंग ।।
जाय दडसजुयं दूरमुक्कभंगं ।।छ।।

रहिएहिं[2] रहिय तुरएहि तुरय रणि रुद्ध एंत[3] दुरएहि दुरय।
पायालहिं वरपायाल खलिय कमसचालेण[4] धरित्ति दलिय।
हरिखुरखणित्तखउ[5] ण मरंतु उट्ठिउ धूलीरउ पय धरतु।
आयासचडिउ[6] ण पुहइप्राणु[7] संताविर[8] ते पिहिउ भाणु।
चवलेण सुद्धवंसहु कएण णिवडंतु णिवारिउ ण धएण।
दीसइ पडुरु[9] कविलंगु केव छत्तारविंदि मयरंदु जेव।

है, जो हुकार करते हुए भूभ्रंगों से भयंकर है, जो कोत परम्परा के सघट से प्रेरित है, जिसमें घावों से रिसते रक्त की धाराएँ है, जहाँ गिरी हुई आँतो मे पैर उलझ रहे है, तथा अश्व और गजों के आसनों पर शस्त्र रखे हुए हैं ऐसा सैन्य निकल पड़ा।

घत्ता—जिन्होने राघव और रावण के चरणो में प्रणाम किया है, जो अमर्ष से भरी हुई थी, गिरि तथा तरूवर जिनके हाथो मे है, ऐसी मायावी वानरो और राक्षसो की सेनाएँ सीता के कारण युद्ध मे भिड गई।

(9)

झस, मुद्गर और मुसंढि शस्त्रो के द्वारा जिसमे श्रेष्ठ मनुष्यो के अग आहत हुए है तथा जो विघटन से मुक्त है, ऐसा दडयुक्त युद्ध हुआ।

रथिको (सारथियो) से रथिक, तुरगो से तुरग और गजो से गज आते हुए अवरुद्ध कर लिए गए। पैदल सैनिको के द्वारा पैदल सैनिक स्खलित (पराजित) कर दिए गए। पैरो के संचालन से धरती दलित हो गई। घोडों के खुरो रूपी खनित्रों द्वारा खोदा गया धूल समूह पैरो से लगता हुआ उठा मानो आकाश मे जाते हुए पृथ्वी के प्राण हो। सतापकारी होने से उस धूल ने सूर्य को ढक लिया। शुद्ध वश के कारण, चंचल ध्वज ने (अपने ऊपर) जमती हुई धूल का निवारण किया। सफेद और कपिल अगवाली वह ऐसी लगती है जैसे छत्रो रूपी अरविन्दो का

---

7 P भीमय। 8. AP विवलियत°। 9. P गयसिणी°।

(9) 1 A झसमुसलमुसुढिहिं णिहिय°। 2. A रहएहिं। 3. AP यत। 4 AP °सचारेण। 5 A ण खउ मरतु। 6 AP आयासि चडिउ। 7. AP °पाणु। 8 A सताउ करतु विणिहिउ भाणु, P सताव करतें पिहिउ भाणु। 9. P पडुर।

खुप्पइ[10] मयथिप्पिरि करिकवोलि[11] भणु को ण[12] विलग्गइ दाणसीलि ।
महुयरु पडिवक्खीहूयउ तासु किं पिच्छें फेडइ चियदिसासु ।
जपाणि गवक्खहिं पइसरंतु पररमणिथणत्थलि मंद[13] थंतु ।
रउ[14] भावइ महु[15] ण बीउ जारु ते छाइउ दहमुहवहुवियारु[16] ।
असिसलिलि णिलीणु ण[17] पंकु होइ चमराणिलेण उल्ललिवि जाइ ।
मउडग्गि पडंतु जि कुडलासु धावइ मेहु व रविमंडलासु ।
मइलइ मंडलियहं उरपएसु ढंकइ सियहारावलिविलासु ।

घत्ता—रयमेलउ मइलिवि भुवणयलु कलिकालेण समाणउ ।।
करिगिरिवणणिज्झरवियलियहिं[18] सोणियजलवाहिणियहि लीणउ ।।9।।

10

हेला—जा कोट्टु पलोट्टिय कवडवाणणेरेहिं ।।
ता रविकित्ति णिग्गओ सहु[1] संकिकरेहिं ।।छ।।

तओ तेण भूमीससेणाहिवेणं पिसक्कासणुम्मुक्कजीयारवेण ।
रहत्थेण सामत्थधत्थाहिएण[2] तमोहं व्व सारंगबिंबकिएण[3] ।
विहिज्जंतकंधच्छिर[4] छिण्णमुंड रसालुद्धभेरुंडखज्जंतरुंड[5] ।

मकरंद हो। वह मद से गीले हाथी के गंडस्थल पर जम जाती है। बताओ दानशील व्यक्ति से कौन नही लगता? भ्रमर उस धूल का प्रतिपक्षी (शत्रु) हो गया। क्या वह अपने पंख से दिशामुख मे व्याप्त उसे हटाता है? जपानों और गवाक्षो से प्रवेश करता, शत्रुओ की रमणियों के स्तनतलो पर धीरे स्थित होता हुआ रज (धूल) मुझे ऐसा लगता है मानो दूसरा जार हो। उसने रावण की पत्नी के विकार को आच्छादित कर लिया। तलवार रूपी जल मे लीन वह पंक नही होता। चमर की हवा से शिथिल होकर वह चला जाता है। मुकुटो के अग्रभाग पर पडता हुआ रज, कुडलो पर इस प्रकार जाता है जैसे सूर्यमंडल पर मेघ जा रहा हो (उसे आच्छादित करने के लिए)। मंडलीक राजाओ के उरप्रदेशो को मैला करता है, उनकी श्वेत हारावलि के विलास को आच्छादित करता है।

घत्ता—इस प्रकार रज समूह, कलिकाल के समान भुवनतल को मैला कर, हाथी रूपी पर्वत के वन-निर्झरों (व्रण रूपी झरनो, बन के झरनों) से विगलित रक्त रूपी जल की नदी मे लीन हो गया।

(10)

जब मायावी वानरों ने दुर्ग को ध्वस्त कर दिया तो (रावण का) सेनापति अर्ककीर्ति अपने अनुचरो के साथ निकला। तब रथ पर स्थित उसने, जिसमें भूपतियो के सेनाधिपति है, जिसमे धनुषो की प्रत्यंचा का शब्द किया जा रहा है, जिसमे कधे और सिर छिन्न हो रहे है, मुंड कट चुके है, रस के लोभी भेरुण्ड पक्षी धड खा रहे है, जो झूलती हुई आतो से झरते-हुए रक्त से आरक्त

10 P मा खुप्पइ। 11 P करिकणेलि। 12. A को वि ण लग्गइ। 13 A मदु। 14. A णउ भावइ। 15. P ण महु। 16 A दहमुहमुहवियारु। 17. AP णउ। 18. °गिरिवरणिज्झर°।

(10) 1 AP सह। 2 A धम्माहिएण। 3. सारंगचिंधकएण। 4. A °रुण्णच्छिर। 5. A तुंडं।

ललंततवेढतथिप्पंतरत्तं सदप्प खुरप्पोहछिज्जतछत्तं।
भिडंत पडत रुसारत्तणेत्तं समुब्भूयपासेयधाराहि सित्तं।
गइंदुग्गदंतग्गभिज्जंतगत्तं दिसासुं विसंत वसातुप्पलित्त।
गयाघट्टणुट्ठग्गिजालापलित्तं[7] थिरत्तेण साहारियासारमित्त।
समप्पंतइच्छं सरुब्भिण्णवच्छं महाघायमुच्छाविणिम्मीलियच्छ।
विरुज्झतजुज्झतपाइक्कचंड सकोदंडकंड कय खंडखंड।
वराहिंदमाणेहिं बाणेहिं रुद्ध[8] रणे रामएवस्य सेण्ण णिरुद्ध[9]

घत्ता—तहुपरबलु किमिणु[10] व ओसरिउ मग्गणवंदु घुलतउ पेक्खइ ॥
आवरणु करइ तणु संवरइ णवउ कलत्तु व अप्पउ रक्खइ ॥10॥

11

हेला—ता विज्जाहराहिवो पउरकोवपुण्णो[1] ॥
सणद्धो महाभडो अवि य कुंभयण्णो ॥छ॥

पहु कुंभु णिकुंभु अमेयसत्ति इंदइ इंदाउहु इंदकित्ति।
इंदीवरलोयणु इंदवम्मु[2] इयदेहु सूरु दुम्मुहु अगम्मु[3]।
महवंतु[4] महामहु वुहमुहक्खु बलकेउ महाबलु धूमचक्खु।

है, जो दर्प सहित है, जिसमे खुरपो के समूह से छत्र उखाड दिए गए हैं, जो लडती और पडती है, जिसके नेत्र रक्त से लाल हैं, जो निकली हुई प्रस्वेदधारा से सिंचित है, जिसमे शरीर गजेन्द्रो के निकले हुए दाँतो के अग्रभाग से भेद दिए गए हैं। दिशाओ मे प्रवेश रकती हुई, जो चर्बी रूपी घी से लिप्त है, जो गदाओ के संघर्ष से उत्पन्न आग से प्रदीप्त है, जिसने अपनी स्थिरता से श्रेष्ठ मित्रों को धैर्य बँधाया है, जो समर्पण की इच्छा कर रही है, जिसके वक्ष तीरो से घायल हैं, महान् आघातों की मूर्च्छा से जिनकी आँखे बंद हो गई हैं। जो विरद और संघर्षरत पैदल सैनिकों से प्रचड है, ऐसी सेना को धनुष और बाण सहित उसी प्रकार छिन्न-भिन्न कर दिया, जिस प्रकार चन्द्रमा अंधकार समूह को नष्ट कर देता है। श्रेष्ठ नागो के आकार के तीरो से उसने राम देव की सेना को अवरुद्ध कर दिया।

घत्ता—उसका शत्रुसैन्य कृपण की तरह, मग्गणविंद (बाणो का समूह, याचको का समूह) को व्याप्त देखकर हट गया। वह नववधू की तरह आवरण करती है और शरीर को ढकती है। अपनी रक्षा करती है।

(11)

तब प्रचुर कोप से पूर्ण विद्याधर राजा रावण तैयार हुआ और महासुभट कुंभकर्ण भी।

प्रभु कुभ और अप्रमेय शक्ति निकुभ, इन्द्रजीत, इन्द्रायुध, इन्द्रकीर्ति, इंदीवर लोचन, इन्द्रवर्मा, इतदेह, सूर दुर्मुख, अगम्य महवत, महामधु, बुधमुख, बलकेतु, महाबल, धूम्रचक्षु,

6. A खुरुप्पेहिं, P खुरुप्पोह°। 7. AP °घट्टणुत्थग्गि°। 8 A वराहिंडमाणेहिं। 9. A विरुद्ध। 10. AP किविणु।

(11) 1. A पवर°। 2. P इदधम्मु। 3 P अमम्मु। 4. P महुवंतु।

खरदूसणु मउ हत्थप्पहत्थु सणज्झइ भडयणु रणसमत्थु।
असिधेणु व केण वि दढणिवद्ध[5] परसासाहारहु किर पयद्ध[6]।
रणदिक्खहि थाइवि दिट्ठिरम्मु केण वि धरियउ गुणवतु धम्मु।
सधइ समाणसरकोडि केव परलोउ महइ वायरणु जेव।
केण वि चितिवि णियनूवहु[7] कुसलु रिउकणकडणु कड्ढिउ मुसलु।
केण वि असिवाणिइ णयण दिट्ठ मीणा इव बेण्णि रमति इट्ठ।
केण वि दरिसाविउ अद्धयदु थिउ धरिवि णाइ णहभायछदु[8]।
सगामखेत्तकरणुज्जमेण केण वि हलु गहिउ[9] सविक्कमेण।
केण वि गहियउ[10] फणिपासु सारु सोहइ ण सगरसिरिहि[11] हारु।

घत्ता—मायगतुरगविमाणधयरहवरवाहणदूसचारें॥
सणद्ध कुद्ध जयलुद्ध भड उब्भड णिग्गय णयरदुवारे॥11॥

12

हेला—अमरसमरभरुव्वहो थिरकिणकखधो[1]॥
कुलधवलो धुरधरो वइरिबाहुबधो ॥छ॥

खरदूषण, मद, हस्त, प्रहस्त आदि युद्ध मे समर्थ योद्धाजन तैयार होने लगे। किसी ने असि को धेनु की तरह मजबूती से पकड लिया था और उसका प्रयोग परसासाहार (दूसरों की सासो के आहार, परशस्याहार—दूसरो के धान्य के आहार) के लिए किया। किसी ने रणदीक्षा मे स्थित होकर दृष्टिरम्य डोरी सहित धनुष (गुण सहित धर्म) धारण कर लिया। वह वैयाकरण के समान बाण कोटि (स्वर कोटि) को साधता है और व्याकरण के समान शत्रु (उत्तर वर्ण) का लोप चाहता है। किसी ने अपने राजा की कुशलता का विचार कर, शत्रु रूपी कणो को कूटने वाले मूसल को निकाल लिया। किसी ने तलवार के पानी मे मत्स्यो की तरह रमण करते हुए अपने दोनो इष्ट नेत्रो को देखा। किसी ने अर्धेन्दु को बताया, जो ऐसा लगता था मानो आकाश भाग ने ही अर्धचन्द्र धारण कर रखा हो। युद्ध के क्षेत्र मे उद्यम करने के लिए किसी सुभट ने अपने पराक्रम के साथ हल ग्रहण कर लिया। किसी ने श्रेष्ठ नागपाश ले लिया जो मानो युद्धलक्ष्मी के हार की तरह शोभित था।

घत्ता—हाथी, घोडा, विमान-ध्वज और रथ श्रेष्ठ वाहनो से, जिसमे चलना मुश्किल है ऐसे नगरद्वार से क्रुद्ध सनद्ध और जय के लोभी वे उद्भट सुभट निकले।

(12)

जो देवयुद्ध का भार उठाने मे समर्थ है, जिसका कधा स्थिर और घर्षण चिह्नों से युक्त है, जो कुल-धवल है, धुरंधर है, जो शत्रुओ के बाहुओ को बाँधने वाला है, जो रत्नों से निर्मित

---

5 A दड्ढणिवद्ध। 6 AP पद्ध। 7. AP °णिवहु। 8. AP णहभाइ चदु, K णहभायचदु but gloss सादृश्य, T णहभायछदु नभोभागसादृश्य। 9. P गहिउ विक्कमेण। 10. AP लइयउ। 11. A संगरि।
(12) 1 AP थिरु।

रयणणिम्मवियरयणियरधयभीयरो
विक्कमक्कमियमहिवलयगिरिसायरो[2]।
पवणवइसवणजमवरुणवलभजणो
असुरसुरखयरफणितरुणिमणरजणो।
गरलतमपडलकालिंदिजलसामलो
सुरहिमयणाहिउच्छलियतणुपरिमलो।
कोवगुरुजलणजालोलिजालियदिसो
सरलरत्तच्छिविच्छोहणिज्जियविसो।
वीरपरिहवपरो[3] रइयरणपरियरो
मुक्कगुणरावधणुदडमडियकरो।
णिहिलजगगिलणकालो[4] व्व ढुक्को सयं
छत्तछण्णो महतो जणतो भय।
कढिणभुयफलिहसयलिदकंपावणो
कसणघणकरिवरारूढओ रावणो।
असमपरविसमसाहसणिही णिग्गओ
विमलकमलाहिसेयस्स ण दिग्गओ।
हरिकरिकमाहया हल्लिया मेइणी
रणरुहिरलपडी णच्चिया डाइणी।
कुलिसकुडिलकुरारावलीराइय
धगधगत पुरो चक्कमुद्धाइय।

निशाचर-ध्वजो से भयकर है, जिसने अपने विक्रम से महीवलय, गिरि और समुद्र को आक्रात किया है, जो पवन, वैश्रवण, यम और वरुण के बल का नाश करने वाला है, जो असुर, सुर, विद्याधर, नाग और तरुणियों के मन का रजन करने वाला है, जो विष, तमपटल और यमुना के जल के समान श्याम है, कस्तूरीमृग के समान जिसके शरीर से परिमल उछलता है, जिसने क्रोध रूपी ज्वालावलि से दिशाओ को जला दिया है, अपनी सरल और लाल आँखो की काति से जिसने वृषभ को विजित कर लिया है, जो वीरो के पराभव मे तत्पर है, जिसने युद्ध का परिकर बना रखा है, छोडी गई प्रत्यचा के शब्द वाले धनुषदड से जिसका कर शोभित है, ऐसा महान् छत्रों से आच्छादित, भय पैदा करता हुआ, अपने बाहुफलको के द्वारा शैलेन्द्र को कँपाने वाला, काले मेघ के समान महागज पर बैठा हुआ रावण समस्त विश्व को निगलने वाले काल के समान स्वय वहाँ आ पहुँचा। असम और शत्रु के लिए विषम साहस की निधिवाला वह इस प्रकार निकला मानो विमल कमला (लक्ष्मी) के अभिषेक के लिए दिग्गज निकला हो। नारायण के हाथी से आहत धरती हिल उठी। युद्ध के रक्त को लालची डायन नाच उठी। उसने कुटिल वज्राकुरो के समान आराओ की आवली से शोभित तथा धक-धक करता हुआ चक्र सामने उठा लिया।

2 P धिक्कमाक्कमिय°। 3. AP धीर°। 4 A °गलिण°।

घत्ता—फेडियमुहवडधुयधयवडह दावियदूसहगयघडघायह ॥
दलवट्टियहरिवरभडथडह मुसुमूरियसामंतणिहायह ॥12॥

13

हेला—विज्जावलरउद्दह जायगारवाण ॥
वाहियरहविमद्दह सद्दरउरवाणं ॥छ॥

जयकारियराहवरावणाह　　जयलच्छिरमणरंजियमणाह ।
समुहागयाह सपसाहणास　　जुज्झतह दोह मि साहणाह ।
असिणिहसणसिहिजालउ जलंति[1]　　गुडपक्खरपल्लाणइ जलंति ।
णीवंति ताइ वणरुहजलेण　　केण वि पइसिवि आहवि छलेण ।
परिमुक्कसंकु पिहुपिंछफारु[2]　　लग्गउ[3] ण गयवरगिरिहि मोरु ।
गडयलि विलग्गउ वाणपुखु　　दीसइ ण छप्पउ दाणकखु ।
केण वि गयणगणि देवि करणु　　कंकिकुंभवीढि थिरु थविवि[4] चरणु ।
लोट्टिवि आरोहु णिवद्धकोहु　　कडिछुरियइ[5] पहणिवि घित्तु जोहु ।
अरिणरकरघल्लिय लउडिदंड[6]　　चूरिय सदण सगामचड[7] ।
मणिजडिय पडिय मंडलियमउड　　उच्छलिय रयणकरणियर पयड ।

घत्ता—जिन्होने मुखपटो और उडते हुए ध्वजपटो को नष्ट कर दिया है, जिन्होने दु सह गज समूह को द्रवित कर दिया है, जिन्होने अश्ववरो और योद्धा-समूह को चकनाचूर कर दिया है और सामत-समूह को कुचल दिया है,

(13)

जो विद्यावल से भयकर हैं, जिन्हे गौरव उत्पन्न हुआ है, जो हाँके गए रथो से विमर्दित है, जो शब्द करते हुए बाणो से भयकर है,

जिन्होने राम और रावण का जय-जयकार किया है, जिनका मन विजयलक्ष्मी के साथ रमण करने से रजित है, आमने-सामने आई हुई, प्रसाधनो से युक्त युद्ध करती हुई ऐसी दोनो सेनाओ के तलवारो से उत्पन्न अग्नि ज्वालाएँ जलने लगती है, गजो और अश्वो के कवच जलने लगते हैं। उन्हे घावो से निकलते हुए रक्तजल से शात किया जा रहा था। किसी ने छल से युद्ध मे प्रवेश कर विशाल पु ख वाला तीक्ष्ण शकु छोडा जो इस तरह लग रहा था, मानो गजराज रूपी पर्वत पर मयूर हो। गडतल पर लगा हुआ तीर पु ख ऐसा प्रतीत होता था, मानो दान (मदजल) का आकांक्षी भ्रमर हो। किसी ने आकाश के प्रागण मे करण (आसन) देकर हाथी के कुभपीठ पर अपना दृढ पैर स्थापित कर, तथा लौटकर, आरोहण करने वाले वद्ध-क्रोध योद्धा को कमर की छुरी से प्रहार कर नष्ट कर दिया। शत्रु-मनुष्यो द्वारा फेंके गए लकुटिदडो ने युद्ध मे प्रचड स्यदनो को चूर-चूर कर दिया। मणियो से विजटित माडलीक राजाओ के मुकुट गिर गए। रत्नो का किरण समूह प्रकट रूप मे उछल पडा। किसी के द्वारा

---

(13) 1 A चलति। 2. A पिच्छभारु। 3 A उग्गउ। 4 A देवि। 5. A करि छुरियइ। 6 P °दडि। 7. P °चडि।

केण वि कासु वि पविमुट्ठिहयउ सीसक्के सहुं सिरु चुण्णु कयउं।
गउ वियलियासु ककालसिद्धु कासु वि लोहियरसु रसिवि गिद्धु।
उड्डेप्पिणु वच्चइ गयणमग्गु ण पोरिसु वण्णइ गपि सग्गु।
तर्हि अवसरि बहुतत्तिल्लएहिं[8] जायवि कयजणमणसल्लएहिं।

घत्ता—णिउ णिग्गउ भरहद्धाहिवइ चारहिं रामहु कहिउ वियारिवि ॥
थिउ ता रणदिक्खहि दासरहि पुप्फयतु जिणवरु जयकारिवि ॥13॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे राहवरावणबलसणहण
णाम सत्तहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥77॥

किसी का वज्रमुष्टि से आहत शिरस्त्राण से सहित सिर चूर-चूर कर दिया गया। बेचारा कापालिक निराश होकर चला गया। किसी के रक्त रूपी रस का आस्वाद लेकर गीध उड़कर आकाशमार्ग में जा रहा था, मानो स्वर्ग मे जाकर उसके पौरुष का वर्णन करने जा रहा हो। उस अवसर पर अत्यन्त चितायुक्त और जिन्होने जन-मानस में शल्य पैदा कर दी है, ऐसे चरो ने जाकर,

घत्ता—राम से विचार कर कहा कि भारत का अर्धचक्रवर्ती राजा (युद्ध के लिए) निकल पड़ा है, तब राम भी पुष्पदत जिनवर की जयकार कर रणदीक्षा मे स्थित हो गए।

इस प्रकार, त्रेसठ महापुरुषो के गुणालकारो से युक्त महापुराण मे, महाकवि पुष्पदत
द्वारा रचित तथा महाभव्य भरत द्वारा अनुमत इस महाकाव्य का राघव-रावण-
बल-सहनन नामक सतहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

8. A बहुभत्तिल्लएहिं। 9. A उभयबलभिडण, P उभयबलाभिडण।

अट्ठहत्तरिमो संधि

पडिभडकालाणलु जोइयभुयबलु विप्फुरतु मच्छरि चडिउ ॥
महिकरिणिकयग्गहु[1] पसरियविग्गहु कण्हु दसासहु अब्भिडिउ ॥ ध्रुवक॥

1

दुवई—पहय गहीर भेरि सिरिरमणीमाणियदेहलक्खणा ॥
सणज्झति हणुव सुग्गीव महापहुरामलक्खणा[2] ॥छ॥

माणिक्कंसुजालविण्णासइं चंदकवयचंदियसंकासइ ।
आणियाइं कवयइ रहुरायहु णउ विसति रोमंचियकायहु ।
वाहुजुयलु पुलएण विसट्टइ रिउसरीरबधणइ व तुट्टइ ।
आहवरोलहरिसपडहच्छहु[3] उरि सणाहु दिण्णु सिरिवच्छहु ।
माइ ण सीयहि मणि ण रावणु फुट्टिवि[4] गउ सयदलु ण दुज्जणु ।

अठहत्तरवी संधि

शत्रु-योद्धाओ के लिए कालानल, जिसने अपना वाहुवल देखा है ऐसा तथा विस्फुरित होता हुआ लक्ष्मण मत्सर से भर उठा। धरती रूपी गृहिणी के लिए आग्रह करने वाला और युद्ध का विस्तार करने वाला वह रावण से भिड गया।

(1)

युद्ध की भेरि वजा दी गई। जिनके शरीर-लक्षण लक्ष्मी रूपी रमणी से मान्य हैं, ऐसे महाप्रभु राम, लक्ष्मण, हनुमान् और सुग्रीव तैयार होने लगे। माणिक्यो के किरणजाल से विरचित, मयूरपख की चन्द्रिका के आकार वाले कवच रघुराज के लिए दिए गए। वे रोमाचित शरीर मे प्रवेश नही करते। रोमांच से उनका भुजयुगल विकसित होता है, और शत्रु के शरीर-वधन की तरह विघटित हो जाता है। युद्ध के शब्द से उत्पन्न हर्ष को धारण करने वाले लक्ष्मण के वक्ष पर कवच पहिना दिया गया। वह उसमे उसी प्रकार नही समाता जिस प्रकार सीता के मन मे रावण नही समाता। वह सैंकड़ो टुकडो मे उसी प्रकार फट गया जैसे दल के साथ दुर्जन।

---

(1) 1 A महिधरिणिकयग्गहु। 2. A महपहु। 3. P आहवि रोल°। 4 A फट्टिवि। 5. P णियति।

सुग्गीवहु गीयहु रणभरधुर णिहिय करंति[5] काइ किर परणर ।
सणज्झतु काइ सो सुच्चइ हणुवंतु वि वम्महु जहिं वुच्चइ ।
तहिं[6] जगु विंधिवि मारिवि मेल्लइ अगउ[7] अंगइ वइरिहि सल्लइ ।
दहियदोव्वसिद्धत्थयमीसिउ सीमंतिणिकरघित्तउ सेसउ ।
विरसिउ जुज्झडिंडिमाडंबरु बहिरिउ तेण विवरु दिसि अबरु ।
मत्ति विजयपव्वइ सइं माहउ[8] अंजणगिरिकरिवरि थिउ राहउ[9] ।
वलिपुत्ते तहु बलवित्थिण्णी विज्ज पहरणावरणि[10] विइण्णी ।

घत्ता—सइ का वि पजपइ किं पि ण कंपइ पियंयम परबलु णिट्ठवहि ॥
हणु करिकुंभयलइं हिमकणधवलइं मोत्तियाइं महु पट्ठवहि ॥1॥

2

दुवई—का वि पुरंधि भणइ किं वहुवे अणुदिणु हियंयजूरण ॥
णियसिरपंकएण[1] पिय फेडहि णरवइपियविसूरण[2] ॥छ॥

का वि भणइ एत्तडउ करेज्जसु पउ पच्छामुहु णाह म देज्जसु ।
गयपडियागयपयपरिठवणे सहइ कइंदु ण भडु भयगमणे ।
का वि भणइ ज मइ थणमंडिउ त[3] गयदंतह समुहु उड्डिउ ।

सुग्रीव की गर्दन पर युद्धभार की धुरी रख दी गई। शत्रु जन क्या कर सकते थे ? कवच पहनता हुआ वह क्या खेद करता है ? जहाँ हनुमान् को कामदेव कहा जाता है वहाँ वह विश्व को वेध कर और मारकर ही छोडता है। अगद शत्रुओ के अगो को पीडित करता है। दही दूध और तिलों से मिश्रित तथा सीमंतिनियो के हाथो के द्वारा शेष (निर्माल्य) छोडा गया था। युद्ध के नगाड़ो का विस्तार बज उठा। उससे दिशा अबर और विवर भर उठे। मतवाले विजयपर्वत गज पर स्वयं माधव (लक्ष्मण) और अजनगिरि गजराज पर राम बैठ गए। वलिपुत्र (सुग्रीव) के द्वारा उनके लिए बल का विस्तार करने वाली और प्रहारो का आवरण करने वाली विद्या दे दी गई।

घत्ता—कोई एक सती कहती है, वह बिल्कुल भी नही काँपती कि, हे प्रियतम, शत्रु सेना को नष्ट कर दो। हाथियो के गडस्थलो को मारो और हिमकणो के समान धवल मोती मुझे भेजो।

(2)

कोई इन्द्राणी कहती है—बहुत से क्या, हे प्रिय, प्रतिदिन का पीडित होना और राजा राम की प्रिया का विसूरना अपना सिरकमल देकर तुम नष्ट कर दो।

कोई कहती है—इतना करना, हे स्वामी, कि अपना पैर पीछे मत देना क्योकि गत और प्रत्यागत पद (चरण, छद) की स्थापना से कवीन्द्र शोभित होता है। भयपूर्वक (आगे-पीछे) गमन से सुभट शोभित नही होता। कोई कहती है कि मैंने जो स्तनमडल किया वह हाथी दाँतो के सामने

6 A जगु तहिं। 7 A अगउवगइ। 8 A राहउ। 9 A माहउ। 10. A धरणि विदिण्णी।
(2) 1 AP °सिरकप्पिएण। 2. A °रिणविसूरण। 3. A ण गय°।

किं वच्छयलु णाह णदेसइ पुणु आलिंगणसुहुं[4] महु देसइ
का वि भणइ[5] रणि म करि णियत्तणु सुयरिज्जउ[5] पहुभुमिणियत्तणु ।
किं पुणु महिमंडलु विस्थिण्णउ इच्छियचायभोयसंपण्णउ ।
देज्जसु पत्थिवचिंतणिवारउ खग्गसलिलु वइरिहिं तिसगारउ ।
का वि भणइ पिययम पेयालइ वसतुप्पे रिउसीसकवालइ ।
हउ दीवउ बोहेसमि जइयहु ओवाइउ[6] महु पूरइ तइयहु ।
का वि भणइ पडिएण वि पिंडे महिवि पिसल्लउ मासहु खंडे ।
कासु वि सिद्धहु आणइ थंभिवि पासि धरिज्जसु[7] वायइ रुंभिवि ।
पइ मुए वि हउ णडिय रइच्छइ त परिपुच्छिवि आवमि[8] पच्छइ ।

घत्ता—सुहवत्तहु वछहि णाह ण पेच्छहि चडहि वेयालालियहि ॥
कयतुट्ठिपरिग्गहु परकंठग्गहु खग्गलट्ठिपुण्णालियहि ॥2॥

3

दुवई—तुह एय सुवसय पिययम पणविण[1] विणीय ॥
सज्जीय सरासण समरि हरउ वइरिजीय ॥छ॥

णदणवणु व णीलतालद्धउ णरवेसे ण सइ मयरद्धउ ।
दीसइ णीसरतु रइयाहउ अंजणगिरिकरिवरि थिउ राहउ ।

उड गया । हे स्वामी, क्या वक्षतल बढेगा और मुझे फिर से आलिंगन सुख देगा ? कोई कहती है कि तुम युद्ध मे पलायन नही करना । तुम स्वामी के भूमि के दान की याद करना । इच्छित त्याग और भोग से सपन्न विस्तीर्ण महीमडल से क्या ? तुम राजा (राम) की चिंता का निवारण करने वाला तथा शत्रुओ की प्यास बढाने वाला अपना खड्गजल देना । कोई कहती है—हे प्रियतम, जब मैं प्रेतालय मे शत्रु के सिर के कपाल (खप्पर) मे चर्बी रूपी घी से दीप जलाऊँगी तभी मेरी याचना पूरी होगी । कोई कहती है कि पडे हुए शरीर से भी मासखड से पिशाच की पूजा कर, किसी भी सिद्ध की आज्ञा से उसे स्तभित कर, व्यतर को वायु से रोककर अपने पास रखना । तुम्हारी मृत्यु होने पर रतिकामना से प्रवचित मैं बाद मे उससे (तुम्हारी बात) पूछने के लिए आऊँगी ।

घत्ता—हे स्वामी, सुभगत्व चाहते हो ?तुम प्रचड वेग से चलाई गई खड्गलता रूपी वेश्या के तुष्टिपरिग्रह को करनेवाले शत्रु के कठग्रह को नही देखते ?

(3)

हे प्रियतम, तुम्हारा यह सुवश मे जन्मा नमनशील विनीत सज्जित धनुष युद्ध मे शत्रु का जीवहरण कर ले ।

नील और ताल वृक्षो से युक्त नदन वन के समान वह (राम) ऐसे लगते है मानो मनुष्य रूप मे स्वय कामदेव हो । सग्राम रचनेवाले राम अजनगिरि गजराज पर बैठकर निकलते हुए ऐसे

4 P आलिंगणु सहु 5. A सुमरिज्जइ । 6. उववायउ । 7. AP धविज्जसु । 8 A आइवि ।
(3) 1. A पणविय ।

ण णवजलहरसिहरि ससकउ[2] ण अइरावइ इदु असकउ[3] ।
ण जसु तिजगसिहरिपडुरतणु धम्मालोयलीणु ण मुणिमणु ।
कयसरसोहउ[4] णाइ मरालउ सूरपहाहरु णाइ मरालउ[5] ।
सीयाकखउ विरहुण्हे[6] हउ[7] दाणालित्तपाणि[8] ण दिग्गउ ।
एत्तहि लक्खणु रोसवियंभिउ णं रणसिरिणच्चणकरु उब्भिउ ।
लच्छीललणालोलणलोहिउ पचवण्णगरुडद्धयसोहिउ ।
विजयमहीहरि कुजरि चडियउ कालसलोणउ जणि आवडियउ ।
मेहहु उवरि मेहु ण थक्कउ रिउहु णाइ जमदूयउ ढुक्कउ ।
घत्ता—चोइयमायगइ चलियतुरगइ वाहियरहइ भयकरइं ।।
सणिहियविमाणइ[9] जरजपाणइ रोसुद्धाइयकिकरइ ।।3।।

4

दुवई—लग्गइं रामरामणाणंदइ वलइ रुसाविसालइ[1] ।।छ।।
णरमुहकुहरमुक्कहुकारुद्दीवियबाणजालइ ।।छ।।
मुक्कमुसलहलपट्टिससेल्लइ पसरियपाणिधरियधम्मेल्लइ ।

दिखाई देते है, मानो नव जलधर के शिखर पर चन्द्रमा हो। मानो ऐरावत महागज पर निशक इन्द्र बैठा हो। मानो त्रैलोक्य के शिखर को शुभ्रतन कर देने वाला यश हो। मानो धर्मलोक मे लीन मुनि का मन हो। जिसने सरोवर की शोभा बढाई है मानो ऐसा हस हो। मानो सूर्य की प्रभा का हरण करने वाला मेघ हो। विरह की ज्वाला से आहत सीता की आकाक्षा हो। जिसकी सूड मदजल से लिप्त है, मानो ऐसा दिग्गज हो। दूसरी ओर क्रोध से विजृभित लक्ष्मण था। मानो रणश्री का नाचता हुआ हाथ उठा हो, जो लक्ष्मी रूपी ललना के अवलोकन का लोभी है, और पचरग गरुडध्वज से शोभित है, जो विजयपर्वत गज पर चढा हुआ ऐसा लगता है जैसे काल के समान लोगों के बीच में आ गया हो। मानो मेघ के ऊपर मेघ स्थित हो, शत्रुओ के ऊपर मानो यमदूत आ पहुँचा हो।

घत्ता—गज प्रेरित किये गये, घोडे चला दिये गये, भयकर रथ हाँक दिये गये, विमान जपान तैयार किये गये। अनुचर क्रोधित हो दौड पडे।

(4)

राम और रावण को आनद देने वाली, क्रोध से विशाल, मनुष्यो के मुख रूपी कुहर से मुक्त हुकार से जिसमें वाणो की ज्वाला उद्दीपित है, ऐसी दोनो सेनाएँ भिड़ गईं। मूसल, हल, पट्टिस और सेल छोडे जाने लगे। फैले हुए हाथो से चोटियाँ पकडी जाने लगी। जो कटे हुए हाथ सिर, उर

2 AP मयकउ। 3 AP आसकउ। 4 A कयसरिसोहउ। 5 AP वियालउ। 6. A °कखउ ण उण्हालउ, P °कखउ विरहु उण्हाउ। 7 A adds after this अण्णेंसंतु रामु ण णिग्गउ, K also has this line but scores it off. 8 दाणविलित्त°। 9. AP °विवाणइ।

(4) 1 P रोसविसालइ।

लुयकरसिरउरजण्णुयजुत्तइ मग्गणगणविच्छेइयछत्तइं ।
कलिकेलासवाससतासइ वइरिविलासहासणिण्णासइं ।
मायाभावगावविंत्थारइ हुयवहवरुणपवणसंचारइं ।
किलिकिलिरवसोसियकीलालइ दिसविदिसुट्ठुउग्गवेयालइ [2] ।
मिलियदलियपक्कलपाइक्कइ [3] वसकद्दमणिमण्णरहचक्कइं ।
अंतमिलंतथंतकायउलइं वालपूलणीलियधरणियलइ ।
तणुवियलंतसेयसित्तंगइ पक्खिपक्खमरुहयसमसंगइं ।
मयगलमलणमलियधयसंडइ [4] हित्तारोहजोहकोदंडइ ।
सुरहरविवणधित्तखयरिंदइ खग्गकंपकंपावियचंदइ ।

घत्ता—असिदंडु लएप्पिणु देहि भणेप्पिणु परबलि परिसक्कइ वियडु ॥
फरपत्तधिहत्थउ [5] को वि समत्थउ जुज्झभिक्ख [6] मग्गइ सुहडु ॥4॥

5

दुवई—को वि भडु [1] करेहिं णिहएहिं कमिहिं वि हुंकरंतइं ॥
कोक्कइ मासगासरसियाइं पिसायइं गयणि जंतइं ॥छ॥

को वि सुहडु मुउ करिदंततरि णावइ सुत्तउ णियजसपंजरि ।
को वि सुहडु अद्धिंदें मंडिउ [2] भूयहिं रुद्दु [3] व णिविसु ण छंडिउ ।

और-जानुओ से युक्त है, जहाँ तीर समूह से छत्र काट दिए गए हैं, जो यम और शकर को सत्रास देने वाली है, जो शत्रुओ के विलास और हास का नाश करने वाली, मायाभाव और गर्व का विस्तार करनेवाली, अग्नि पवन और वरुण के पथ पर सचार करनेवाली, किलकिल शब्द से रक्त का शोषण करनेवाली है, जिसमे दिशा-विदिशा मे उग्र वैताल उठ रहे हैं, जिसमे समर्थ सैनिक मिलकर एक दूसरे को चकनाचूर कर रहे हैं, जहाँ रथचक्र चर्बी की कीचड मे निमग्न हो रहे है, जहाँ काककुल आँतों से मिलकर स्थित हैं, जहाँ धरणीतल केश समूह से नीला है, शरीर से विगलित स्वेद से जो गीला हो गया है, पक्षियो के पखों की हवा से जहाँ श्रम सगम दूर हो गया है; जिसमे मदमाते गजो के मदजल से ध्वज समूह मलिन हो गए है, जिसमें योद्धाओ के चढ़े हुए धनुष छीन लिये गए है, जिसमे देवविमानो के पतन से विद्याधर राजा मुग्ध हो रहे हैं, जहाँ खड्ग के कप से चन्द्रमा प्रकपित है (ऐसी उस युद्धभूमि मे)

घत्ता—कोई विकट सुभट तलवार रूपी दड लेकर 'दो' यह कहकर शत्रुसेना में घूमता है, धनुष हाथ मे लिये हुए कोई समर्थ सुभट युद्ध की भीख माँग रहा है।

(5)

कोई सुभट, कटे हुए हाथो पैरो के होने पर भी हुकार करता हुआ मास के कौर का आस्वाद लेने वाले आकाश में जाते हुए पिशाचो को ललकारता है। कोई सुभट हाथी के दाँतों के भीतर मरा हुआ ऐसा प्रतीत होता है मानो वह अपने यश रूपी पिंजडे मे सोया हुआ हो। कोई सुभट अर्द्धेन्दु से मडित भूतो के द्वारा रुद्र के समान, एक पल के लिए भी नही छोड़ा गया।

2 दिसिविदिसुट्ठियउग्ग° । 3. P °पक्खल° । 4. P °गलचलणमलिय° । 5 AP करपत्त° । 6 मग्गइ जुज्झभिक्खइ ।

(5) 1 P सुभडु । 2. A खंडिउ ।

को वि सुहड्डु सिरु पडिउ ण चिंतइ असिवरु अरिवरकंठहु[4] घत्तइ।
को वि सुहड्डु रत्तद्दहि ण्हायउ सत्तु सिरत्थु णिएप्पिणु आयउ।
कायरदोसिण हउ[5] ण विहिण्णउ पहरणु दीवु धरिवि उत्तिण्णउ।
को वि सुहड्डु परिवड्ढियसाहउ[6] ण पारोहएहिं णग्गोहउ।
रिउबाणहिं उच्चाइउ वट्टइ [7]पंखुत्तिण्णरुहिरु सिव चट्टइ।
कासु वि सुहडडु गुज्झु ण रक्खइ कण्णालग्गु गिद्धु ण अक्खइ।
पइ समुडु[8] पत्थिवरिणि छूढउ लोहिउ णाइ कलतरि[9] बूढउ।
देहमासु वायसह विहित्तउ उत्तमपुरिसह[10] एउ जि जुत्तउ।
कासु वि अंगि रहंगु पइट्ठउ अब्भगब्भि रविबिंबु व दिट्ठउ।

घत्ता—सवहेणोसारिवि[11] अवर[12] णिवारिवि जुज्झि वि मड्डु देहु छिवइ।
कासु वि सुरकामिणि लीलागामिणि माल सयंवरि सइ घिवइ॥5॥

6

दुवई—जायइ सगरम्मि वरखयरकवालचुए वसारसे॥
णरकंकालमहुरवीणासरगाइयरामसाहसे॥छ॥

कोई सुभट अपने पड़े हुए शिर की चिंता नही करता और तलवार को प्रबल शत्रु के कंठ पर दे मारता है। कोई सुभट रक्त के सरोवर मे नहा गया और शिरस्थ शत्रु को देखकर आ गया। कायरता के दोष के कारण मैं खंडित नहीं हुआ, (यह सोचकर) प्रहरण का दीप लेकर वह उत्तीर्ण हो गया। कोई सुभट अपनी चढी हुई बाहो से ऐसा लगता है, मानो तनों से युक्त वट वृक्ष हो। शत्रुओ के बाणों के द्वारा ऊँचा किया गया वह विद्यमान है। उसके पंखो से रिसते रक्त को शिवा (सियारिन)[1] चाट रही है। गीध किसी भी सुभट के रहस्य को सुरक्षित नही रखता मानों इसीलिए कानों से लगकर वह कहता है, तुम्हारा सिर राजा के ऋण में चुक गया है। रक्त मानो ब्याज में रख लिया गया है, देह का मांस कौओ मे विभक्त कर दिया गया है। उत्तम पुरुषों के लिए यहीं उपयुक्त है। किसी के शरीर मे चक्र घुस गया है, जो मेघो के बीच सूर्य बिम्ब के समान दिखाई देता है।

घत्ता—कोई देवी शपथ पूर्वक दूसरी देवी को हटाकर युद्ध मे भी बलपूर्वक शरीर को छूती है। तथा लीलागामिनी वह देवकामिनी स्वयं किसी (योद्धा) को स्वयंवर में माला डालती है।

(6)

जिसमें नरककालो की मधुर वीणा के स्वरों मे राम के साहस का गान किया गया है, तथा जिसमे वर विद्याधरो के कपाल से च्युत चर्बी का रस है—

---

3. A रुदु व, but gloss रुद्र इव। 4. AP अरिवरणियरहु। 5. A वण्णविहिण्णउ। 6 A °सोहउ। 7. A पखुत्तिण्णु P पुखुत्तिण्णु। 8 A समुद्दु। 9 AP कलतरु। 10. AP उत्तिम°। 11. A सरवहेण। 12. P अवरउ वारिवि।

णवर जयसिरिहरो अरिहरिणहरिवरो ।
कुलकमलदिणयरो अणयजणभययरो ।
रणियगुणधणुरवो[1] जणियखलपरिहवो ।
अमियअमरिसवसो तिजगपसरियजसो ।
सयणुकसणियदिसो फणि व विसरिसविसो ।
कुइयवइवसणिहो सिहि व विलसियसिहो ।
थरहरियमहियलो धयपिहियणहयलो ।
करकलियपहरणो पवरबलजियरणो ।
दढकढिणथिरकरो[2] पडिसुहडमयहरो ।

घत्ता—तिहुयणजूरावणु रूसिवि रावणु धाइउ रामहु संमुहु किह ।।
णवमेहु व मेहहु सीहु व सीहहु दिसहत्थिहि दिसहत्थि जिह ।।6।।

7

दुवई—ता करिकरसमाणकरकड्ढियगुणधणुदंडमंडलो[1] ।।
कणयपिसक्कपुंखरुइ-[2]रंजियमाणिमयकण्णकुंडलो ।।छ।।

उक्खयदुक्खलक्खतरुकंदहु इंदइ इंदसरिसु गोविंदहु ।
विडविचिंधु किक्किधणिवासहु वालिकंठकंदलजमपासहु ।
णिद्धहु णियकुलभवणपईवहु भिडियउ कुंभयण्णु सुग्गीवहु ।

ऐसे उस युद्ध के होने पर केवल जयश्री का धारण करने वाला, शत्रु रूपी हरिणों के लिए सिंह, कुल कमलो के लिए दिवाकर, अविनीतजनो के लिए भयकर धनुष और प्रत्यंचा को ध्वनित करनेवाला, अमित अमर्ष के वशीभूत, त्रिजग मे प्रसारित यश वाला, अपने शरीर से दिशाओ को काला करने वाला, नाग के समान असमान्य विष (द्वेष) वाला, क्रुद्ध यम के सदृश, आग के समान विलसित शिखा वाला, महीतल को थरथराने वाला, ध्वज से नभ तल को ढकने वाला, हाथ मे हथियार धारण करने वाला, प्रवल वल से शत्रु को रण में जीतने वाला, दृढ और स्थूल वाहो वाला, शत्रु-योद्धा का मद हरने वाला,

घत्ता—त्रिभुवन का सतापदायक रावण क्रुद्ध होकर राम के सम्मुख इस प्रकार दौड़ा जैसे नवमेघ मेघ के ऊपर, सिंह सिंह के ऊपर और दिग्गज दिग्गज के ऊपर दौड़ता है ।

(7)

तव हाथी की सूड के समान हाथ से जिसने प्रत्यचा और धनुष मंडल खीचा है, तथा स्वर्ण वाणो की पुखकांति से जिसके मणिमय कर्णकुडल रजित है, ऐसा इन्द्रजीत, इन्द्र के समान जिसने सैकडो दुःख रूपी वृक्षो को उखाड डाला है ऐसे लक्ष्मण से, वृक्षध्वजी किष्किधा-निवासी वालि के कठ रूपी प्ररोह (अकुर) के लिए यम-पाश के समान, स्निग्ध और अपने कुल रूपी भवन के प्रदीप सुग्रीव से कुभकर्ण भिड़ गया । मही और महीधर के सचालन में वलवान् वीर

(6) 1 AP रणियधणुगुणरवो । 2 A °थियकरो ।
(7) 1. A °मडणो । 2 P °पुछरुइ°

महिमहिहरचालणवलवतहु रणि रविकित्ति वीरहणुवतहु ।
खरकिरणु व तमतिमिरणिहायहु णलिणकेउ लग्गउ खररायहु ।
अंगयभडु आहुडलकेउहि णावइ मुणिवरिंदु झसकेउहि ।
इंदवम्मु कुमुयहु दूसीलहु कयवहुदूसणु दूसणु णीलहु[3] ।
[4]सदणचलणवलणसफेडहिं लउडिघायजज्जरियकिरीडहिं ।
दतिदतसघट्टणघोरहिं सेलसिलायलघित्तपहारहिं ।
सव्वलमुसलकुलिसझसकोतहिं भिंडिवालकरवालफुरंतहिं[5] ।

घत्ता—रयछइयदियतहिं भडसामतहिं जुज्जतिहिं[6] खयरामरहिं ॥
सचूरियमउडहिं णिवडियसयडहिं महि मडिय धयचामरहिं ॥

8

दुवई—ता लंकाहिवेण हलहेइहि[1] रिंछसुपिंछसज्जिया[2] ॥
एक्क दुवीस[3] तीस पण्णास सरा सहसा विसज्जिया ॥छ॥

धरियलोह तेण जि ते गुणचुय उज्जुय तेण जि ते मोक्खुज्जुय[4] ।
चित्तविचित्त तेण ते चलयर पेहुणवंत तेण ते णहयर ।
धम्मविमुक्क तेण ते हयपर रोसवसिल्ल तेण ते दुद्धर ।
तिक्ख तेण ते वम्मुल्लूरण सहल तेण ते आसापूरण ।

हनुमान से युद्ध मे अर्ककीर्ति, अधकार के समूह खरराज से सूर्य की किरण की तरह नलिनकेतु भिड़ गया। इन्द्रकेतु से भट अगद भिड़ गया जैसे कामदेव से मुनिवरेन्द्र भिड़ जाता है। इन्द्रवर्मा दुश्शील कुमुद से, अनेक दूषण करने वाले दूषण से नील(भिड़ गया)। रथचक्रो के चलने और मुड़ने के धक्को, लकुटियों के आघातों, जर्जर मुकुटों, हाथियो के दाँतो के सघट्टनो से भयंकर, शैल शिलातलों पर दिए गए प्रहारों, सव्वलो, मूसलो, कुलिसो, झसो और कोतो से, चमकते हुए भिंदि-पालो और करवालो से,

घत्ता—धूल से दिगतो को आच्छादित करने वाले, युद्ध करते हुए, विद्याधरो और अमरो से सचूरित मुकुटो से, गिरे हुए रथो और ध्वज-चामरो से धरती मडित हो गई।

(8)

तब रावण ने राम पर रीछ के बालों के पुख से सज्जित एक दो बीस तीस और पचास तीर सहसा छोड़े। वे धरियलोह (लोभ धारण करने वाले, लोहा धारण करने वाले) थे इसीलिए वे गुणच्युत (गुण, डोरी से च्युत) थे। वे ऋजुक (सीधे) थे इसीलिए मोक्ष के लिए उद्यत थे। चित्र-विचित्र थे इसलिए चचल थे। पेहुण (पख) से सहित थे, इसीलिए नभचर थे। धर्म से विमुक्त थे, इसीलिए पर को आहत करने वाले थे। क्रोध के वशीभूत थे, इसीलिए कठोर थे। तीखे (पैने) थे इसलिए मर्म का उच्छेद करने वाले थे। सफल थे, इस आशा को पूरा करने वाले

---

3. A लीलहु। 4 A दसणचलण°। 5 AP °करवाल भुयतहिं। 6. A जुज्झिहिति।
(8) 1. A हलएवहि। 2 A °सुपुछ°। 3 A दुतीसवीस। 4. मोक्खज्जुय।

रयगय तेण जि ते पलचक्खिर वहियजोह तेण जि जयकंखिर।
दीहायार णाय णं आया पत्तदाण[5] जिह सयगुण जाया।
एंत णहंते महंत भयंकर जिगिजिगंत पडिवक्खखयंकर।
बाणहिं बाण हणिवि काकुत्थें रावणु विहसिवि भणिउ समत्थें।

घत्ता—णियघरिणिहि अग्गइ सयणसमग्गइ घरि बाणासणु गुणिउं जिह ॥
भडरुहिररसारुणि आहवि दारुणि को विंधइ दहवयण तिह ॥8॥

9

दुवई—हो हो जाहि जाहि तुहुं णासहि धणुसिक्खाविवज्जिओ ॥
मा णिवडहि करालि कालाणलि लक्खणसरि परज्जिओ ॥छ॥

कहिं दिट्ठिमुट्ठि कहिं चावलट्ठि।
कहिं[1] बद्धु ठाणु कहिं[1] णिहिउ बाणु।
धणुवेयणाणु बुज्झहि[2] पहाणु।
गुरुगेहु गपि अण्णवउ[3] किं पि।
पुणु देहि जुज्झु महु तुहुं सुसज्झु।
सीयावहार[4] जज्जाहि जार।
तहिं रणवमालि सुहडंतरालि।
खरकरपवट्ठु दट्ठोट्ठु रुट्ठु।
णिट्ठवियदुट्ठु इदइ पइट्ठु।

थे। पापगत (वेगवाले) थे, इसीलिए मांस खाने वाले थे। योद्धाओं को मारने वाले थे, इसीलिए विजय के आकांक्षी थे। लम्बे आकार वाले वे मानो सांप हों, पात्रदान की तरह सौ गुने हो गए। आकाश के मध्य से आते हुए, महान् भयंकर चमकते हुए और प्रतिपक्ष के लिए भयंकर बाणों को बाणों से आहत कर, समर्थ राम ने रावण से हँसकर कहा—

घत्ता—रे रावण, स्वजनों से परिपूर्ण अपने घर में गृहिणी के सम्मुख जिस तरह तुमने धनुष को समझा है, भटों के रक्त रस से अरुण दारुण युद्ध में उस प्रकार कौन विद्ध करता है?

(9)

हो हो रे रावण, तू जा-जा। धनुर्वेद शिक्षा से रहित तू जा-जा। लक्ष्मण के तीरों से पराजित तू कराल कालाग्नि में मत पड़।

कहाँ दृष्टि-मुष्टि, और कहाँ धनुर्यष्टि? कहाँ लक्ष्य बाँधा और कहाँ बाण रखा? धनुर्वेद के ज्ञान को किसी प्रधान गुरु के घर जाकर कुछ और सीख लो। फिर युद्ध करो। मेरे लिए तुम सुसाध्य हो। सीता का अपहरण करने वाले रे जार, तू जा-जा। तब वहाँ युद्ध के कोलाहल से पूर्ण सुभटों के बीच, खरकरों से स्पृष्ट होठ चबाता हुआ, क्रुद्ध तथा दुष्टों का नाश करने वाला

5. PA पत्तदाणु।

(9) 1 P किह। 2 A बुज्झिउ। 3 A अण्णमउ, P अण्णविउ। 4. P reads this line as जज्जाहि जार, सीयावहार। 5 P पघट्ठु।

ता कुद्धएण धूमद्धएण ।
णं जलियजाल ण विज्जुमाल ।
चलजलहरेण वरिसियसरेण ।
कयआहवेण तहु राहवेण ।
धगधगधगति उम्मुक्क[6] सत्ति ।
वच्छयलि खुत्त रत्तावलित्त ।
णं रत्त वेस मुच्छाविसेस ।
पसवणु[7] कुणति हियवउ लुणंति ।

घत्ता—ज इदइ जित्तउ कोवपलित्तउ तं दहमुहुं ण खयजलणु ॥
ओत्थरिउ समत्थहिं णाणासत्थहिं दुज्जयपडिबलपडिखलणु ॥9॥

10

दुवई—पभणइ णत्थि एण इदइणा तुह णिहएण रणजओ[1] ॥
भो भो राम राम मइं पहरहि संचोयहि महागओ ॥छ॥

हो हो एण सुट्ठु लज्जिज्जइ कुलसामिहिं किह असि कड्डिज्जइ ।
तुहु वेहाविउ ताराकंते अण्णु वि मुक्खएण[2] हणुवंते ।
हउ देविंदेण[3] वि णउ छिप्पमि तुम्हहिं माणुसेहिं किं जिप्पमि ।
जाहि जाहि जा बधवगत्तइ णउ णिवडति[4] खुरुप्पविहत्तइ ।
जाहि जाहि जा चक्कु ण मेल्लमि तुह सिरकमलु ण लुचिवि घल्लमि ।
दप्पुब्भडभडवदविमद्दे त णिसुणेवि पवुत्तु वलहद्दे ।

इन्द्रजीत प्रविष्ट हुआ। तब धूमध्वजी क्रुद्ध युद्ध करने वाले राम ने उस पर धक-धक करती हुई शक्ति छोडी जो मानो चलती हुई ज्वाला अथवा विद्युन्माला हो। रक्त से लिप्त वह वक्षस्थल पर जाकर इस प्रकार लगी, मानो लाल (परिधान मे) वेश्या हो या मूर्च्छाविशेष हो, क्षरण करती हुई या हृदय को काटती हुई।

घत्ता—जब इन्द्रजीत जीत लिया गया, तब क्रोध से प्रदीप्त, अपने समर्थ नाना शास्त्रों से अजेय प्रतिपक्ष को स्खलित करने वाला वह दशमुख उछल पड़ा, मानो दुष्ट जन उछला हो।

(10)

रावण कहता है—तुम्हारे द्वारा इस इन्द्रजीत के मारे जाने से युद्ध विजय नहीं है। अरे राम मुझ पर प्रहार करो। अपना महागज आगे बढाओ। हो हो, उसे लज्जित होना ही चाहिए, कुलस्वामी पर इसके द्वारा भला कैसे तलवार निकाली जाएगी? तारापति सुग्रीव और मूर्ख हनुमान् के द्वारा तुम प्रवञ्चित किए गए हो। मैं देव-देवेन्द्र के द्वारा भी स्पृश्य नही किया जा सकता, तुम जैसे मनुष्यो द्वारा तो कैसे जीता जाऊँगा? जब तक खुरपों से विभक्त होकर भाइयो के शरीर नही गिरते, जाओ-जाओ, मैं चक्र नहीं छोड़ता और तुम्हारे सिरकमल को काटकर नही फेकता। यह सुनकर, दर्प से उद्भट भटसमूह का

---

6 A पविमुक्क। 7 AP पसरणु।

(10) 1 AP रणजुओ। 2 P मुक्कएण। 3 A देविंदें णविउ छिप्पमि। 4 AP विहडति।

परमणीथणसिहरणिरिक्खण मरु मरु खल अयाण दुवियक्खण ।
किं सीहेण[6] सरहु दारिज्जइ पइ मि काइं[7] लक्खणु मारिज्जइ ।
रूवविसेसपरज्जियमेणइ[8] जामि जामि जइ अप्पहि जाणइ ।
जामि जामि जइ सेव समिच्छहि महु पयपकय पणविवि अच्छहि ।

घत्ता—पइं रणउहि[9] मारिवि भिच्च वियारिवि ढोइवि लक विहीसणहु ।।
बोल्लिउ[10] पालेसमि हउ जाएसमि सहु सीयइ सणिहेलणहु ।।10।।

11

दुवई—ता दसकधरेण[1] मणिकुडलमडियगडएसय ।।
छिण्ण असिसुयाइ णवणिसियइ[2] सीयाएविसीसय ।।छ।।

रूसिवि रामहु अग्गइ घित्तउ[3] पुणु सखारु खलखुद्दे वुत्तउ ।
लइ लइ राहव घरिणि तुहारी एह ण होइ कया वि महारी ।
मुय पिय पेच्छिवि मुच्छिउ रहुवइ करपहरणु णिवडिउ ण विहावइ ।
सित्तउ हिमसीयलजलधारहिं[4] आसासिउ चमरिरुहसमीरहिं ।
कह व कह व संजाउ सचेयणु [5]कण्णामुहणिहित्तथिरलोयणु[6] ।
ताव विहीसणेण विण्णत्तउ सीयामरणु ण देव[7] णिरुत्तउ ।

विमर्दन करने वाले बलभद्र ने कहा—रे दूसरो की स्त्रियो के स्तन के अग्रभाग को घूरने वाले अपंडित अज्ञानी दुष्ट मर-मर, क्या सिंह के द्वारा शरभ विदीर्ण किया जाएगा ? तुम्हारे द्वारा तो भला क्या लक्ष्मण मारा जाएगा ? अपने रूप विशेष से मेनका को पराजित करने वाली जानकी यदि तुम दे दो तो मैं जाता हूँ। मैं जाता हूँ, जाता हूँ, यदि तुम मेरी सेवा करना मान लेते हो और मेरे चरणकमलो को प्रणाम करके बने रहते हो।

घत्ता—तुम्हे रणमुख मे मारकर, भृत्य का विचार कर, विभीषण को लका देकर, मैं अपने कहे हुए का पालन करूँगा और सीता देवी के साथ अपने घर जाऊँगा।

(11)

तब, मणिकुंडल से मडित है गडदेश जिसका ऐसे दशानन ने सीता देवी का सिर छुरी से काट दिया और क्रुद्ध होकर राम के आगे डाल दिया और फिर उस दुष्ट क्षुद्र ने कहा—रे राघव, ले-ले अपनी गृहिणी, यह कभी भी हमारी नही होगी। अपनी प्रिया को मरा हुआ देखकर राम मूर्च्छित हो गए। उनके हाथ से शस्त्र गिर गया परन्तु वह नही जान सके। हिम से शीतल जल धारा से सिक्त वह चामरो की हवाओ से आश्वस्त हुए। वह किसी प्रकार बडी कठिनाई से सचेतन हुए। उन्होंने अपने स्थिर नेत्र कन्या के मुख पर कर लिए। इतने मे विभीषण ने कहा—हे

---

5. P °भडविंद° । 6 A सिहेण । 7. AP पाव । 8. A °परिज्जिय° 9 A रणमुहि । 10 AP बोलिउ ।

(11) 1. AP दहकंधरेण । 2 AP असिसुयाइ मायामयसीयाएवि° । 3 P वित्तउ । 4 AP °सीययजल° । 5. AP कतामुह° । 6. A °णिहत्त° 7. AP होइ ।

खयरिंदेण दिट्ठतुहघाएं इंदियालु[8] दरिसाविउ भाएं ।
ता दहमुहेण भाइ दुब्बोल्लिउ पइं णियवसुम्मूलिवि[9] घल्लिउ ।
विणु अब्भासवसेण सरासइ गोत्तकलिइ लच्छि ध्रुवु[10] णासइ[11] ।
एउ ण चिंतिउ कुलविद्धंसण दुम्मुह दुट्ठ कट्ठ दुद्दंसण ।
परहं[12] मिलेवि काइं किर लद्धउ पइं अप्पाणउ अप्पणु खद्धउं ।

घत्ता—आरुट्ठइ[13] करिवरि चलपसरियकरि जो आसंघइ बालतणु ॥
महिहरु मेल्लेप्पिणु महि लंघेप्पिणु मरइ मणुउ सो मूढमणु ॥11॥

12

दुवई—मइ कुद्धेण रामु कि रक्खइ भडहणहणरवालए ॥
भाइय आउ जइ सक्कहि भिडु इह समरकालए ॥छ॥

तं णिसुणेप्पिणु पहु पणवेप्पिणु ।
णवघणणीसणु भणइ विहीसणु ।
जइ पिउ जपहि सीय समप्पहि ।
णिवणयजुत्तहु दसरहपुत्तहु ।
होसि सहोयरु तो तुहुं भायरु ।
सामि महारउ सयणपियारउ ।
णं तो लज्जमि णउ[1] पडिवज्जमि ।
तुज्झु सुहित्तणु दुज्जसकित्तणु ।
होइ असारे इट्ठे जारे ।

देव, यह निश्चित रूप से सीता का मरण नही है। तुम्हारे घात के देखनेवाले मेरे भाई ने यह इन्द्रजाल दिखाया है। तब रावण ने अपने भाई (विभीषण) से कहा—तुमने अपने वश की जड़ को उखाड़ कर डाल दिया। अभ्यास के बिना सरस्वती और गोत्र की कलह से लक्ष्मी निश्चित रूप से नष्ट हो जाती है। रे कुल के विध्वंसक दुष्ट दुर्मुख कठोर एव दुदर्शनीय, तूने इसका विचार नही किया? दूसरों से मिलकर आखिर तूने क्या पा लिया? तूने अपने को अपने से खाया?

घत्ता—चचल और प्रसरित सूड वाले हाथी के क्रुद्ध होने पर, जो पर्वत छोड़कर और धरती का उल्लघन कर बालतृण का आसरा लेता है, मूढमन वह व्यक्ति मारा जाता है।

(12)

मेरे क्रुद्ध होने पर जिसमें भटों का मारो-मारो शब्द हो रहा है, ऐसे समरकाल में क्या राम तुम्हे बचा सकता है? हे भाई आओ और जहाँ तक हो सके यहाँ से युद्ध करो। यह सुनकर और प्रभु को प्रणाम कर नवघन के समान शब्द वाला विभीषण कहता है—यदि तुम प्रिय कहते हो तो सीता को राजाके न्याय से युक्त दशरथपुत्र राम को सौप दो। तभी तुम मेरे सगे भाई हो। तभी मेरे स्वामी और स्वजनप्रिय हो, नही तो मैं अपने को लज्जित मानता हूँ और अपयश के कीर्तन तुम्हारे स्वजनत्व को स्वीकार नही करता। असार इष्ट मित्र रहे, जिसमे धड घूम रहे हैं। पता-

8. AP इंदजालु। 9 A पइ णियकुलु उम्मूलिवि। 10 AP ध्रुउ। 11 A add after this: एवमेव अप्पउ सतासइ, K writes the line but scores it off 12. AP वइरिहिं। 13 A आरूढइ।

(12) 1. हउ।

भमियकवंधइ णिवडियचिंधइ।
महिचुयलुयभुइ ता तहिं सजुइ।
कयवीराहवि मेइणिराहवि।
वहुदाराहवि लग्गउ राहवि।
भीसणु रावणु परमारावणु।
रंजियसुरसह वे वि महारह।
रणभरधुरखम वे वि सविक्कम।
पडिहरि हलहर धवलियकुलहर।
वे वि महाजस णं आसीविस[2]।
फणिकालाणण ण पचाणण।
हिमसमतमतणु[3] आयड्ढियधणु।

घत्ता—कपावियजलथल छाइयणहयल रणि मेलावियअमरयण[4]॥
सहरिस गलगज्जिय खयभयवज्जिय णाइ दिसागय कुइयमण॥12॥

13

दुवइ—रावण राम वे वि जुज्झति सुरोसवसा[1] महाभडा॥
छुडु छुडु ढुक्क मुक्क वाणावलि छुडु छुडु छिण्ण धयवडा॥छ॥

छुडु छुडु णाणाजाणइं भिण्णइ छुडु छुडु धवलइ छत्तइ छिण्णइ।
छुडु[2] णरुडखडमडिय महि छुडु गय घट्टिय लोट्टिय[3] सारहि।

काएँ गिर रही हैं, धरती पर कटी हुई भुजाएँ पडी हुई है, ऐसे उस युद्ध मे—जिसने वीरों का आह्वान किया है, जो धरती की शोभा की रक्षा करने वाले हैं, जिन्होने अनेक द्वारो की रक्षा की है, ऐसे राम के साथ रावण लग गया (भिड गया)। रावण भीषण था, शत्रुओ को मारने वाला था। वे दोनों महारथी सुर सभा को रजित करने वाले थे। दोनो रणभार उठाने मे सक्षम और पराक्रम से सहित थे। रावण और राम जैसे धवल मदराचल हो। दोनो ही महायशस्वी मानो साप हो। नाग जैसे काले मुखवाले थे। मानो सिंह थे। हिम और अंधकार के समान शरीर वाले अपने धनुष ताने हुए—

घत्ता—जिन्होने जल-थल को कपा दिया है, आकाश थल को आच्छादित कर दिया है, और युद्ध मे देवो को इकट्ठा किया है, ऐसे वे दोनो स्वाभिमान से गरजते से हुए, क्षय भाव से रहित जैसे कुपितमन दिग्गज थे।

(13)

अत्यन्त क्रोध के वशीभूत होकर महाभट राम और रावण आपस मे युद्ध करते हैं। वे शीघ्र ही बढे और बाणावली छोडी। शीघ्र ध्वज छिन्न हो गए। शीघ्र नाना यान छिन्न-भिन्न हो गए। धवल छत्र कट गए। शीघ्र धरती मनुष्यो के धडो के खडो से पट गई। शीघ्र ही रथ चकनाचूर

---

2 P आसाविस। 3. AP हिमतमसमतणु। 4. P मेल्लाविय°।

(13) 1. AP सरोस° 2 AP छुडु छुडु णर°। 3 A लु टिय°।

छुडु संदण मुमुमूरिवि घल्लिय   पडिमयगल[4] मायगहिं पेल्लिय।
छुडु छुडु रामु थामु जा दावइ   जाव खगिंदु रहंगु विहावइ।
जाव जुज्झि वावरइ सहोयरु   तावतरि पइट्ठु दामोयरु।
पभणइ णिसुणि[5] देव सीराउह   वीर पउम चुंबियपउमामुह।
राम राम रामामणहारण   सुवलासुय अरिविंदवियारण।
हउं किंकरु [6]कढोरपिहुकरयलु   भाइ तुज्झ [7]पविरोलियपरबलु।
जीवमि जाम वइरिमारणविहि   जगि[8] रयणियरचिंधणिवतरुसिहि।
ताव एउ पइ पहविच्छुरियउ   सइ करेण किं पहरणु धरियउ।

घत्ता—रक्खियकुलगिरिदरि हउं तेरउ हरि मुइ मुइ मइ आलद्धजउ॥
पविखरसरणहरहिं अविरलपहरहिं दारमि दहमुहु मत्तगउ॥13॥

14

दुवई—ता रामेण कण्हु मोक्कल्लिउ[1] वोल्लिउ तेण दहमुहो॥
रे अपवित्त धुत्त परणारीरत्त म थाहि समुहो॥छ॥

विहिदुव्विलसिउं तुहु वि महीसरु   ओसरु ओसरु मा सधहि सरु।
कुद्धइ तुह दहमुह णहईवइं   राहवरायपायराईवइं।

कर फेंक दिए गए। मदगजो के द्वारा प्रतिमदगज पीछे धकेल दिए गए। शीघ्र जब तक राम अपने थाम को दिखाते है और जब तक विद्याधरेन्द्र रावण चक्र दिखाता है। और जब राम युद्ध-व्यापार करते है, तब तक सहोदर लक्ष्मण वहाँ प्रविष्ट हुआ। उसने कहा—हे देव, लक्ष्मी का मुख चूमने वाले वीर पद्म (राम) श्री राघव, हे राम-राम, ललनाओ (स्त्रियो) के मन को हरण करने वाले, सुवला के सुत, शत्रुसमूह का नाश करने वाले हे राम, विशाल और कठोर करतल वाला-शत्रुवल का मथन करने वाला मैं तुम्हारा भाई जब तक जीवित हूँ तब तक शत्रुओं के लिए मारणविधि एवं निशाचर-ध्वजी नृप रूपी वृक्षो के लिए आग हूँ। तो फिर अपनी प्रभा से विच्छुरित यह अस्त्र भला आपने अपने हाथ मे क्यो धारण किया?

घत्ता—जिसने कुल रूपी गिरि की घाटी की रक्षा की है, ऐसा मैं तुम्हारा सिंह हूँ। आलब्ध-जय, तुम मुझे छोडो-छोडो, वज्र और तीव्र तीर रूपी नखों और अविरल प्रहारो से मत्तगज दशमुख का विदारण मैं करूँगा।

(14)

तव राम ने लक्ष्मण को मुक्त कर दिया। उसने रावण से कहा—रे अपवित्र धूर्त, परस्त्री मे रत, तू मेरे सम्मुख मत ठहर। भाग्य से दुर्विलसित तू भी महीश्वर है। हट जा-हट जा, तू शर-सधान मत कर। राजा राघव के नखो से प्रदीप्त चरणकमल तुझ पर क्रुद्ध है। आज तेरी

4. AP पडिमयग। 5. A देव णिसुणि 6 AP कठोर°। 7. A परितोलिय°। 8. A जणरय°।
(14) 1. A मोक्कलियउ।

अज्जु तुज्झु परमाउसु पुण्णउ जिह तुयरयणु[2] कुसील ण दिण्णउ।
मइ मुक्काइं दसास णियच्छहि तिह एवहिं पहरणइं पडिच्छहि।
कयसमरेण गहियरिउजीवें तं णिसुणेवि वुत्तु[3] दहगीवें।
तल्लरजलि कइलासु[4] वि जलयरु अदुमगामि एरंडु वि तरुवरु।
खलसुग्गीवरामणलहणुयहं तारकुंदकुमुयहं खगमणुयहं।
एयहं मज्झि तुहुं मि भडु भण्णहि तेण बप्प मइं रणि अवगण्णहि।
मुइ मुइ तेरउ आउहु केहउ महु मयगमसयतरु[5] जेहउ।
भणइ विहीसणु जुज्झसमत्थइं पहु मेल्लेसइ मायासत्थइं।
चिंतहि तुहुं पण्णत्ति जणद्दण लहु करि मायावाहण पहरण।

घत्ता—तं तेम करेप्पिणु भुय विहुणेप्पिणु अब्भिट्टउ दहमुहहु हरि।
कइयणवयणुत्तिहिं महणपवित्तिहिं णाइं समुद्दहु सुरसिहरि ॥14॥

15

दुवई—बेण्णि वि पीयवास बेण्णि वि णीलंजणगरलसामया ॥
दोहिं मि [1]कुलिसकक्कसकुसवस चोइय मत्तसामया ॥छ॥

बे वि कुद्ध बद्धठाण मुक्क तेहिं दिव्व बाण।
रामणेण मुक्कु णाउ लक्खणेण पक्खिराउ।
रावणेण अंधयारु लक्खणेण मुक्क सूरु।

परम आयु पूर्ण हुई। रे कुशील, जिस प्रकार तू ने स्त्रीरत्न को नहीं दिया उसी प्रकार रे दशमुख, मेरे द्वारा छोड़े गए प्रहरणों को देख और उन्हें स्वीकार कर। यह सुनकर युद्ध करने वाले, तथा जिसने शत्रु के प्राण ग्रहण किए है, ऐसे दशानन ने कहा—छोटे तालाब मे कछुआ भी कैलाश है! बिना पेड के गाँव मे एरड भी वृक्षवर है। दुष्ट सुग्रीव, राम, नल और हनुमान्, तारकुंद, कुमुद तथा विद्याधर मनुष्यों के मध्य तुम भी भट कहलाते हो! इसीलिए युद्ध मे तुम मेरी उपेक्षा कर रहे हो। छोडो-छोडो, तुम्हारे आयुध मे उतना ही अंतर है जितना कि हाथी और मशक में। विभीषण कहता है—स्वामी, युद्ध मे समर्थ यह रावण मायावी अस्त्र छोडेगा। हे लक्ष्मण, तुम प्रज्ञप्ति विद्या का चिंतन करो, तुम शीघ्र ही मायावी अस्त्र ले लो।

घत्ता—तब उस प्रकार कर, अपनी भुजाओं को ठोक कर, लक्ष्मण दशमुख से भिड़ गया जैसे स्वरश्रेष्ठ कविजनों की उक्तियों से तथा मथनप्रवृत्त देवपर्वत (सुमेरु) समुद्र से भिड जाता है।

(15)

दोनों के पीले वस्त्र थे। दोनों ही नीलांजना और गरल की तरह श्याम थे। दोनों ने ही वज्र के कठोर अंकुश से वशीभूत मतवाले श्याम गज प्रेरित किए।

वे दोनों ही बद्धलक्ष्य थे। दोनों ने दिव्य बाण छोड़े। रावण ने नागबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने गरुडराज तीर छोडा। रावण ने अंधकार बाण छोडा, लक्ष्मण ने सूर्यबाण। रावण ने

2. AP तियरयणु। 3 AP वुत्तउ। 4 A किकलासु, T किकलासु परेवक (?) अथवा किकालसु कुरुविल (?), K records a p अथवा किकलासु कुरुविल जीव न तु गजमत्स्यादयः, 5. P मयगसमयतरु।
(15) 1. A कुलिसचक्कसकुस°

रावणेण मेरु चंडु लक्खणेण वज्जदडु।
रावणेण आसु आसु लक्खणेण सेरिहीसु[2]।
रावणेण वारिवाहु लक्खणेण गंधवाहु।
रावणेण चिच्चिजाल लक्खणेण मेहमाल।
रावणेण दंति दीहु लक्खणेण मुक्क सीहु।
रावणेण रक्खसिंदु लक्खणेण खेउविंदु।
रावणेण रत्तिणाहु लक्खणेण मुक्क राहु।
रावणेण मुक्कु रुक्खु लक्खणेण दुण्णिरिक्खु।
पज्जलंतु जायवेउ दिग्गयग्गलग्गतेउ।

घत्ता—सुरसमरसमत्थें विज्जासत्थें जेण जेण रावणु हणइ॥
पडिवक्खीहूएं भासुररूवें तं तं लक्खणु णिल्लुणइ॥15॥

16

दुवई—ता धगधगधगंतु[1] खयजलणु व खेयरलच्छिमाणणो॥
खणि बहुरूविणीइ[2] बहुरूवहिं उद्धाइउ दसाणणो॥छ॥

गयवरि गयवरि हयवरि हयवरि रहवरि रहवरि णरवरि णरवरि।
खेयरि अब्भिडंति पवरामरि[3] छत्ति विमाणि जाणि धइ चामरि।
चउहुं मि पासहिं भडु भीसावणु[4] जलि थलि महियलि णहयलि रावणु।
वीसपाणिपरिभामियपहरणु तिणयणगलतमालसणिहतणु।

प्रचंड मेरुबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने वज्रदंड। रावण ने शीघ्र अश्वबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने प्रचंड महिष बाण। रावण ने मेघबाण छोडा, लक्ष्मण ने पवनबाण। रावण ने अग्निबाण, लक्ष्मण ने मेघमाल। रावण ने दीर्घगज छोडा, लक्ष्मण ने सिंहबाण। रावण ने राक्षसेन्द्र, लक्ष्मण ने क्षेमवृंद। रावण ने कामबाण छोडा, लक्ष्मण ने राहु बाण। रावण ने रूक्ष बाण छोडा, लक्ष्मण भी, जिसका तेज दिग्गजो के अग्र भाग को लग रहा है ऐसा, अग्निबाण छोड़ा।

घत्ता—देव-युद्ध मे समर्थ जिस-जिस विद्याशस्त्र से रावण आक्रमण करता, उसके प्रतिपक्षीभूत तथा भास्वर रूप उस-उस बाण से लक्ष्मण उसे नष्ट कर देता।

(16)

तब प्रलयाग्नि के समान धक-धक करता हुआ लक्ष्मी का अभिमानी, विद्याधर रावण क्षण-क्षण मे बहुरूपिणी विद्या के साथ दौडा।

गजवर-गजवर पर, अश्ववर अश्ववर पर, रथवर रथवर पर, नरवर नरवर पर, खेचर-प्रवर अमर, छत्र विमान यान ध्वज और चामरो पर जा भिड़े। चारो ओर भयंकर योद्धा रावण पल में जल, थल, महीतल और नभतल मे था। अपने बीसो हाथो से अस्त्रो को घुमाता हुआ, शिव-कण्ठ और तमाल के समान शरीर वाला, गुंजाफलों के समान अरुण नेत्रवाला, मारो-मारो

2. A सेरिहासु, T सेरिहेसु।

(16) 1 AP धगधगतु। 2 AP °रूवणीए। 3. A पउरामरि, P पउरपवरामरि। 4. P भीसामणु।

गुंजापुंजसरिसणयणारुणु हणु हणु हणु भणतु रणदारुणु ।
अगगइ पच्छइ चचलु धावइ मणहु वि पासिउ वेएं पावइ[5] ।
गयकुंभयलइं पायहिं पेल्लइ झ त्ति दंत उम्मूलिवि घल्लइ ।
परिभमंतकरिवरकर[6] वचइ रिक्खइं[7] गेज्जावलिय णिलुंचइ ।
सारिउ कसमसंति मुसुमूरइ अतरसेणासणिय वियारइ ।
विलुलियकण्णचमर अच्छोडइ कच्छोलबिय घटिय[8] तोडइ ।
असिणा दारइ मारइ मयगल घिवइ णहगणि चलमुत्ताहल ।

घत्ता—भीमाहवचडहिं[9] दढभुयदडहिं चप्पिवि हुकरेवि धरइ ।।
करि रोहइ जोहइ करणहिं मोहइ दसणविहिण्णु[10] वि णीसरइ ।।16।।

17

दुवई—फोडिवि[1] आसवारसीसक्कइं सिरइं सकवयगत्तइं ।।
छिंदिवि पक्खराउ हय मारिवि परियाणइ विहित्तइं[2] ।।छ।।

गयणयलि लग्गेवि कहकहरव हसिवि बहुरूविणी रामकेसवहं गय तसिवि ।
ता[3] रक्खधयलक्खणा गुलुगुलतेहिं रिउदुज्जया लोहदढमढियदंतेहिं[4] ।
णवजलहरेहिं व जललव मुयतेहिं चलकण्णतालेहिं सुरगिरिमहंतेहिं ।

कहता हुआ, युद्ध में भयकर रावण चंचल हो आगे-पीछे दौडता है। मन से भी अधिक वेग से वह जाता है। गजकुभ-स्थलो को वह पैर से पेल देता है, शीघ्र ही हाथी के दाँतों को उखाड़ देता है, घूमते हुए करिवरो को सूडो से वचित करता है, ग्रीवा से क्षुद्र घटिका रूपी नक्षत्रो को तोड़ लेता है। कसमसाते हुए गज-पर्याणो को मसल डालता है। सेना के भीतर स्थित लोगो को विदीर्ण कर देता है। चचल कर्ण रूपी चमरो को छिटक देता है। कच्छा (झूल) से लटकती हुई घटियो को तोड डालता है। तलवार से हाथियो को विदारित कर मार डालता है और मुक्ताफलो को आकाश मे बिखेर देता है।

घत्ता—भीमयुद्ध मे प्रचड दृढ भुजदडो से चाँपकर और हुकार कर वह हाथी को पकडता है, उसे रोकता है, देखता है, आवर्तन आदि चेष्टाओ से उसे मोहित करता है और दाँतो से विभक्त होने पर भी उनमे से निकल आता है।

(17)

अश्वारोहियो के शिरस्त्राणो, सिरो और कवच सहित शरीरो को नष्ट कर, कवचो को काटकर, अश्वों को आहत कर, उनके पर्याणको को विभक्त कर देता है। आकाशतल से लगकर कहकहाकर हँसता है। इस प्रकार वह अनेक रूपो में राम लक्ष्मण को त्रस्त करके चला। तब राक्षसध्वनियो के समान लक्षणवाले, शत्रु के लिए अजेय वे दोनो, जिनके दाँत लोहे से खूब मढे हुए हैं, जो मेघो के समान जलकण छोड रहे हैं, जो चचल कर्णतालो से युक्त हैं, जो सुमेर

5. PA धावइ। 6 A °करि वचइ। 7. AP रिक्खें। 8 AP घटउ। 9. A भीमाउह। 10. P °विहित्तु।
(17) 1 AP तोडिवि। 2 विहत्तइ। 3. A ताररक्खवय°, P तो रक्खधय। 4. P °गढिय°।

[5]झणझणियमणिकिंकिणीसोहमाणेहिं अणवरयकरडयलपरिगलियदाणेहिं[6] ।
सोवण्णसारीणिवद्धुद्धचिंधेहिं करणासियागहियगयणाहगंधेहिं ।
दंतग्गभिण्णग्गखगरहतुरंगेहिं[7] भड बे वि थिय गयणि मायामयगेहिं ।
ता मुक्क दहमुहिण[8] पच्छइय णहभाय विसविसम गुरुविसहरायार णाराय ।
तप्पजरे छूढु[9] तेणारिविद्दवणु अलिकसणु हणवसणु बीभवणु[10] सिरिरमणु ।
पुणु पहरणावरणि मणि विज्ज संभरिवि सरणियरु जज्जरिवि हुंकरिवि णीसरिवि ।
जा वीरु उत्थरिवि चप्परिवि पइसरइ स रहगु तहिं ताम धरणीसरो सरइ ।
घत्ता—णवचदणचच्चिउ कुसुमहिं अंचिउ रयणाराकिरणोहदलु ॥
णं रावणलच्छिहि कमलदलच्छिहि करयलाउ णिवडिउ कमलु ॥17॥

18

दुवई—रूसतेण तेण महुमहणमहासुहडे णिओइयं ॥
तं कुडिलयरचडुलतडिवलयणिहु गयणे पधाइयं ॥छ॥
ता दिट्ठु णहि एतु सहस त्ति णिवडंतु ।
धाराकरालेहिं करवालसूलेहिं[1] ।
झसमुसलसेल्लेहि[2] वावल्लभल्लेहिं ।

पर्वत की तरह महान् हैं, जो झन-झन करती हुई मणि रूपी किंकणियो से शोभित है, जिनके गंड-स्थल से अनवरत मदजल झर रहा है, जिनके स्वर्ण-पर्याणो पर ऊँचे ध्वज बँधे हुए है, कानो के कारण भ्रमर जिन महागजो से गध ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं, जिनके दाँतों के अग्र भागों से विद्याधरों के रथ और अश्व भग्न है, ऐसे मायागजों से आकाश मे स्थित हो गए। तब उस रावण द्वारा मुक्त, विशाल विषधर आकारवाले, विष से विषम तीर आकाश मे आच्छादित हो गए। उस तीरपजर में शीघ्र ही जब शत्रु का विदारक, भ्रमर की तरह श्याम, दुःख का नाश करने वाला भयकर वीर लक्ष्मण, फिर अपने मन मे प्रहरणावरणी विद्या का स्मरण कर, शरसमूह को जर्जर कर, हुंकार कर निकलकर, उछलकर चाँपकर प्रवेश करता है तब वह धरणीश्वर रावण चक्र का ध्यान करता है।

घत्ता—नव चदन से चर्चित, फूलो से अचित, रत्नो की आराओ के किरणसमूह के दल वाला चक्र इस प्रकार गिर पडा मानो कमलदल के समान आँखो वाली रावण की लक्ष्मी के करतल से कमल गिर पडा हो।

(18)

क्रुद्ध होते हुए रावण ने उसे महासुभट लक्ष्मण मे नियोजित किया। कुटिलतर और चचल विद्युद्वलय के समान वह चक्र आकाश मे दौडा।

तब वह आकाश मे आता हुआ और सहसा गिरता हुआ देखा गया। धाराओ से कराल करवालो और शूलो, झसो, मूसलो, सेलों वावल्लो और भालो से तथा शत्रुजनो के लिए कृतांत

5 AP रुणुरुणिय°। 6. A अणवरयपरिगलियकरडयलदाणेहिं। 7. A दंतग्गिणिब्भिण्णखग। 8. A दहवयण°। 9 P छट्ठु। 10 A धीभवणु।
(18) 1. A करवालवालेहिं। 2 A °मुसलसल्लेहिं।

अरिणरकयंतेहिं कंपणहि कोतेहिं।
कयकण्हपक्खेण गवए गवक्खेण।
कुमुएण कुंदेण चंदे महिंदेण[3]।
सत्तुहणभरहेण णीलेण सरहेण।
सुग्गीवणामेण हणुवेण[4] रामेण।
पडिखलिउ णउ[5] वलिउ अमरत्थु सचलिउ।
रणसिरिहि कुंडलु व णवरविहि मंडलु व।
जसवल्लरीदलु व भुयजुयलतरुफलु व।
माणिक्कगणजडिउ लक्खणहु करि चडिउ।

घत्ता—जं चक्कसमिद्धउ[6] कण्हें लद्धउ तं णारउ णहि णच्चियउ[7]॥
आणंदरसोल्लिउ सिरिथणपेल्लिउ राउ[8] रामु रोमंचियउ[9] ॥18॥

19

दुवई—णिवडिय कुसुमविट्ठि कउ कलयलु हरिसिय उरयसुरणरा ॥
भामिवि चक्कु भणिउ गोविंदें विसरिस णिसुणि दससिरा ॥छ॥

संदण तुरंग मयमुइयभिंग[1]।
करि गलियगंड मेइणि तिखंड।
असि चंदहासु लंकाणिवासु।
ससहरसमाणु[2] पुप्फयविमाणु।
वइदेहि देहि मा खयहु जाहि।

कंपनों और कोंतों के साथ लक्ष्मण का पक्ष लेने वाले गवय, गवाक्ष, कुमुद, कुंद, चन्द्र, महेन्द्र, शत्रुघ्न, भरत, सरथ, नील, सुग्रीव, हनुमान् और राम के द्वारा वह चक्र प्रतिस्खलित नहीं हुआ, वह मुड़ गया। अमरशस्त्र (चक्र) चल पड़ा। रणलक्ष्मी के कुंडल के समान, नव रविमंडल के समान, यशरूपी लतादल के समान, बाहुयुगल के तरुफल के समान, माणिक्यसमूह से विजडित वह चक्र लक्ष्मण के हाथ पर चढ़ गया।

घत्ता—जब चक्र की समृद्धि को लक्ष्मण ने धारण कर लिया तो आकाश में नारद नृत्य कर उठे। आनंदरस से उद्वेलित तथा लक्ष्मी के स्तनों से प्रेरित राजा राम भी रोमांचित हो उठे।

(19)

कुसुमवृष्टि होने लगी। कल-कल होने लगा। नाग, सुर और मनुष्य हर्षित हुए। चक्र घुमाते हुए गोविंद ने कहा—रे दशमुख, यह विशेष बात सुन! स्यंदन, तुरंग, मद से मुदित भ्रमर जिस पर है ऐसा गलितगंड हाथी, त्रिखंड धरती, चन्द्रहास कृपाण, लंका निवास, चन्द्रमा के समान पुष्पक विमान और वैदेही दे दो, विनाश को प्राप्त मत होओ, राम को संतुष्ट करो, उनके चरणों में प्रणाम करो। तेज रहित अपनी पत्नी के साथ जीवित रहो। तब ओंठ चाबते

---

3. A मयदेण। 4 A omits this foot 5 A णहवडिउ। 6 AP चक्कु। 7 AA णच्चिउ। 8. A रामु राउ। 9. AP रोमंचिउ।

(19) 1. PA °मुइयसिंग। 2. P ससहरु।

तूसवहि रामु करि[3] पयपणामु।
जीवहि अतेउ कतासमेउ।
दट्ठाहरेण असिवरकरेण।
असमजसेण अमरिसवसेण।
ता भणिउ तेण णिसियरधएण।
पाइक्कतणय णिम्मुक्कविणय।
तुम्हह वराय किं मज्झु राय।
णियजीवधरणु सुग्गीवसरणु।
पइसरहु जइ वि णुव्वरहु[4] तइ वि।
विगयावलेव देव वि अदेव।
भडभिडणसगि महुं जुज्झरगि।
किं गणिउ रामु[5] तुहु हीणथामु[6]।
जज्जाहि रंक मग्गंतु लक।
लज्जहि ण केव हिय सीय जेव।
अवराउ तेव परिचत्तसेव[7]।
रामाणियाउ रायाणियाउ।
लेसमि छलेण णियभुयबलेण।
इय भणिवि भीमु दुल्लघधामु।
आबद्धकोहु[8] मेल्लरु सरोहु।
आइड्ढचाउ[9] रायाहिराउ।
जा[10] उग्गभाउ वीसद्धगीउ।
ता तक्खणेण तहि लक्खणेण।
णं खयपयगु मुक्कउ रहगु।
आयउ तुरतु धाराफुरंतु।

हुए, हाथ मे तलवार लिए हुए, उस निशाचरध्वजी ने कहा—जो दुर्विनीत मानवपुत्र है क्या वह तुम्हारा बेचारा (राम) हमारा राजा होगा ? अपना जीवधारण करने वाला यदि वह सुग्रीव की भी शरण में जाए, तो भी उसका उद्धार नही हो सकता। देव और अदेव भी, भटों की जिसमे भिडंत है, ऐसे युद्धरग में अहकार शून्य हो जाते है, हीनशक्ति तुम्हे और राम को मैं क्या गिनूं ? रे दरिद्र जा-जा, लका माँगते हुए तुझे शर्म नही आती। रे सेवा का परित्याग करने वाले, जिस प्रकार सीता को अपहृत किया गया है, उसी प्रकार दूसरी भी रानियो को मैं अपने भुजबल और छल से ग्रहण करूँगा। यह कहकर भयंकर, राजाधिराज अलंघ्यधाम रावण क्रोध से भरकर धनुष तानकर उग्र भाव से शर समूह छोडता है। तब उसी क्षण लक्ष्मण ने क्षयकाल के सूर्य के समान चक्र छोड दिया। धाराओ से स्फुरित होता हुआ वह तुरत आया।

3. कयपय°। 4. A णउ उव्वरहु तइ वि, P णउ उव्वुरहो तइ वि। 5 P adds after this णिण्णट्ठणामु, सगामकामु। 6. A तुहु दिण्णधामु, 7 A परचिण्णसेव। 8. P आबद्ध। 9. AP आइद्धचाउ। 10. AP जामुग्ग।

भमियकबंधइ णिवडियचिंधइ।
महिचुयलुयभुइ ता तहिं संजुइ।
कयवीराहवि मेइणिराहवि।
बहुदाराहवि लग्गउ राहवि।
भीसणु रावणु परमारावणु।
रंजियसुरसह बे वि महारह।
रणभरधुरखम बे वि सविक्कम।
पडिहरि हलहर धवलियकुलहर।
बे वि महाजस ण आसीविस[2]।
फणिकालाणण णं पंचाणण।
हिमसमतमतणु[3] आयड्ढियधणु।

घत्ता—कंपावियजलथल छाइयणहयल रणि मेलावियअमरयण[4]॥
सहरिस गलगज्जिय खयभयवज्जिय णाइ दिसागय कुइयमण॥12॥

13

दुवइ—रावण राम बे वि जुज्झंति सुरोसवसा[1] महाभडा॥
छुडु छुडु ढुक्क मुक्क बाणावलि छुडु छुडु छिण्ण धयवडा॥छ॥

छुडु छुडु णाणाजाणइं भिण्णइं छुडु छुडु धवलइं छत्तइं छिण्णइं।
छुडु[2] णररुंडखंडमंडिय महि छुडु गय घट्टिय लोट्टिय[3] सारहि।

काएँ गिर रही है, धरती पर कटी हुई भुजाएँ पडी हुई है, ऐसे उस युद्ध मे—जिसने वीरो का आह्वान किया है, जो धरती की शोभा की रक्षा करने वाले है, जिन्होंने अनेक द्वारो की रक्षा की है, ऐसे राम के साथ रावण लग गया (भिड गया)। रावण भीषण था, शत्रुओं को मारने वाला था। वे दोनो महारथी सुर सभा को रंजित करने वाले थे। दोनो रणभार उठाने मे सक्षम और पराक्रम से सहित थे। रावण और राम जैसे धवल मंदराचल हो। दोनो ही महायशस्वी मानो साप हो। नाग जैसे काले मुखवाले थे। मानो सिंह थे। हिम और अंधकार के समान शरीर वाले अपने धनुष ताने हुए—

घत्ता—जिन्होंने जल-थल को कंपा दिया है, आकाश थल को आच्छादित कर दिया है, और युद्ध में देवों को इकट्ठा किया है, ऐसे वे दोनो स्वाभिमान से गरजते से हुए, क्षय भाव से रहित जैसे कुपितमन दिग्गज थे।

(13)

अत्यन्त क्रोध के वशीभूत होकर महाभट राम और रावण आपस मे युद्ध करते हैं। वे शीघ्र ही बढ़े और बाणावली छोड़ी। शीघ्र ध्वज छिन्न हो गए। शीघ्र नाना यान छिन्न-भिन्न हो गए। धवल छत्र कट गए। शीघ्र धरती मनुष्यो के धडो के खडो से पट गई। शीघ्र ही रथ चकनाचूर

2 P आसाविस। 3 AP हिमतमसमतणु। 4. P मेल्लाविय°।
(13) 1. AP सरोस° 2 AP छुडु छुडु णर°। 3 A लुटिय°।

छुड्डु संदण मुसुमूरिवि घल्लिय पडिमयगल[4] मायगहिं पेल्लिय।
छुड्डु छुड्डु रामु थामु जा दावइ जाव खगिंदु रहगु विहावइ।
जाव जुज्झि वावरइ सहोयरु तावतरि पइट्ठु दामोयरु।
पभणइ णिसुणि[5] देव सीराउह वीर पउम चुंवियपउमामुह।
राम राम रामामणहारण सुवलासुय अरिविंदवियारण।
हउं किंकरु [6]कढोरपिहुकरयलु भाइ तुज्झ [7]पविरोलियपरबलु।
जीवमि जाम वइरिमारणविहि जगि[8] रयणियरचिंधणिवतरुसिहि।
ताव एउ पइ पहविच्छुरियउ सइ करेण किं पहरणु धरियउ।

घत्ता—रक्खियकुलगिरिदरि हउ तेरउ हरि मुइ मुइ मइ आलद्धजउ ॥
पविखरसरणहरहिं अविरलपहरहिं दारमि दहमुह मत्तगउ ॥13॥

14

दुवई—ता रामेण कण्हु मोक्कलिलउ[1] बोल्लिउ तेण दहमुहो ॥
रे अपवित्त धुत्त परणारीरत्त म थाहि समुहो ॥छ॥

विहिदुव्विलसिउ तुहु वि महीसरु ओसरु ओसरु मा सधहि सरु।
कुद्धइं तुह दहमुह णहईवइ राहवरायपायराईवइ।

कर फेंक दिए गए। मदगजो के द्वारा प्रतिमदगज पीछे धकेल दिए गए। शीघ्र जब तक राम अपने थाम को दिखाते हैं और जब तक विद्याधरेन्द्र रावण चक्र दिखाता है। और जब राम युद्ध-व्यापार करते है, तब तक सहोदर लक्ष्मण वहाँ प्रविष्ट हुआ। उसने कहा—हे देव, लक्ष्मी का मुख चूमने वाले वीर पद्म (राम) श्री राघव, हे राम-राम, ललनाओ (स्त्रियो) के मन को हरण करने वाले, सुवला के सुत, शत्रु समूह का नाश करने वाले हे राम, विशाल और कठोर करतल वाला-शत्रुबल का मथन करने वाला मै तुम्हारा भाई जब तक जीवित हूँ तब तक शत्रुओ के लिए मारणविधि एव निशाचर-ध्वजी नृप रूपी वृक्षो के लिए आग हूँ। तो फिर अपनी प्रभा से विच्छुरित यह अस्त्र भला आपने अपने हाथ में क्यो धारण किया ?

घत्ता—जिसने कुल रूपी गिरि की घाटी की रक्षा की है, ऐसा मैं तुम्हारा सिंह हूँ। आलब्धजय, तुम मुझे छोड़ो-छोडो, वज्र और तीव्र तीर रूपी नखों और अविरल प्रहारो से मत्तगज दशमुख का विदारण मैं करूँगा।

(14)

तब राम ने लक्ष्मण को मुक्त कर दिया। उसने रावण से कहा—रे अपवित्र धूर्त, परस्त्री में रत, तू मेरे सम्मुख मत ठहर। भाग्य से दुर्विलसित तू भी महीश्वर है। हट जा-हट जा, तू शर-संधान मत कर। राजा राघव के नखो से प्रदीप्त चरणकमल तुझ पर क्रुद्ध है। आज तेरी

4. AP पडिमयग। 5. A देव णिसुणि 6. AP कठोर°। 7. A परितोलिय°। 8. A जणरय°।
(14) 1. A मोक्कलियउ।

अज्जु तुज्झु परमाउसु पुण्णउ जिह तृयरयणु[2] कुसील ण दिण्णउ ।
मइ मुक्काइ दसास णियच्छहि तिह एवहिं पहरणइ पडिच्छहि ।
कयसमरेण गहियरिउजीवे त णिसुणेवि वुत्तु[3] दहगीवे ।
तल्लरजलि कइलासु[4] वि जलयरु अदुमगामि एरडु वि तरुवरु ।
खलसुग्गीवरामणलहणुयह तारकुदकुमुयह खगमणुयह ।
एयह मज्झि तुहु मि भडु भण्णहि तेण बप्प मइ रणि अवगण्णहि ।
मुइ मुइ तेरउ आउहु केहउ महु मयगमसयतरु[5] जेहउं ।
भणइ विहीसणु जुज्झसमत्थइ पहु मेल्लेसइ मायासत्थइं ।
चिंतहि तुहु पण्णत्ति जणद्दण लहु करि मायावाहण पहरण ।

घत्ता—त तेम करेप्पिणु भुय विहुणेप्पिणु अब्भिट्टउ दहमुहहु हरि ।
कइयणवयणुत्तिहि महणपवित्तिहि णाइ समुद्दहु सुरसिहरि ॥14॥

15

दुवई—वेण्णि वि पीयवास वेण्णि वि णीलजणगरलसामया ॥
दोहिं मि [1]कुलिसकक्कसकुसवस चोइय मत्तसामया ॥छ॥
बे वि कुद्ध बद्धठाण मुक्क तेहिं दिव्व वाण ।
रामणेण मुक्कु णाउ लक्खणेण पक्खिराउ ।
रावणेण अधयारु लक्खणेण मुक्क सूरु ।

परम आयु पूर्ण हुई । रे कुशील, जिस प्रकार तू ने स्त्रीरत्न को नही दिया उसी प्रकार रे दशमुख, मेरे द्वारा छोडे गए प्रहरणो को देख और उन्हे स्वीकार कर। यह सुनकर युद्ध करने वाले, तथा जिसने शत्रु के प्राण ग्रहण किए है, ऐसे दशानन ने कहा—छोटे तालाब मे कछुआ भी कैलाश है ! बिना पेड के गाँव मे एरड भी वृक्षवर है। दुष्ट सुग्रीव, राम, नल और हनुमान्, तारकुद, कुमुद तथा विद्याधर मनुष्यो के मध्य तुम भी भट कहलाते हो ! इसीलिए युद्ध में तुम मेरी उपेक्षा कर रहे हो । छोडो-छोडो, तुम्हारे आयुध मे उतना ही अतर है जितना कि हाथी और मशक मे । विभीषण कहता है—स्वामी, युद्ध मे समर्थ यह रावण मायावी अस्त्र छोड़ेगा। हे लक्ष्मण, तुम प्रज्ञप्ति विद्या का चिंतन करो, तुम शीघ्र ही मायावी अस्त्र ले लो ।

घत्ता—तब उस प्रकार कर, अपनी भुजाओ को ठोक कर, लक्ष्मण दशमुख से भिड़ गया जैसे स्वरश्रेष्ठ कविजनो की उक्तियो से तथा मंथनप्रवृत्त देवपर्वत (सुमेरु) समुद्र से भिड जाता है।

(15)

दोनो के पीले वस्त्र थे। दोनों ही नीलाजना और गरल की तरह श्याम थे। दोनो ने ही वज्र के कठोर अकुश से वशीभूत मतवाले श्याम गज प्रेरित किए।

वे दोनो ही बद्धलक्ष्य थे। दोनो ने दिव्य वाण छोडे। रावण ने नागवाण छोड़ा, लक्ष्मण ने गरुडगज तीर छोडा । रावण ने अधकार वाण छोडा, लक्ष्मण ने सूर्यवाण। रावण ने

2. AP तियरयणु। 3 AP वुत्तउ। 4. A किकलासु, T किकलासु परेवक. (?) अथवा किकालसु कुरुविल (?), K records a p अथवा किकलासु कुरुविल जीव न तु गजमत्स्यादय:, 5. P मयंगसमयतरु।
(15) 1 A कुलिसचक्कसकुस°

रावणेण मेरु चडु लक्खणेण वज्जदडु ।
रावणेण आसु आसु लक्खणेण सेरिहीसु[2] ।
रावणेण वारिवाहु लक्खणेण गधवाहु ।
रावणेण चिच्चिजाल लक्खणेण मेहमाल ।
रावणेण दति दीहु लक्खणेण मुक्क सीहु ।
रावणेण रक्खसिंदु लक्खणेण खेउविंदु ।
रावणेण रत्तिणाहु लक्खणेण मुक्क राहु ।
रावणेण मुक्कु रुक्खु लक्खणेण दुण्णिरिक्खु ।
पज्जलंतु जायवेउ दिग्गयग्गलग्गतेउ ।

घत्ता—सुरसमरसमत्थे विज्जासत्थे जेण जेण रावणु हणइ ॥
पडिवक्खीहूएं भासुररूवें त त लक्खणु णिल्लुणइ ॥15॥

16

दुवई—ता धगधगधगतु[1] खयजलणु व खेयरलच्छिमाणणो ॥
खणि बहुरूविणीइ[2] बहुरूवहिं उद्धाइउ दसाणणो ॥छ॥

गयवरि गयवरि हयवरि हयवरि रहवरि रहवरि णरवरि णरवरि ।
खेयरि अब्भिडति पवरामरि[3] छत्ति विमाणि जाणि धइ चामरि ।
चउहुं मि पासहिं भडु भीसावणु[4] जलि थलि महियलि णहयलि रावणु ।
वीसपाणिपरिभामियपहरणु तिणयणगलतमालसंणिहतणु ।

प्रचड मेरुबाण छोडा, लक्ष्मण ने वज्रदड । रावण ने शीघ्र अश्वबाण छोड़ा, लक्ष्मण ने प्रचड महिष बाण । रावण ने मेघबाण छोडा, लक्ष्मण ने पवनबाण । रावण ने अग्निबाण, लक्ष्मण ने मेघमाल । रावण ने दीर्घगज छोडा, लक्ष्मण ने सिहबाण । रावण ने राक्षसेन्द्र, लक्ष्मण ने क्षेमवृ द । रावण ने कामबाण छोडा, लक्ष्मण ने राहु बाण । रावण ने रूक्ष बाण छोडा, लक्ष्मण भी, जिसका तेज दिग्गजो के अग्र भाग को लग रहा है ऐसा, अग्निबाण छोड़ा ।

घत्ता—देव-युद्ध में समर्थ जिस-जिस विद्याशस्त्र से रावण आक्रमण करता, उसके प्रतिपक्षीभूत तथा भास्वर रूप उस-उस बाण से लक्ष्मण उसे नष्ट कर देता ।

(16)

तब प्रलयाग्नि के समान धक-धक करता हुआ लक्ष्मी का अभिमानी, विद्याधर रावण क्षण-क्षण में बहुरूपिणी विद्या के साथ दौडा ।

गजवर-गजवर पर, अश्ववर अश्ववर पर, रथवर रथवर पर, नरवर नरवर पर, खेचर-प्रवर अमर, छत्र विमान यान ध्वज और चामरो पर जा भिडे । चारो ओर भयकर योद्धा रावण पल में जल, थल, महीतल और नभतल मे था । अपने बीसो हाथो से अस्त्रो को घुमाता हुआ, शिव-कण्ठ और तमाल के समान शरीर वाला, गुजाफलों के समान अरुण नेत्रवाला, मारो-मारो

2. A सेरिहासु, T सेरिहेसु ।
(16) 1 AP धगधगतु । 2. AP °रूवणीए । 3. A पउरामरि, P पउरपवरामरि । 4. P भीसामणु ।

गुंजापुंजसरिसणयणारुणु   हणु हणु हणु भणतु रणदारुणु ।
अग्गइ पच्छइ चंचलु धावइ   मणहु वि पासिउ वेएं पावइ[5] ।
गयकुंभयलइ पायहिं पेल्लइ   झ त्ति दंत उम्मूलिवि घल्लइ ।
परिभमतकरिवरकर[6] वंचइ   रिक्खइ[7] गेज्जावलिय णिलुंचइ ।
सारिउ कसमसंति मुसुमूरइ   अंतरसेणासणिय वियारइ ।
विलुलियकण्णचमर अच्छोडइ   कच्छोलंबिय घंटिय[8] तोडइ ।
असिणा दारइ मारइ मयगल   घिवइ णहंगणि चलमुत्ताहल ।

घत्ता—भीमाहववंडहिं[9] दढभुयदंडहिं चप्पिवि हुंकरेवि धरइ ॥
करि रोहइ जोहइ करणहिं मोहइ दसणविहिण्णु[10] वि णीसरइ ॥16॥

17

दुवई—फोडिवि[1] आसवारसीसक्कइं सिरइं सकवयगत्तइं ॥
छिंदिवि पक्खराउ हय मारिवि परियाणइं-विहित्तइं[2] ॥छ॥

गयणयलि लग्गेवि कहकहरवं हसिवि   बहुरूविणी रामकेसवहं गय तसिवि ।
ता[3] रक्खधयलक्खणा गुलुगुलतेहिं   रिउदुज्जया लोहदढमढियदंतेहिं[4] ।
णवजलहरेहिं व जललव मुयंतेहिं   चलकण्णतालेहिं सुरगिरिमहंतेहिं ।

कहता हुआ, युद्ध में भयंकर रावण चंचल हो आगे-पीछे दौड़ता है। मन से भी अधिक वेग से वह जाता है। गजकुंभ-स्थलों को वह पैर से पेल देता है, शीघ्र ही हाथी के दाँतों को उखाड़ देता है, घूमते हुए करिवरों को सूंडों से वंचित करता है, ग्रीवा से क्षुद्र घंटिका रूपी नक्षत्रों को तोड़ लेता है। कसमसाते हुए गज-पर्याणों को मसल डालता है। सेना के भीतर स्थित लोगों को विदीर्ण कर देता है। चंचल कर्ण रूपी चमरों को छिटक देता है। कच्छा (झूल) से लटकती हुई घंटियों को तोड़ डालता है। तलवार से हाथियों को विदारित कर मार डालता है और मुक्ता-फलों को आकाश में बिखेर देता है।

घत्ता—भीमयुद्ध में प्रचंड दृढ़ भुजदंडों से चाँपकर और हुंकार कर वह हाथी को पकड़ता है, उसे रोकता है, देखता है, आवर्तन आदि चेष्टाओं से उसे मोहित करता है और दाँतों से विभक्त होने पर भी उनमें से निकल आता है।

(17)

अश्वारोहियों के शिरस्त्राणों, सिरों और कवच सहित शरीरों को नष्ट कर, कवचों को काटकर, अश्वों को आहत कर, उनके पर्याणकों को विभक्त कर देता है। आकाशतल से लगकर कहकहाकर हँसता है। इस प्रकार वह अनेक रूपों में राम लक्ष्मण को त्रस्त करके चला। तब राक्षसध्वनियों के समान लक्षणवाले, शत्रु के लिए अजेय वे दोनों, जिनके दाँत लोहे से खूब मढ़े हुए हैं, जो मेघों के समान जलकण छोड़ रहे हैं, जो चंचल कर्णतालों से युक्त हैं, जो सुमेर

5. PA धावइ। 6 A °करि वचइ। 7. AP. रिक्खें। 8 AP घटउ। 9. A भीमाउह। 10. P °विहित्तु।
(17) 1 AP तोडिवि। 2 विहत्तइ। 3. A ताररवधय°, P तो रक्खधय। 4 P °गढिय°।

[5]झणझणियमणिकिंकिणीसोहमाणेहिं अणवरयकरडयलपरिगलियदाणेहिं[6]।
सोवण्णसारीणिबद्धुद्धचिंधेहिं करणासियागहियगयणाहगंधेहिं।
दंतग्गभिण्णग्गखगरहतुरंगेहिं[7] भड बे वि थिय गयणि मायामयंगेहि।
ता मुक्क दहमुहिण[8] पच्छइय णहभाय विसविसम गुरुविसहरायार णाराय।
तप्पजरे छूढु[9] तेणारिविद्दवणु अलिकसणु हणवसणु बीभवणु[10] सिरिरमणु।
पुणु पहरणावरणि मणि विज्ज संभरिवि सरणियरु जज्जरिवि हुकरिवि णीसरिवि।
जा वीरु उत्थरिवि चप्परिवि पइसरइ स रहगु तहिं ताम धरणीसरो सरइ।
घत्ता—णवचदणचच्चिउ कुसुमहि अचिउ रयणाराकिरणोहदलु॥
णं रावणलच्छिहि कमलदलच्छिहि करयलाउ णिवडिउ कमलु ॥17॥

18

दुवई—रूसतेण तेण महुमहणमहासुहडे णिओइयं॥
तं कुडिलयरचडुलतडिवलयणिहं गयणे पधाइयं ॥छ॥
ता दिट्ठु णहि एतु सहस त्ति णिवडंतु।
धाराकरालेहि करवालसूलेहिं[1]।
झसमुसलसेल्लेहिं वावल्लभल्लेहिं।

पर्वत की तरह महान् है, जो झन-झन करती हुई मणि रूपी किंकणियों से शोभित है, जिनके गंड-स्थल से अनवरत मदजल झर रहा है, जिनके स्वर्ण-पर्याणों पर ऊँचे ध्वज बँधे हुए हैं, कानों के कारण भ्रमर जिन महागजों से गंध ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं, जिनके दाँतों के अग्र भागों से विद्याधरों के रथ और अश्व भग्न है, ऐसे मायागजों से आकाश में स्थित हो गए। तब उस रावण द्वारा मुक्त, विशाल विषधर आकारवाले, विष से विषम तीर आकाश में आच्छादित हो गए। उस तीरपंजर में शीघ्र ही जब शत्रु का विदारक, भ्रमर की तरह श्याम, दु:ख का नाश करने वाला भयकर वीर लक्ष्मण, फिर अपने मन में प्रहरणावरणी विद्या का स्मरण कर, शरसमूह को जर्जर कर, हुंकार कर निकलकर, उछलकर चाँपकर प्रवेश करता है तब वह धरणीश्वर रावण चक्र का ध्यान करता है।

घत्ता—नव चंदन से चर्चित, फूलों से अर्चित, रत्नों की आराओं के किरणसमूह के दल वाला चक्र इस प्रकार गिर पड़ा मानो कमलदल के समान आँखों वाली रावण की लक्ष्मी के करतल से कमल गिर पड़ा हो।

(18)

क्रुद्ध होते हुए रावण ने उसे महासुभट लक्ष्मण में नियोजित किया। कुटिलतर और चचल विद्युद्वलय के समान वह चक्र आकाश में दौड़ा।

तब वह आकाश में आता हुआ और सहसा गिरता हुआ देखा गया। धाराओं से कराल करवालों और शूलों, झसों, मूसलों, सेलों वावल्लों और भालों से तथा शत्रुजनों के लिए कृतांत

5 AP रुणुरुणिय°। 6. A अणवरयपरिगलियकरडयलदाणेहिं। 7. A दतग्गिगणिभिण्णखग। 8. A दहवयण°। 9 P छट्ठु। 10. A वीभवणु।

(18) 1. A करवालवालेहिं। 2. A °मुसलसल्लेहिं।

अरिणरकयतेहिं कंपणहिं कोतेहिं।
कयकण्हपक्खेण गवएं गवक्खेण।
कुमुएण कुंदेण चंदे महिंदेण[3]।
सत्तुहणभरहेण णीलेण सरहेण।
सुग्गीवणामेण हणुवेण[4] रामेण।
पडिखलिउ णउ[5] वलिउ अमरत्थु संचलिउ।
रणसिरिहिं कुंडलु व णवरविहिं मंडलु व।
जसवल्लरीदलु व भुयजुयलतरुफलु व।
माणिक्कगणजडिउ लक्खणहु करि चडिउ।

घत्ता—जं चक्कसमिद्धउ[6] कण्हें लद्धउ तं णारउ णहि णच्चियउ[7] ॥
आणंदरसोल्लिउ सिरिथणपेल्लिउ राउ[8] रामु रोमंचियउ[9] ॥18॥

19

दुवई—णिवडिय कुसुमविट्ठि कउ कलयलु हरिसिय उरयसुरणरा ॥
भामिवि चक्कु भणिउ गोविंदें विसरिस णिसुणि दससिरा ॥छ॥

सदण तुरंग मयमुइयभिंग[1]।
करि गलियगंड मेइणि तिखंड।
असि चंदहासु लंकाणिवासु।
ससहरसमाणु[2] पुप्फयविमाणु।
वइदेहि देहि मा खयहु जाहि।

कंपनों और कोतों के साथ लक्ष्मण का पक्ष लेने वाले गवय, गवाक्ष, कुमुद, कुंद, चन्द्र, महेन्द्र, शत्रुघ्न, भरत, सरथ, नील, सुग्रीव, हनुमान् और राम के द्वारा वह चक्र प्रतिस्खलित नहीं हुआ, वह मुड़ गया। अमरशस्त्र (चक्र) चल पड़ा। रणलक्ष्मी के कुंडल के समान, नव रविमंडल के समान, यशरूपी लतादल के समान, बाहुयुगल के तरुफल के समान, माणिक्यसमूह से विजडित वह चक्र लक्ष्मण के हाथ पर चढ़ गया।

घत्ता—जब चक्र की समृद्धि को लक्ष्मण ने धारण कर लिया तो आकाश में नारद नृत्य कर उठे। आनंदरस से उद्वेलित तथा लक्ष्मी के स्तनों से प्रेरित राजा राम भी रोमांचित हो उठे।

(19)

कुसुमवृष्टि होने लगी। कल-कल होने लगा। नाग, सुर और मनुष्य हर्षित हुए। चक्र घुमाते हुए गोविंद ने कहा—रे दशमुख, यह विशेष बात सुन! स्यंदन, तुरंग, मद से मुदित भ्रमर जिस पर हैं ऐसा गलितगंड हाथी, त्रिखंड धरती, चन्द्रहास कृपाण, लंका निवास, चन्द्रमा के समान पुष्पक विमान और वैदेही दे दो, विनाश को प्राप्त मत होओ, राम को संतुष्ट करो, उनके चरणों में प्रणाम करो। तेज रहित अपनी पत्नी के साथ जीवित रहो। तब ओठ चाबते

3. A मयदेण। 4 A omits this foot 5 A णहवडिउ। 6 AP चक्कु। 7. AA णच्चिउ। 8. A रामु राउ। 9. AP रोमंचिउ।

(19) 1. PA °मुइयसिंग। 2. P ससहरु।

तूसवहि रामु करि[3] पयपणामु।
जीवहि अतेउ कंतासमेउ।
दट्ठाहरेण असिवरकरेण।
असमंजसेण अमरिसवसेण।
ता भणिउ तेण णिसियरधएण।
पाइक्कतणय णिम्मुक्कविणय।
तुम्हहु वराय किं मज्झु राय।
णियजीवधरणु सुग्गीवसरणु।
पइसरहु जइ वि णुव्वरहु[4] तइ वि।
विगयावलेव देव वि अदेव।
भडभिडणसगि महु जुज्झरंगि।
किं गणिउ रामु[5] तुहु हीणथामु[6]।
जज्जाहि रंक मग्गतु लक।
लज्जहि ण केव हिय सीय जेव।
अवराउ तेव परिचत्तसेव[7]।
रामाणियाउ रायाणियाउ।
लेसमि छलेण णियभुयबलेण।
इय भणिवि भीमु दुल्लघधामु।
आबद्धकोहु[8] मेल्लइ सरोहु।
आइड्ढचाउ[9] रायाहिराउ।
जा[10] उग्गभाउ वीसद्धगीउ।
ता तक्खणेण तहि लक्खणेण।
णं खयपयगु मुक्कउ रहंगु।
आयउ तुरंतु धाराफुरंतु।

हुए, हाथ मे तलवार लिए हुए, उस निशाचरध्वजी ने कहा—जो दुर्विनीत मानवपुत्र है क्या वह तुम्हारा बेचारा (राम) हमारा राजा होगा ? अपना जीवधारण करने वाला यदि वह सुग्रीव की भी शरण में जाए, तो भी उसका उद्धार नही हो सकता। देव और अदेव भी, भटो की जिसमें भिडंत हैं, ऐसे युद्धरग मे अहकार शून्य हो जाते है, हीनशक्ति तुम्हे और राम को मैं क्या गिनूँ ? रे दरिद्र जा-जा, लका माँगते हुए तुझे शर्म नही आती। रे सेवा का परित्याग करने वाले, जिस प्रकार सीता को अपहृत किया गया है, उसी प्रकार दूसरी भी रानियो को मैं अपने भुजबल और छल से ग्रहण करूँगा। यह कहकर भयकर, राजाधिराज अलघ्यधाम रावण क्रोध से भरकर धनुष तानकर उग्र भाव से शर समूह छोड़ता है। तब उसी क्षण लक्ष्मण ने क्षयकाल के सूर्य के समान चक्र छोड दिया। धाराओ से स्फुरित होता हुआ वह तुरत आया।

3. कयपय°। 4. A णउ उव्वरहु तइ वि, P णउ उव्वुरहो तइ वि। 5. P adds after this णिण्णट्ठणामु, सगामकामु। 6. A तुहु दिण्णधामु, 7. A परचिण्णसेव। 8. P आबद्ध। 9. AP आइद्धचाउ। 10. AP जामुग्ग।

दिव्ववाणि जाणियपरमत्थहु[7], वरकइमइ णं पंडियसत्थहु।
चित्तसुद्धि ण चारुमुणिंदहु ण सपुण्णकति छणयंदहु।
ण वरमोक्खलच्छि[8] अरहंतहु वहुगुणसपय ण गुणवंतहु।

घत्ता—ज दिट्ठु समाहउ णियपइ राहउ त सीयहि तणुकचुइउ ॥
पुलएण विसट्टउ उद्ध् जि फुट्टउ पिसुणु व सयखडइ गयउ ॥27॥

28

दुवई—तोरणविविहदारपायारघरावलिसिहरसोहिए ॥
अरिवरपुरि पइट्ठ हरिहलहर धयमालापसाहिए ॥छ॥

मदोयरि रुयति साहारिवि इदइ सोयविसठुलु[1] धीरिवि[2]।
बधव सयण सयल हक्कारिवि णायरणरह सक णीसारिवि।
मति महतमत्ति सचारिवि विग्घकारि सयल[3] वि णीसारिवि।
पढमजिणाहिसेउ णिव्वत्तिवि होम विविहदाणाइ वत्तिवि।
सत्तु मित्तु मज्झत्थु वि चिंतिवि समइ सव्वसामंत णियत्तिवि।
अवणिदविणपुरलोहु[4] विवज्जिवि गह बभण णेमित्तिय पुज्जिवि।

को दिव्यवाणी मिली हो, मानो पंडित समूह को श्रेष्ठ कविमति मिली हो। भव्य मुनियो को मानो चित्तशुद्धि मिली हो। मानो पूर्ण चन्द्र को सम्पूर्ण कान्ति मिली हो। मानो अरहंत को चरम मोक्ष लक्ष्मी मिली हो। मानो गुणवान् को बहुगुण संपत्ति मिली हो।

घत्ता—जब अपने पति राघव को लक्ष्मण के साथ देखा तो सीता की देह पर कचुकी पुलक से विकसित होकर ऊपर-ऊपर फट गयी और दुष्ट की तरह सैकडो खण्डो मे विभक्त हो गयी।

(28)

जो तोरणो, विविध द्वारों, प्राकारों और गृहावलियो की शिखरो से शोभित है, ध्वजमालाओ से प्रसारित ऐसी लकानगरी मे राम और लक्ष्मण ने प्रवेश किया।

रोती हुई मदोदरी को ढाढस बँधाकर शोक से अस्त-व्यस्त इन्द्रजीत को धीरज देकर, समस्त स्वजनो और बाधवो को बुलाकर, नागर-नरो की शंका दूर कर, छोटे-बड़े मंत्रियो से मंत्रणा कर, समस्त विघ्न करनेवालो को निकाल बाहर कर, सबसे पहिले जिनेन्द्र का अभिषेक कर, होम और विविध दानो का सपादन कर, शत्रु और मित्र में मध्यस्थता के भाव का विचार कर, समस्त सामन्तो को अपने मत में नियन्त्रित कर, धरती, वन और पुर लोक को छोड़कर, ग्रह, ब्राह्मणो और नैमित्तिको की पूजा कर, प्रवर पुरुषो के परिहास की इच्छा कर, धर्म का पालन

7. AP ण जगपरम°। 8. A ण तिल्लोक्कलच्छि।

(28) 1 P भोयविसठुलु। 2. AP वारिवि। 3. AP विग्घकारि णीसेस णिवारिवि। 4. A अवणिदविणु पुरलोहु, अवणिदविणपरलोहु।

पवरपुरिसपरिहास समीहिवि पालिवि धम्मु अधम्महु बीहिवि।
लोयदिण्णहियइच्छियकामें रामारामे[5] राए रामें।

घत्ता—पविमगलियंभहिं कंचणकुंभहिं ण्हाणिवि[6] पट्टबंधु विहिउ ॥
रणि मारिवि रावणु भुवणभयावणु रज्जि विहीसणु सणिहिउ ॥28॥

29

दुवई—इय को करइ भिडइ[1] वि भडगोंदलि भुवणंगणमरावणं ॥
छज्जइ एम कासु णिव्वहइ वि सुहिपडिवण्णपालणं ॥छ॥

एह रूढि एहउं गरुयत्तणु मेल्लिवि पउमु कासु सुयणत्तणु।
कोसु देसु सो तं पुरु परियणु तं पणियगणकुलु पीवरथणु।
ताइ आयवत्तइ वाइत्तइ जाणइं जंपाणइ सुविचित्तइं।
ताइं वणाइ अमरतरुगंधइं ताइं जि जाउहाणनृवचिंधइं[2]।
ते असिकर दुक्करकर किंकर ते हयवर ते गयवर रहवर।
लंकादीउ त जि सो जलणिहि ते चामीयरभरिय महाणिहि।
णिहिलइ हियवइ तणु व वियप्पिवि दहमुहाणुजायहु जि समप्पिवि।
मेइणिसाहणि तिजगजयाणउं लक्खणरामहिं दिण्णु पयाणउ।

कर, अधर्म से डरकर, जिन्होंने लोकहित और दीनहित के अनुकूल काम किया है, तथा स्त्रियों के लिए रमणीय राजा राम ने,

घत्ता—जिनसे पवित्र जल गिर रहा है, ऐसे स्वर्ण-कलशों से स्नान कराकर, पट्ट बांध दिया। युद्ध में भुवन-भयंकर रावण को मारकर राज्य पर विभीषण को प्रतिष्ठित कर दिया।

(29)

ऐसा और कौन है जो योद्धाओं के कोलाहल में लड़ता है और विश्व के प्रांगण को रावण रहित करता है। ऐसा और किसे शोभा देता है जो सज्जनों को दिए गए वचन का प्रतिपालन करता है। यह प्रसिद्धि, यह गुरुता और सुजनता राम को छोड़कर और किसके पास है? वह कोष, देश, वह परिजन और पुर, स्थूल स्तनोंवाला वह वैश्याकुल, वे आतपत्र और बाले, सुविचित्र यान और जंपान, कल्पवृक्षों से सुगंधित वन और राक्षसकुल के वे नृपचिह्न, तलवार हाथ में लिये हुए कठोरकर वे अनुचर, वे अश्ववर, गजवर और रथवर, वही लंकाद्वीप और वही समुद्र, स्वर्णों से भरी हुई वे महानिधियाँ, इन सबको अपने मन में तृण के समान समझकर तथा दशमुख के छोटे भाई को देकर धरती की सिद्धि के लिए राम और लक्ष्मण ने तीनों लोकों को जीतने वाला प्रस्थान किया।

---

5. पुरि पइसेप्पिणु लक्खणरामे। 6 P ण्हाविवि।
(29) 1. AP भिडेवि भड°। 2. AP °णिव°।

घत्ता—ते रामजणद्दण दणुयविमद्दण परिभमंति भुवणयलइ ॥
आवाहियचलरह णावइ सभरह पुप्फयंत गयणयलइ ॥29॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे रावणणिहणण[3] विहीसण-
पट्टबंधो[4] णाम अट्ठहत्तरिमो परिच्छेओ समत्तो ॥78॥

घत्ता—राक्षसों का दलन करनेवाले वे राम और लक्ष्मण भुवनतल में परिभ्रमण करते हैं, जिन्होंने चंचल रथों को हाँका है ऐसे—मानो सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रों सहित, आकाशतल में चल रहे हों।

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित
एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का रावण-निधन एवं विभीषण-
पट्टबंध नाम का अठहत्तरवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

3. A °णिग्गहण। 4. AP °पट्टबंधणं।

एक्कूणासीमोसं धि

णिहणिवि भीमु रणि दुज्जउ रावणु मयमत्तउ ।।
महि हिंडंतु पहु पीढइरि[1] रामु संपत्तउ ।।ध्रुवकं।।

1

गिरि सोहइ हरिणा भउ जणतु   पहु सोहइ हरिणा महि जिणंतु ।
गिरि सोहइ मत्तमऊरणाउ   पहु सोहइ णायमऊरणाउ ।
गिरि सोहइ वरवणवारणेहिं   पहु सोहइ वारिणिवारणेंहिं ।
गिरि सोहइ उड्डियवाणरेहिं[2]   पहु सोहइ खगधयवाणरेहिं ।
गिरि सोहइ णवबाणासणेंहिं   पहु सोहइ भडबाणासणेंहिं ।
तहिं[3] पुव्वकोडिसिल दिट्ठ तेहिं   पुज्जिय वंदिय हरिहलहरेहिं[4] ।
मतिहिं पउत्तु भो[5] धम्मरासि   उद्धरिय तिविट्ठे एह आसि ।
एवहिं जइ लक्खणु भुयहिं धरइ   तो देव तिखडधरत्ति हरइ ।

उन्यासीवीं संधि

युद्ध में भयकर दुर्जेय और मदमत्त रावण का वध कर, धरती पर भ्रमण करते हुए प्रभु राम पीठगिरि पर पहुँचे।

(1)

गिरि सिह से भय उत्पन्न करता हुआ शोभित है, राम हरि (लक्ष्मण) के द्वारा धरती जीतते हुए शोभित हैं। गिरि मयूर और नागो से शोभित है, प्रभु (राम) किन्नरों की सुख्यात हृदयध्वनि से शोभित हैं। गिरि उत्तम वनगजो से शोभित है, प्रभु छत्रो (वारि निवारणों) से शोभित हैं। गिरि उछलते हुए वानरो से शोभित है, प्रभु विद्याधरो तथा वानरध्वजो से शोभित हैं। गिरि वाण और आसन वृक्षों से शोभित है, प्रभु (राम) योद्धाओं और धनुषो से शोभित हैं। वहाँ उन्होंने एक पूर्वकोटि शिला को देखा। राम और लक्ष्मण ने उसकी वंदना और पूजा की। मन्त्रियो ने कहा—हे धर्मराशि, यह शिला त्रिपृष्ठ के द्वारा उठाई गई थी। यदि लक्ष्मण इसे अपनी भुजाओं से उठाता है, तो हे देव, यह तीन खण्ड धरती का हरण करने

---

(1) P पीयलइरि। 2 A उट्ठिय°। 3. AP सिलकोडिपुव्व तहिं दिट्ठुतेहिं। 4 P omits हरि°।
5. A ण धम्मरासि।

तं णिसुणिवि पभणइ रामु एव अज्जु वि तुम्हहं मणि भंति केव।
जांव वि रणि णिद्दलियउ दसासु जाव[6] वि सिरि दिण्ण विहीसणासु।
तांव वि तुम्हह संदेहबुद्धि लइ किज्जइ सव्वहं हियसुद्धि।

घत्ता—जो अतुलइं तुलइ बलवंत वि रिउ विणिवायइ॥
सो हरि कुलधवलु सिल एह कि ण उच्चायइ॥1॥

2

दढकढिणथोरदीहरकरासु दहवयणवालिजीवियहरासु।
विहसिवि रामें[1] लच्छीहरासु आएसु दिण्णु णियबंधवासु।
ता भाइवयणतोसियमणेण उच्चाइय सिल लहु लक्खणेण।
पविउलभुयचालिय ण धरित्ति[2] णावइ तिखंडमहिरायवित्ति।
णं रामहु केरी विमल कित्ति ण णिरु असज्झसाहणसमित्ति[3]।
दीसंति लोयणयणह सुहाइ महियभुयदंडुद्धरिउ णाइ।
उप्परि सीरिहि कसणायवत्तु ण जयजसवेल्लिहि[4] तणउ पत्तु।
सोहइ सिलग्गु कण्हेण धरिउ बहुपोमरायकरजालफुरिउं।
उययम्मि अरुणकिरणोहतंबु उययाचलभाणुहि णाइ बिंबु।
वीरेहिं वि मुक्कउ सीहणाउ सउणंदउ णामें जक्खु आउ।

वाला होगा। यह सुनकर राम इस प्रकार कहते हैं—क्या आज भी आप लोगो के मन मे भ्रान्ति है! जब उसने युद्ध मे रावण का निर्दलन किया, जबकि विभीषण को लक्ष्मी प्रदान की गई, तब भी तुम लोगो मे सन्देह बुद्धि है! लो आप लोग अपने मन की शुद्धि कर लें।

घत्ता—जो अतुलों को तौल लेता है, जो बलवान् शत्रु को भी मार गिराता है ऐसा वह श्रेष्ठ नारायण लक्ष्मण क्या यह शिला नही उठा सकता?॥1॥

(2)

दृढ, कठिन, स्थूल और दीर्घ हाथोवाले, रावण और वालि के जीवन का अपहरण करने वाले, लक्ष्मी को धारण करनेवाले अपने भाई लक्ष्मण को राम ने आदेश दिया। तब अपने भाई के वचन से संतुष्ट मन होकर लक्ष्मण ने उस शिला को उठा लिया, मानो वह विशाल भुजाओ से चालित धरती हो, मानो त्रिखण्ड महीराज की वृत्ति हो, मानो राम की विमलकीर्ति हो, मानो अत्यन्त असाध्य साधन का परमोत्कर्ष हो। लोगो के नेत्रो को ऐसी दिखाई देती थी जैसे विष्णु द्वारा बाहुदण्ड से उद्धृत, बलभद्र के ऊपर कृष्ण-आतपत्र (छत्र) शोभित हो। मानो जय और यश रूपी लता का पत्र हो। अनेक पद्मराग मणियो के किरणजाल से स्फुरित लक्ष्मण के द्वारा उठाया गया शिलाग्र ऐसा शोभित होता था, मानो उदयाचल के सूर्य का अरुण-किरण-समूह से आरक्त बिम्ब हो। वहाँ वीरो ने सिंहनाद किया, वहाँ सौनन्द नाम का यक्ष आया। उसने चक्रवर्ती के

6. AP पुणरवि सिरि।

(2) 1. A रामु। 2. P धरत्ति। 3. AP सवित्ति। 4 A जसजय°। 5. AP जालजडिउ।

चक्किहि पय वंदिवि वइरितासि ते दिण्णु तासु सउणदयासि ।

घत्ता—लक्खणकयथुइहिं णरदेवहिं कण्हु पउत्तउ ।।
सजलहेमघडहं अट्ठुत्तरसहसें सित्तउ ।।2।।

3

संचलिउ राउ[1] अरितिमिरभाणु अणुगंग[2] पुणु वि दिण्णउं पयाणु ।
कल्लोललुलियझससुंसुमारु[3] दियहेहिं पत्तु सुरसरिदुवारु ।
हयगयवरखंधाइण्णजोहु[4] थिउ काणणि[5] बलु[6] दूसोहसोहु ।
हरिणा रहु वाहिउ जलहिणीरि पायालमूलपूरणगहीरि ।
धणुगुणविमुक्कु सरु सुद्धिवंतु संप्रायउ[7] मागहु पय णवंतु ।
ते देवहु दाणवमद्दणासु दिण्णउ अहिसेउ जणद्दणासु ।
कुंडलजुयलउं मणिकिरणणीडु ससिकलु हारु मणहरु किरीडु ।
तहिं होंतउ गउ अणुजलहितीरु साहिउ वरतणु पणवियसरीरु ।
केऊरमउडकंकणपवित्तु चूडामणिकंठाहरणजुत्तु ।
तहिं लहिवि विणिग्गउ गउ तुरंतु सिंधुहि पइसरिवि पहासु जित्तु ।
संताणमाल सेयायवत्तु मुत्ताहलदामु मलोहचत्तु ।
पालेप्पिणु[8] पुणु परियलियगव्व[9] साहिय वरुणासामेच्छ सव्व ।

चरणों की वन्दना कर, उसे शत्रुओ को त्रस्त करनेवाली सौनन्दक नाम की तलवार दी।

घत्ता—जिन्होने लक्ष्मण की स्तुति की है ऐसे लोगो ने उसे नारायण कहा और एकसौ आठ सजल स्वर्णकलशो से उसका अभिषेक किया ।।2।।

(3)

शत्रु रूपी अंधकार के लिए सूर्य वह राजा चला। उसने गगा के किनारे-किनारे प्रस्थान किया। कुछ ही दिनो मे वह, जिसकी लहरो मे मत्स्य और शिशुमार उछल रहे है ऐसी गगानदी के द्वार पर पहुँचा। जहाँ योद्धा हाथियों और घोडों के कधो से उतर गये है, ऐसा तम्बुओ से शोभित सैन्य कानन में ठहर गया। लक्ष्मण ने पाताललोक तक सम्पूर्ण रूप से गम्भीर समुद्र के जल में रथ को और धनुष की डोरी से मुक्त शुद्धिवत तीर को चलाया। मागध पैर पड़ता हुआ आया। उसने दानवो का नाश करनेवाले देव जनार्दन का अभिषेक किया और कुण्डलयुगल मणि किरणों का घर चन्द्रकान्त हार तथा सुन्दर मुकुट दिया। वहाँ से होता हुआ वह समुद्र के किनारे गया, और प्रणतशरीर वरतनु को सिद्ध किया। केयूर मुकुट तथा ककणो से पवित्र एव कण्ठाभरण युक्त चूडामणि लेकर वह शीघ्र निकला और प्रस्थान कर दिया। सिंधुनदी में प्रवेशकर प्रभासतीर्थ को जीता। संत्राणमाला, श्वेत आतपत्र, मलसमूह से रहित मुक्तामाला को प्राप्त कर, पश्चिम दिशा के परिगलित-गर्व समस्त म्लेच्छों को सिद्ध कर लिया।

---

(3) 1. P रामु । 2. AP अणुमग्गें । 3. P °सुसुमारु । 4. AP °गयरहखधा° । 5. AP उववणि । 6. बलदूसोह° । 7 AP सपाइउ । 8 AP पावेप्पिणु गउ । 9. A परिगलिय° ।

घत्ता—गउ वेयड्ढगिरि खगसेढिउ बे वि जिणेप्पिणु ॥
हयमायगवरखेयरकण्णाउ लएप्पिणु ॥3॥

4

पुणु वसिकिउ सुरदिसि मेच्छखंडु महिमडलि हिंडिवि रायदडु[1] ।
गय जइयहु दोचालीस वरिस तइयहु हरि हलहर दिव्वपुरिस ।
साहिवि तिखंडमेइणि दुगिज्झ जयजयसद्दे ण पइट्ठ उज्झ ।
हरिवीढि णिवेसिवि वरजलेहि हयतूरहि गाइयमंगलेहि ।
मंडलियहि ण मेहहि गिरिंद अहिसित्त रामलक्खणणरिंद ।
जहि[2] दिव्वइं सत्थइ सचरंति तहि अवसें रणि अरिवर मरंति ।
जहि देव वि घरि पेसणु करंति तहि अवसें णर भयथरहरंति[3] ।
को वण्णइ हरिवलएवरिद्धि वाएसिइ दिण्णी कासु सिद्धि ।
ज विजयतिविट्ठह तणउ पुण्णु त एयह[4] दोहि मि समवइण्णु ।
हो पूरइ वण्णवि काइ एत्थु किं तुच्छवुद्धि जपमि णिरत्थु ।

घत्ता—सेविय गोमिणिइ रइलोहइ कीलणसीलइ ॥
रज्जु करंत थिय ते बे वि पुरंदरलीलइ ॥4॥

घत्ता—वह विजयार्धगिरि गया और उसकी दोनो श्रेणियो को जीतकर; अश्व, गज और उत्तम विद्याधर कन्याओ को लेकर ॥3॥

(4)

फिर उसने पूर्व दिशा के म्लेच्छ खण्ड को वश मे किया। भूमिमण्डल में राजदण्ड घुमाकर जब बयालीस वर्ष बीत गए तब राम और लक्ष्मण दोनो महापुरुषो ने दुर्ग्राह्य तीन खण्ड धरती को जीतकर जय-जय शब्द के साथ अयोध्या नगरी मे प्रवेश किया। सिंहासन पर बैठाकर, राम लक्ष्मण राजाओ का उत्तमजलो, आहत तूर्यो, गाये गए मगलो के द्वारा इस प्रकार अभिषेक किया गया, मानो मण्डलित मेघो के द्वारा गिरीन्द्र का अभिषेक किया गया हो। जहाँ दिव्य शस्त्रो का सचार होता है वहाँ युद्ध मे अवश्य शत्रुप्रवर मरते है। जहाँ देव गण घर मे सेवा करते हैं, वहाँ अवश्य मनुष्य भय से थरथर काँपते है। बलभद्र और नारायण की ऋद्धि का वर्णन कौन कर सकता है? वागेश्वरी द्वारा दी गई सिद्धि किसके पास है? जो पुण्य विजय और त्रिपृष्ठ का था, वही पुण्य इन दोनो को प्राप्त हुआ था। वर्णन करने से वह क्या यहाँ पूरा होता है? मैं तुच्छबुद्धि व्यर्थ क्यो कथन करता हूँ।

घत्ता—रति की लोभी क्रीडाशील लक्ष्मी के द्वारा सेवित वे दोनो इन्द्र की लीला से राज्य करते हुए रहने लगे।

---

(4) 1 P रायचडु। 2 A reads *a* as *b* and *b* as *a* in this line। 3. A भउ थर°; P भड थर° 4 P एवहु।

5

सुमणोहरणामि सयावसंति[1] अण्णहिं दिणि णंदणवणवणंति ।
सिरिसिरिहररामणराहिवेहिं सिवगुत्तु जिणेसरु दिट्ठु तेहिं ।
वंदेप्पिणु पुच्छिउ परमधम्मु जिणु कहइ उयारवियारगम्मु[2] ।
मिच्छत्तासंजम चउकसाय छडतहु सुहु रायाहिराय ।
एयहिं ओहट्टइ णाणतेउ ए दुस्सहदुद्दमबंधहेउ ।
बंधेण कम्मु कम्मेण जम्मु जम्मेण दुक्खु सोक्खु वि सुरम्मु ।
इंदियसोक्खे पुणु पुणु विसालु संपज्जइ जीवहु मोहजालु ।
मोहें मुज्झइ ससारि भमइ अण्णण्णहिं देहहिं देहि रमइ ।
णारयतिरिक्खदेवत्तणेहिं [3]बहुभेयभिण्णमणुयत्तणेहिं ।
संसरइ मरइ णउ लहइ बोहि ण कयाइ वि पावइ जिणसमाहि ।
सम्मत्तु ण गेण्हइ मंदमूढु लोइयवेइयसमएहिं छूढु[4] ।
आसंककंखविदिगिंछवंतु जडु मिच्छादिट्ठि पसस देंतु ।

घत्ता—चंगउ परिहरइ जं णिंदणिज्जु तहिं भत्तउ ॥
राहव जीवगणु जगि पउरु विहुरु सपत्तउ ॥5॥

(5)

दूसरे दिन, जिसमें सदा वसंत रहता है ऐसे मनोहर नामक नदन वन के भीतर उन श्रीविष्णु और श्रीराम (लक्ष्मण और राम) ने शिवगुप्त नामक जिनेश्वर के दर्शन किए। उनकी वन्दना कर उन्होने परमधर्म पूछा। उदारविचारों से गम्य जिनेश्वर कहते हैं—राजाधिराज ! मिथ्यात्व, असयम और चार कषायों को छोडनेवालो को सुख होता है। इनसे ज्ञान का तेज कम होता है। ये असह्य और दुर्दम वन्ध के कारण है। वन्ध से कर्म होता है, कर्म से जन्म होता है, जन्म से सुरम्य सुख और दु:ख होता है। इन्द्रियसुख से फिर-फिर, जीव को विशाल मोहजाल पैदा होता है। मोह से मूर्च्छा को प्राप्त होकर ससार में परिभ्रमण करता है। और फिर शरीरधारी अन्य-अन्य शरीरो से रमण करता है। नरक, तिर्यंच और देवत्व के अनेक भेदो से भिन्न मनुष्य शरीरों मे संसरण करता है, मरता है। न तो ज्ञान प्राप्त करता और न कभी समाधि को पाता। मन्द-मूर्ख सम्यकत्व ग्रहण नही करता। वह लौकिक और वैदिक मतों से व्याप्त रहता है। आशंका, आकांक्षा और घृणा से युक्त जड मिथ्यादृष्टि की प्रशसा करता हुआ,

घत्ता—जो भला है उसे छोड़ता है और जो निंदनीय है उसका भक्त वनता है। हे राघव, जीवसमूह जग में प्रचुर दु.ख को प्राप्त होता है ॥5॥

(5) 1. A सयवसंति। 2. P ओयार°। 3. A बहुभोय°। 4. AP मूढु।

6

अणुदिणु परिणामहु जाइ लोउ　　खणि आणंदिउ खणि करइ सोउ।
खणि खणि अण्णत्तहु[1] जाइ केव　　सिहिगहिउ तेल्लु सिहिभाउ जेव।
उप्पत्तिवित्तिपलएहि गत्थु　　पेच्छहि अप्पउ पोग्गलपयत्थु।
पज्जाउ जाइ दव्वु जि पयासु　　घड मउड[2] सुवण्णहु णत्थि णासु।
ज रुच्चइ त तहि होउ बप्प　　णिज्जीवणिरण्णइ[3] कहि वियप्प।
जो मणुयलोइ सो णत्थि सग्गि　　जो सग्गि ण सो पायालमग्गि।
जो घरि सो कि णीसेसणामि[4]　　जो गामि ण सो आरामथामि[5]।
एवत्थिणत्थिणिव्वूढसच्चु　　अरहंतें साहिउ परमतच्चु।
जइ जगि सव्वत्थ वि सव्वु अत्थि　　तो किं गयणंगणि कुसुमु णत्थि।
जइ एक्कु[6] जि सयलु जि जगु णियाणि तो को णारउ को सुरविमाणि।
को खंडिउ को वरइत्तु थक्कु　　सामण्णु अमरु को[7] कवणु सक्कु।

घत्ता—जइ खणि खणि जि खउ सइंबुद्धें जीवहु दिट्ठउ ॥
ता चिरु महिणिहिउ वसुसचउ केण गविट्ठउ ॥6॥

(6)

प्रतिदिन लोक परिणमन को प्राप्त होता है, क्षण मे आनन्दित होता है और क्षण मे शोक को प्राप्त होता है। क्षण-क्षण मे वह अन्यत्व को उसी प्रकार प्राप्त होता है जिस प्रकार आग से जलता हुआ तेल अग्नित्व को प्राप्त होता है। उत्पत्ति, वृत्ति (ध्रुवत्व) और प्रलय के द्वारा ग्रस्त जीव अपने को (पुद्गल) पदार्थ समझता है। पर्याय होती है और स्पष्ट ही द्रव्य है। घट और मुकुट मे मिट्टी और स्वर्ण का नाश नहीं होता। जहाँ जो रुचता है वहाँ बेचारा वही होता है निर्जीव और निरन्वय (जीवन रहित, अन्वय रहित) में विकल्प कहाँ? जो मनुष्यलोक मे है, वह स्वर्गलोक मे नही है, और जो स्वर्गलोक मे है, वह नरकलोक मे नही है। जो घर मे है, क्या वह सर्वपदार्थों मे है? जो ग्राम मे है, वह आराम स्थान मे नही है। इस प्रकार जिसमें अस्ति नास्ति के द्वारा सत्य प्रतिपादित है, ऐसा परमतत्त्व अरहृत के द्वारा कहा गया है। यदि जग में सर्वार्थ भी सब है, तो आकाश के आगन मे कुसुम क्यो नही होता? यदि अन्तिम समय, समस्त विश्व एक है, तो कौन नारकीय है और कौन सुरविमान मे? कौन खण्डित है और कौन पूर्ण? सामान्य देव कौन और इन्द्र कौन?

घत्ता—यदि स्वयंबुद्ध द्वारा जीव का क्षण-क्षण मे क्षय देखा जाता है तो प्राचीनकाल मे धरती मे रखे गए धनसचय की खोज किसने की?

(6) 1. AP अण्णण्णहु। 2 A मउडि। 3. AP °विणिण्णय। 4. AP णीसेसगामि। 5. AP आरामि। 6 AP एक्कु वि सयलु वि। 7 AP सो।

7

जइ जाणइ सो किर वासणाइ तो ताइ केम्व खणधंसणाइ।
जइ इदजालु तिहुयणु असेसु तो कि किर चीवरधरणवेसु।
सिविणोवमु जइ णीसेसु सुण्णु तो गुरु ण सीसु णउ[1] पाउ पुण्णु।
जिणपिसुणहु णियवयणु जि कयंतु सिवु णिक्कलु णिप्परिणामवंतु।
सयलु वि ससारिउ गोरिकंतु णच्चइ गायइ तो[2] कि महंतु।
जो आहवि वइरिहि मलइ माणु धणुगुणि सधिवि अग्गेयवाणु[3]।
पुरु[4] विद्धउ जेण रइवि ठाणु किं तासु वयणु होसइ पमाणु।
विणु वत्तारे सिद्धंतु केत्थु सिद्धंते विणु किह मुणइ वत्थु।
अप्पउं अबरि[5] संजोयमाणु कउलु वि भावइ महु मुक्कणाणु।
णिच्चेयणि सुसिरि सिवत्तु थवइ पसुमासु खाइ महु सीहु[6] पिबइ।
परु मोहइ सइं तमणियरभरिउ इंदियवसु णिंदियसाहुचरिउ।
णिवडइ[7] रउद्दि घणि घणि तमंधि णारयहणहणरवि णरयरंधि।

घत्ता—झायहि जिणधवलु अण्णेण ण दुक्किउ जिप्पइ॥
करयलकंतिहरु पंकेण पंकु किं[8] धुप्पइ॥7॥

---

(7)

यदि वह वासना (सूक्ष्म सस्कार) से उसे जानता है तो क्षण में ध्वंस को प्राप्त होनेवाली उससे यह कैसे संभव ? यदि समस्त त्रिभुवन इन्द्रजाल है तो फिर चीवर धारण करनेवाले वेष से क्या ? यदि नि शेष वस्तु स्वप्नतुल्य और शून्य है तो न गुरु है और न शिष्य है, और न पाप-पुण्य है। जिनवचनो के विपरीतजनों का ऐसा अपना ही कथन यम के समान है कि शिव निष्फल और परिणाम रहित है। यदि समस्त ससार गौरीकांत (शिव) मय है तो वह महान् नाचता और गाता क्यों है ? जो युद्ध में शत्रुओ का मानमर्दन करता है, धनुष की डोरी पर आग्नेय वाण का संधान करता है, जिसने स्थान की रचना करने के लिए पुर का विनाश किया, क्या उसका वचन प्रामाणिक हो सकता है ? वक्ता के बिना सिद्धान्त कैसा ? सिद्धान्त के विना वस्तु का विचार कैसा ? स्वय को आकाश में सयुक्त करता हुआ कौल (अभेदवादी वेदान्ती) भी मुझे ज्ञान से रहित दिखाई देता है। अचेतन आकाश मे वह शिव की स्थापना करता है, वह पशुमांस खाता है, मधु और सुरा का पान करता है। दूसरो को मुग्ध करता है, स्वयं अज्ञान-अन्धकार से भरा हुआ है। इन्द्रियो के वशीभूत है, और साधुओ के चरित की निंदा करनेवाला है। वह भयंकर तमान्ध सघन रौद्र नरक मे गिरता है, जिसमें नारकियो का 'मारो-मारो' शब्द हो रहा है, ऐसे नरकबिल मे।

घत्ता—इसलिए तुम जिनवर का ध्यान करो। दूसरे के द्वारा पाप नही जीता जा सकता, करतल की कान्ति का अपहरण करनेवाला पंक, क्या पक से ही धुल सकता है ? ॥7॥

---

(7) 1 A णो पाउ। 2. A किं सो महंतु, P किं तो महतु। 3. A अग्गेउ वाणु। 4. P पूरणु विद्धउ। 5. A अतरि। 6. A मज्जु। 7. A घणघणरउद्दि णिवडइ तमधि। 8 AP किह धुप्पइ।

8

जइ काउ सरतहु जाइ गरलु[1] तइ पावेण जि जणु होइ विमलु ।
जो सेवइ गुरु पाविट्ठु दुट्ठु[2] देउ वि णिट्ठरु दट्ठोट्ठु रुट्ठु ।
सो सइ जि पाव पावहु जि सरणु पइसउ ण लहइ ससारतरणु ।
सो[3] गुरु जो मित्तु व गणइ सत्तु सो गुरु जो मायाभावचत्तु ।
सो गुरु जो मुक्काहरणवत्थु सो गुरु जो महिमागुणमहत्थु[4] ।
सो गुरु जो तिणु[5] कंचणु समाणु सो गुरु जो णिरहुप्पण्णणाणु ।
णिच्चलखमदमसंजमसमेण गुरुरयणु भणिउ एए कमेण ।
दूरुज्झियदुज्जयरायरोसु अरहंतु देउ परिहरियदोसु ।
तहु धम्मु अहिंसालक्खणिल्लु मयमारउ विप्पु वि होइ भिल्लु ।
अहवा सो भण्णइ सूणयारु जण्णें कहिं लब्भइ सग्गदारु ।

घत्ता—मेल्लिवि विसयविसु जिणभावें हियवउ भावहु ॥
पालिवि जीवदय सग्गापवग्गसुहु पावहु ॥8॥

9

त णिसुणिवि परिरक्खियमयाइ धरियइ[1] रामें सावयवयाइ ।
सम्मद्दसणविप्फुरियएहिं अवरेहिं मि भव्वपुडरियएहिं ।

(8)

यदि कौए का स्मरण करने से पाप जाता है, तो पाप से भी मनुष्य पवित्र हो जाय । जो (व्यक्ति) पापिष्ठ और दुष्ट गुरु की सेवा करता है, तथा निष्ठुर ओठों को चबानेवाले रुष्ट देव की सेवा करता है वह स्वय पापी है, और पापी की शरण मे पहुँचा हुआ ससार से तरण नही पा सकता । गुरु वह है जो मित्र और शत्रु को नही गिनता (भेद नही करता) । गुरु वह है जो माया भाव से रहित है । गुरु वह है जो आभरण वस्तुओ से मुक्त है । गुरु वह है, जो महिमा और गुण में महान् हो । गुरु वह है, जो तृण और स्वर्ण मे समान है, जिसका ज्ञान अपाप से उत्पन्न हुआ है । निश्चल, क्षमा, दम, सयम और शम के इसी क्रम से मैंने गुरुरत्न कहा । जिन्होने दुर्जय राग द्वेष को दूर से छोड दिया है और जो दोषो से रहित है, उनका धर्म अहिंसा लक्षणवाला है । पशुओ को मारनेवाला विप्र भील होता है अथवा वह हत्यारा (कसाई) कहा जाता है । यज्ञ से कही स्वर्गद्वार मिलता है ?

घत्ता—विषय रूपी विष को छोड़कर, जिनभाव से आत्मा का ध्यान करो । जीवदया का पालन कर स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) का सुख प्राप्त करो ।

(9)

यह सुनकर राम ने, जिसमे पशुओ की रक्षा की गई है ऐसा श्रावकव्रत स्वीकार कर लिया । सम्यग्दर्शन से विस्फुरित दूसरे भव्य श्रेष्ठजनो ने भी श्रावकव्रत ग्रहण किए । लक्ष्मण का हृदय

(8) 1 A गरलु । 2 A दुट्ठुट्ठु । 3 A omits this foot. 4 AP गुणमहिमामहतु । 5. A तणकचणसमाणु ।

(9) 1. P सरियइ ।

लक्खणहियवउ दुणियाणसहिउं तेण जि व्रउ[2] तेण ण किं पि गहिउं।
दसरहि[3] मुइ णिहिय णिरूढसयरि सत्तुहण भरह साकेयणयरि।
गय भायर वाणारसि[4] तुरंत थिय रज्जु करत हली अणत।
रामें सुउ जायउ विजयरामु सीयहि रूवें ण देउ कामु।
अहिमाणणाणविण्णाणजुत्त अवर वि सजाया[5] सत्त पुत्त।
गोविंदहु णंदणु पुहइचंदु पुहइहि हूयउ पुहईसवंदु।
अण्ण वि ण मत्तमहागइंद सुय सभूया जियरिउणरिंद।
गुणगणरंजियभुवणत्तएहिं परिवारिय पुत्तपउत्तएहिं।
घत्ता—थिय भुजंत महि गउ[6] कालु अकलियपरिवत्तउ[7]॥
एक्कहिं णिसिसमइ हरि फणिसयणि[8] पसुत्तउ ॥9॥

10

पेच्छइ सिविणतरि पयहिं मलिउ णग्गोहु दतिदंतग्गदलिउ।
कवलेवि[1] विडप्पे तिमिरजूरु कड्ढिवि पायालि णिहित्तु सूरु।
पासायसिहरणिवडणु[2] णियतु उट्ठिउ महिवइ अंगइ घुणतु।
अक्खिउ दुइसणु भायरासु ता भणइ पुरोहिउ ढुक्कु णासु।
जिह वडतरुवरु चूरिउ गएण तिह सिरिवइ भजेव्वउ गएण[3]।

खोटे निदान से युक्त था। इस कारण उसने कोई व्रत नही लिया। दशरथ के मरने पर, जिसमें राजा सगर प्रसिद्ध था, ऐसे साकेतनगर में शत्रुघ्न और भरत को स्थापित कर दिया गया। तब दोनों भाई तुरन्त वाराणसी चले गए। राम और लक्ष्मण वहाँ राज्य करते हुए रहने लगे। सीता से राम के विजयराम नाम का पुत्र हुआ, जो रूप मे कामदेव था। गौरव, ज्ञान और विज्ञान से युक्त और भी उनके सात पुत्र हुए। रानी पृथ्वी से लक्ष्मण के पृथ्वीचन्द्र पुत्र हुआ जो पृथ्वी मे और राजाओ मे श्रेष्ठ था। उसके और भी पुत्र उत्पन्न हुए, शत्रु राजाओ को जीतनेवाले जो मानो मतवाले महागज थे। इस प्रकार अपने गुणो से भुवनत्रय को रजित करनेवाले पुत्र और प्रपौत्रो से घिरे हुए—

घत्ता—धरती का उपभोग करने लगे। उनका अगणित समय बीत गया। एक रात्रि के के समय लक्ष्मण नागशय्या पर सोए हुए थे।

(10)

स्वप्न मे वह देखते हैं कि वटवृक्ष हाथी के दाँतो के अग्रभाग से दलित और पैरो से कुचला गया है। राहु ने चन्द्रमा को निगल कर और सूर्य को खीचकर पाताललोक मे डाल दिया है। इस प्रकार राजा प्रासाद के शिखर का पतन देखता हुआ और अपने अगो को पीटता हुआ उठा। उसने वह दु स्वप्न और भाईयों को बताया। उस समय पुरोहित कहता है—नाश आ पहुँचा है। जिस प्रकार गज के द्वारा वटवृक्ष नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया, उसी प्रकार लक्ष्मण रोग से मारे

2 AP वउ। 3. A दसरहसुयविहिय°। 4. AP वाराणसि। 5. P अवर वि जाया तहु सत्त पुत्त। 6 P. गयउ। 7. A अहियपरिचत्तउ। 8. A फणिसयणयलि, P मणिसयणि।

(10) 1 A कवलियउ। 2. P °णियडणु। 3. A यमेण ; P मएण।

जं अब्भपिसाएं गिलिउ भाणु चप्पिवि पाविउ महिविवरठाणु ।
तं संचियचिरसुकयावसाणु[4] परिपुण्णउं वट्टइ आउमाणु ।
जं णिवडिउ वरधवलहरसिंगु तं ध्रुवु[5] पोमामुहपोमभिंगु ।
माहउ पावेसइ देव मरणु पइसेव्वउ जिणवरचरणसरणु ।
तवचरणु चरेव्वउं पइं रउद्दु लंघेव्वउ भीसणु भवसमुद्दु ॥
तं णिसुणिवि जयभीमाहवेण[6] पुरि अभयघोसु किउ राहवेण ।
अहिसित्तइं जिणबिंबइं जलेहिं दुद्धेहिं धवलधारुज्जलेहिं ।
दहिएहिं[7] कुंभपल्लत्थिएहिं वरकामिणिकरणिम्मत्थिएहिं ।

घत्ता—ण्हवियइं पुज्जियइं जिणवरपडिबिंबइं रामें ॥
भत्तिइ वंदियइं परिवड्ढियसुहपरिणामें ॥10॥

11

पुरु घरु परिहाणु[1] हिरण्णु धण्णु जो[2] जं मग्गइ तं तासु दिण्णु ।
संति वि[3] विरयंतहं विहुरहम्मु ढुक्कउ चिरसंचिउ घोरकम्मु ।
पुण्णक्खइ दुक्खु दुपेक्खु देंतु हयपरबलु भुयबलु णिक्खवंतु ।
कइवयदिणेहिं सुहिदिण्णसोउ लच्छीहरंगि संभूउ रोउ ।
उप्पाइयबंधवहिययसल्लि माहम्मि मासि दिणि अंतिमिल्लि ।
कालें कवलिउ महिअद्धराउ णं हित्तउ कामिणिरइणिहाउ[4] ।

जाएँगे। राहु के द्वारा चापकर निगले गए सूर्य ने जो महाविवर (पाताललोक) मे स्थान पाया, वह जिसमे संचित चिरपुण्य का अंत है ऐसे (लक्ष्मण की) आयु के मान का अन्त है, और जो श्रेष्ठ धवलगृह का शिखर गिरा है, उससे लक्ष्मी के मुख रूपी कमल के भ्रमर लक्ष्मण निश्चित रूप मृत्यु को प्राप्त होंगे। हे देव, आप जिनवर के चरण में प्रवेश करेंगे, भयंकर तपश्चरण करेंगे, और भीषण भवसमुद्र को पार करेंगे। यह सुनकर, भयंकर संग्राम वाले राम ने नगर में अभय घोषणा करवा दी। जल से, धवलधाराओ से उज्ज्वल दूध से, तथा उत्तम स्त्रियो के करो से निर्मित दही से,

घत्ता—जिनका शुभ परिणाम बढ रहा है, ऐसे राम ने जिनप्रतिमाओ का भक्तिभाव से अभिषेक किया, पूजा और वंदना की ॥10॥

(11)

पुर, घर, परिधान, स्वर्ण और धान्य, जिसने जो माँगा वह दिया। शान्ति का विधान करते हुए भी उनको दु ख का घर चिरसंचित घोर कर्म आ पहुँचा। पुण्य का क्षय होने पर कुछ ही दिनो मे दुर्दर्शनीय दु ख देता हुआ, शत्रुबल का नाश करनेवाले भुजबल को क्षीण करता हुआ, सुधीजनो को शोक देता हुआ रोग लक्ष्मण के शरीर मे उत्पन्न हो गया। जिसने बन्धुओ के हृदय में वेदना उत्पन्न की है ऐसे माघ माह के अन्तिम दिन, धरती का अर्ध-चक्रवर्ती राजा लक्ष्मण काल के द्वारा कवलित कर लिया गया, मानो कामनियो का रतिसमूह ही छीन लिया गया हो।

4. A °सुकिया° । 5. AP ध्रुउ । 6 AP जिय° । 7 A दहिएण ।
(11) 1. P परिहणु । 2 AP ज जें मग्गिउ । 3. A संतिहिं । 4. AP °रयणिहाउ ।

णं णासिउ बंधवसोक्खहेउ अच्छोडिउ णं रहुवंसकेउ।
ण मोडिउ सुरतरुवरु फलतु उल्हविउ पयावाणलु जलंतु।
रिउसीसणिवेसियपायपंसु उड्डाविउ जगसररायहंसु।
जहिं रावणु तहिं सो दुहपएसि[5] उप्पण्णु चउत्थइ णरयवासि।
विहिणा सोसिउ[6] गुणणिहिगहीरु सोएण पमुच्छिउ रामु वीरु।
सिंचिउ सलिलें माणवमहंतु उम्मुच्छिउ हा भायर भणंतु।

घत्ता—हा दहमुहणिहण हा लक्खण हा लच्छीहर॥
हा रयणाहिवइ हा वालिहरिणकंठीरव ॥11॥

12

धाहावइ सीय मणोहिरामु एक्कल्लउ छंडिउ काइं रामु।
हा[1] हे देवर महु देहि वाय पइ विणु जीवतहं कवण छाय।
पूएप्पिणु[2] दड्ढउ हरिसरीरु अवलंविउ सीरें हियइ धीरु।
करहयसिरु हाहारउ मुयंतु संवोहिउ अंतेउरु रुयंतु।
लक्खणसुउ णामें पुहइचंदु सइ अहिसिंचिवि किउ कुलि णरिंदु। 5
सत्तहिं जणेहिं सीयासुएहिं ण समिच्छिय सिरि पीवरभुएहिं।
लहुयारउ ताहं पयग्गि णविउ अजियंजउ मिहिलाणयरि थविउ।

मानो वन्धुओ के सुख का कारण नष्ट हो गया हो, मानो रघुवश का ध्वज ही नष्ट हो गया हो, मानो फला हुआ कल्पवृक्ष ही तोड़ दिया गया हो, मानो जलता हुआ प्रतापानल शान्त कर दिया गया हो। जिसने शत्रु के सिर पर अपने चरणो की धूल स्थापित की ऐसा विश्वरूपी सरोवर का वह राजहंस उड गया। जहाँ रावण है, उसी दु ख प्रदेश चौथे नरक मे उत्पन्न हुआ। गुणनिधियो से गभीर, विधाता के द्वारा शोषित राम शोक से मूर्च्छित हो गए। पानी छिडकने पर वह मानव-महान्, 'हे भाई' कहते हुए मूर्च्छा से दूर हुए।

घत्ता—हा दशमुख का अत करनेवाले, हा लक्ष्मण, हा लक्ष्मीधर, रत्नाधिपति, हा वालि-रूपी हरिण के लिए सिह ॥11॥

(12)

सीता ने चीख कर कहा—तुमने राम को अकेला क्यों छोड दिया ? हा देवर, मुझसे बात करो। तुम्हारे विना जीने मे कौन-सी शोभा है ? पूजा करके लक्ष्मण का शरीर जला दिया गया। राम ने अपने मन मे धैर्यधारण किया। अपने हाथों सिर पीटते और हा-हा शब्द कर रोते हुए उन्होने अन्त पुर को सम्वोधित किया। लक्ष्मण के पुत्र पृथ्वीचद का अपने हाथ से अभिषेक कर उसे कुल का राजा वनाया। स्थूल वाहुवाले सीतादेवी के सातो पुत्रो ने लक्ष्मी की इच्छा नही की। उनमें सबसे छोटा तथा चरणो मे नमित अजितंजय मिथिला नगरी का राजा वनाया गया।

5. A °पयासि। 6. A सोहिउ।
(12) 1 P हा देवर महु दे देहि वाय। 2. A जूरेप्पिणु।

साकेयणयरि सिद्धत्थणामि वणि परिभमंतचलभसलसामि ।
सीराउहेण मयमोहणासि तवचरणु लइउ सिवगुत्तपासि[3] ।

घत्ता—तहिं रामेण सहु सुग्गीउ वि सुद्धविवेयउ[4] ॥
हणुउ विहीसणु वि पावइयउ जायणिव्वेयउ ॥12॥

13

राए जाए इसिसीसएण तणयहं तउ लइउ असीसएण ।
सीयापुहईहिं सुयवइहि पाय आसघिय भावें चत्तराय[1] ।
भुवणुट्ठिउ[2] तिट्ठावज्जियाउ जायाउ ताउ तहिं अज्जियाउ ।
पत्ता बेण्णि वि णिम्महियकाम सुयकेवलित्तु हणुयतु राम ।
इयर वि सजाया रिद्धिवंत मुणिवर णिट्ठुरतवतावसंत ।
आहुट्ठसयाइं गयाइं तासु संवच्छराइं पालियवयासु ।
पचहिं वरिसेहिं विवज्जियाइं जइयहु तइयहुं ध्रुवु[3] णिज्जियाइं ।
रामें चउकम्मइं घाइयाइं अमरहिं कुसुमाइं णिवेइयाइं ।
उप्पण्णउ केवलु विमलणाणु दिट्ठउ तिहुयणु गयणु[4] वि अमाणु ।
खणि सुरयणु संप्रायउ[5] णवंतु[6] जय णंद वड्ढ रहुवइ भणंतु ।

घत्ता—एक्कु जि छत्तु तहु पोमासणु चमरइं चवलइं[7] ॥
देवहिं णिम्मियइं तारातारावइधवलइं ॥13॥

साकेत नगर के, भ्रमणशील चचल भ्रमरो से से श्याम सिद्धार्थ नामक वन मे राम ने शिवगुप्त मुनि के पास मद-मोह का नाश करने वाला तपश्चरण ग्रहण कर लिया।

घत्ता—वहाँ राम के साथ शुद्ध विवेकी सुग्रीव, हनुमान् और विभीषण ने भी वैराग्य उत्पन्न होने से सन्यास ग्रहण कर लिया ॥12॥

(13)

राजा राम के ऋषि-शिष्य होने पर, एक सौ अस्सी पुत्रो ने भी तप ग्रहण कर लिया। सीता और पृथ्वी देवी ने भी श्रुतव्रता आर्यिका के रागशून्य चरणो का भावपूर्वक आश्रय लिया। ससार से विरक्त, तृष्णा से रहित वे दोनो वही आर्यिकाएँ बन गई। कामदेव का नाश करनेवाले हनुमान् और राम दोनो श्रुतकेवलित्व को प्राप्त हुए। दूसरे मुनिवर भी निष्ठुर तप का आचरण करते हुए ऋद्धियो से पूर्ण हुए। व्रतों का पालन करते हुए उनके साढे-तीन सौ वर्ष बीत गए। जब पाँच वर्ष शेष रह गए तब राम ने निश्चित रूप से चार घातिया कर्मो को जीत लिया। देवो ने पुष्पो की वर्षा की। उन्हे पवित्र केवलज्ञान उत्पन्न हो गया। निःसीम गगन के समान उन्होने त्रिभुवन को देख लिया। क्षण भर मे, प्रणाम करते हुए तथा हे राम आपकी जय हो, आप प्रसन्न हो और बढे—यह कहते हुए देव आए।

घत्ता—उनका एक ही छत्र, कमलासन था। देवो ने ताराओ और चन्द्रमा के समान धवल चचल चामर निर्मित कर दिए ॥13॥

---

3 AP सिवगोत्त°। 4 P अइसुविवेयउ।

(13) 1. AP मुक्कमाय। 2 AP भवणुय तिट्ठाणिज्जियाउ। 3 AP ध्रुउ। 4. A सयलु वि। 5 AP सपाइउ। 6. A णमतु। 7 AP ववलइ।

14

मुसुमूरंतहु भववइरिवम्मु जणवइ साहंतहु परमधम्मु[1]।
छसयाइं सयद्धविमीसियाइं महियलि विहरंतहु तहु गयाइं।
समेयसिहरि सो रामभिक्खु हणुवंतें सहु संपत्तु मोक्खु।
अवर वि सुग्गीवविहीसणाइं चारित्तवंत जे दिव्व[2] जोइ।
ते सयल भडारा वीयराय अणुदिसणिवासि अहमिंद जाय।
सा सीय पुहइ सा विमलगत्तु पत्ताउ कप्पि कप्पामरत्तु।
लच्छीहरु णरयहु णीसरेवि पावेसइ सिवपउ तउ चरेवि।
भासंति एव परमत्थवाइ संपय कासु वि णउ समउ जाइ।
हरिणा समाण णिवखयणिसीइ के के ण खद्ध महिरक्खसीइ।

घत्ता—सुयरहु[4] गुरुवयणु मा लक्खणपंथें वच्चहु॥
भरहणरिंदथुउ सिरिपुप्फयंतु जिणु अच्चहु॥14॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए
महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे मुणिसुव्वयतित्थसंभूयहरिसेण[5]-
चक्कवट्टिरामबलएवलक्खण-[6]वासुदेवरावणपडिवासुदेव[7]-
गुणकित्तणं णाम एक्कूणासीमो परिच्छेओ
समत्तो॥79॥
॥मुणिसुव्वयचरियं समत्तं॥

---

(14)

भवशत्रु के मर्म का छेदन करते हुए, जनपदों में जिनधर्म का कथन करते हुए, और धरती-तल पर विहार करते हुए जब उनके साढ़े छह सौ साल बीत गए, तब मुनि राम सम्मेद शिखर पर हनुमान् के साथ मोक्ष को प्राप्त हुए। और भी सुग्रीव तथा विभीषण, जो चारित्र से सम्पन्न दिव्य योगी थे, समस्त आदरणीय वीतराग, अनुदिशोत्तर विमान में अहमेन्द्र हुए। पवित्र शरीर वह सीता और सती पृथ्वी कल्पस्वर्ग में कल्पामरत्व को प्राप्त हुईं। लक्ष्मण नरक से निकलकर तप कर शिवपद को प्राप्त करेगा। परमार्थवादी (अध्यात्मवादी) यह कहते हैं कि संपत्ति किसी के भी साथ नहीं जाती। नृपक्षय के लिए निशा के समान भूमिरूपी राक्षसी के द्वारा हरिणों के समान कौन-कौन राजा नहीं खाए गए ?

घत्ता—इसलिए गुरुवचनों का स्मरण करो, लक्ष्मण के रास्ते मत जाओ, भरत नरेन्द्र द्वारा संस्तुत श्रीपुष्पदंत जिनवर की अर्चा करो॥14॥

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त इस महापुराण में, महाकवि पुष्पदंत द्वारा
विरचित तथा महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का मुनिसुव्रत तीर्थंकर
संभूत हरिषेण चक्रवर्ती, राम बलदेव लक्ष्मण वासुदेव, प्रतिवासुदेव
गुणकीर्तन नामक उन्यासीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

(14) 1. P परममग्गु। 2 AP दिट्ठजोइ। 3 AP °णिव° 4. A सुमहुर, P समरहु। 5 A omits हरिसेणचक्कवट्टि° 6. AP omit °लक्खण°। 7 AP omit °रावणपडिवासुदेव°।

असीतिमो संधि

वियसावियभुवणसरोरुहहो केवलणाणकिरणधरहो ॥
पणवेप्पिणु णमिजिणदिणयरहो जणमणतिमिरभारहरहो ॥ध्रुवकं॥

1

दुवई—जेण जिया रउद्द चल पच वि वम्महमुक्कसायया ॥
भवससरणकरणविसवेयसमा विसमा कसायया ॥छ॥
मुक्क मही णिवसगया   समसिद्धंतवसंगया ।
उज्झियजीवसवासणा   विहिया जेण सवासणा ।
जस्स सुधी पिसुणेहले   सरिसा सहले णेहले ।
छिण्णं जेणुद्दामय   आसारइय दामयं ।
णिच्च वणयरकदरे   जो णिवसइ गिरिकदरे ।
ण महइ[1] धम्मे मदय   इच्छइ सासयम दय ।

अस्सीवी संधि

जिन्होने भुवनरूपी कमल को विकसित किया है, जो केवलज्ञानरूपी किरण को धारण करनेवाले हैं, जो जन-मन के अन्धकार को दूर करनेवाले हैं ऐसे नमिरूपी दिनकर को प्रणाम कर,

(1)

जिन्होने भयकर और चचल, कामदेव के पाँचो तीरों को जीत लिया है, और भवसंसरण करानेवाली विषवेग के समान कषायो से विषम नृपसंगत भूमि को छोड़ दिया है, जो शम सिद्धान्त के वशीभूत है, जिन्होने अपने स्वभाव को मृतकभक्षण को छोड़ने के संस्कारवाला बना लिया है, जिसकी शोभना बुद्धि निष्फल दुर्जन और सफल स्नेही जन मे समान है, जिसने उद्दाम आशा द्वारा रचित महान् वचन को तोड़ दिया है, जिसमे कंदमूल खानेवाले भील रहते हैं, ऐसी गिरि-गुफा मे जो नित्य निवास करते है, जो धर्म में शिथिलता को महत्त्व नहीं देते, जो शाश्वत

All Mass. have, at the beginning of this samdhi, the following staza :—

लोके दुर्जनसकुले हतकुले तृष्णावशे नीरसे
सालकारवचोविचारचतुरं लालित्यलीलाधरे ।
भद्रे देवि सरस्वति प्रियतमे काले कलौ साम्प्रत
क यास्यस्यभिमानरत्ननिलय श्रीपुष्पदन्त विना ॥1॥

(1) 1. P वहइ ।

जम्मि थिए सुइजाणए जम्मजलहिजलजाणए।
किं पढंति मयमारया कामधा सामारया।
सइ हंसम्मि सगारव कीस कुणंति वगा रवं[2]।
तं णमिऊण णमीसर तवसिहिहुयवम्मीसर।

घत्ता—पुणु तासु जि चरिउ किं पि कहमि सज्जणकोऊहलजणणु ॥
कहिएण जेण दिहि वित्थरइ सुहु उप्पज्जइ णाणतणु ॥1॥

2

दुवई—जंबूदीवि भरहि सुच्छायउ वच्छउ विसउ[1] बहुधणा ॥
तहिं कोसंवि णयरि चउदारविलंबियरयणतोरणा ॥छ॥

घरगयमोरहंसआहरणहिं कुंकुमपंकपसाहियचरणहिं[2]।
मणिविक्कयमुत्ताहलहारहिं दोसियदसियचीरवियारहिं।
लोहहट्टलोहेण णिबद्धहिं विक्कमाणणाणारसणिद्धहिं।
वलयारा-णपयडियवलयहिं[3] णिच्चभुयगसंगकयपुलयहिं।
विविहधयवडुप्परियणचवलहिं महिलायणकमणेउरमुहलहिं।
मंदिरकणयकलसथणवंतहिं पविमलपाणियछायाकंतहिं।

लक्ष्मी की इच्छा करते है, शास्त्रो के ज्ञाता, तथा जन्म रूपी जलधि के जलयान नमि तीर्थंकर के स्थित होते हुए, पशुओ की हत्या करनेवाले, काम से अन्धे, श्यामा मे रत (मिथ्यादृष्टि) लोग क्या पढते है ? हस के रहते हुए बगुले भला क्या गौरवपूर्ण शब्द करते हैं ? अत: कामदेव को भस्म करनेवाले उन नमीश्वर को प्रणाम कर,

घत्ता—फिर उन्ही का कुछ चरित कहता हूँ जो कि सज्जनो के हृदय मे कुतूहल उत्पन्न करनेवाला है, जिसके कहने से भाग्य का विस्तार होता है और ज्ञानस्वरूप सुख उत्पन्न होता है ॥1॥

(2)

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र मे सुन्दर छायावाला और सम्पन्न वत्स नाम का देश है। उसमे, जिसके चारो द्वारो पर रत्नतोरण लटक रहे है ऐसी कौशाम्बी नगरी है, जो गृहस्थित मयूरो और हंसो रूपी आभरणो से युक्त है, जिसके चरण केशर-पराग से प्रसाधित है, जो मणियों द्वारा बेचे गए मोतियो को धारण करनेवाली है, जो दोसिय (कपडे का व्यापारी, दोषी) व्यक्ति को वस्त्रो का विकार दिखाती है, जो लोह के हाट के लोह (लोहा, लोभ) से निबद्ध है, जो बिकते हुए नाना रसो से स्निग्ध है, जिसके वलयाकार बाजार मे वलय प्रगट हैं, जो नित्य भुजगो (भोगी लोग, कामी लोग) के साथ रोमाच करनेवाली है, जो विविध ध्वजपट रूपी उपरितन वस्त्र से चचल है, जो महिलाजनो के चरणो के नूपुरो से मुखर है, जो मन्दिर के कनक-कलश रूपी स्तनो से युक्त है, जो स्वच्छ जल की छायाकान्ति से युक्त है, जो वदना किए गए जिनालयो

---

2. A वि गारव।

(2) 1. AP देसु। 2 A कुंकुमपंकहिं सोहिय°, P कुंकुमपंकपसोहिय°। 3. A वलयारोवण°।

वंदियधवलजिणालयसेसहि उववणि[4] णिवडियअलिउलकेसहि ।
देउलदंतपंतिदावंतिहि णयरीकामिणीहि णंदंतिहि ।
जणि जाणिउ इक्खाउ पहाणउ पत्थिउ णामे णिवसइ राणउ ।
सइ कलहंसवसवीणाझुणि णामेण[5] जि तहु सुंदरि पणइणि ।
वासपवेसु[6] व पुण्णपसत्थहं सुउ सिद्धत्थु सव्वपुरिसत्थहं ।

घत्ता—ता णरेण णरिंदहु विण्णविउ विद्ध सियजणदुच्चरिउ ॥
मणहरि[7] णंदणवणि अवयरिउ मुणिवरु णामे आयरिउ[8] ॥2॥

3

दुवई—ता सहुं सुंदरीइ सहु तणए सहुं परिवाररिद्धिए ॥
गउ णरवइ वणंतु वंदिउ मुणि मणवयकायसुद्धिए ॥छ॥

राए भुवणभोरुहणेसरु पुच्छिउ तच्चु कहइ परमेसरु ।
अप्पउ एक्कु णाणदंसणतणु णिज्जरु दुविहु दलियदुक्कियमणु[1] ।
जोय तिण्णि गारव असुहिल्लइं जीवगईउ तिण्णि मणसल्लइं ।
तिण्णि[2] गुणव्वय चउ सिक्खावय चउ कसाय कयचउगइसपय ।
चउ विण्णासवयइं चउ झाणइं पंच सरीरइं पंच[3] वि णाणइं ।

के निर्माल्य से सहित है, जो उपवन में आते हुए अलिरूपी केशकुलवाली है, जो देवकुल रूपी दाँतों की पंक्ति दिखानेवाली है, ऐसी आनन्द करती हुई नगरी रूपी कामिनी के लोगों में इक्ष्वाकु कुल का प्रधान पार्थिव नाम का राजा था। उसकी कलहंस और वीणा के समान स्वरवाली सुन्दरी नामकी सती पत्नी थी। पुण्य से प्रशस्त सर्वपुरुषार्थों में अभिनव गृहप्रवेश के समान सिद्धार्थ नाम का पुत्र था।

घत्ता—तब किसी आदमी ने आकर राजा से निवेदन किया—जिन्होंने लोगों के दुश्चरित्र का विध्वंस कर दिया है, ऐसे आचार्य नाम के मुनिवर मनोहर उद्यान में अवतरित हुए हैं।

(3)

तब सुन्दरी के साथ, पुत्र के साथ और परिवार की ऋद्धि के साथ, राजा वन में गया। उसने मन-वचन-काय की शुद्धि से मुनिवर की वन्दना की। राजा के द्वारा पूछे जाने पर विश्व-रूपी कमल के सूर्य परमेश्वर ने तत्त्व का कथन किया—आत्मा ज्ञान-दर्शनस्वरूप है, दुष्कृत मन का नाश करनेवाली निर्जरा दो प्रकार की है। योग तीन प्रकार का है (मनोयोग, वचनयोग और काययोग)। तीन अशुभ गर्व हैं। जीव की तीन गति हैं (पाणिमुक्त, गोमूत्रिका और लांगलिका)। मन की तीन शल्य हैं। गुणव्रत तीन हैं। शिक्षाव्रत चार हैं। चार गतियों को प्राप्त करानेवाली चार कषायें हैं। विन्यासव्रत चार प्रकार के हैं (नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव के भेद से)। चार ध्यान हैं, पाँच शरीर और पाँच ज्ञान हैं। पाँच महाव्रत और पाँच आचार हैं। विश्व में श्रेष्ठ

---

4. A उववणिवडिय° । 5. A तहु णामे सुंदरि पहुपणइणि, P तहु णामे सुंदरि पियपणइणि। 6. A वासुपवेसु। 7. A मणहर° । 8. P आइरिउ।

(3) 1. P दुक्कियगणु। 2. P तिण्णि वि गुणवय। 3. P पंच जि।

पच महव्वयाइ आयारइं पचाणुव्वयाइं जगसारइ।
समिदीउ पच रइयगुणछायउ भणियउ पचवीस वयमायउ।
जे लोउत्तमणाहे[4] सिट्ठा ते पंचत्थिकाय उवइट्ठा।
भासियाइ पंचासवदारइं पचिंदियइ गहीरवियारइं।
जीवणिकायभेय छावासय छद्दव्वइ छव्विह लेसासय।
तच्चइ सत्त सत्त णय ससिय सत्त वि भय रिसिणा उवएसिय।
कम्मइ अट्ठ अट्ठ मय कयमल अट्ठ महीउ अट्ठ वितरकुल।
णव पयत्थ णव बलणारायण धम्मभेय दह पसमुप्पायण।
एयारह सावयगुणठाणइं बारह अगइ सत्थणिहाणइं।
बारह तव तेरह चारित्तइं चोद्दह पुव्वइ मुणिणा वुत्तइ।

घत्ता—पायालु[5] सग्गु णरवरभुवणु भयवंतेण पयासियउं॥
ज किं पि जिणागमि लक्खियउं तं णीसेसु वि भासियउं॥3॥

4

दुवई—राएं रायपट्टु सिद्धत्थहु भालयले णिवेसिओ॥
णिसुणिवि चारु धम्मु अरहतहु अप्पुणु तवु समासिओ॥छ॥
लइय दिक्ख जिणवरु पणवेप्पिणु पायपुज्जगुरुपाय णवेप्पिणु।
सिद्धत्थु वि घरवयअइसइयउ थिउ सम्मत्तरयणचिंचइयउ[1]।
जलणिहिजलवलइयजयसिरिसहि[2] भुजतेण तेण सयल वि महि।

पाँच गुणव्रत है। पाँच समितिया, जो गुणों को आश्रय देनेवाली है, व्रत के हिसाब से पच्चीस कही जाती है। लोकोत्तर स्वामी ने जिनका कथन किया है उन पचास्तिकाय का भी उपदेश उन्होने किया। पाँच आस्रवद्वारो और गम्भीर विचरित पाँच इन्द्रियो का कथन किया। जीवनिकाय के भेद, छह आस्रव, छह द्रव्य और छह प्रकार के लेश्याभाव, सात तत्त्व और सात नयो की प्रशसा की। महामुनि ने सप्तभय का भी उपदेश किया। कर्म आठ और मल उत्पन्न करनेवाले आठ मद है। आठ भूमियाँ और आठ व्यतरकुल है। नौ पदार्थ है। नौ बलभद्र, नौ नारायण है। शाति उत्पन्न करनेवाले दस धर्म है। श्रावक के ग्यारह गुण और स्थान है। शास्त्रो का समूह बारह अग वाला है। बारह तप, तेरह प्रकार के चरित्र हैं। चौदह पूर्वो का भी मुनि ने कथन किया।

घत्ता—ज्ञानवान् उन्होने पाताल, स्वर्ग, नरलोक का प्रकाशन किया। जो कुछ भी जिनागम मे लिखा है, उस सबका नि शेष भाव से कथन किया।

(4)

राजा ने सिद्धार्थ के भालतल पर राजपट्ट रख दिया और अरहत का मनोज्ञ धर्म सुनकर स्वय ने तप स्वीकार कर लिया। जिनवर को प्रणाम कर और पूज्यपाद गुरु के चरणो को नमस्कार कर उन्होने दीक्षा ले ली। सिद्धार्थ भी गृहव्रतों मे अतिशय सम्यक्दर्शन से शोभित होकर स्थित हो गया। जलनिधि जल तक विस्तृत विजयश्री की सखी धरती का भोग करते हुए उसने

4. A लोयतत्तणाहे। 5. A पायाल।

(4) 1. A समत्तु रयणु। 2. P °ज्जवलइय°।

णिसुय वत्त जिह जणणु जईसरु मुउ सणासें णिण्णासियसरु ।
तणयहु विणयपणयवित्थिण्णहु ढोइवि णियकुलसिरि सिरिदिण्णहु ।
वग्गुरवेढु गाढु मणहरिणहु किउ तवचरणु[3] हरणु जमकरणहु ।
तहिं जि मणोहरवणि तणुताविउ[4] मुणिवरु गुरु सब्भावें सेविउ ।
सो अप्पउं जिणभावें रजइ लद्धउ कालि सुणीरसु भुंजइ ।
मउणु[5] करइ अह थोवउ जपइ बधमोक्खु ससारु वियप्पइ ।
विकहउ ण कहइ ण सुयइ ण सुणइ धम्मज्झाणु रिसि णिविसु[6] वि ण मुयइ ।
जग्गइ इंदियचोरहु एतहं सीलदविणु बलि मड्ड[7] हरतहं ।
रत्तिदिवसु उब्भुब्भउ अच्छइ सत्तु वि मित्तु वि सरिसउ पेच्छइ ।
देहि णेहु किं पि वि ण समारइ पुव्वभुत्तु मणि[8] ण सरइ मारइ ।
मलपविलित्तइ अट्ठइ अगइ धरियइ तेणेयारह अगइ ।
धीरें[9] सच्चु तच्चु णिज्झायउ खाइउ दसणु खणि उप्पाइउं ।
सोलह थिर हियएण धरेप्पिणु जिणजम्मणकारणइ चरेप्पिणु ।

घत्ता—सो अणसणु करिवि पसण्णमइ मुणि पडियमरणेण मुउ ॥
अवराइउ ससहरकरधवलि मणिविमाणि अहमिंदु हुउ ॥4॥

जैसे ही सुना कि कामदेव का नाश करनेवाले योगीश्वर पिता सन्यासपूर्वक को मृत्यु प्राप्त हुए, विनय और प्रणय से विस्तीर्ण पुत्र श्रीदत्त को अपनी कुलश्री देकर उसने तपश्चरण ले लिया, जो मनरूपी हरिण के लिए अत्यत वागुर का बध और रोग का हरण करनेवाला था। उसी मनोहर उद्यान मे शरीर से सतप्त गुरु की सद्भाव से सेवा की। वह स्वयं को जिनभाव से रजित करता है, समय से प्राप्त नीरस भोजन करता है, या तो वह मौन रहता है या थोडा बोलता है। वन्ध, मोक्ष और ससार का विचार करता है। विकथा न वह कहता है, न सुनता है। वह मुनि एक पल के लिए भी धर्मध्यान नही छोडता। शील रूपी धन का जबरदस्ती अपहरण करने आते हुए इन्द्रिय रूपी चोरो से जागता रहता है। रात-दिन दोनो हाथ उठाए रहता है, शत्रु और मित्र को समान-भाव से देखता है। देह मे वह नख के बरावर भी समादर नही करता। पूर्व मे भोगी गई रति और लक्ष्मी को वह बिल्कुल भी याद नही करता। मल से निलिप्त आठो अगो और ग्यारह अंगो को उसने धारण किया है। उस धीर ने सत्य और तत्त्व का ध्यान किया। एक क्षण मे उसे क्षायिक सम्यग्दर्शन उत्पन्न हो गया। जिनजन्म की कारणस्वरूप सोलह स्थिर भावनाओ को हृदय में धारण कर और आचरण कर,

घत्ता—अनशन कर वह प्रसन्नमति मुनि पण्डितमरण से मृत्यु को प्राप्त हुआ। वह चन्द्र-किरणो के समान धवल मणिमय अपराजित विमान मे अहमेन्द्र हुआ।

---

3. A तवयरणु। 4 AP तवताविउ। 4 AP मोणु । 6 A णिमिसु । 7. AP मड। 8. P रणि। 9 P वीरें।

5

दुवई—वरणीहारहारपडुरयर रयणिपमाणियगओ ॥
णिप्पंडियारसारसुहरसणिहि गयरमणीपसगओ[1] ॥छ॥

जो णीसासवाउ कयसखहिं मुयइ कहिं मि तेत्तीसहिं पक्खहिं ।
माणियअमरालयसिरिहृदइ आउ जासु तेत्तीससमुद्दइ ।
तेत्तियवरिससहासहिं भोयणु जो अहिलसइ सोक्खसपायणु ।
सुक्कलेसु मज्झत्थु महाहिउ तहु छम्मासकालु जइयहु थिउ ।
तइयहुं घरसिरिसिठियखयरिहि[2] वगदेसि वरमिहिलाणयरिहि[3] ।
इदाएसें धणएं रइयहु विविहमहामाणिक्कहिं खइयहु ।
विविहहट्टटेंटारमणीयहि विविहमाणिणीयणसगीयहि ।
विविहारामहिं विविहणिवासहि विविहसिहरआलिहियायासहि ।

घत्ता—तहि विजयराउ णामें नृवइ[4] णिवसइ णवणिसियासिकरु ॥
छायायरु जणसतावहरु ण वरिसंतउ अबुहरु ॥5॥

6

दुवई—तहु घरि घरणि[1] देवि परमेसरि वप्पिल चारुचारिणी ॥
हिरिसिरिकंतिकित्तिदिहिलच्छिहिं सेविय हिययहारिणी ॥छ॥

---

(5)

वह श्रेष्ठ नीहार और हार के समान धवल, एक हाथ प्रमाण देहवाला, प्रतिकार से रहित श्रेष्ठ सुख, रसनिधि और रमणी-प्रसग से रहित था। वह तेतीस पक्षो मे कभी नि श्वास वायु छोडता। उसकी आयु अमरालय के कल्याणो को मानने वाली तेतीस सागर प्रमाण थी। तेतीस हजार वर्ष में वह सुख को सम्पादन करनेवाले भोजन की इच्छा करता था। वह शुक्ल लेश्या-वाला और मध्यस्थ था। जब उसकी अधिक-से-अधिक आयु छह माह शेष रह गई, तब बग देश की, जिसके गृह-शिखरो पर विद्याधरियाँ स्थित है, इन्द्र के आदेश से धनद के द्वारा रचित, विविध महामाणिक्यो से विजडित, विविध हाटो और द्यूतगृहो से रमणीय, विविध मानिनी-जनो द्वारा संगीयमान, विविध उद्यानो, विविध गृहो-शिखरो से जिसके आकाश प्रदेश आलिखित हैं—ऐसी उस मिथिला नगरी मे—

घत्ता—विजय नामक नवीन तलवार अपने हाथ मे लेनेवाला विजयराज नामक राजा था। मानो वह छाया करनेवाला तथा लोगो का सताप दूर करनेवाला बरसता हुआ मेघ हो।

(6)

हे देव, उसके घर मे सुन्दर आचरण करनेवाली वप्रिल नाम की परमेश्वरी गृहिणी थी। जो ह्री, श्री, कान्ति, कीर्ति, धृति और लक्ष्मी द्वारा सेवित तथा हृदयहारिणी थी। सुख

---

(5) 1. AP °रमणीयसगहो। 2. P खगसिरि°। 3. AP °मिहला°। 4. P णिवइ।
(6) 1. AP घरिणि।

सुह सुत्ताइ ताइ अलिमालिउ सिविणइ णिसिहि विरामि णिहालिउ ।
करि करडयलगलियचुय[2]मयजलु[3] अणड्डु खरखुरजुयखयधरयलु ।
हरि हरिकुलिसकढिणणहहयगिरि गयकरकलससलिलण्हावियसिरि[4] ।
पसरिय परिमलमहुयरसवलिय सर कुसुममय मिलिय णहविलुलिय ।
कुवलयदलविलसियकरु[5] ससहरु मिहिरु गयणमहीदिसिगयतमहरु ।
झस भमिर रमिर रइववसिय घड जलभरिय हरियकिसलयच्चिय ।
सरवरु सकमलु सरिवइ समयरु मणिहरियासणु जियसुरमहिहरु ।
विसहरभवणु सुमहु सयमहघरु[6] ।
रयणणियरु पहहयरवियरविडु हुयवहु कणयकविलदीहरसिहु ।
घत्ता—इय जोइवि सिविणय सोलह वि अक्खिउ मुद्धइ[7] णियपइहि[8] ।।
तेण वि देसावहिलोयणिण फलु वियरिउ[9] गयवरगइहि ।।9।।

7

दुवई—सयलसुरिंदवंदु गुणगणणिहि णिरुवमु णिसुणि सुंदरी ।।
होही तुज्झु पुत्तु गुरुहु मि गुरु कामकरिंदकेसरी[1] ।।छ।।
हुउ अद्ध[2] वरिसु घरि रयणवरिसु ।
सरयावयासि भद्दवयमासि[3] ।

से सोई हुई उसने रात्रि के विरामकाल मे स्वप्नमाला देखी। जिसके गण्डस्थल से मदजल चू रहा है ऐसा हाथी, अपने तीव्र दोनो खुरो से धरतीतल को खोदता हुआ बैल, इन्द्र के वज्र के समान कठोर नखो से गिरि को आहत करनेवाला सिंह, हाथियो की सूडो के कलश-जल से अभिषिक्त लक्ष्मी, परिमल और मधुकरो से मिश्रित जुडी हुई आकाश मे झूलती मालाएँ, जिसकी किरणे कुमुददलो को विकसित करनेवाली है ऐसा चन्द्रमा, आकाश धरती और दिशाओ मे अन्धकार को दूर करनेवाला दिनकर, रति के लिए उद्यत एव क्रीडा करता हुआ भ्रमणशील मत्स्य, हरे कोपलो से आच्छादित जल से भरा घडा, कमल सहित सरोवर, मगर सहित समुद्र, देवपर्वत को जीतनेवाला रत्नो का सिंहासन, नागभवन, अत्यन्त विशाल इन्द्रभवन, प्रभा से सूर्य की किरणों की विभा को आहत करनेवाला रत्नसमूह तथा कनक और कपिल रग की लम्बी ज्वाला वाली आग।

घत्ता—इस प्रकार सोलह स्वप्नो को देखकर उस मुग्धा ने अपने पति से कहा। उसने भी देशावधिज्ञान के लोचन से उस गजगामिनी को फल बताया ।।6।।

(7)

हे सुन्दरी सुनो, तुम्हारा पुत्र सकल सुरेन्द्रो के द्वारा वदनीय, गुणगण की निधि और अनूपम, गुरुओ का गुरु तथा कामरूपी करीन्द्र के लिए सिंह होगा। आधे वर्ष तक घर में रत्नों की वर्षा

---

2 AP °वल° । 3. P °मयइलु । 4 A °सुण्हविसिरि, P °सुण्हविय । 5. P °वियसिययरु । 6. P सयमयघरु । 7. A सुद्धइ । 8. APणियवइहि । 9 AP विवरिउ गरवर° ।

(7) 1. P कालकरिंद° । 2 A मद्धवरिसु । 3 AP वस्सणहु भासि ।

ससिधवलपक्खि[4] आसिणिसुरिक्खि ।
बीयहि जिणिंदु जगकुमुयचंदु ।
थिउ गब्भवासि संसारणासि ।
आयामरेहि चलचामरेहिं ।
झुल्लइ णहतु ढकिउ दियंतु ।
णहणिवडमाणु[5] वसु अप्पमाणु ।
जोइउ णरेहिं पणवियसिरेहिं ।
णिवभवणि ताव णवमास जाव ।
मुणिसुव्वयम्मि पालियवयम्मि ।
भवभावचत्ति[6] णिव्वाणपत्ति[7] ।
गय सट्ठि[8] लक्ख वरिसहं ससख ।
तइयहु अउण्ह- आसाढकण्ह-
पक्खतरालि कयअमररोलि ।
आणंदपुण्णि दिम्मुहि पसण्णि ।
अइसुरहिवाइ दुंदुहिणिणाइ ।
चुयगंधसलिलि सुरघित्तकमलि ।
कंतीइ[9] कंति दहमइ दिणंति ।
सुहसगमेण जायउ कमेण ।
तेलोक्कणाहु अहयदराहु ।
पयपणयधणउ वप्पिलहि[10] तणउ ।

घत्ता—णिउ देवहिं मंदरमहिहरहु पुज्जाविहि समाणियउ ॥
पडुपडहभेरिमंगलरविण जयजयसद्दें ण्हाणियउ ॥7॥

हुई। जिसमें मेघों को अवकाश है इसे भाद्र माह के कृष्ण पक्ष मे अश्विनी नक्षत्र में द्वितीया के दिन, संसार का नाश करनेवाले, विश्वरूपी कुमुद के लिए चन्द्र, जिनेन्द्र गर्भ मे स्थित हुए। चचल चमरो वाले आए हुए अमरों से आकाश आन्दोलित हो उठा, दिगन्त आच्छादित हो गया। लोगो ने प्रणत सिरो से आकाश से गिरते हुए अप्रमाण धन को देखा। तब तक कि जब तक नौ माह हुए, जिन्होने व्रत का पालन किया है ऐसे मुनिसुव्रत तीर्थंकर के, ससार भावना से परित्यक्त निर्वाण प्राप्त कर लेने के बाद जब साठ लाख वर्ष बीत गए, तब आषाढ माह के, जिसमे देवो का शब्द हो रहा है, जो आनन्द से पूर्ण है, जिसमें दिशामुख प्रसन्न है, जिसमें सुरो से अति-आहत दु दुभि का निनाद हो रहा है, सुगधि जल वह रहा है, देवो द्वारा कमल बरसाए जा रहे है, जो काति से सुन्दर है, ऐसे दसवी के दिन, क्रम से शुभ सगम होने पर, त्रिलोक का स्वामी और जिसके चरणो में अहमेन्द्र प्रणत है, वप्पिला को ऐसा पुत्र हुआ।

घत्ता—देवो के द्वारा उसे मन्दराचल पर्वत पर ले जाया गया, वहाँ पूजाविधि की गई। पटु, पटह और भेरि के मगल स्वर और जय-जय शब्द के साथ उन्हे अभिषिक्त किया गया।

4. AP ससिखीणपक्खि। 5 AP णहि णिवडमाणु। 6. A °वत्ते। 7. AP णिव्वाणु। 8. AP गय लेसलक्ख। 9. P कतीसकति। 10. AP वप्पिल्लहि।

8

दुवई—पुज्जिवि ण्हविवि भणिउ णमिजिणवरु गुणमणिरुइरवण्णओ[1] ॥
णाणत्तयसमेउ परमेसरु उज्जलकणयवण्णओ ॥छ॥
आणिवि[2] पुणु वि णिहिउ जणणहु घरि वड्ढिउ जिणु कुमारु हंस व सरि
वड्ढिउ तवसताउ[3] व कामहु वड्ढिउ दाहु व इंदियगामहु ।
वड्ढिउ मेहु व कोवहुयासहु वड्ढिउ मतु व भवभयतासहु ।
वड्ढिउ हेउ व पवरसुहेल्लिहि वड्ढिउ णवकंदु व दयवेल्लिहि ।
वड्ढिउ देवदेउ वररूवउ पण्णारहधणुदेहु पहूयउ ।
दससहास वरिसहं परमाउसु अड्ढाइज्ज ताइं कीलावसु ।
थिउ कुमारु कुमरत्तणलीलइ पट्टु णिबद्धउ वियलियकालइ ।
वरिसहं पचसहासइं खीणइं[4] रज्जु करंतहु तहु वोलीणइं ।
घत्ता—ता णवघणसमइ पराइयइ सुरधणु जणकोड्डावणउं ॥
सोहइ उवरित्थु पयोहरहं ण णहसिरिउप्परियणउ ॥8॥

9

दुवई—णाच्चियमत्तमोरगलकलरवि पसरियमेहजालए ॥
पवसियपियहि[1] दीहणीसासरुहाणलधूमकालए ॥छ॥

---

(8)

पूजा कर स्नान कराकर, गुणरूपी मणियो की कान्ति से रमणीय, तीन ज्ञान से युक्त और उज्ज्वल स्वर्ण वर्णवाले परमेश्वर को नमि जिनवर कहा गया। उन्हे लाकर, फिर से माता के गृह मे स्थापित कर दिया गया। सरोवर मे हंस की तरह कुमार बढने लगा। काम के सताप की तरह वह बढने लगा, इन्द्रिय समूह के दाह के समान वह बढने लगा। कोपरूपी हुताशन के लिए मेघ के समान वह बढने लगा। भवभय के सत्रास के लिए मन्त्र के समान वह बढ़ने लगा। प्रवर सुख क्रीडाओ के कारण की तरह वह बढने लगा। दयारूपी लता के नव अकुर के समान वह बढ़ने लगा। सुन्दर रूपवाले देवाधिदेव बढ़ते गए और पन्द्रह धनुप प्रमाण शरीर वाले हो गए। उनकी परमायु दस हजार वर्ष की थी, उसमे ढाई हजार वर्ष क्रीडा मे निकल गए। कुमार कौमार्य की लीला मे रत हो गए। समय बीतने पर उन्हे पट्ट बाँध दिया गया। पाँच हजार वर्ष क्षीण हो गए, राज्य करते हुए उनका (इतना) समय चला गया।

घत्ता—तब नवघन का समय आने पर, मेघो के ऊपर स्थित, लोगों को कुतुहल उत्पन्न करनेवाला इन्द्रधनुष ऐसा शोभित हो रहा था मानो आकाश रूपी लक्ष्मी का उपरितन वस्त्र (दुपट्टा) हो। ॥8॥

(9)

जिसमे मतवाले मयूर-सुन्दर कण्ठ-ध्वनि से नृत्य कर रहे हैं, जिसमें मेघजाल प्रसरित हो रहा है तथा प्रवसतपतिका के लिए जो दीर्घ नि श्वासो से उत्पन्न अग्निधूम का समय है, ऐसे

---

(8) 1 AP रुइवण्णओ। 2 A आणेप्पिणु णिहिउ। 3 तणुसवाउ। 4. AP झीणइं।
(9) 1 AP पवसियमुक्कदीह°।

तडिविप्फुरणफुरियपविउलणहि वारिपूरपेल्लियदसदिसिवहि।
छुडु जि छुडु जि वप्पीहे घोसिउ छुडु जि छुडु जि केयइवणु[2] वियसिउ।
छुडु जि कयवगंधु[3] उच्छलियउ छुडु पप्फुल्लउ मालइकलियउ।
छुडु पथियपियथम उक्कंठिय छुडु छुडु वायस वासपरिट्ठिय।
हरियतिणकुरोहदिण्णाउसि[4] वरिसमाणि छुडु पत्तइ पाउसि।
लीलाचरणचारचोइयगउ वणकीलाविहारि पहु णिग्गउ।
कडयकिरीडहारकुंडलधर[5] ता थिय सुरवर णहि मउलियकर।
विण्णवंति पणवंति कयायर णिसुणि णिसुणि भो गुणरयणायर।
इह दीवंतरि पुव्वविदेहइ तहिं वच्छावइविजइ सुगेहइ।
दविणणिवेइयकामुयकामहि णयरिहि [6]सुहलियसीमसुसीमहि।
आयउ वम्महवाणकयंतउ अवराइयहु विमाणहु होंतउ।

घत्ता—णिज्जियमणु तवसिहितत्ततणु कम्मबंधणिण्णासयरु॥
अवराइउ णामे लोयगुरु तहिं उप्पण्णउ तित्थयरु॥9॥

10

दुवई—असरिसविसमविरसविससणिहदुक्कियजलणजलहरा॥
आया तस्स चरणपणवणमण रविससहरसुरासुरा[1]॥छ॥

काल मे जबकि बिजलियो की चमक से विशाल आकाश चमक रहा है और सभी दिशापथ जलप्रवाहो से आपूरित है। चातक ने शीघ्र से शीघ्र घोषणा की, शीघ्र से शीघ्र केतकी वन खिल उठा। शीघ्र ही कदम्ब की गन्ध उछल पड़ी, शीघ्र ही मालती की कलियाँ खिल गईं। शीघ्र ही पथिक प्रियतम उत्कण्ठित हो उठे। शीघ्र ही वायस घरो के ऊपरी भागो पर स्थित हो गए। जिसने हरे-हरे तिनको के लिए आयु प्रदान की है ऐसे बरसते हुए पावस के प्राप्त होने पर, जिसने खेल-खेल मे चरण के चलाने से गज को प्रेरित किया है ऐसा राजा वन-क्रीडा के लिए चला। तब कटक, मुकुट, हार और कुंडल को धारण करनेवाले और हाथ जोडे हुए देव आकाश मे स्थित हो गए। किया है आदर जिन्होने ऐसे वे प्रणाम करते हैं और निवेदन करते है—हे गुणरत्नाकर देव, सुनिए, सुनिए। इस द्वीप के पूर्व विदेह मे सुन्दर गृहोंवाला वत्सकावती नाम का देश है। जिसमे कामुको की कामनाएँ धन से निवेदित की जाती है तथा जिसकी सीमा अच्छी तरह फलित है ऐसी सुसीमा नगरी मे कामदेव के बाणो के लिए यम के समान तथा अपराजित विमान से होता हुआ—

घत्ता—अपने मन को जीतनेवाला, तप की ज्वाला से संतप्त-शरीर, कर्मबन्धन का नाश करनेवाला, अपराजित नामक लोकगुरु तीर्थंकर उत्पन्न हुआ है।

(10)

असदृश विषम और विरस विष के समान दुष्कृत रूपी ज्वाला के लिए मेघ के समान, रवि, चन्द्रमा, सुर और असुर उनके चरणो मे प्रणमन करने की इच्छा से आए। जिसमे अमर विला-

2. AP केइयवणु। 3. P कमलगंधु। 4 AP °तणकुरोह। 5. AP °कुंडलहर। 6. A सुललिय°।
(10) 1. AP णरविसहरसुरासुरा।

अमरविलासिणिणच्चणतडवि जंपिउ केण वि तहु सहमडवि।
सपइ देहिदेहहयमयजरु[2] जबूदीवभरहि को जिणवरु।
केवलणाणसमुग्गयणयणे भणिउ जिणेण विणासियमयणे।
वगदेसि कुसुमरयसुकविलहि णववणणीलहि णयरिहि मिहिलहि।
उप्पण्णउ अच्छइ जगसकरु णमिणामकु भाविंतित्थकरु।
पवरविमाणहु हिमयरधामहु अवइण्णउ अवराइयणामहु।
भावाभावइ चित्तइ[3] जाणइ देवविइण्णइ सुक्खइ माणइ।
धादइसडि दीवि तउ[4] चिण्णउ दोहिं मि देवत्तणु सपण्णउ।
पढमि सग्गि सोहम्मि मणोहरि रयणकिरणजालचियसुरहरि।
त णिसुणेप्पिणु मइमल धोयहुं अम्हइ आया तुह पय जोयहुं।
त[5] हियउल्लइ धरिवि णरेसरु णयरि पइट्ठु ललियगब्भेसरु।
तहु जिणवरहु जम्मसबधइ सुयरेप्पिणु[6] णियभवइ सचिधइ।

घत्ता—चिंतइ वसुहाहिउ णियहियइ बुद्धु सबोहिइ बुद्धउ ॥
जगि जीउ जहिं जि हुउ तहिं तहिं जि रमइ सकम्मणिवद्धउ ॥10॥

11

दुवई—हिंडइ भवसमुद्दि अण्णाणविलुटियणाणलोयणो ॥
पुत्तकलत्तमित्तवित्तासापासणिरुद्धचेयणो[1] ॥छ॥

सिनियो के नृत्य का विस्तार हो रहा है, ऐसे उनके सभा-मण्डप मे किसी ने पूछा—"इस समय जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र मे शरीरधारियो के कामज्वर को नष्ट करनेवाले कौन जिनवर है? जिसने कामदेव का नाश कर दिया है ऐसे केवलज्ञान से उत्पन्न नेत्र वाले अपराजित ने कहा—वग देश की पुष्पधूलि से अत्यन्त कपिल, नववन से नीली मिथिला नगरी मे उत्पन्न, विश्व के लिए सुख देनेवाले नमि नाम के भावि तीर्थंकर है। चन्द्रकिरण के समान धामवाले अपराजित नाम के विशाल विमान से अवतीर्ण वह विचित्र भाव-अभावो को जानते है, देवो द्वारा प्रदत्त सुखो का भोग करते हैं। धातकीखण्ड द्वीप मे दोनो ने तप ग्रहण किया था और दोनो ने प्रथम स्वर्ग सुन्दर सौधर्म के रत्नकिरणो के जाल से अचित देवविमान मे देवत्व प्राप्त किया था। यह सुनकर हम दोनो अपना मतिमल धोने और तुम्हारे चरणकमल देखने के लिए आए हैं। यह बात अपने हृदय मे धारण कर, सुन्दर गर्वेश्वर राजा ने अपनी नगरी मे प्रवेश किया। उन जिनवर के सबधो और चिह्न सहित अपने जन्मान्तरो की याद कर—

घत्ता—राजा विचार करता है कि जानकार ही जानकार को सम्बोधित कर सकता है। यह जीव जग मे जहाँ भी उत्पन्न होता है, अपने कर्म से निबद्ध होकर वही रमण करता है।

जिसका ज्ञानरूपी नेत्र अज्ञान से बन्द है तथा पुत्र-कलत्र-मित्र और वित्त के आशारूपी

---

2. AP देहि देउ। 3. AP चितइ। 4. AP वउ। 5. A तहि हिय°। 6. P सुमरेप्पिणु।
(11) 1. A °चितासापास°।

इय झायतु देउ उम्मोहिउ सारस्सयसुरवरहिं[2] संबोहिउ ।
तणयहु वरसरीरसुहकारिणि दिण्ण तेण सधराधर धारिणि ।
सुप्पहणामहु पट्टु णिबंधिवि धम्मझाणु हियउल्लइ संधिवि ।
अमरवराहिसेउ पावेप्पिणु धणु परियणु तणु जिह मिल्लेप्पिणु ।
सुमहिउ सयमहेण महिरूढउ उत्तरकुरुसिवियहि आरूढउ ।
गउ आसाढमासि घणसामलि अस्सिणिरिक्खि पक्खिससिउज्जलि ।
दसमइ दिवसि मुहुत्ति पहाणइ फलपणविइ चित्तवणुज्जाणइ ।
लइय दिक्ख सिद्धाण णवंते धरपुरवरमहिमोहु मुयंते ।
मुक्कबरइ[3] विलुंचियकेसइ पहु आलिंगिउ दिक्खावेसइ ।
लइयएण छट्ठे णुववासे सहु सुसीलखत्तियह सहासे ।
इदचदणाइदणमंसिउ[4] मणपज्जवणाणेण विहूसिउ ।
वीरणयरि दत्तहु णरणाहहु वीरलच्छिसुपसाहियबाहहु ।
घरि पारणउं कयउ परमेसें सुरकयपचच्छरियविलासें ।
घत्ता—णववरिसइ दुद्धरु[5] तउ चरिवि तिण्णि वि सल्लइं वज्जियइं ।।
रसगंधफाससुइलोयणइं पंचिंदियइं परज्जियइं ।।11।।

12

दुवई—वसुहं हिंडिऊण गउ पुण रवि तं दिक्खावण घणं ।।
कुसुमियफलियललियतरुसाहाकीलियहसबरहणं ।।छ।।

---

(11)

पाश मे निरुद्धचेतन यह जीव ससार-समुद्र मे भ्रमण करता है यह विचार करते हुए देव मोह से दूर हो गये। लोकातिक देवो ने आकर उन्हे सम्बोधित किया। श्रेष्ठ शरीर का शुभ करनेवाली सधराधर धरती उन्होने अपने पुत्र के लिए प्रदान कर दी। सुप्रभ नामक पुत्र को पट्ट बाँधकर हृदय मे धर्म का सधान कर, देवो द्वारा वर-अभिषेक पाकर, धन और परिजन को तृण की तरह त्यागकर, इन्द्र के द्वारा पूजित धरती पर प्रसिद्ध, उत्तर कुरु शिविका पर आरूढ होकर, आषाढ माह के कृष्ण पक्ष की दसवी के दिन आश्विन नक्षत्र मे, फलो से विनम्र चित्र-वन उद्यान मे सिद्धो को नमस्कार करते हुए, घर, पुरवर और धरती का मोह छोडते हुए प्रभु मुक्ताम्बर (मुक्तवस्त्र) वाली और विलुचित केशवाली दीक्षा रूपी वेश्या के द्वारा आलिगित किए गए। छठा उपवास ग्रहण करते हुए, एक हजार सुशील क्षत्रियो के साथ, इन्द्र, चन्द्र और नागेन्द्रो के द्वारा वन्दनीय, मन.पर्ययज्ञान से विभूषित, वीर नगर मे वीरलक्ष्मी से सुप्रसाधित-बाहु राजा दत्त के घर, परमेश्वर ने देवी द्वारा किये गये पाँच आश्चर्य विलास के साथ पारणा की।

घत्ता—नौ वर्षो तक दुर्धर तप कर उन्होने तीन शल्यो को छोड दिया। रस, गन्ध, स्पर्श, श्रुति और लोचन—पाँचो इन्द्रियो को जीत लिया गया ।।11।।

धरती पर विहार कर वह पुन उसी दीक्षा-वन में गए कि जहाँ कुसुमित फलित वृक्षो की

---

2. AP सारस्सयसुरेहिं। 3 A मुक्कवरपविलुंचिय°। 4. AP °णायद°। 5 AP दुच्चरु चरिवि तउ।

तहिं रिसि तवसंतावें रीणउ बउलमहीरुहतलि आसीणउ।
मग्गसिरइ सिसिरेइ संपत्तइ पक्खि मियंककरावलिदित्तइ।
तइयइ सासिणिदियहि वियालइ णिल्लूरियमहंततमजालइ।
उप्पण्णेण णवियगिव्वाणें दिट्ठइं देवें केवलणाणें।
सुहुमइ अवरंतरियइ[1] दूरइं पच्चक्खाइ सुभेयगहीरइं[2]।
पोग्गलाइ पूरियगलियंगइ गधवण्णपरिणामवसंगइ[3]।
मल्लयमुरयवज्जणिहु तिहुवणु ओग्गाहणलक्खणु गयणगणु।
कालु वि लक्खिउ जायपवत्तणु अप्पउं सयणु अयणु चेयणगुणु।
धम्माधम्मु बे वि गइठाणइ बुज्झिय सतें सुद्धपमाणइ।
ता दसदिसिवहेहिं[4] आवतहिं जय जय जय[5] मुणिणाह भणतहिं।

घत्ता—पूएप्पिणु वियसियसुरहियहिं कुसुमहिं कुसुमसरत्तिहरु ॥
चउदेवणिकायहिं णमिउ णमि पसमपरिग्गहु परमपरु ॥12॥

13

दुवई—रेहइ तुज्झु णाह भुवणत्तयसीहासणविलासओ ॥
जस्साहोवयम्मि देविंदु[1] वि बइसइ णवियसीसओ ॥छ॥

दड्ढउ[2] धणघरतिट्ठावाहिइ जगु जीवइ तुह छत्तह छाहिइ।
पइ दिट्ठइ पाविट्ठु वि सुज्झइ तुह वायइ मृगु[3] मदु वि बुज्झइ।

---

(12)

शाखाओ पर हस और मयूर क्रीडा कर रहे थे। वहाँ तप के सताप से क्षीण वह ऋषि मौलश्री वृक्ष के नीचे स्थित हो गए। वहाँ मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन अश्विनी नक्षत्र मे सध्या समय महान तमोजाल को नष्ट करने पर, जिसे देवता नमस्कार करते है ऐसे उत्पन्न हुए केवल-ज्ञान के द्वारा देव ने सूक्ष्मतर और अतरित दूरियाँ, तथा भेदो से गभीर प्रत्यक्षो को देख लिया। गंधवर्ण और परिणमन के वशीभूत, पूरित और गलिताग पुद्गलो को देख लिया। सकोरा और मुरज वाद्य के समान त्रिभुवन को, अवगाहनस्वरूप आकाश को, प्रवर्तनमूलक काल को, आत्मा, सशरीर जड और चेतन गुण को, धर्म और अधर्म—दोनो गति और ठहराव के कारण को, उन शान्त ने शुद्ध प्रमाण से जान लिया। तब दसो दिशा पथो से आते हुए, 'हे मुनिनाथ आपकी जय हो, जय हो' कहते हुए—

घत्ता—चारो निकायों के देवो द्वारा विकसित एव सुरभित कुसुमो से कामदेव की पीड़ा का हरण करनेवाले प्रशात-परिग्रह, परमपर नमि को पूजा कर, उन्हे नमन किया गया।

(13)

हे स्वामी, तुम्हारे भुवनत्रय का सिंहासन-विलास शोभित है कि जिसके नीचे देवेन्द्र भी अपना सिर झुकाकर बैठता है। धन और तृष्णा की व्याधि से दग्ध विश्व तुम्हारे छत्रो की छाया मे जीता है। आपको देख लेने पर पापिष्ठ भी शुद्ध हो जाता है। तुम्हारी वाणी से मद पशु भी

---

(12) 1 P अवरतरियइ। 2 A सभेय°। 3 AP वण्णगधपरि°। 4 A दसदिसिवहेण, P दसदिसिवहि णहि आवतहिं। 5 P omits जय।

(13) 1. A देविंदु पइसई। 2. A दड्ढवधणघर°। 3. AP मिगु।

तुह धम्महु ण लील सपावइ विज्जुज्जोए[4] अगउ दावइ।
णिग्गुणधम्मे केत्तिउ गज्जइ घणु तुह दुदुहिरवहु ण लज्जइ।
जिण तुह भामंडलवित्थारें लोउ ण धिप्पइ मोहधारें।
तुह चामरहिं चलतहिं पेल्लिउ कम्मरेणु उड्डाविवि घल्लिउ।
रंजिय कुसुमविट्ठिरुइरगें[5] महुयर मत्ता तुज्झु जि सगे।
तुज्झु असोउ सोयणिण्णासणु णदउ णाह तुहारउ सासणु।

घत्ता—जय जय परमप्पय परमगुरु[6] जम्मि जम्मि तुहु महु सरणु॥
रिसिचरणमूलि सल्लेहणिण महु देज्जसु समाहिमरणु॥13॥

14

दुवई—इय सथुउ जिणिंदु देविंदहिं सेवियघोरकाणणो॥
ववगयकामकोहमयमोहमहातवलच्छिमाणणो॥छ॥

देउ एक्कवीसमउ जिणेसरु उग्गउ ण गयणगणि णेसरु।
सच्चु[1] सधम्मु अहम्मु वियारइ भवसमुद्दि बुड्डतइ तारइ।
उवसतइ पयपकयणवियइं पियवायइ सबोहियभवियइं[2]।
तहु उप्पण्णा पुण्णमणोरह सुप्पहाइ सत्तारह[3] गणहर।
पुव्वधरह पण्णास समेयइं चउसयाइं ससिदिणयरतेयइं।
छसयाइं बारहसहसालइं सिक्खुयरिसिहिं समुज्जलसीलइं।
पुणु छसयाइं बारहसहसालइं णाणत्तयवतहु सुणिउत्तइं।

समझा जाता है। मेघ तुम्हारे धर्म (धनुष) की लीला नही पा पाता इसीलिए विद्युत् के प्रकाश से अपना शरीर दिखाता है। अपने निर्गुण (डोरी रहित) धनुष से वह कितना गरजता है! घन तुम्हारे दुदुभि के शब्द से लज्जित नही होता? हे जिन, तुम्हारे भामण्डल के विस्तार से लोग मोहान्धकार की गिरफ्त मे नही पडते। तुम्हारे चलते हुए चमरो से प्रेरित कर्मधूलि उडाकर फेक दी जाती है। कुसुमवृष्टि की काति मे रगे हुए भ्रमर तुम्हारे साथ ही मत्त रहते है। तुम्हारा अशोक शोक का नाश करनेवाला है। हे नाथ, तुम्हारा शासन बढता रहे।

घत्ता—हे परमात्म आपकी जय हो, हे परमगुरु, जन्म-जन्म मे तुम मेरे लिए शरण हो, मुझे मुनिवर के पादमूल मे सल्लेखना और समाधिमरण देना।

(14)

जिन्होने घोर कानन का सेवन किया है, जो काम, क्रोध, मद, मोह से रहित और तपरूपी महालक्ष्मी को मानने वाले है, ऐसे जिनेन्द्र की देवेन्द्रो ने स्तुति की। इक्कीसवे जिनेश्वर देव मानो आकाश मे सूर्य के रूप मे उगे। वह धर्म-अधर्म का सच्चा विचार करते है, ससार रूपी समुद्र मे गिरते हुओं को तारते है, प्रिय वचनो से भव्यों को सम्बोधित करते है। उनके पुण्य मनोरथ सुप्रभ आदि सत्रह गणधर हुए। चन्द्र और सूर्य के समान तेजस्वी पूर्वधारी चार सौ पचास थे। बारह हजार छह सौ शील से समुज्जवल शिक्षक मुनि थे। फिर बारह हजार छह सौ तीन ज्ञान के

4 A विज्जाजोए। 5 AP °रइरगें, K records a p रय इति पाठे रज. 6. P परमपरु।

(14) 1 P सच्चु सुतच्चु सुधम्मु। 2. P सवोहइ। 3. AP गणहर सत्तारह।

तेत्तिय केवलणाणपहायर मुणिवरिंद तणुविक्किरियायर।
पचसयाइं एक्कसहसिल्लडं मणपज्जवणाणिहि णीसल्लड।
साहुहुं[4] सहुं सहसेण गविट्ठइ दोसयाइं पण्णास जि दिट्ठइ।
जिणवरमग्गि[5] णिवेसियसीसहं एक्कु सहासु महावाईसह।
मगिणिपमुहह हयमइमइयहं[6] पणचालीससहस[7] संजइयह।
एक्कु लक्खु सावयह समासिउ तिउणउ सो सावइहिं पयासिउ।
अमर असख सख खग मृग जहिं अरुहरिद्धि वण्णिज्जइ किं तहिं।

घत्ता—दोसहसइ पंचसयाहियइं महि विहरिवि संवच्छरहं॥
पसुसुरणरखेयरविसहरहं धम्मु कहिवि मउलियकरह ॥14॥

15

दुवई—णभि समेयसिहरिसिहरोवरि दूरुज्झियणियगओ[1] ॥
अच्छिउ मासमेत्तु णिरु णिच्चलु पडिमाजोयसंगओ ॥छ॥

किरियाछिंदणु झाणु रएप्पिणु तिण्णि वि अगइ झ त्ति मुएप्पिणु।
थियउ अजोइदेहु आसघिवि पचमतकालंतरु[2] लंघिवि।
रिसिहिं सहासे[3] सहुं णिव्वाणहु गउ परमप्पउ अच्चुयठाणहु।
महिमडलि रविकिरणहिं तत्तइ तहिं वइसाहमासि संपत्तइ।
[4]कसणचउद्दसिदिवसि समायइ णिसिविरामि छुडु छुडु जि पहायइ।
णिक्कलु जायउ चदफणिंदहिं पुज्जिउ देवदेउ देविंदहिं।

धारी नियुक्त थे। केवल ज्ञान के धारी भी। विक्रियाधारक मुनिवरेन्द्र भी एक हजार पाँच सौ थे। मन पर्ययज्ञानी साधु बारह सौ पचास थे। शिष्यो को जिनवर के मार्ग मे निवेशित करने-वाले एक हजार वादी मुनि थे। मगिनी को प्रमुख मानकर मतिमद को नाश करने वाली पैंतालीस हजार आर्यिकाएँ थी। सक्षेप मे एक लाख श्रावक, और तीन लाख श्राविकाएँ प्रकाशित की गई हैं। अमर असख्यात थे। तिर्यंच (खग मृग) जहाँ सख्यात थे, वहाँ अरहत की ऋद्धि का क्या वर्णन किया जा सकता है!

घत्ता—दो हजार पाँच सौ वर्षों तक धरती पर विहार कर, हाथ जोड़े हुए पशु सुर नर विद्याधरों और नागदेवो को धर्म कहकर—

(15)

अपने शरीर का दूर से परित्याग करने वाले नमि जिनेश सम्मेदशिखर पर एक माह तक प्रतिमा योग मे एकदम निश्चल रहे। वहाँ क्रिया-छेदोपस्थापना ध्यान कर तीनो शरीरो का सहसा परित्याग कर, अयोगदेह योग का आश्रय लेकर स्थित हो गए। फिर पचम कालांतर का अतिक्रमण कर एक हजार मुनियो के साथ, वह परमात्मा अच्युत स्थान निर्वाण चले गए। भूमि-मडल के सूर्य की किरणो से सतप्त होने पर वैशाख माह के आने पर, कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन, रात्रि का अन्त होने पर प्रभात में वह निकलक (निष्पाप) हो गए। चन्द्र, फणेन्द्र और देवेन्द्रो

4. P सीहुहु। 4. AP जिणवयमग्गें। 6 AP गयमयमइयह। 7. A पचसट्ठिसहसइं सजइयहं। 8. AP मिग।
(15) 1. P णियगबो। 2. AP पचमत्त°। 3. AP सहासहि। 4. A कसिण°।

पहयतूररवपूरिउ[5] णहयलु - गेयथोत्तझुणि उट्ठिउ कलयलु ।
उब्भिय धय रयणइ विच्छिण्णइं[6] दीणाणाहहं दाणइ दिण्णइ ।
धरिय चारुचंदोवय चामर णच्चिय धरणिरंगि विविहामर ।
दरिसंतेहिं[7] तेहि तहिं णवरस णवचालीसभावपसरियजस ।
छत्तीस वि दिट्ठिउ पयडतहिं कर चउसट्ठि तेत्थु दरिसतहिं ।
णच्चिवि विविहणट्टरूवें वर सिद्धखेत्तु पणवेप्पिणु सुरवर ।
समउ सुराहिवेण गय णहयलि अरुण वरुण वइसवण सुणिम्मलि ।

घत्ता—हरि सुरइ समासइ जतु णहि णियचरिए मुणिवच्छलिण ॥
उज्जोइउ भरहु जि णमिजिणिण पुप्फयतकिरणुज्जलिण ॥15॥

16

दुवई—हुइ[1] णिव्वाणगमणि णमिणाहहु सासयसिवणिवासहो ॥
अक्खमि चरिउ चक्किजयसेणहु सयलजणाहिरामहो ॥छ॥
जबूदीवि एत्थु सुमहतइ मेरुहु उत्तरेण गुणवतइ ।

ने देवाधिदेव की पूजा की । आहत तूर्यों के शब्दो से आकाश आपूरित हो गया । गाये गये स्तोत्रो की ध्वनि का कल-कल शब्द होने लगा । ध्वज उडने लगे । रत्न बिखेर दिए गए । दीन अनाथो को दान दिया गया । सुन्दर चन्द्रमा के समान चामर धारण कर लिए गए । धरती के रगमच पर विविध देवों ने नृत्य किया । जिनका यश उनचास भावो तक प्रसरित है ऐसे नव रसों का प्रदर्शन करते हुए, छत्तीस दृष्टियो को प्रगट करते हुए, चौसठ हाथो का प्रदर्शन करते हुए, विविध नृत्य रूप से नृत्य कर सुरवर सिद्ध क्षेत्र को प्रणाम कर देववर देवेन्द्र के साथ आकाश मार्ग से चल दिए ।

घत्ता—आकाश मे जाते हुए हरि देवो से सक्षेप मे कहता है कि मुनियो के लिए वत्सल भाव रखने वाले, अपने चरित से सूर्य और चन्द्रमा की किरणो के समान उज्ज्वल नमि जिनेश्वर ने इस भारतवर्ष को आलोकित किया ।

(16)

शाश्वत शिव मे निवास करने वाले नमिनाथ का निर्वाणगमन होने पर, समस्त जनो के लिए सुन्दर, चक्रवर्ती जयसेन का मैं चरित कहता हूँ । इस जम्बूद्वीप मे मेरुपर्वत के उत्तर में गुण-

---

5. AP °पूरिय-णहयलु । 6. AP विक्खिण्णइ । 7 AP read in place of this line and the three following as follows :—

चवचदणलवगविरइयसल कुसुमणिवहु णहणिवडिय सभसल ।
णाहहु पयपणामु विरयतहिं जयजयजय अरहत भणतहिं ।
दिण्णउ उरयलघोलिरहारहिं चूडामणिसिहि जलणकुमारहिं ।
भप्पोभावजायतणुलट्ठिहि वदिवि देहभप्पु परमेट्ठिहि ।
(A वदिवि देउ अब्भपरमेट्ठिहि)

(16) 1. A हुय° ।

अत्थि खेत्तु णामे अइरावउ जणधणकणगोसपयअइरावउ[2]।
बुहमणोज्जु[3] सिरिउरु तहि पट्टणु अमरणयरसोहादलवट्टणु[4]।
तहिं णामें भूवालु वसुंधरु[5] अतुलपरक्कमु पवरधणुद्धरु।
पउमावइ णामे तहु गेहिणि रण्ण व रविहि ससिहि णं रोहिणि।
तहिं विओयसोए णिव्विण्णउ रज्जु सुविणयंधरि सुइ दिण्णउं।
मणहरि वणि धम्ममुणीसपासि लइयउं तउ पावासवविणासि।
जिणकहिइ विहिइ सणासु करिवि महसुक्कसग्गि हुउ अमरु मरिवि।
भासुरतणु पावियअवहिणाणु सोलहसायरजीवियपमाणु।
अह वच्छाविसइ विलासठाणु कोसबीपरवरु सुहणिहाणु।
तहिं विजउ राउ अखलियपयाणु णियतेओहामियसरयभाणु।
पिय तासु पहंकरि सुहणिवास सूहवगुणपूरियदसदिसास।
वरकणयवण्ण विच्छिण्णकाय णं सग्गहु अच्छर[6] का वि आय।

घत्ता—सग्गाउ चवेप्पिणु[7] सो अमरु ताहि गब्भि अवइण्णउ ॥
परिओसिउ सयलु वि बंधुयणु सत्तुवग्गु अइण्णउ[8] ॥16॥

17

दुवई—सोहणदिणि सुरिक्खि णवमासहिं पवरोयरविणिग्गओ ॥
पुणु जयसेणु णामु तहु विहियउ णियगइविजियदिग्गओ ॥छ॥

वान् महान् ऐरावत क्षेत्र है जो जन-धन-कण और गोसपदा से अतिशय रमणीय है। वहाँ पण्डितों के लिए सुन्दर, श्रीपुर नाम का पट्टन है जो इन्द्रपुरी की शोभा का दलन करनेवाला है। उसमे भूपाल नाम का राजा अतुल पराक्रमी और प्रबल धनुष का धारण करने वाला था। उसकी पद्मावती नाम की गृहिणी थी। वैसे ही, जैसे रवि की रण्णा और चन्द्रमा की रोहिणी। उसके वियोग शोक से विरक्त होकर, उसने अपने पुत्र विनयंधर को राज्य दे दिया। मनोहर वन में धर्ममुनीश्वर के पास, पापाश्रव का नाश करनेवाला तप ग्रहण कर लिया। जिनेन्द्र द्वारा कथित विधि से सन्यास ग्रहण कर, वह मरकर महाशुक्र स्वर्ग मे अत्यन्त भास्वर-शरीर देव हुआ। अवधि-ज्ञान को प्राप्त किया है जिसने ऐसे उसकी सोलह सागर प्रमाण आयु थी। इसके बाद वत्सावती देश मे विलास का स्थान तथा सुख का निधान कौशाम्बीपुर था। उसमे अस्खलित प्रमाण राजा विजय था जिसने अपने तेज से शरद्-सूर्य को तिरस्कृत कर दिया था। उसकी प्रिया प्रभकरी थी जो सुख की घर और अपने सुभगगुणो से दसों दिशामुखो को पूरित करनेवाली थी। श्रेष्ठ स्वर्ण रगवाली कान्तशरीर वह ऐसी लगती थी मानो स्वर्ग से कोई अप्सरा आई हो।

घत्ता—वह देव स्वर्ग से चलकर, उसके गर्भ मे अवतीर्ण हुआ। समस्त बन्धु गण सतुष्ट हुआ, शत्रुगण खिन्नता को प्राप्त हुआ ॥16॥

एक शोभन दिन और सुन्दर नक्षत्र मे नव माह मे वह प्रवर उदर से निकला। उसका जय

---

2. AP गोसपयसारउ। 3. वहुमणोज्जु। 4. P °पवर°। 5 A णरेसरु। 6. A अछर। 7. P चएप्पिणु।
8 AP आदण्णउ।

णिच्छियतिण्णिसहसवरिसाउसु[1] सव्वपियारउ णं णवपाउसु।
वरइक्खाउवसणहससहरु बंदिणजणविहंगसुरतरुवरु।
कणययवण्णु करसट्ठि समुण्णउ[2] सयलकलाकलावसंपुण्णउ।
रज्जि णिविट्ठहु चक्कुप्पण्णउ रविबिंबु व सेवइ अवइण्णउ[3]।
परिसाहिय छक्खंड वसुंधर सेव कराविय सुर वि सुदुद्धर।
एक्कहिं दिणि सउहयलि वसंते विज्जुवडणु[4] गयणाउ णियतें।
कारणु तें वइरग्गहु पाविउ सव्वु अणिच्चु मणेण परिभाविउ।
रज्जु पढमपुत्तहिं ण वि मण्णिउ जिह णिवेण तिह तें अवगण्णिउ।
णिरवसेसु लहुसुयहु समप्पिवि सत्तुमित्तु सममइ सकप्पिवि।
केवलिवरयत्तहु[5] णिवणेसरु जाउ समीवि साहु परमेसरु।
समेयइ कयसंणासुत्तमु हुयउ जयंतदेउ[6] लयसत्तमु[7]।
घत्ता—सणासमरणि भरहेसरहु णरसुरवरहिं अणेयहिं॥
पुज्जाविहाणु णिव्वत्तियउं पुप्फयंतसमतेयहिं[8]॥17॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकइपुप्फयंतविरइए महाकव्वे [9]णमितित्थयर[10]जयसेणचक्कहर-[11]कहंतर णाम असीतिमो परिच्छेओ समत्तो॥80॥

(17)

सेन नाम रखा गया। वह अपनी गति से दिग्गज को जीतने वाला था। उसकी निश्चित तीन हज़ार वर्ष की आयु थी। नवपावस के समान वह सबका प्यारा था। वह श्रेष्ठ इक्ष्वाकुवंश के आकाश का चन्द्रमा था। बन्दीजन रूपी विहगों के लिए कल्पवृक्ष था। उसका स्वर्ण वर्ण शरीर साठ हाथ ऊँचा था। वह समस्त कला कलाप से पूर्ण था। राज्य में बैठे हुए उसे चक्ररत्न उत्पन्न हुआ, मानो सूर्य बिम्ब ही अवतीर्ण होकर उसकी सेवा कर रहा था। उसने छह खंड धरती सिद्ध की। दुर्धर देवों से उसने सेवा करवाई। एक दिन सौधतल पर बैठे हुए उसने आकाश से बिजली को गिरते हुए देखा। इस कारण से उसे वैराग्य उत्पन्न हो गया। उसने मन में सब कुछ अनित्य समझा। प्रथम पुत्र ने भी राज्य को नहीं माना, जिस प्रकार पिता ने, उस प्रकार पुत्र ने, उसकी अवहेलना की। अपने छोटे पुत्र को समस्त राज्य देकर, शत्रुमित्र में समबुद्धि कर, वह नृपसूर्य केवली वरदत्त के पास जाकर, साधु हो गया। सम्मेदशिखर पर उत्तम सन्यास ग्रहण कर वह वैजयन्त अहमेन्द्र हुआ।

घत्ता—उस भरतेश्वर के सन्यास-मरण पर सूर्य-चन्द्रमा के समान तेज वाले अनेक नरपतियों और देव-देवेन्द्रों के द्वारा उसका पूजा-विधान किया गया॥17॥

त्रेसठ महापुरुषों के गुणालंकारों से युक्त महापुराण में महाकवि पुष्पदन्त द्वारा विरचित एवं महाभव्य भरत द्वारा अनुमत महाकाव्य का नमि तीर्थंकर, चक्रवर्ती जयसेन-कथान्तर नाम अस्सीवाँ परिच्छेद समाप्त हुआ।

---

(17) 1. A वरिससहसाउसु। 2. A समुग्गउ। 3. AP उवइण्णउ। 4. AP विज्जुपडणु। 5. AP वरइत्तहु। 6. AP जयंति देउ। 7. A सयलुत्तमु। 8. AP पुप्फदंत°। 9. AP णमिणाहणिव्वाणगमणं। 10 A omits जयसेणचक्कहरकहंतर। 11. P °चक्कवट्टि°।

NOTES

[The references in these notes are to Samdhis in Raman figures and kadavakas and lines in Arabic figures. T stands for Tippana of Prabhacandra]

LXVIII

2. 13 पयडइ जायइ कालहु चिंधइ, the sings of (coming) death or fall from heaven became manifest.

9. 3*b* णयियकुणयवयणवहित्यि, (अनन्ततीर्थं or teaching of अनन्तजिन) which kept off or made ineffective the systems of heretic schools.

LXIX

1 2 हरिहलहरगुणथोत्तु, जं जायउ रामायणु The रामायण is the glorification of the virtues or qualities of हरि (वासुदेव) and हलधर (बलदेव) 4*a* णिव्वाहमि भरहुमत्थियउं, I (Poet) want to carry out the wishes of भरत, my patron 6*a* सामग्गि ण एक्क वि अत्थि महु, I possess no material or facilities for undertaking the task of composing a रामायण. 6*b* किर कवण लीह चिरकइहि सहु, how can I compete with older poets ? 7*a* कइराउ सयंभु, the great poet स्वयंभू who wrote on the theme of रामायण had the help of a thousand friends. 8*a* चउम्मुहहु, the great poet चतुर्मुख स्वयम्भु, as his name implies, had four mouths. 9*a* महु एक्कु व पि मुहु खंडियउ, the poet पुष्पदन्त says that he has only one mouth as against four of चतुर्मुख, and that even this mouth is broken (खण्डित) Elsewhere पुष्पदन्त calls himself to be खण्ड or खण्डकवि, and mentions that his face or mouth was वक्र 13 सुकइपयासियमग्गि, on the path, brightened by great poets like स्वयम्भू and चतुर्मुख, or on the path, i e , सेतु, built or manifested by the good monkey, i e हनूमान्

3. .-10 These lines record some strange notions or superstitious beliefs about persons figuring in the रामायण King श्रेणिक asks गौतम इन्द्रभूति to explain to him the truth about them They are (1) रावण (दशमुख) has ten mouths or faces, (2) his son इन्द्रजित् was older in age than his father, or in other words, इन्द्रजित्, though a son of रावण, was born before him, (3) रावण was a demon and not a human being , (4) he had twenty eyes and twenty hands and that he worshipped god शिव with his heads, (5) रावण was killed by the arrows of राम, (6) the arms of श्रीरमण, i e लक्ष्मण, were long and unbending (थिर); (7) सुग्रीव and others were monkeys and not human beings, (8) विभीषण is still living or is a चिरजीविन्, (9) कुम्भकर्ण sleeps for six months and feels satiated only by eating one thousand buffalos Those that are conversant with the Hindu version of the रामायण will see that except No 2, all other beliefs have some sort of support in the various of Hindu रामायण About No 2, I have not come across any support for it But before we proceed further we have to note a basic difference in the conception of personalities of राम

and लक्ष्मण with the Hindus and the Jainas राम, according to Hindu version and the Jain version is the elder of the two sons, राम and लक्ष्मण, of दशरथ, but राम who is the eighth बलदेव of the Jainas, has white complexion as against the dark complexion according to Hindus. On the other hand, लक्ष्मण who is the eighth वासुदेव of the Jainas, has dark complexion as against white complexion according to Hindus. Besides लक्ष्मण, being a वासुदेव with the Jainas, kills रावण who is a प्रतिवासुदेव with them Other differences in the two versions will be noted as we proceed. 11*a*—*b* All Jain versions known to us say, as here, that व्यास and वाल्मीकि are responsible for creating wrong notions about the personalities of रामायण It is clear from this statement that Jain poets, one and all, who tried their hands on the story of रामायण, have been acquainted with the versions of व्यास and वाल्मीकि, and think that they gave an altogether new interpretation of the lives of राम and लक्ष्मण

4 2—13 These lines mention the तृतीयभव of राम and लक्ष्मण In the city of रत्नपुर in the मलयदेश, there was a king named प्रजापति. His queen, कान्ता by name, gave birth to a son who was called चन्द्रचूल (who is destined to be लक्ष्मण subsequently) विजय, the son of the king's minister, was a friend of चन्द्रचूल.

5 5*b* कलहस्स ण चारुकरिणीह, like a young elephant (कलह, कलभ) born of a beautiful she-elephant. A marchant named गोत्तम h d a son, श्रीदत्त by name, by his wife वैश्रवणा. This श्रीदत्त was married to कुबेरदत्ता, daughter of कुबेर. 10*b* ती सणिहा का कुबेराइदत्ताइ what lady (ती, स्त्री) is comparable (सणिहा, सनिभा) to कुबेरदत्ता in beauty? चन्द्रचूल carried off this कुबेरदत्ता by force.

8. 4*a* सिसु चवंति गहिरु, the two boys, चन्द्रचूल and विजय said in deep voice, i.e., full of repentance. These two were destined to be लक्ष्मण and राम in their third subsequent birth.

9. 9*a* भइरहसें, rashly, in haste.

10 4*b* बालरिसि, the young monks चन्द्रचूल and विजय. Of these चन्द्रचूल formed a निदान on seeing सुप्रभबलदेव and पुरुषोत्तम वासुदेव to enjoy prowess similar to theirs 9—10 विजय was born in the सनत्कुमार heaven and was called सुवर्णचूल, and चन्द्रचूल was born in the कनकप्रभ विमान and was named मणिचूल.

11 11 कुवलयबंधु वि णाहु णउ दोसायरु आयउ, although king दशरथ (णाहु) was a friend (बन्धु) to the whole earth, he was not a seat or soucre (आयर, आकर) of faults (दोस, दोष) like the moon who is a friend of night lotuses (कुवलय) and is the maker of night (दोषा)

12. Note that राम (in former births विजय and सुवर्णचूल) is the son of king दशरथ of वाराणसी (and not of अयोध्या) by his queen सुबला (and not कौसल्या) and that the day of his birth is फाल्गुनकृष्णत्रयोदशी, मघा नक्षत्र (and not चैत्रशुक्ल नवमी), and that लक्ष्मण (in former birth चन्द्रचूल and मणिचूल) is the son of कैकेयी (and not of सुमित्रा) and is born on माघ शुक्ल प्रतिपद्, विशाखानक्षत्र It is only subsequently that king दशरथ went over to अयोध्या as metioned in 14 6*b* below

16 1*a* ज जुणिवि सग्गहु सयरु गउ, king सगर went to heaven by performing a sacrifice. According to Jain version of the story of सगर, there is no mention of this sacrifice. 5*b* सिसु i e राम

20 10 पिंगलु, i e, मधुपिंगल, the son of तृणपिंगल and अतिथिदेवी. In 22 3*b* he is called पिंगदिट्ठ.

28. 10*a* णारउ अय जव तिवरिस चवइ, नारद says that अज means the जव (यव) corn three years old This is the famous explanation of अज (goat) according to Jainas.

33. 8—9 These lines mention गोस्पर्श, पिप्पलस्पर्श etc, as meritorious acts according to superstitious beliefs, but the poet says that if they secure merit, a bull who touches the body of the cow and the crow that sits on the पिप्पल tree would be gods.

LXX

1. 11 *a*—*b* ए अट्ठम, these two sons of yours are the eighth बलदेव and वासुदेव, as I heard in the पुराणs and will occupy a place among the शलाकापुरुषs

2 This कडवक and the two following give the history of the past life of रावण. There was in the city of नागपुर a king called नरदेव He renounced the world and practised penance On seeing a विद्याधर he formed a निदान that he should have the fortune similar to that विद्याधर. He was then born as a god in the सौधर्म heaven King सहस्रग्रीव of the city of विद्याधरs, got somehow displeased with his relatives, quarrelled with them and shifted to त्रिकूटगिरि There he built the city of लंका After him came शतग्रीव and पञ्चाशद्ग्रीव. His son was पुलस्ति whose wife मेघलक्ष्मी gave birth to दशग्रीव He married मन्दोदरी, the daughter of मय.

6. 7*a*—*b* The line means that मणिवती got disturbed in her meditation on the बीजाक्षरमन्त्र, and thought that दशग्रीव, though a विद्याधर, had characteristics (चिंध, चिह्न) of a demon. 8*a*—*b* मणिवती formed a निदान that he should be her father in her next birth, carry her off in the forest and die on her account. This मणिवती becomes सीता in her next birth

8. 1*b* जं होंतें होसइ अवर धूय, if दशग्रीव is alive, you (मन्दोदरी) will have another daughter. मारीच asked मन्दोदरी to abandon सीता as she was destined to bring calamity on the family.

9. 11 रामणरामहु णाइ कलि, a source of quarrel between रावण and राम.

12. 3*a* ससुरणयरु, i.e, मिथिला, the city of राम's father-in-law

13 9*a* अवराउ सत्त कण्णाउ, Over and above सीता, राम was married to seven other girls 10*a* लक्ष्मण was married to sixteen girls Note that राम in the Jain mythology has eight wives and not one.

16 6*b* जाणेवा (ज्ञातव्या). For this form see हेमचन्द्र iv 438.

LXXI

1. 1 कहिं त भंडणु एम भणतु जि सचरइ, नारद wanders over the earth finding out places where there is, or has a chance of, a quarrel This characteristic of नारद is well-known to Hindu Mythology. Here he is approaching रावण to start the quarrel.

2 6*b* पर पइ जिणिवि एक्कु जसु ईहइ, but one, i.e, राम, desires to obtain fame by conquering you

5 6*a* सेलसिहरसंचालणचंडहिं, with my arms, terrific in shaking the mountain peaks This is a reference to the belief that रावण shook the कैलास mountain with his arms.

6—10. These कडवकs refer to the description of the characteristics of ladies as mentioned in कामसूत्र of वात्स्यायन.

11 7a चंदणहि (चन्द्रनखी), otherwise known as शूर्पणखा.

15 2a बउलु परिक्खइ णियतणुगंधें, a lady compares the scent of वकुल flower to see if it is similar to the scent of her body. 11a सर्पहिं एह वि बोल्लणसीली, now in this spring, this (cuckoo) also has become talkative.

18. 2a कंचुइ होएप्पिणु, assuming the form of a कंचुकिन् or rather कञ्चुकिनी an old lady

20. 1a विहवत्तणि पुणु सिरु मुडेव्वउ, It appears that Jainism recommends the shaving of the head by widows

LXXII

1. 1 मुक्कदेसजइसजमु, abandoning the restraint which a householder (देसजइ, देशयति, गृहस्थ) should practise, namely स्वदारसंतोष रावण now starts in his पुष्पकविमान to carry off सीता against the rules of a Jain householder, for सीता is not his wife He is not still aware of the fact that सीता is his own daughter. 19 विट्ठउ तेत्थु etc. रावण saw there the forest and also one more thing, viz., the bloom of youth of सीता The next कडवक compares these two in similar terms.

4. A fine description of the movements of an antilop.

5. 5a कसणवाससोहियणियंबओ, who wore a blue or dark garment. बलदेव is called नीलाम्बर in Hindu as well as in Jain Mythology.

8 11-12 These lines mean : If I (रावण) touch this lady who is now helpless but chaste, the lore which enables me to move through the air (अम्बरचारिणी विद्या) will go away from me रावण was unwilling to daily with the unwilling सीता, as in that case he would lose all the prowess he had.

12. 4-6 These lines mention that रावण became an अर्धचक्रिन् about the time of the arrival of सीता at लंका

LXXIII

1 3 एत्तहिं etc Three things occurred simultaneously, viz, राम followed the deer in the forest, सीता was carried off, and the attendents of सीता were filled with grief on her account

2 3b—6b It appears that the Jain society recommends the wearing of red-coloured saris for widows, breaking of bracelets, and not wearing ornaments like a necklace.

5 9a According to the Jain version, दशरथ is still living when सीता was carried off by रावण He saw a dream just at that moment that रोहिणी, the consort of the moon, was carried off by राहु, which dream indicated that a similar calamity had befallen राम.

6. 11*a* अणद्दप्पेण, by लक्ष्मण

7. 4*a* वेण्णि जण, i. e., सुग्रीव and हनूमत् who were विद्याधरs and not monkeys.

8. 6*b* हनूमत् is in Jain Mythology the 20th कामदेव and hence he is mentioned as मयरकेउ (मकरकेतु) and by its synonyms. Compare 25 9*b* below.

10 3*a* सेस लेवि, having taken the शेषा, i. e, flowers etc, offered to the deity When a devotee visits a temple, he takes home with him some portion of the निर्माल्य or ashes or some article dedicated to the deity.

15 2 पावणि, i. e., हनूमान्. 12 सुवण्णभिंगारयहु खप्पर दिण्णउ ढक्कणु, broken earthen plate is placed as a cover to close the mouth of a golden vessel भिंगार is भृंगार, known as झारी in Marathi

22 12*a* ओलक्खिय पयजुयलक्खणेण, मन्दोदरी recognised सीता as her daughter by signs or marks on her feet

24. 13*b* वाणरायारु, हनूमत् who was a विद्याधर, assumed the form of a monkey and stood before सीता This explains, according to Jain Mythology, the reason for the belief that हनूमत् was a monkey.

26 8*b* गुज्झइं अहिणाणवयाइं देमि, I shall mention certain very confidential happenings between you and राम so that you will recognise me to have come from him. This अभिज्ञान is supplied in the following lines of this कडवक and a few lines of the next कडवक.

28 10*a-b* णियकुलु वि etc When fire burns its own race, i e. trees or wood from which it is born, how can it forgive its enemy, i e, water ? Water is heated by fire on this account

29 13*b* ण वहमुहरमणहु कोसपाणु, as if सीता swore that she would never dally with रावण कोशपान is a शपथ or दिव्य, ordeal, which one solemnly undertakes Compare गाथासप्तशती, 448, सहासमए जलपूरिअजलिं विहडिएक्कवाममरं, गोरीअ कोसपाणुज्जअं व पमहाहिवं णमह

LXXIV

4 16 जोत्तिउ हुयमरि पुणु सो जि धवलु, हनूमत् was again askedto go to लंका as a दूत, and the poet humourously compares him to a bull (धवल) that is yoked to a cart a second time According to Hindu Mythology अंगद was the दूत of राम.

6 4*b* तिण्णि वि एयउ, i e, श्री, सीता and वसुधरा (पृथ्वी) as mentioned in 5. 11 above, and 13. 9*b* below

8 15 वसइयउच्छुधणु, God of love bears a low made of sugar-cane

15 3*b* रत्तउ हयगीउ सयपहहि, a reference to अश्वग्रीव the first प्रतिवासुदेव who made love to स्वयंप्रभा and was killed by त्रिपृष्ठ the first वासुदेव of the Jain Mythology.

16 7*a* णील, one of the friends of सुग्रीव; *b* कुमुय, another friend of सुग्रीव. 9 and 10 mention कुन्द and नल who are allies of सुग्रीव.

LXXV

1. 8*b* णिकुंभु कुंभु, names of रावण's followers.

2 9*b* महु समउ खगाहिउ एउ ताव, Let first वालि (खगाहिउ) come with me to लंका 10*b* करिवरु महामेहक्खु देउ, Let him give me the excellent elephant called महामेघ

3. 7*b* अणउत्तु वि, even though it is not expressly said

4. 1*b* एक्कु जि सिहि अण्णु जि वायवेउ, there is already one calamity, viz., fire, and to add to it there comes the gust of wind 12 मइ कुद्धइ, when I am angry.

6, 10*b* किलिकिलिपुरिंदु, the lord of the किलिकिलिपुर i e, वालि

9 2*b* एवड्डु फुरणु, such valour or activity

LXXVI

2. 6*b* अज्जु कल्लि ढुक्कइ, will reach this place (लंका) today or tomorrow 8*a* विणविवसु, रावण was born in the विद्याधर race founded by विनमि (विणवि) who was the brother of नमि.

3. 5*a* वज्जावत्तसरासणहत्थहु, The name of the bow of राम is वज्रावर्त 9*a* पंचयण्णु, the conch पाञ्चजन्य of वासुदेव, here of लक्ष्मण 14 कुंभयण्णु महु बीयउ, रावण says to विभीषण that if विभीषण leaves him, he (रावण) will have कुम्भकर्ण to help him

4 5*a* तणुसोयइ, by a blade of grass one cleanses one's teeth The form तणु for तृण is irregular.

6. 10*a* वाणरविज्जइ वाणर होइवि, All विद्याधरs assumed the form of monkeys and then visited लंका

9. 9*a* गमणें जासु होइ कालो गइ, fire, the movements of which leave a black passage or smoke अग्नि is often called धूमध्वज.

LXXVII

2 8*b* चंदहासु, the sword of रावण. 14 अम्हइ वलवतह हरिवलह तसहु, we are afraid of हरि (लक्ष्मण) and बल (राम) who are very strong.

3. 13 विहुरि वि धीरु, रावण was full of courage (धीर) even in adversity (विहुरि, विधुरे सति, सकटकाले सति).

6. 1 भुवणुत्तरडिणिवणे किं हुओ णिग्घोसो, Is there a noise of falling of worlds standing one upon the other ? There are several भुवनs which stand one upon the other and thus form an उत्तरडि, उतरड, as it is called in Marathi. 6*b* वइवसु, god of death (यम).

9 5-17 A fine description of the dust raised by the fight

13. 5*a* असिणिहसणसिहिजालउ, flames of fire produced from the clashing of swords 13*b* सीसक्कें सहु सिरु, head along with the crown or cap (शिरस्त्राण).

LXXVIII

1. 2 कण्हु, कृष्ण, i e, लक्ष्मण who has a dark complexion 15*a-b* विजयपर्वत् and अंजनगिरि are the names of elephants of लक्ष्मण and राम See also 3. 4*b* and 3 11*a* below.

5 11*a-b* पइ समुइ etc. A warrior says to another warrior, "You have given your head (as capital) in paying the debt of your master, and are using your blood as interest on the capital"

8 3*a* घरियलोह तेण वि ते गुणचुय, the arrows are घरियलोह, i. e, have an iron edge or have greed (लोह, लोभ) and therefore they are गुणचुय, discharged by bow-string (गुण) or are destitute of virtues (गुण)

9 21 ओत्थरिउ, arrived on the scene

10 14 बोल्लिउ पालेसमि, I shall keep my word

11 3*b* सखारु, jarring words, words mixed with salt as it were Compare क्षते क्षारनिक्षेपणम्

13 8*b* धीर पउम, राम who had a white complexion simiar to that of a white lotus is called पउम (पद्म) and पुराणs describing his story are called पद्मचरित, पद्मपुराण etc

14 8*a-b* तल्लरजलि etc The line records two popular sayings that in a small lake a crab is called a जलचर although the term means मकर, while in a place where there are no trees, एरण्ड becomes a big tree Compare. निरस्तपादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते

15. 1 बेण्णि वि पीयवास, Both रावण and लक्ष्मण wore yellow garments In Hindu mythology कृष्ण is called पीताम्बर

16 6*a* वीसपाणि, i e, रावण, although रावण according to Jain Mythology had only two arms, still he is called वीसपाणि owing to the influence of Hindu Mythology

18 1 महुमहणमहासुहडे, on the great warrior who killed मधु Note there are two प्रतिवासुदेवs, viz, मधु and मधुसूदन or महुसूयण

20. 14 भडभालविणिहयइं भवियव्वक्खरइं, writings about the future of warriors which were written on their forehead 15 जाइवि (याचित्वा), having obtained by begging

21 7*b* अंगुलियउ भजइ राहवि, cracking of fingers on some one indicates disrespect for him बोटें मोडणें is found in modern Marathi 13*a* कण्णावरु इहु णाहु महारउ, this husband of mine has married me when I was quite young, so our love is unbroken, Compare · यः कौमारहरः स एव हि वरः

23 4*a* अज्जु सरासइ सत्थु ण सुयरइ, today the goddess of learning (सरस्वती) will not remember or recite the शास्त्र, owing to the death of रावण. रावण is know for his learning In Hindu Mythology he is the son of a famous sage पुलस्त्य who is a Brahmin.

24 3*a* णारउ णाउ आउ णासणविहि, It was not नारद who arrived (and induced your mind to carry off सीता), but it was your destiny bringing death upon you that had come Note that रावण made up his mind to carry off सीता on the mischievous advice of नारद 12 *a* कुलिसु वि घुणेहिं विच्छिण्णउ, even hard adamant (वज्र) was bored by insects Death of रावण from the hand of लक्ष्मण is an unexpected as the boring of वज्र by insects

25 1 दहमुहु हुइ, राम says to विभीषण that he should now take the place of दहमुह (रावण) 6*b*-12*b* These lines describe the removal of the dead body of रावण, on a palanquin decked by columns of plantain trees, with umbrella held over it.

29 3*b* मेल्लिवि पउमु काइ सुयणत्तणु, who but राम is so noble ?

LXXIX

2 11*b* संउर्णंदयासि, a sword called सौनन्दक because it was a gift from सौनन्दयक्ष. Of the seven gems which a वासुदेव as अर्धचक्रिन् possesses, sword is one and it is called सौनन्दक as the गदा is called कौमोदकी According to Jain Mythology वासुदेवs and बलदेवs have seven and four marks respectively. They are given in the following verses :

असि शंखो धनुश्चक्र शक्तिर्दण्डो गदाभवत् ।
रत्नानि सप्त चक्रेशे रक्षितानि मरुद्गणै ॥
रत्नमाला हल भास्वद्रामस्य मुषल गदा ।
महारत्नानि चत्वारि बभूवुर्भाविनिर्वृते ॥

गुणभद्र—उत्तरपुराण-62 148-149

3 8*a* तहिं होतउ गउ, he went from that place. Note the use of होतउ with तहिं rather than तहां. Compare हेमचन्द्र, iv 355

6 10*b* को णारउ को सुरविमाणि, who will, in that case, be born in hell and who will be bron in heaven ? 12 जइ खणि खणि जि खउ etc This is the famous doctrine of क्षणिकत्व of the Buddhists सहबुद्धें, by self-enlightened Buddha

9 6-9 These lines tell us that राम had eight sons विजयराम and others, and लक्ष्मण had several, पृथ्वीचन्द्र and others, from his wife पृथिवी.

11 4*a* लच्छीहरणि, in the body of लक्ष्मीधर, i. e., लक्ष्मण

LXXX

9. A fire desription of the Rainy Season.

16 7*b* रण्ण व रविहि, the name of the sun is रण्ण or as. T says रत्नादेवी.



अँगरेजी टिप्पणियों का हिन्दी अनुवाद

अड़सठवीं सन्धि

(2) 13 आने वाली मृत्यु की सूचना अथवा स्वर्ग से च्युत होना ।

(9) 3b अनन्ततीर्थ या अनन्तनाथ का शासन (आम्नाय) जिसने अन्य आम्नायो को निरस्त या प्रभावहीन कर दिया ।

उनहत्तरवीं सन्धि

(1) 2 वासुदेव और बलराम के गुणों की स्तुति के लिए जो रामायण काव्य हुआ । रामायण वासुदेव (लक्ष्मण) और हलधर (राम) के गुणों और विशेषताओ का गौरवीकरण है। 4a भरत के द्वारा आकर्षित मैं निर्वाह करूँगा । मैं (कवि) अपने आश्रयदाता भरत की इच्छाओ को पूरा करना चाहता हूँ । 6a मेरे पास कुछ भी सामग्री नही। मेरे पास साधन और सुविधाएँ नही है कि मैं यह कार्य पूरा कर सकूँ । 7a कविराज स्वयभू । (महान् कवि स्वयभू) जिन्होंने हजारो मित्रों की सहायता से राम के इतिवृत्त पर काव्य की रचना की । 8a चतुर्मुख, महाकवि चतुर्मुख जैसा कि स्वयभू कवि का नाम बतलाया है । चतुर्मुख यानी चार मुखवाला । 9a मेरा एक मुँह है वह भी खडित है। कवि पुष्पदत कहता है कि उसका एक ही मुख है जब कि चतुर्मुख के चार मुख थे । इतने पर भी मेरा यह मुख खडित है । एक अन्य जगह पुष्पदत ने स्वय को खडकवि कहा है और लिखा है कि उनका मुख वक्र (टेढा) था । 13 सुकवियों द्वारा प्रकाशित मार्ग पर, उस मार्ग पर जिसे चतुर्मुख स्वयभू जैसे कवियो ने आलोकित किया है। मार्ग यानी सेतु जो वानर यानी हनूमान् द्वारा निर्मित है ।

(3) 3-10 ये पक्तियाँ रामायण मे आए पात्रो के बारे मे विचित्र विश्वासो या धारणाओ का वर्णन करती हैं। राजा श्रेणिक गौतम इन्द्रभूति से पूछता है कि वह इनके बारे में सच बात बताए। ये हैं— (1) रावण (दशमुख) के दस मुँह थे । (2) पुत्र इद्रजित् उम्र मे अपने पिता से बडा था । दूसरे शब्दो में इन्द्रजित् यद्यपि रावण का पुत्र था, परन्तु उससे पहले पैदा हुआ था ।(3) रावण मनुष्य नही, राक्षस था। (4) उसकी बीस आँखें और बीस हाथ थे, और यह कि वह शिव की उपासना अपने सिरो से करता था । (5) रावण राम के तीरों से मारा गया । (6) श्रीरमण (लक्ष्मण) के हाथ लबे और स्थिर थे, झुकते नही थे । (7) सुग्रीव और दूसरे बन्दर थे, वे मनुष्य नही थे। (8) विभीषण अब भी रह रहा है, या वह चिरजीवी है। (9) कुम्भकर्ण छह माह सोता है और एक हजार भैंसे खाकर उसकी भूख शान्त होती है।

जो हिन्दू रामायण से परिचित हैं वे पाएगे कि क्रमाक 2 को छोडकर, हिन्दू रामायण का दूसरी धारणाओ मे काफी कुछ समर्थन है। लेकिन क्रमाक 2 मे इस प्रकार का कोई समर्थन मेरे देखने में नही

आया। परन्तु आगे बढने के पहले यह नोट कर लेना जरूरी है कि जैनो और हिन्दुओ की रामायणो मे राम और लक्ष्मण के चरित्रो के बारे मे मूलभूत अन्तर यह है कि दशरथ के दो बडे बेटे थे राम और लक्ष्मण। परन्तु राम का, जो जैनो के आठवें बलभद्र है, रँग गोरा था जबकि हिन्दू परम्परा मे वे श्याम वर्ण के थे। इसी प्रकार हिन्दू परम्परा के गौर वर्ण लक्ष्मण का, जो जैनो के आठवे वासुदेव है, जैन परम्परा के अनुसार रँग श्याम था। इसके सिवा, जैनो के अनुसार वासुदेव होने के कारण लक्ष्मण ने प्रतिवासुदेव रावण का वध किया, राम ने नही। रामायण के दोनो वर्णनो की भिन्नता मालूम होती जाएगी जैसे-जैसे हम आगे बढते जाएँगे। 11a-b हमे ज्ञात सभी जैन वर्णन बताते है कि व्यास और वाल्मीकि ही, रामायण के पात्रो के बारे मे गलत धारणाएँ फैलाने के लिए उत्तरदायी है। इस कथन से यह स्पष्ट है कि सभी जैन कवि, जिन्होने रामायण के कथानक पर काव्य की रचना का प्रयास किया है, रामायण और व्यास के कथानको से परिचित हैं, और वे सोचते है कि उन्होने राम और लक्ष्मण के जीवन को एक दम नया रूप प्रदान किया है।

(4) 2-13 ये पक्तिया राम और लक्ष्मण के तीसरे भव का वर्णन करती हैं। मलयदेश मे रत्नपुर नगर है। उसमे प्रजापति नामक राजा था। उसकी रानी काता ने एक पुत्र को जन्म दिया, उसका नाम चन्द्रचूल था (जो आगे चलकर लक्ष्मण के रूप मे होने वाला है)। विजय, जो राजा के मत्री का पुत्र है, चन्द्रचूल का मित्र था।

(5) 5b जैसे सुन्दर हथिनी से जन्मा हाथी का बच्चा, एक सुन्दर युवा हाथी। एक गौतम नामक व्यापारी उसकी पत्नी वैश्रवणा से श्रीदत्त नाम का पुत्र था, श्रीदत्त का विवाह कुबेरदत्ता से हुआ जो कुबेर की कन्या थी। 10b कुबेरदत्ता के समान कौन स्त्री थी ? कुबेरदत्ता से कौन स्त्री तुलनीय थी सुन्दरता मे ? चन्द्रचूल ने बल से कुबेरदत्ता का अपहरण कर लिया।

(8) 4a दोनो बालको (चन्द्रचूल और विजय) ने गभीर ध्वनि मे कहा—पश्चात्ताप के स्वर मे। ये दोनो तीसरे जन्म मे लक्ष्मण और राम होने वाले हैं।

(9) 9a तेजी से या जल्दी में।

(10) 4b छोटे मुनि (चन्द्रचूल और विजय)। इनमे से चन्द्रचूल ने, सुप्रभ बलदेव और पुरुषोत्तम वासुदेव का वैभव देखकर यह निदान किया : मैं भी उनके समान शक्ति को प्राप्त करूँ। 9-10 विजय सनत्कुमार स्वर्ग मे उत्पन्न हुआ जहाँ उसका नाम सुवर्णचूल था। चन्द्रचूल कमलप्रभ विमान मे उत्पन्न हुआ और उसका नाम मणिचूल हुआ।

(11) यद्यपि राजा दशरथ पूरी धरती के मित्र थे, लेकिन दोषो के आकर नहीं थे। चन्द्रमा के समान, जो कुमुदिनियो का मित्र होता है और रात्रि का जनक होता है।

(12) नोट कीजिए कि राम (पूर्व जन्म के विजय और स्वर्णचूल) वाराणसी के (अयोध्या के नही) राजा दशरथ के पुत्र है, जो सुबला रानी से (कौसल्या से नही), फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी, मघा नक्षत्र (चैत्र शुक्ल नवमी नही) मे हुए और लक्ष्मण (पूर्वजन्म का चन्द्रचूल और मणिचूल) कैकेयी का पुत्र है (सुमित्रा का नही) और माघ शुक्ल प्रतिपदा को विशाखा नक्षत्र मे उसका जन्म हुआ। यह इसके अनतर ही हुआ कि राजा दशरथ अयोध्या गये जिसका कि 14 (6b) मे वर्णन है।

(16) 1a राजा सगर यज्ञ करके स्वर्ग पहुंचते है। सगर की जो कहानी जैनो मे प्रचलित है, उसमे यज्ञ का उल्लेख नही है। 5b सिसु अर्थात् राम।

(20) 10 पिंगलु अर्थात् मधुपिंगल—तृणपिंगल और अतिथिदेवी का पुत्र।

(28) नारद अज का अर्थ तीन वर्ष का जौ (यव) करते है। जैनो के अनुसार यह अज का प्रसिद्ध अर्थ है।

(33) 8-9 ये पंक्तियां गोस्पर्श, पिप्पलस्पर्श आदि का वर्णन करती है, अन्धविश्वासो के अनुसार। परन्तु कवि का कहना है कि यदि ऐसे लोग पुण्य की योग्यता पाते हैं तो बैल जो गाय का स्पर्श करता है, और कौआ जो पीपल के पेड पर बैठता है, दोनो को देव होना चाहिए।

सत्तरवीं सन्धि

(1) 11a-b ये तुम्हारे दोनो पुत्र आठवें बलदेव और वासुदेव हैं। जैसा कि मैंने पुराणो मे सुना है, ये शलाकापुरुषो मे स्थान पाएँगे।

(2) यह कडवक और इसके बाद के दो कडवको मे रावण की पूर्व जन्मो की कथा कही गई है। नागपुर नगर मे नरदेव नाम का राजा था। उसने ससार का त्याग कर तपस्या की। एक विद्याधर को देखकर उसने निदान किया कि उसका भाग्य भी उस विद्याधर के समान हो। वह सौधर्म स्वर्ग में इन्द्र हुआ। विद्याधरो के नगर का राजा सहस्रग्रीव अपने सबधियो से नाराज हो गया। वह झगडा करके, त्रिकूट पर्वत पर चला गया। वहाँ उसने लका नगर का निर्माण किया। उसके बाद शतग्रीव आया, और तब पचाशद्ग्रीव। उसका पुत्र पुलस्ति था, जिसकी पत्नी मेघलक्ष्मी ने दशग्रीव को जन्म दिया। उसने मदोदरी से विवाह किया जो मय की कन्या थी।

(6) 7a-b इस पंक्ति का अर्थ है कि मणिवती विचलित हो गई जब वह बीजाक्षर मत्र का ध्यान कर रही थी। उसने सोचा कि रावण यद्यपि विद्याधर है, राक्षस के चिह्न रखता है। 8a-b मणिवती ने यह निदान किया कि वह अगले जन्म मे उसका पिता हो। वह उसे जगल मे ले जाए, और वह उसके कारण मृत्यु क प्राप्त हो। यही मणिवती अगले जन्म मे सीता बनती है।

(8) 1b उसके होने पर दूसरी कन्या होगी। यदि रावण जीवित रहता है, तुम्हे (मन्दोदरी को) दूसरी कन्या होगी। मारीच ने सीता के परित्याग की बात कही क्योंकि उसके कारण परिवार पर निश्चित रूप से सकट आएगा।

(9) 11 राम और रावण के बीच कलह का कारण।

(12) 3a राम के ससुर का नगर मिथिला।

(13) 9a राम ने सात दूसरी कन्याओ से विवाह किया, 10a लक्ष्मण ने सोलह दूसरी कन्याओ से विवाह किया। ध्यान दीजिए, जैन पौराणिक परपरा मे राम की एक नही, आठ पत्नियाँ थी।

(16) 6b जाणेवा (ज्ञातव्या) इस रूप के लिए देखिए हेमचन्द्र IV. 438

इकहत्तरवीं सन्धि

(1) नारद धरती पर परिभ्रमण करते है—यह जानने के लिए कि कही लड़ाई हो रही है या लडाई होने का अवसर है। नारद की यह विशेषता हिंदू पौराणिक परपरा मे ज्ञात है। यहाँ वह लडाई कराने के लिए रावण के पास पहुँच रहा है।

(2) 6 b परन्तु एक अर्थात् राम यश प्राप्त करना चाहते हैं आपको जीतकर।

(5) 6a अपनी भयकर भुजाओ से, जो पर्वत-शिखरो को हिला सकती हैं। यह सदर्भ उस विश्वास से सबद्ध है कि रावण ने कैलाश पर्वत को हिला दिया था है अपनी भुजाओ से।

(6-10) यह कडवक वात्स्यायन कामसूत्र के अनुसार स्त्रियो की विशेषताओ का वर्णन करता है।

(11) 7a चन्द्रनखी या फिर शूर्पणखा।

(15) 2a एक स्त्री बकुल की गध की तुलना करती है कि क्या वह उसकी देह की गध के समान है। 11a इस वसंत में कोयल भी बातूनी हो गई है।

(18) 2a कचुकी के रूप को धारण करते हुए। या फिर कचुकिनी—एक वृद्धा।

(20) 1a इससे लगता है कि जैनधर्म भी विधवाओ के सिरो के मुण्डन का अनुमोदन करता है।

बहत्तरवीं सन्धि

(1) 1 उन प्रतिबंधो का परित्याग करते हुए, जिनका गृहस्थ को पालन करना चाहिए। जैसे स्वदारसतोष। रावण अब सीता को पुष्पक विमान मे ले जाता है। यह जैन गृहस्थ धर्म के प्रतिकूल है, क्योकि सीता इसकी पत्नी नहीं है। उसे अभी तक इस तथ्य की जानकारी नही है कि सीता उसकी लडकी है। 1a रावण ने देखा कि यहां वन है, और भी एक चीज—सीता के यौवन का पुष्प। अगले कडवक मे इन दोनो की तुलना है।

(4) हिरण की गति का एक सुन्दर चित्रण है।

(5) 5a जो नीले या काले वस्त्र पहनते हो। बलदेव नीलाम्बर कहे जाते है, जैन और हिंदू—दोनों पुराणो मे।

(8) 11-12 इन पक्तियो का अर्थ है कि यदि मैं (रावण) इस स्त्री को छूता हूँ, जो असहाय है पर शील सपन्न है तो वह विद्या जो मुझे आकाशतल मे घुमाती है, छोड़ देगी। सीता की इच्छा के विरुद्ध रावण कुछ नहीं करना चाहता था क्योकि ऐसी स्थिति मे विद्या उसे छोड़ देती।

(12) 4-6 ये पक्तिया बताती है कि रावण अर्धचक्रवर्ती है।

तिहत्तरवीं सन्धि

(1) 3 तीन चीजें एक साथ हुईं—राम ने वन मे मृग का पीछा किया, सीता का अपहरण हुआ, और सीता की रक्षा करने वालो को गम्भीर दुख हुआ सीता के अपहरण के कारण।

(2) 3b-6b ऐसा प्रतीत होता है कि जैन समाज अनुमोदन करता था कि विधवा स्त्री को लाल साडी पहनना चाहिए, चूडिया फोड देना चाहिए और हार वगैरह नही पहनना चाहिए,।

(5) 9aजैन पुराणो के अनुसार, दशरथ जीवित हैं, जब रावण के द्वारा सीता का अपहरण किया जाता है। दशरथ ठीक उसी समय एक स्वप्न देखते है कि चन्द्र की प्रेमिका रोहिणी को राहू ले जा रहा है। इससे यह सकेत मिलता है कि राम पर भी इस प्रकार का सकट आना चाहिए।

(6) जनार्दन अर्थात् लक्ष्मण के द्वारा।

(7-8) 4a सुग्रीव और हनूमत् जो कि जैन विद्या के अनुसार विद्याधर थे, वानर नही। हनूमत् बीसवें कामदेव है। इसलिए उसका वर्णन मकरकेतु के रूप मे है।

(10) 3a फूल आदि लेकर प्रतिमा को अर्पित किए। जब भक्त मदिर जाता है, तो वह उसका

थोडा भाग अपने साथ घर ले जाता है, निर्माल्य का भाग जो प्रतिमा को अर्पित किया जाता है।

(15) 2 जैसे स्वर्णभाड पर खप्पर का ढक्कन दिया जाए। भिगार भृगार झारी के रूप मे ज्ञात है।

(22) 12a मदोदरी ने सीता को अपनी कन्या के रूप मे पहचान लिया उसके पैरो के चिह्नो से।

(24) 13b हनुमत् ने, जो विद्याधर था, वानर का रूप धारण कर लिया और सीता के सामने खडा हो गया। यह इस बात को स्पष्ट करता है कि जैन पुराण विद्या के अनुसार, यही कारण है कि जिससे हनुमान् को वानर समझा गया।

(26) 8b मैं आपके और राम के बीच की गुप्त बातें बताऊँगा जिससे आपको विश्वास हो जाएगा कि मैं राम की तरफ से आया हूँ। बाद की पक्तियो मे अभिज्ञान के कुछ चिह्न हैं, कुछ दूसरे कडवक की पक्तियो मे हैं।

(28) 10a-b जब आग अपनी ही जाति को जला देती है, वृक्ष और लकडी कि जिनसे उसका जन्म होता है, तब यह अपने शत्रुओ को कब क्षमा करेगी ? यही कारण है कि आग जल को गरम करती है।

(29) 13b सीता प्रतिज्ञा करती है कि रावण के साथ समय नष्ट नही करेगी। कोशपान एक शपथ है, जिसे कोई गभीरता से लेता है।

चहुत्तरवीं सन्धि

(4) 16 हनुमान् से दूत बनकर फिर लका जाने के लिए कहा गया। कवि व्यग के साथ उसकी बल से तुलना करता है जिसे दुबारा गाडी मे जोता गया हो। हिन्दू पुराण विद्या के अनुसार राम का दूत अगद था।

(6) 4b अर्थात् श्री, सीता और वसुन्धरा (पृथ्वी)।

(8) 15 प्रेम के देवता कामदेव इक्षुदड का धनुष रखते हैं।

(15) 3b अश्वग्रीव का सदर्भ जो पहला वासुदेव है जिसने स्वयप्रभा से प्रेम किया और जो प्रथम वासुदेव त्रिपृष्ठ के द्वारा मारा गया।

(16) 7a नील सुग्रीव के मित्रो मे से एक था। b सुग्रीव का एक अन्य मित्र कुमुद था। कुन्द और नल सुग्रीव के ही नाम हैं।

पचहत्तरवीं सन्धि

(1) 8b रावण के अनुयायियों के नाम।

(2) 9b पहले बालि को लका आने दीजिए। 10b वह मुझे महामेघ नाम का हाथी दे।

(3) 7b तथापि दवाव से नही कहा गया।

(4) 1b एक आपत्ति पहले से है यानी आग और इसे बढाने के लिए हवा की लहर आ रही है। 12 जब मैं क्रुद्ध होता हूँ।

(6) 10b किलकिलपुर का स्वामी यानी बालि।

(9) 2b शक्ति का इतना बडा विस्तार।

छिहत्तरवीं सन्धि

(2) 6b आजकल मे यह लका पहुँचेगा। रावण विद्याधर जाति मे उत्पन्न हुआ था जो नमि के भाई विनमि को प्राप्त हुआ।

(3) राम के धनुष का नाम वज्रावर्त था। 9a लक्ष्मण के के धनुष का नाम पाचजन्य था। 14 रावण विभीषण से कहता है कि यदि विभीषण उसे छोड देता है तो वह(रावण)कुम्भकर्ण की सहायता लेगा।

(4) 5a तृण की सीक से कोई अपने दातो को साफ करता है। तृण के लिए तणु, तणु प्रयोग अनियमित है।

(6) 10a सब विद्याधरो ने वानर का रूप बनाया और तब लका की सैर की।

(9) 9a अग्नि जिसकी गति काली धूम्र रेखा का विसर्जन करती है अर्थात् धूम्रध्वज।

सतहत्तरवीं सन्धि

(2) 8b चदहासु—रावण की तलवार। 14 हम हरि (लक्ष्मण) और बल (राम) से डरते है। वे बहुत शक्तिशाली हैं।

(3) 13 रावण संकटकाल में भी पूरा धैर्य बनाए रखता था।

(6) 1 क्या यह एक के ऊपर एक गिर रहे भुवनो की आवाज है? ऐसे कितने ही भुवन होते है जो एक के ऊपर एक आधारित हैं जिसे मराठी मे उतरड कहा जाता है। 6b वइवसु—यम।

(9) 5-17 युद्ध से उठी हुई धूलि का एक सुन्दर चित्रण।

(13) 5a तलवारो के परस्पर घर्षण से निकलती हुई चिंगारियाँ। 13b शिरस्त्राण।

अठहत्तरवीं सन्धि

(1) 2 कृष्ण अर्थात् लक्ष्मण जिनका रग काला है। 15a-b विजयपर्वत और अजनगिरि, लक्ष्मण और राम के हाथियो के नाम है।

(5) 11a-b एक सैनिक दूसरे सैनिक से कहता है, तुमने अपने स्वामी का ऋण चुकाने मे अपना सिर दे दिया है और अपना रक्त उसका व्याज चुकाने मे दे रहे हो।

(8) 3a तीर लोह या लोभ धारण करते है इसीलिए वे डोरी से च्युत अथवा गुणो से च्युत होते हैं।

(9) 21 दृश्य पर उपस्थित हुआ।

(10) 14 मैं अपने शब्दो पर कायम रहूँगा।

(11) 3b कटु शब्द खार युक्त। तीखे शब्द।

(13) 8b राम जिनका रंग गोरा है, सफेद पद्म के समान। इसलिए वे पद्म कहलाए। उनके चरित का वर्णन करने वाले पुराणचरित कहलाये पद्मचरित, पद्मपुराण आदि।

(14) 8a-b यह पक्ति दो कहावतो को अकित करती है—झील में कर्कट भी जलचर कहलाता है यद्यपि इसका अर्थ मगर है। जहाँ वृक्ष नही होते वहाँ एरड भी बडा पेड कहलाता है।

(15) 1 रावण और लक्ष्मण दोनो के पीतवसन हैं। हिन्दू पुराणो मे कृष्ण को पीताम्बर कहा गया है।

(16) 6a वीसपाणि अर्थात् रावण। यद्यपि जैन पुराणो के अनुसार रावण के दो हाथ हैं फिर भी उसे बीस हाथो वाला कहा जाता है। यह हिन्दू पुराणो का प्रभाव है।

(18) 1 उस वीर योद्धा पर जिसने मधु को मारा। नोट कीजिए, प्रतिवासुदेव दो हैं—मधु और मधुसूदन।

(20) 14 योद्धाओ के भविष्य के बारे मे लिखते हुए जो कि उनके मस्तिष्क पर लिखा हुआ था। 15 जाइवि—यह उसने मांगकर प्राप्त किया है।

(21) 7b अगुलियो को तोडना किसी पर उसके प्रति अनादर को सूचित करता है। बोटें मोडणें—यह प्रयोग आधुनिक मराठी मे मिलता है। 13a मेरे इस पति ने मुझसे उस समय विवाह किया जब मैं बिलकुल छोटी कन्या थी। तुलना कीजिए—'य कौमारहर स एव हि वर ···'।

(23) 4a आज सरस्वती, विद्या की देवी, शास्त्रो को याद नही करेगी या उनका वाचन नही करेगी, रावण की मृत्यु के कारण। हिंदूपुराणो के अनुसार रावण पुलस्त्य का पुत्र था। पुलस्त्य ऋषि ब्राह्मण थे।

(24) 3a वह नारद नही था जो आ पहुँचा, वह तो दुर्दैव था जो तुम्हारे ऊपर मौत लाया था। (नारद ने रावण को सीता की प्राप्ति के लिए भडकाया।) रावण ने नारद की कपटपूर्ण सलाह से ही सीता के अपहरण का निश्चय किया था। 12a घुन के द्वारा वज्र भी जीर्ण हो गया। लक्ष्मण के हाथो रावण की मौत उसी तरह असभव लगती थी जिस प्रकार घुनो से वज्र का काटा जाना।

(25) 1 तुम्हे दशमुख का स्थान ग्रहण करना चाहिए। 6b-12b इन पक्तियो मे रावण की शव-यात्रा का वर्णन है।

(29) 3b राम के सिवा और कौन उदार है ?

उन्यासीवीं सधि

(2) 11b तलवार का नाम सौनदक है, क्योकि वह सौनदयक्ष का दान है। अर्द्धचक्री वासुदेव के सात रत्नो मे से एक तलवार भी है जिसे सौनन्दक कहते है ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार गदा को कौमोदकी। जैन पुराणो मे वासुदेव और बलदेव के क्रमश सात और चार चिह्न होते है। गुणभद्र के 'उत्तरपुराण' (62/148-149) मे उनका उल्लेख इस प्रकार है—

असि शखो धनुश्चक्र शक्तिर्दण्डो गदाभवत्।
रत्नानि सप्त चक्रेशो रक्षितानि मरुद्गणैं ॥
रत्नमाला हल भास्वद्रामस्य मुशल गदा।
महारत्नानि चत्वारि बभूवुर्भाविनिर्वृते ॥

(3) 8a वह उस स्थान से चला गया। ध्यान रखें कि 'तहां' की अपेक्षा 'तहिं' के साथ 'होतउ' का प्रयोग किया गया है। हेमचन्द्र IV 355 से तुलना करें।

(6) 10 b उस स्थिति मे कौन नरक मे पैदा होगा और कौन स्वर्ग मे ? 12 यह बौद्धदर्शन का क्षणिकवाद सिद्धान्त है। स्वयबुद्ध के द्वारा।

(a) 6-9 ये पक्तियां हमे बताती हैं कि राम के विजयराम आदि आठ पुत्र थे, और लक्ष्मण के उनकी पत्नी पृथिवी से पृथ्वीचन्द्र आदि अनेक पुत्र थे।

(11) 4b लच्छीहरगि अर्थात् लक्ष्मीघर (लक्ष्मण) की देह मे।

अस्सीवीं सधि

(9) वर्षा ऋतु का सुन्दर वर्णन।

(16) 7 b सूर्य की पत्नी का नाम रण्ण या रत्नादेवी था।

शुद्धि-पत्र

अनुवाद कड़वक-पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
	भूमिका	
21.	ध्वमि के उत्पन्न होने की उक्त व्याख्या ध्वनि उत्पत्ति की पुष्पदन्त की	ध्वनि के उत्पन्न होने की पुष्प-दन्त की उक्त व्याख्या ध्वनि उत्पत्ति की
23	कायाग्निमाहान्त	कायाग्निमाहन्ति
	संधि-68	
1 4	जिसने अहिसा	जिन्होने अहिसा
1.10	भयकर शब्दो	शब्दो
4.5	दोनो का सुख	दोनो के सुख
5 6	जिसने	जिन्होने
7.11	मथन	मंथन
	संधि-69	
2 3	स्त्रियो के शिशुमुख को	स्त्रियो और शिशुओ के मुखो को
3.9	हजारो भैसो से	हजारो भैसाओ से
10.10	ऐसे मालूम	ऐसा मालूम
14.1	विश्वनाथ	ऋषभनाथ
16 5	को शीघ्र भेज दीजिए	को भेज दीजिए
	यह व्रत लेने पर	यह व्रत लेता हुआ
27 3	मेरे बच्चो को	मेरे बच्चे को
27 7	मेढे (ढेर)	मेढे
27 8	इसे	इन्हे
27.10	इसके दोनो कान	दोनो के कान
29.8	मगर और	नगर और
30 6	चाटी गई	चाँटी गई

संधि-70

16.5	प्रभु की शक्ति	प्रभुशक्ति
19 5	जनपद लोगो	जनपद के लोगों
20.3	काम दस	काम दैत्य

संधि-71

1 14	तुमसे मीत मन	तुमसे भीत मन
3.6	शृ गार	संहार
13 15	शाखाओ को	शाखाओ के
15 3	बाली	बाला
15 12	(मूल) महुरउ विसु	महुरउ पुसु
15.11	इसका मधुर मधु में रत विष	इसका मीठा शब्द और मधुर शुक
15 12	आहत करता है	आहत करते हैं
15.16	स्त्रियों के साथ	हथिनियो के साथ
16.8	लक्ष्मण की मुख की कान्ति से	लक्ष्मण की कान्ति से
17 1	हारावली को गीला करता हुआ वह उसके ऊपर गिरा, विधाता ने उसे क्यो नही जड दिया।	उससे हारावली गीली होकर गिर पडी, विधाता ने उसे वही क्यो नही जड़ दिया ?
18.4	प्रभा को देखकर	आहत प्रभा को देखकर
18 7	मल्लिका	भल्लिका
18 8	रावण को	रावण का
19 7	चडालत्व(धूर्तपन)	चडालत्व
19 9	दुष्ट कुल के द्वारा	दूसरे कुल के द्वारा

संधि-72

2 11	धवलीलता	लवलीलता
2.12	हारावली गले	धवल हारावली गले
3 2	देखने पर	देखते है
3 4	कुमार्ग मे निर्देशित	विचित्र कुमार्ग मे निवेशित
3 7	अलघ्य	यह अलघ्य
4.4	पकड जाने	पकड़े जाने पर
8 2	उष्ण किरणो से यह कह रहा है	उष्ण आँसुओ से यह रो रहा है
12.3	वाहुबल	वहुत वाहुवल
12.7	गुणवाद	गुणवान्

संधि-73

2.12	केशर से पीत शरीर है	केशर का पिण्ड है

5 9	उसे सहसा उठाकर देव वलभद्र राम ने सिरे से	सहसा सिर से ऊँचाकर देव हलधर ने उसे पढा
5 10	छतविलास	हृतविलास
21.2	मृणाल	श्रृगाल
23.10	दूध हार	दूध मदोदरी के हार के समान दौड़ा।
26.5	अनुवरत्व को प्राप्त हुआ पत्र	अनुचरत्व को प्राप्त हुआ
27 12	लेखपत्र	प्रिय का लेखपत्र
27.14	कोई नही जानता	कौन जानता है

संधि-74

4 3	समर्थन उसे	समर्थ उसे
4.5	जेठ	जेठे
5.8	(मूल) अन्णाणे	अण्णाणे
6.4	(मूल) देह	देइ
11.2	जग को कुतुहल उत्पन्न करने वाला राजा पूछता है	राजा पूछता है

संधि-75

8.8	दूसरे धनुष...	दूसरे धनुष छोड़ दिए गए, दूसरे ग्रहण कर लिये गये

संधि-76

2.5	ससुद्र	समुद्र
2 9	करा रहे हैं	कर पाते है
2 10	हट जाता है	हट जाता है, आपके होते हुए शत्रुसमूह मे धीरज कहाँ ?
2 13	वाछा सग्रह करती है	सग्रह की वाछा करती है।
2 15	परस्त्री का रमण	परस्त्री मे अनुरक्त मन
6 1	पुरुष के...बताता हूँ	तीव्र दुखरूपी लता अहितकर देह-व्याधि है, पुरुष के सुख को नष्ट करनेवाली, इसकी शून्य वन मे सुखद यह औषधि किसी प्रकार करो
6.3	(मूल) रज्जदाणु	रज्जमाणु
6 2	राजा का घमण्ड विस्तृत है	राज्य का मान विस्तृत है
7 12	पिच गया	पिचल गया
7 22	सत्वल	सव्वल

संधि-77

1.4	तव विभीषण कहता है कि भय से निरीह	तब निष्पृह विभीषण कहता है
10 7	प्रवेश रकती हुई	प्रवेश करती हुई

संधि-78

2.5	स्तन मडल किया	स्तन मडित किया
5.10	चाट रही है	चाँट रही है
8.7	पापगत	रजगत
17.4	राक्षस ध्वनियों	राक्षस-ध्वजियो